मरुधर का महाविकसित

श्री भाण्डवपुर तीर्थ

Bhandvpur TAB

संकलन : मुनि आनन्द विजय

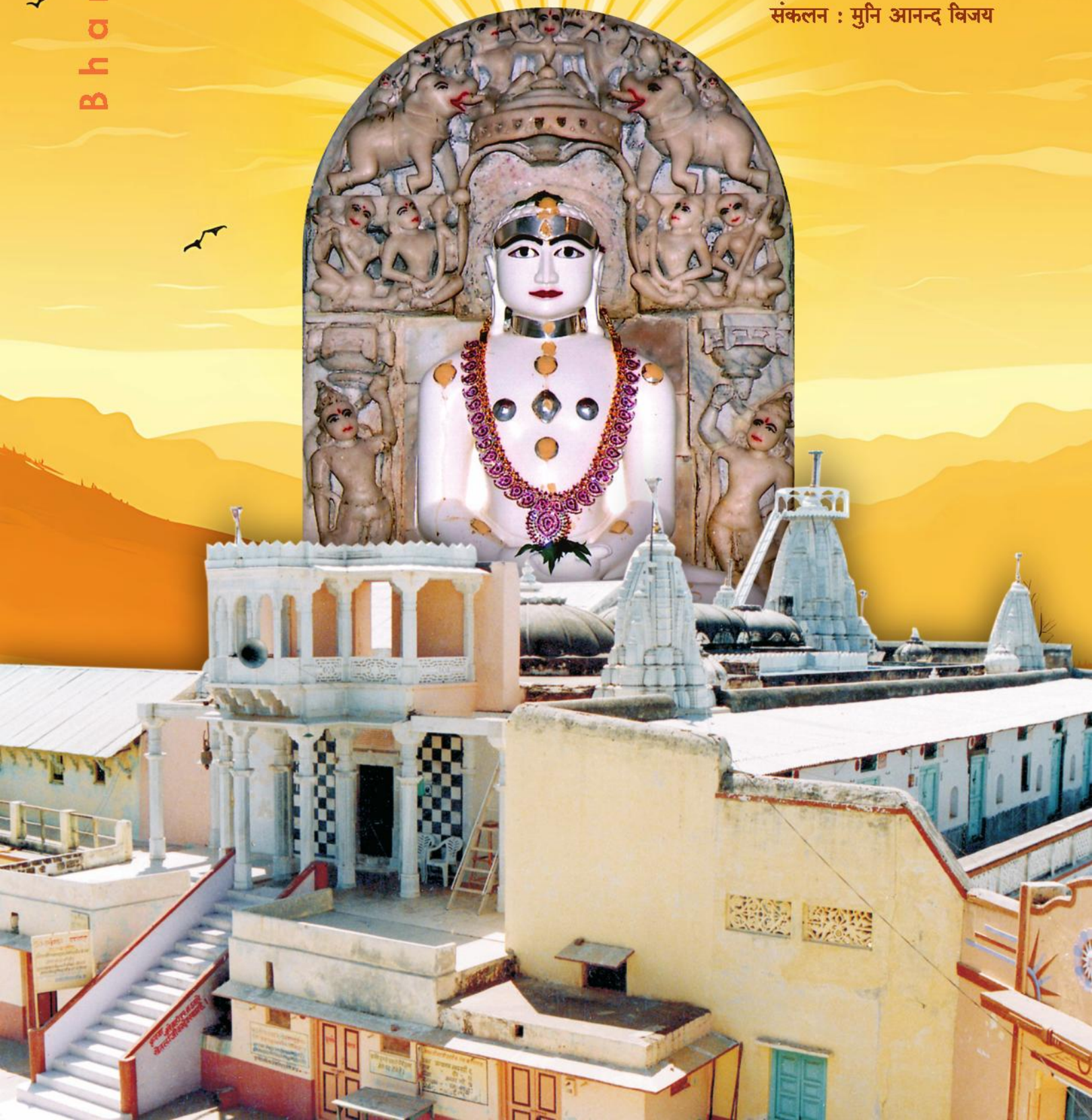

पुण्यसम्राट श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर,
योगिराज श्री शान्तिविजयजी म.सा. के सुशिष्य रत्न
भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक

आ.श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के

५० वें दीक्षा दिन

(वि.सं.2080, पोष सुद-6, दि. 16-1-2024)

के उपलक्ष में

सादर समर्पित

॥ भाण्डवपुर तीर्थाधिपति श्री वर्धमानस्वामिने नमः ॥
॥ विश्वपूज्य प्रभुश्री राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेनसूरीश्वर गुरुभ्यो नमः ॥
॥ कृपासिंधु योगिराज श्री शान्तिविजय गुरुभ्यो नमः ॥

मरुधर का महाविकसित
श्री भाण्डवपुर तीर्थ तब

: संकलन कर्ता :
मुनि आनन्द विजय

: द्रव्य सहायक :
श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढी ट्रस्ट
श्री वर्धमान राजेन्द्र जैन भाग्योदय (ट्रस्ट) संघ
भाण्डवपुर तीर्थ, वाया-सायला, जिला जालोर (राज.) ३४३०२२

प्रकाशन : यतीन्द्र वाणी प्रकाशन, मोटेरा, अहमदाबाद (गुज.)

कृति

मरुधर का महाविकसित श्री भाण्डवपुर तीर्थ अब

दिव्याशीष

प.पू. पुण्यसम्राट श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.
प.पू. तपसम्राट श्री शान्ति विजयजी म.सा.

आशीर्वाद

धर्मदिवाकर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा.
भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा.

संकलनकर्ता

मुनि आनन्द विजय

संपादक

कुलदीप 'प्रियदर्शी' उदयपुर

छायांकन

'श्री नाकोडा स्टुडिओ' रघुनन्दन पारीक– भीनमाल

प्रकाशक

यतीन्द्र वाणी प्रकाशन – मोटेरा – अहमदाबाद

द्रव्य सहायक

श्री महावीर जैन श्वे. पेढी ट्रस्ट, भाण्डवपुर तीर्थ, जिला–जालौर (राज.)

प्रकाशन संवत्

विक्रम सं. 2080, कार्तिक पूनम, 27–11–2023

प्रतियाँ

4000

मूल्य

सद्वाँचन

प्रकाशन स्मृति

श्री तत्त्वत्रयी प्रतिष्ठोत्सव 19 फरवरी–2024

मुद्रक

जैनम् ग्राफिक्स – अहमदाबाद

श्री वीरचैत्य प्रतिष्ठोत्सव से साभार

अतिप्राचीन श्री भाण्डवपुर तीर्थ

लेखक : मुनि विद्याविजयजी (आचार्यश्री विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी)

१. भांडवाजी का संक्षिप्त इतिहास

ग्रंथ समान सुतीर्थ हैं, जिनप्रतिमा जिनदेव ।
फल अनुसारी भाव के, विकथन मिथ्या ऐव ।।

मारवाड़ में जोधपुर से रानीवाड़ा जाने वाली रेल्वे के मोदरा-रोड़ स्टेशन से २२ मील दूर उत्तर-पश्चिम कोण में चारों ओर रेगिस्तान से घिरा हुआ 'भांडवा' नाम का छोटा ग्राम है । यहाँ पर राजपूत, कणबी, वजीर, भील आदि काश्तकार जातियों के लगभग २०० घर आबाद है । गाँव चारों तरफ सघन झाड़ी से परिवेष्टित है । इसको विक्रमीय तीसरी-चौथी शताब्दी के मध्यकाल में जाबाली (जालोर) के निवासी परमार भाण्डूसिंहजी ने बसाकर इस पर शासन किया था । उनके वंशजों का कई पीढ़ी तक अधिकार रहा । संसार में किसी भी सत्ता समान रूप से सदा के लिए नहीं रहती। उनका परिवर्तन होना स्वाभाविक है । इसी से शास्त्रकार महर्षियों का कहना है कि संसारगत प्रत्येक पदार्थ परिवर्तनशील है ।

इसी कुदरती नियम के अनुसार विक्रम सं. १३२२ में बाबतरा गाँव वाले दईया राजपूत बुहेड़सिंह ने परमारों को भगा कर भांडवा पर अपना अधिकार जमा कर उसका शासन किया । धीरे-धीरे इसके चारों ओर के गाँवों पर दईयों का अधिकार हो गया । इससे इस प्रान्त का नाम दयावट (दईयावट) पट्टी हो गया । इस पट्टी के दो विभाग हैं-एक उल्ली पट्टी और दूसरी पल्ली पट्टी । अर्थात् उल्ली (इस तरफ की) और पल्ली (उस तरफ की) पट्टी । दोनों पट्टियों में चौबीस-चौबीस गाँव हैं-जिनमें छोटे और बड़े दोनों प्रकार के गाँव शामिल हैं ।

बाद में इन पट्टियों पर जोधपुर के राठौर (राष्ट्रकूट) राजाओं का अधिकार हो गया । जोधपुर महाराजा रामसिंहजी ने लुम्बाजी दईया का अधिकार छीन कर विक्रम सं. १८०७ भाद्रवा सुदि ५ के दिन आणा गाँव के ठाकुर मालमसिंह भाटी को भांडवा गाँव अर्पण कर दिया । तत्पश्चात् सं. १८६४ भाद्रवा सुदि १५ के रोज जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी ने भांडवा का आधा हिस्सा खालसा कर, आधा हिस्सा ठाकुर राजसिंह भाटी को इनायत कर दिया । राजसिंह भाटी के वंशज क्रमशः सिरदारसिंह, सुमेरसिंह, भगवानसिंह हुए । वर्तमान में ठाकुर भगवानसिंहजी हैं जो बड़े मिलनशील और सत्संग-प्रेमी हैं। ठाकुर साहब के छोटे भाई हिम्मतसिंहजी भाटी और सोहनसिंहजी दईया ये दोनों व्यक्ति भी बड़े दिलावर, सत्संगी और जनता की सेवा में दिलचस्पी रखने वाले हैं ।

२. भांडवाजी में श्री वीरतीर्थ की स्थापना

विक्रम की सातवीं शताब्दी में दियावट पट्टी प्रान्त में 'बेसाला' नामक अच्छा कस्बा था। जिसमें हजारों घर आबाद थे। इसमें श्वेताम्बर जैन बीसा ओसवालों के भी सैंकड़ों घर बसते थे जो जन-धन से अच्छे समृद्ध थे। उन्होंने बेसाला में एक भव्य, विशाल और सौधशिखरी जिनमन्दिर निर्माण कराकर संवत् ८१३ मार्गशीर्ष शुक्ला ६ सोमवार के दिन भारी उत्सव से श्री महावीरप्रभु की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा कराई और उनको जिनालय में विराजमान कीये। प्राणप्रतिष्ठाकारक आचार्य कौन और किस गच्छ के हैं- इसका प्रमाणदर्शक वीरप्रभु की प्रतिमा पर या कोई शिला-लेख नहीं है। सिर्फ जिनालय के एक स्तम्भ पर 'सं. ८१३ श्रीमहावीर' इतना लेख उत्कीर्ण है, उसी के आधार से उक्त बात लिखी जा सकी है।

प्रतिष्ठा होने के बाद कालान्तर में बेसाला नगर पर मेमन धाडेतियों की धाड़ों पर धाड़ें पड़ना आरम्भ हुई। जिससे लोग अपनी जान-माल की रक्षा के निमित्त नगर छोड़कर इधर-उधर जा कर बस गये और सारा नगर वीरान हो गया। मेमन धाड़ेतियों ने जिनालय को भी तोड़कर उसको भूमिशायी (आज भी इस जिनालय के कोरणी और बिना कोरणी के घाटदार पत्थर यहाँ बिखरे हुए पड़े हैं। कतिपय पत्थर शंकर का देवल बनाने और कतिपय पत्थर कुओं के बन्धाने के काम में लिए गये हैं।) कर दिया। भाग्ययोग से प्रभुप्रतिमा खंडित नहीं हो सकी, उसको समीपवर्ती कोमता ग्रामवासी संघवी-कुटुम्ब के पालजी आदि जैन लेने के लिए बेसाला में आये। उन्होंने श्री वीरप्रतिमा को बैलगाड़ी में विराजमान कर उनको कोमता की ओर लेकर चले, परन्तु लाख प्रयत्न करने पर भी गाड़ा कोमता के तरफ नहीं गया। गाड़ा बेसाला से रवाने होकर पोणा और मेंगलवा गाँव होकर भांडवा गाँव आकर रूक गया, किसी तरह आगे नहीं मुड़ा। रात्रि में पिछले पहर में संघवी पालजी को स्वप्न आया कि मैं यही पर रहना चाहता हूँ, अतः यहीं मन्दिर बनवा कर उसमें मेरी प्रतिमा को विराजमान कर दो, इसी में तुम्हारा भला है और प्रतिवर्ष मेरी यात्रा करते रहो, तुम्हारे लिए यही जन-धन वृद्धि का कारण है।

प्रातःकाल होते ही पालजी ने अपने कुटुम्बियों से स्वप्न सम्बन्धी सारी हकीकत कह सुनाई। संघवी-कुटुम्बियों ने एकमत हो विक्रम सं. १०९५ में शुभमुहूर्त में ऊँची कुर्सी पर शिखरबद्ध मन्दिर बनवाना प्रारम्भ किया। वह बनकर तैयार हुआ कि विक्रम सं. १२३३ माह सुदि ५ गुरुवार के दिन प्रतिष्ठा विधिपूर्वक शुभलग्नांश में भगवान श्री महावीरस्वामी की प्रभावशाली प्राचीन प्रतिमाजी को गादीनसीन की और स्वर्णदंडध्वज एवं कलश आरोपण किये। भांडवाजी तीर्थ के मन्दिर पर कोमता वाले संघवियों की ओर से प्रतिवर्ष ध्वजा आज दिन तक चढ़ाई जाती है। इस मन्दिर का निर्माण सम्बन्धी एक लेख मंडप के एक स्तम्भ पर भी उत्कीर्ण था, अभी उस पर रंगीन चीनीलादियाँ लगा दी गई है, वह किस स्तम्भ पर था, इसका भी किसी को पता नहीं है।

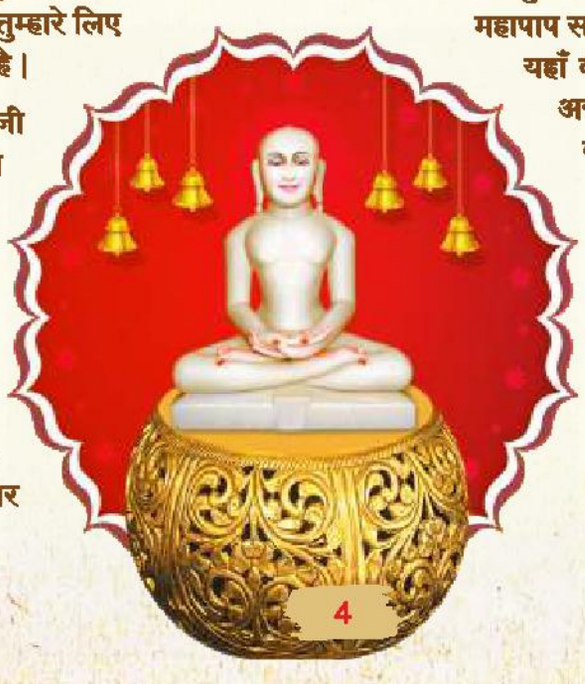

३. तीर्थपति महावीरजी के प्रति अजैनों की श्रद्धा

भांडवा में तीर्थ स्थापना काल से ही तीर्थपति श्री महावीरप्रभु के प्रति यहाँ के समस्त ग्रामवासी अजैन जाति वाले स्त्री-पुरूषों की श्रद्धा एवं भक्ति अपूर्व, अनुकरणीय और सराहनीय है। प्रत्येक सांसारिक कार्यों के अवसर पर अजैन जनता में महावीर प्रभु का ही स्मरण, पूजा और मान्यता की जाती है। तीर्थ स्थापना काल से ही अजैनों में सर्वानुमत से यह मर्यादा प्रचलित है-

१. नव विवाहित वर-वधू सर्व प्रथम श्री महावीरजी के मन्दिर में जाकर, उनके दर्शन कर और यथाशक्ति भेंट चढ़ाकर के फिर अपने घर जाते हैं और छेड़ा छोड़ते हैं।

२. नव प्रसूता गौ अथवा भैंस का दूध, दही, घी जब खाने-पीने योग्य समझा जाता है, सर्वप्रथम तीर्थाधिराज महावीर प्रभु के भण्डार में अर्पण किया जाता है।

३. प्रत्येक राष्ट्रीय एवं प्रमुख त्यौहारों के अवसर पर स्त्री-पुरुष जिनालय के समक्ष श्रद्धा एवं प्रेम से विविध नृत्य और भक्ति भाव के प्रदर्शन करते कराते हैं।

४. तीर्थ की यात्रा के लिए जब कोई प्रसिद्ध जैनाचार्य भांडवपुर में आते हैं, तब उस दिन सारे गाँव में अगता पलता है और कृषि आदि काम-धंधे बन्द रहते हैं।

५. तीर्थ के चारों ओर लगभग एक मील तक जो घना जंगल खड़ा है वह तीर्थ की सम्पत्ति है। कोई भी व्यक्ति इस जंगल की क्षुद्रतम लकड़ी भी काटकर अपने घर लाना महापाप समझता है। अगर कोई काट लाता है तो यहाँ की पंचायत जितना उचित समझती है, अन्न के रूप में उस पर दण्ड करती है और वह अन्न कबूतरों के भण्डार में दिया जाता है।

६. तीर्थ की सीमा चारों ओर एक-एक कोस तक निर्धारित है उसमें कोई भी व्यक्ति आखेट (शिकार) नहीं खेल सकता। इसलिए ग्राम पंचायत की तरफ से पूरी देखरेख रहती है।

४. यात्रियों की सुविधा के लिए धर्मशाला

तीर्थपति के मन्दिर के सामने एक विशाल जैन धर्मशाला है। जिसमें इकसठ ६१ कोठरियाँ हैं और इनमें ५००० हजार यात्री अति सुख -सुविधा से ठहर सकते हैं। धर्मशाला जिनालय के ऊँचे चत्वर (कुर्सी) से नीचे तीन दिशाओं में मध्य में विशाल आँगन रखकर बनी हुई है। धर्मशाला के आँगन में मैदान काफी है, उसमें एक ओर उत्तर-पश्चिम कोण में एक कुआ भी है जिसका जल पेय और पाचक है। इस प्रकार इसमें यात्रियों के लिए पूरी-पूरी सुविधाएँ विद्यमान है। परकोट के उत्तर में बाहर की ओर कोट से लगोलग भूमि जो अंदाजन बीस हजार वर्गफीट है, तीर्थ की पेढ़ी ने खरीद कर ली है। परकोट का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में बना हुआ है और नई खरीदी हुई भूमि में भी एक बड़ी खिड़की खुली हुई है। इसमें धर्मशाला बनने का काम अभी बाकी है।

जिनालय से दक्षिण में लगोलग एक छोटी प्राचीन धर्मशाला भी है जो दुमंजली है और एक पूर्वाभिमुख है। इसकी प्रतोली (पोल) में एक तरफ श्रीमहावीर जैन पेढ़ी का कारखाना है। पेढ़ी में दो मुनीम और चार-पाँच नौकर हैं जो यात्रियों को किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होने देते। पेढ़ी में बरतन, गोदड़े, राली आदि की सराहनीय व्यवस्था है और साथ ही मोदीखाना और भोजनालय की भी योग्य सुविधा है, जिसमें रसोई के योग्य सामान एवं भोजन की व्यवस्था यात्रियों के लिए उचित मूल्य लेकर करा दी जाती है जिससे यात्रियों को अपना पूजन-पाठ करने में बिल्कुल अन्तराय नहीं पड़ता। भांडवाजी गाँव में ताजा दूध, दही, घी चाहिए जितना और अन्य गाँवों की अपेक्षा से सस्ता मिलता है।

५. भांडवाजी तीर्थ का जीर्णोद्धार

यहाँ के सौधशिखर जिनालय का प्रथम जीर्णोद्धार विक्रम सं. १३५१ में और दूसरा सं. १६४४ में दियावट पट्टी के श्वेताम्बर जैन श्रीसंघ के तरफ से कराया गया था, फिर भी जीर्णोद्धार कराने की आवश्यकता उपस्थित हुई।

चर्चाचक्रवर्ती श्रीमद् विजय धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से वि.सं. १९७७ में श्री दियावट पट्टी जैन श्वे. संघ ने जिर्णोद्धार हेतु चन्दा ईकट्ठा किया।

वि.सं. १९८५ माघ शुक्ला दशमी को आचार्य विजय भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के कर कमलों से श्री महावीरजी मन्दिर पर ध्वजा, दण्ड, कलश प्रतिष्ठा की गई।

व्याख्यान-वाचस्पति वयोवृद्ध आचार्यदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की तत्वावधानता में सं. १९८८ में इस पवित्र तीर्थ का तीसरा जीर्णोद्धार प्रारम्भ हुआ। देश अर परदेश के श्वेताम्बर जैन संघ प्रदत्त द्रव्य-सहायता से

अति स्वल्पकाल में आरसोपल के श्वेत प्रस्तर से मूल शिखर, गूढ़मण्डप आदि का सारा काम सम्पन्न हो गया और साथ ही जिनालय के चारों बाजू के कोनों पर शिखरबद्ध देवकुलिकाएँ मूल जिनालय के पीछे घूमटदार तीन और मुख्य प्रवेश द्वार के दोनों बाजू दो छत्रियाँ आरसोपल से बनकर तैयार हो गई। ये देवकुलिका आदि अलग-अलग गाँवों के सद्गृहस्थों की तरफ से बनी है जिनके नाम के शिलालेख इस प्रकार लगे हुए हैं-

देवकुलिका नं. एक- 'सिंगी-संघवी जानुजीरे वतुबाई सुन्दरवास कोमता वालारे तरफ सुं संवत् २००६ रा महा वदि ५ वार सोम।'

देवकुलिका नं. दूसरी-'शा. मानिगजी समरथाजी मादाजी ओत वास रेवतड़ा वालारे तरफ सुं. संवत् २००६ रा महा वदि ५ वार सोम।'

देवकुलिका नं. तीसरी-'मुता वरदाजी पूनमचन्द छोगालाल बेटा सुरताजी ओत वास सायला वालारे तरफ सुं. संवत् २००६ रा महा वदि ५ वार सोम।'

देवकुलिका नं. चौथी-'शा. सुरताजी केसाजी भेरूमलजी बेटा चेनाजी ओत वास पांथेड़ी वालारे तरफ सुं. संवत् २००६ रा महा वदि ५ वार सोम।'

तीन घूमटवाली छत्री -'शाहजी अचलराजजी धनराजजी व गुमानमलजी जुगराजजी भोमराजजी ओत वास पांथेड़ी वालारे तरफ सुं. हस्ते अचलराजजी संवत् २००६ रा महा वदि ५ वार सोम।'

गुरुछत्री नं. एक- शा. रखबदासजी जावन्तराजजी सरेमलजी मिश्रीमलजी भबुतमलजी बेटा माणकचंदजी ओत वास आहोर वालारे तरफ सुं. संवत् २००६ रा महा वदि ५ वार सोम।'

गुरुछत्री नं. दूसरी - 'भंडारी वदाजी उमेदाजी भूरा जी भबूतमलजी बेटा हांसाजी ओत साहेला वालारे तरफ सुं. संवत् २००६ रा महा वदि ५ वार सोम।'

६. वीरप्रभु के जन्मकल्याणक का मेला

भांडवपुर में तीर्थ-स्थापना के बाद दियावटपट्टी के श्वेताम्बर जैनों ने एकत्र होकर सर्वानुमत से वीरप्रभु के जन्मकल्याणक के निमित्त हर साल चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन मेला भरना नियत किया था। उसी नियम के अनुसार भांडवजी में प्रतिवर्ष चैत्री मेला अच्छा भरता है और यह चैत्र शुदि १३ से १५ तक रहता है। इसमें ५ से ९ हजार तक स्त्री-पुरुष आकर यात्रा का लाभ लेते हैं। इस शुभावसर पर धर्मप्रेमी भावुक सद्गृहस्थ नवकारसियाँ करने अथवा भाता बाँटने का भी लाभ प्राप्त करते हैं।

विक्रमाब्द २०१० का चैत्री मेला सियाना (मारवाड़) निवासी वृद्धशाखीय ओसवाल जैन गाँधीमुथा शा. अचलचन्द दलीचन्द फूलचन्द कान्तिलाल जबरचन्द शान्तिलाल बेटा पोता भगाजी तथा मीठालाल भगाजी ने न्योंतरा और मुद्रित श्रीसंघ-आमंत्रण-पत्रिका द्वारा उसकी सर्वत्र सूचना दे दी। फिर बागरा जाकर आचार्यदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की सेवा में अत्याग्रह भरी विनती की कि मैंने भांडवाजी तीर्थ के मेला का निमन्त्रण दिया है, उस मौके पर आपके पधारने से मेला की दुगुनी शोभा होगी और कई भावुकों को आपके दर्शनों का लाभ मिलेगा। यह एक पंथ दो काज सिद्ध होने जैसा सुकर्म सम्पन्न होगा, अत: वहाँ पधारने की महरबानी कीजिये। अचलाजी दलीचन्द का अति आग्रह देखकर उनकी अरजी मान्य कर ली और बागरा से मुनिश्री लक्ष्मीविजयजी, विद्याविजयजी, सागरानन्दविजयजी, चारित्रविजयजी, कान्तिविजयजी, सौभागविजयजी, शान्तिविजयजी, देवेन्द्रविजयजी, रसिकविजयजी आदि शिष्य परिवार के सहित विहार करके मार्ग के गाँवों में विश्राम लेते हुए चैत्र शुक्ला १० को प्रात:काल नौ बजे भांडवाजी पधार गये और तीर्थाधिपति श्री महावीरप्रभु की यात्रा कर आनन्द विश्राम लिया।

भांडवपुर में आचार्यदेव का आगमन सुनकर ढंढार पट्टी दियावट पट्टी और चौहान पट्टी आदि के गाँवों से अनेक श्रावक, श्राविका भाण्डवाजी में उपस्थित हुए और उन्होंने तीर्थ-दर्शन एवं गुरुदर्शन का शुभ लाभ लिया। इस मेला पर लगभग ८ हजार जनता थी और थराद का 'श्रीयतीन्द्र जैन बैण्ड युवक मण्डल' भी दर्शनार्थ हाजिर हुआ था। बैण्ड की युवक पार्टी ने मनोरंजक बैण्ड बजाकर उपस्थित जनता का चित्ताकर्षण किया और यशवाद लिया। श्रीयुत् गाँधीमुथा अचलचन्दजी ने भी सब जनता की प्रीतिभोजनादि से सराहनीय सेवा की जिससे सारी पट्टी में उनका यशवाद फैल गया। इस प्रकार मेला कार्य बड़े आनन्द के साथ सम्पन्न हो गया।

७. प्रतिष्ठा कराने का आयोजन

मेला कार्य निपट जाने के बाद उल्ली-दियावट पट्टी के चौबीस ग्रामों के जैन पंचों की जाजम हुई। समस्त पंचों ने प्रतिष्ठा कराने के लिए विचारणा आरम्भ की कि मन्दिरजी का सम्पूर्ण जीर्णोद्धार हो चुका है और यहाँ पर आचार्यदेव भी पधारे हुए हैं यह एक सुवर्ण अवसर है। अत: इस सुअवसर को कार्यरूप में परिणत कर लेना अच्छा है। इस प्रकार विचार-विनिमय होकर सर्वानुमत से यह प्रस्ताव निश्चित हुआ कि सर्वप्रथम प्रतिष्ठा का अच्छा मुहूर्त्त आता है या नहीं- इसके लिए आचार्यदेवश्री की सेवा में चलकर निर्णय कराओ। बस, सभी पंच आचार्यदेवश्री के समीप हाजिर हो, वन्दनापूर्वक अर्ज करने लगे कि मन्दिरजी के सारे विभागों का जीर्णोद्धार सम्पूर्ण हो चुका है और दिन विषम आते जा रहे हैं, इसलिए अगर अच्छा मुहूर्त्त आ जाये तो हमको प्रतिष्ठा करा लेना है, कृपा करके आपश्री अच्छा से अच्छा मुहूर्त्त दीजिए।

पंचों की अत्याग्रह भरी विनती से आचार्यदेव ने ज्योतिषियों को एकत्रित कर उनसे श्रेष्ठ मुहूर्त्त निकला कर और उसकी अच्छी तरह जाँच-परताल कर मुहूर्त्त पत्र लिखवाया जो इस प्रकार है :-

८. मुहूर्त लग्न पत्रिका

तीर्थपति श्रीमहावीरजिनेश्वरेभ्यो नम:। सर्वलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नम:। श्री ऋद्धिवृद्धिर्विजयमंगलाभ्युदयश्च। श्री विक्रमीय २०१० वत्सरे शालिवाहन १८७५ शकवर्षे मासोत्तम ज्येष्ठमासे १० तिथौ चन्द्रवासरे घटी ५/४, चित्रानक्षत्रो परान्तस्वातिनक्षत्रे घटी ७/२७,

परिघयोगोपरान्त-शिवयोगे घटी ०/५४ गरकर्णे घटी ५/४, एवं पंचागशुद्धावत्र दिने सूर्योदयादिष्टघटी ११/४१ दिनमानघटी ३४/१५ रात्रिमानघटी २५/४५ सिंहलग्नवहमायां श्री भांडवपुरतीर्थ श्री वीरजिनचैत्ये स्वर्णकलश-दण्डध्वज समारोपणबिम्बप्रतिष्ठा-मुहूर्त श्रेष्ठतममिति।

श्री लग्नकुण्डली चक्रम

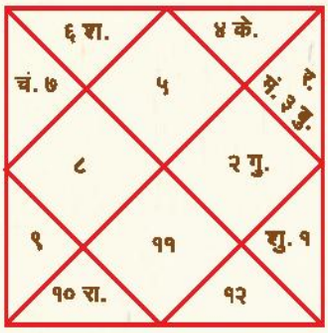

श्री नवांशलग्नकुण्डली चक्रम

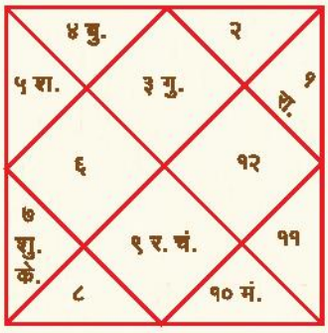

मुहूर्त्त-पत्रिका पंचों को भेंट की उन्होंने उसको सादर स्वीकृत करके सिर पर चढ़ाई और मांगलिक के निमित्त गुड़-धना बाँटे फिर जयनाद करते हुए सब पंच अपने अपने उतारे पर गये। सारे भांडवपुर की सारी जनता में इस कारण से भारी आनन्द छा गया और वायुवेग के समान यह समाचार कर्णोपकर्ण से चारों ओर जैन संघ में पहुँच गये जिससे सब लोग आनन्दित हुए।

९. प्रतिष्ठा कार्यकारिणी समिति तथा पसमितियाँ

मध्यान्ह समय पुनः समस्त पंचों की जाजम हुई। उस पर पंचों ने एकत्रित होकर प्रतिष्ठा कार्य व्यवस्थित रूप से सम्पन्न होने के लिए सर्वानुमत से कार्यकारिणी समिति कायम की। इसके मुख्य मेम्बर कोमता वाले, शा. हजारीमलजी, जवानजी, शा. तेजाजी कपूरजी देता वाले, शा. पुखराज रूपाजी, पांथेड़ी वाले शा. अचलदासजी, शा. भेराजी केसाजी, दाधाल वाले शा. समरथाजी फोजाजी, शा. केवलजी ऊकाजी, मेंगलवा वाले शा. माणकचन्द

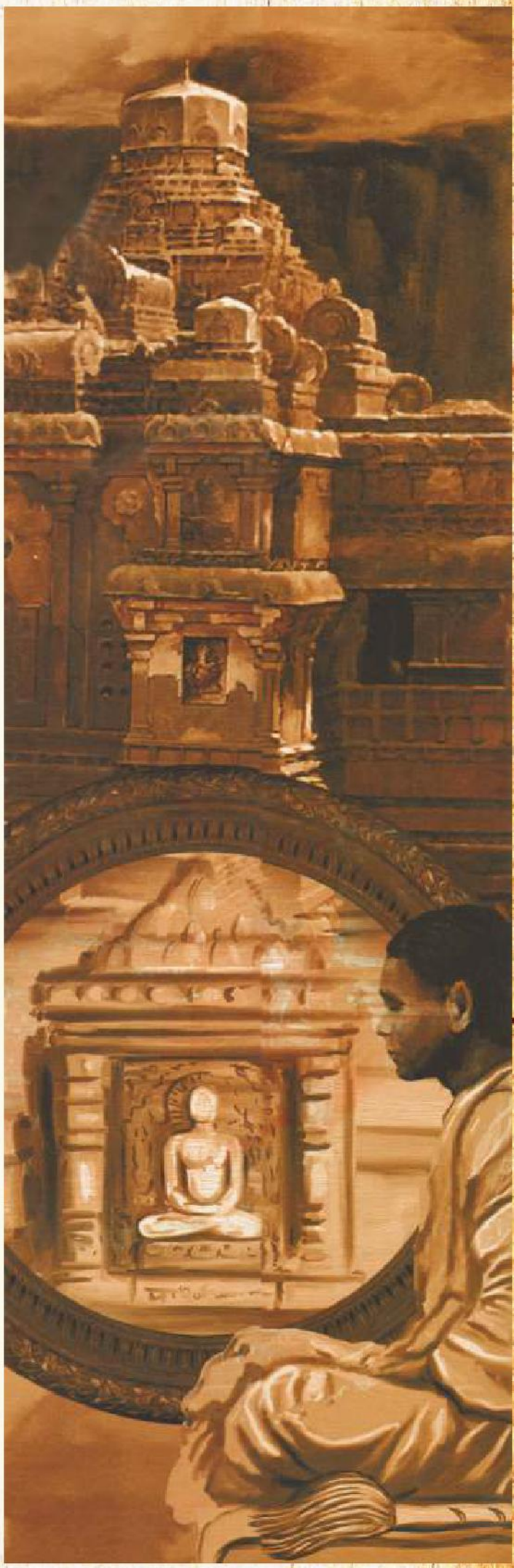

आंबाजी, पोसाणा वाले शा. पूनमचन्दजी अनाजी, शा. हंजाजी मूलाजी, सुराणा वाले शा. केसाजी कुम्भाजी, शा. रूपाजी जेरूपजी, शा. पुखराज पीथाजी, जीवाणा वाले शा. मुता हरकाजी फोजाजी, शा. सवजी धुड़ाजी, शा. सांकलाजी जुहाराजी, तलोड़ा वाले शा. मोतीजी रदाजी, शा. पारसमल टीलाजी, ऊनड़ी वाले शा. सांकलाजी जवानजी, शा. मुलतानजी राजींगजी सीराणा वाले शा. लालाजी वीताजी तथा हरमु वाले शा. जुटाजी अखाजी कायम हुए। इन्होंने अपनी सहूलियत के लिये अलग-अलग नीचे मुताबिक उपसमितियाँ बनाकर उनके द्वारा प्रतिष्ठा कार्य कराया।

१. हिसाब-रक्षण-समिति- इसके मेंबर पांथेड़ी वाले शाहजी अचलदासजी तथा दाधाल वाले समरथमलजी कायम हुए। प्रतिष्ठा में आय व्यय का विगत वार हिसाब लिखना और आवश्यकतानुसार रकम की पूर्ति करना, उसमें कमी नहीं होने देना इनके सुप्रत किया गया।

२. मंदिर संभालन समिति- इसके मेंबर मेंगलवा वाले शा. माणकजी वेनाजी, पोसणा वाले शा. सोनाजी तीकमजी, सुराणा वाले शा. मेघाजी आदाजी, जीवाणा वाले मुता हरकाजी फोजाजी कायम हुए। मंदिर का रिपेरिंग, सोना के कलश ५ मकराणी सफेद पत्थर के कलश और दंड ध्वज तैयार कराके मंगाने का काम इनके सुप्रत किया गया।

३. भोजन प्रबंधकरण समिति- इसके मेंबर मेंगलवा वाले शा. हीराजी रणछोड़जी, शा. हंजाजी खीमाजी, दाधाल वाले शा. दरगाजी फोजाजी, शा. चतराजी पूनमजी, सुराणा वाले शा. समरथमलजी छोगाजी, शा. पुखराजजी पीथाजी कायम हुए। भोजन योग्य सभी सामग्री और इंधन मंगाकर संग्रह रखने का काम इनके सुप्रत किया गया।

४. वरघोड़ा निष्कासन समिति- दाधाल वाले शा. हीमताजी पेमाजी, मेंगलवा वाले शा. पुखराजजी खुमाजी, शा. चुनाजी हीराजी और जीवाणा वाले शा. सवाजी धुड़ाजी इसके मेम्बर कायम हुए। समय-समय पर प्रतिष्ठा में साजबाज के साथ वरघोड़ा निकलवाना, उसके लिए हाथी, घोड़े, रथ, बैंड आदि सब सामग्री मंगाना और चढ़ावा बोलाना कार्य इनको सौंपा गया।

५. प्रतिष्ठा योग्य सामग्री आनयन समिति- इसके सुराणा वाले शा. तपाजी जेरूपजी, कोमता वाले शा. हंजाजी जवानजी, पांथेड़ी वाले शा. शाहजी जुगराजजी, तलोड़ा वाले शा. पारसमलजी टीलाजी मेम्बर कायम हुए। प्रतिष्ठा में पूजा योग्य औषधादि सामग्री लाकर मंगल घर में संग्रह कर रखने का काम इनके सुपुर्द किया गया।

६. परमिट (इजाजत) लाने की समिति- इसके मेम्बर पोसणा वाले शा. सरदारजी परतापजी कायम हुए। इनको जयपुर जाकर राज्य से परमिट लाने का कार्य सौंपा गया।

७. जनता जान माल रक्षण समिति- इसके मेम्बर मेंगलवा वाले शा. हरकाजी लादाजी, शा. हंजाजी भावाजी, जीवाणा वाले शा. सांकलजी जुहाराजी कायम हुए। चौकी बैठाना, पुलिस का इंतजाम करना और पट्टा का प्रबन्ध भी कराने का काम इनके सुपुर्द किया गया।

८. निरीक्षकों के लिए उतारा समिति- इसके मेम्बर मेंगलवा वाले भण्डारी आसाजी मगनाजी और हेमाजी ऊँकारजी कायम हुए। ठहरने के लिए मकानादि स्थान की व्यवस्था करना, रोशनी का प्रबन्ध और लोगों की रक्षा का इंतजाम करना-कराने का कार्य इनको सौंपा गया।

९. मंडप निर्माण समिति- इसके मेंबर मुता सांकलजी को कायम करके उनको प्रतिष्ठा मंडप तैयार कराने का काम सौंपा गया।

१०. इन्द्र-इन्द्राणीकरण समिति- दाधाल वाले शा. केवाजी, ऊकाजी तथा सुराणा वाले शा. छगनजी सरदारजी इसके मेम्बर कायम हुए और महोत्सवारम्भ के दिन से कायम स्नात्रियों एवं स्नात्रिणियाँ तैयार रखने तथा उनके खाने, पीने और नहाने के लिए गरम जल तैयार कराने का प्रबन्ध कार्य इनको सौंपा गया।

११. रोशनी प्रबन्धकारापण समिति- पोसाणा वाले शा. पूनमजी अनाजी और ऊनड़ी वाले शा. हीमताजी करताजी इसके ये मेम्बर कायम हुए। प्रतिष्ठा मण्डप में पट्टा (भोजनालय) में, धर्मशाला आदि में बिजली की बत्तियों का एवं किट्सन लाईट का सर्वत्र यथावत् प्रबन्ध कराने का काम इनको सौंपा गया।

इस प्रकार उपसमितियों की रचना, उनके मेम्बर और उनमें कार्यों का बँटवारा कायम होने बाद पंच अपने-अपने उतारा पर गये। मेम्बर अपने-अपने सुप्रत हुए कार्यों को सम्पन्न करने में जुट गये।

१०. वानोला और नवकारसियों के चढ़ावे

वानोला और नवकारसियों के चढ़ावा बोलने के लिए शुभ वेला में पंचों की जाजम प्रथम वैशाख शुक्ल १४ के रोज हुई। सब पंचों ने घंटा भर परस्पर वार्तालाप करके चढ़ावा बोलने का आदेश दिया। इस समय पर उल्ली दियावटपट्टी के २४ गाँवों का सारा श्वेताम्बर जैन संघ उपस्थित हुआ। चढ़ावे बोलना शुरू हुए। जिन सद्गृहस्थ धर्मप्रेमियों ने चढ़ावे लिये, उनकी लिस्ट इस प्रकार है-

शा. हेमाजी वेजराजजी मिसरीमलजी गेबचन्द जुगराज बेटा पोतारा खीमाजी ओत वास मेंगलवा वालारे तरफ सुं नवकारसी बड़ी, मिति जेठ सुदि १० वार सोम।

संकलेचा शा. सागरमलजी ताराचन्दजी नेणमलजी गुणेशमल जेठमल वस्तीचन्द बेटा पोतरा परागजी ओत वास मेंगलवा वालारे तरफ सुं नवकारसी, मिति जेठ सुदि ११ वार मंगल।

झोटा शा. समरथमलजी हीराचन्दजी चन्दनमलजी डाऊलाल अमीचन्द बेटा पोतरा मुलताणजी ओत वास दाधाल वालारे तरफ सुं पहले वानोला मिति जेठ सुदि ३ ने प्रभातरा।

वीरवाड़िया शा. हिम्मतमलजी चुन्नीलालजी चतरचन्द राणमल मोहनलाल बेटा पोतरा पेमाजी वास दाधाल वाला रे तरफ सुं मिति जेठ सुदि ३ वानोला शामरा।

संकलेचा शा. सागरमलजी कालूचन्द डूंगरमल बेटा पोतरा हिमताजी ओत वास मेंगलवा वालोंरे तरफ सुं वानोला, मिति जेठ सुदि ४ ने प्रभातरा।

संकलेचा शा. लादाजी हरकाजी सांकलजी वागुलालजी, कुन्दनमल, पारसमल, भँवरलाल, लखमीचन्द, मनोहरमल, सुमेरमल जुगराज सोनमल हीराचन्द, चन्दनमल, माँगीलाल बेटा पोतरा सदाजी वास मेंगलवा वालारे तरफ सुं मिति जेठ सुदि ४ ने वानोला शामरा।

चतरगोता बोहरा शा. सुकराजजी भँवरलाल धींगड़मल कानमल बेटा पोतरा जीवाजी ओत वास जीवाणा वालारे तरफ सुं मिति जेठ सुदि ५ ने वानोला प्रभातरा।

बाफणा शा. जवानजी भेराजी सूरजमल बस्तीचन्द घेवरचन्द उम्मेदमल कानमल देवीचन्द बेटा पोता फुसाजी ओत वास ऊनड़ी वालारे तरफ सुं मिति जेठ सुदि ५ ने वानोला शामरा।

संकलेचा शा. नेणमल पारसमल बेटा पोतरा जुठाजी ओत वास मेंगलवा वालारे तरफसुं मिति जेठ सुदि ६ ने प्रभातरा।

गदैया पारख शा. केसाजी सोनमलजी रिखबचन्द थानमल मुन्नीलाल चंपालाल बेटा पोतरा कुंबाजी ओत वास सुराणा वालारे तरफ सुं वानोला मिति जेठ सुदि ६ ने शामरा।

बाफणा शा. हिमताजी मूलाजी बेटा पोतरा करताजी वास ऊनड़ी वालारे तरफ सुं वानोला, मिति जेठ सुदि ७ ने प्रभातरा।

संकलेचा शा. छजाजी माणकजी तिलोकजी हीराचन्द दुधमल मीठामल सिमरथमल खुशालचन्द बेटा पोतरा जवाजी वास मेंगलवा वालारे तरफ सुं वानोला, मिति जेठ सुदि ७ ने शामरा।

श्रीपतराठौर शा. वछाजी मुलतानमल सुकराज सुकरमल तिलोकचन्द मनोहरमल बेटा पोतरा भगाजी वास पांथेड़ी वालारे तरफ सुं वानोला मिति जेठ सुदि ८ ने प्रभातरा।

गाँधीमुथा शा. सिरेमल मिश्रीमल दुगरचन्दजी सुकराजजी लक्ष्मणराज बेटा पोतरा ओत वास सुराणा वालारे तरफ सुं वानोला, मिति जेठ सुदि ८ ने शामरा।

चतरगोता बोहरा शा. रूपाजी ओटमलजी जीतमल चम्पालाल बेटा पोतरा जयरूपजी ओत वास सुराणा वालारे तरफ सुं वानोला मिति जेठ सुदि प्रथम ९ ने प्रभातरा।

पालेचा शा. मुलताणजी खंगारजी सिरेमलजी अनाजी व श्रीमल भानमल रिखबाजी गेबाजी बेटा पोतरा राजींगजी ओत वास ऊनड़ी वालारे तरफ सुं वानोला मिति जेठ सुदि प्रथम ९ ने शामरा।

संकलेचा शा. लादाजी हरकचन्द साकलचन्द वागुलाल कुन्दनमल पारसमल भँवरलाल लखमीचन्द मनोहरमल सुमेरमल जुगराज सोनमल हीराचन्द चन्दनमल मुनीलाल बेटा पोतरा सदाजी वास मेंगलवा वालारे तरफ सुं वानोला मिति जेठ सुदि दूजी ९ ने प्रभातरा।

बालगोता शा. सुरताजी वछाजी जानुजी साहेबजी सिरेमल पुखराज पछाणमल सुकराज रूपचन्द ऊखचन्द देसराज सुकनराज माँगीलाल धनराज थानमल वागुलाल बेटा पोतरा ओत वास मेंगलवा वालारे तरफ सुं मिति जेठ सुदि दूजी ९ ने शामरा।

बालगोता शा. हिमताजी तोलाजी मिश्रीमल बेटा पोता चेलाजी, वास ऊनड़ी वालारे तरफ सुं मिति जेठ सुदि ११ ने बृहछान्तिस्नात्र पूजा भणावारा।

श्रीश्रीमाल यशोधन शा. सुकराजजी धनराजजी बेटा पोतरा परतापजी ओत वास पोणावा वालारे तरफ सुं मिति जेठ सुदि ६ प्रतिष्ठा-वेदिका पर कुम्भस्थापना करवारा।

संकलेचा शा. हजारीमल कुन्दनमल तारचन्द पारसमल कालूचन्द जुगराज बेटा पोतरा अनाजी वास मेंगलवा वालारे तरफ सुं मिति जेठ सुदि ७ ने देवकुलिकादि में मंगलकलशों की स्थापना करवारा।

इस प्रकार कार्यकारिणी समिति के पंचों की प्रथम बैठक में ही चढ़ावों की आशातीत बोलियाँ सफल हो जाने से समस्त संघ में महान् आनन्दोत्साह उमड़ पड़ा और निर्धारित मुहूर्त्त के विषय में सब के हृदय में विश्वास की ऊर्मियाँ लहराने लगी। अहमदाबाद से श्री संघ आमन्त्रण-पत्रिकाएँ छपाकर मंगवाई और उनको देश, परदेश और प्रान्तों के प्रत्येक नगर गाँवों में पहुँचाई। प्रतिष्ठा में विशेष शोभा होने के निमित्त नियत उपसमितियों के द्वारा आहोर से चान्दी का भव्य रथ, समवसरण और बागरा से गाड़ी संयुक्त इन्द्रध्वज मंगाया। ओसियाजी से श्री वीर जिन संगीत मण्डली और देवगढ़ मेवाड़ से हाथी बुलाया। प्रतिष्ठा मण्डप की रचना के वास्ते रूपदास पेंटर को बुलाया गया।

११. भोजन-मण्डप (पट्टे) की रचना

लगभग ४० हजार वर्गफीट भूमि पर चांदनियाँ बांध कर पट्टे को तैयार करा कर, उसी में जल पूर्ण विशाल मजबूत टांका बनवाया गया। रसोई गृह में खाने योग्य विविध प्रकार के मिष्ठ पकवान बनाने का अच्छा प्रबन्ध किया गया। पुरसकारी के लिए बाहर गाँवों के तथा स्वप्रान्तीय गाँवों के ५०० वालंटियरों की कार्य करने की योग्य व्यवस्था की। मौके-मौके पर करीब सौ प्याऊ बैठाई और १०८ बाण पानी से भरे हुए स्थान-स्थान पर फिरते रहने की सुव्यवस्था की-जिससे उत्सव में आने वाले भाई बहिनों को पानी के लिए तनिक भी कष्ट नहीं भोगना पड़े। प्रत्येक उतारा पर जलपूर्ण मटके रखने का काफी इंतजाम किया गया। चारों ओर एक-एक कोश भूमि पर सजग चौकियाँ बैठाने और पुलिस जवानों के घूमते रहने का अच्छा प्रबन्ध किया गया।

१२. ग्रामकूप का जीर्णोद्धार और उसका लेख

भांडवाजी ग्राम के चौहटा में एक प्राचीन और अखूट जलपूर्ण कुआ है जिसका जल गाँव की आम जनता वापरती है और सब ढोर (पशु) भी यहीं पर जलपान करते हैं। उक्त सिलसिले में भांडवा की आम जनता के और श्री महावीर जैन कारखाना के सहाय से इस कुए का भी जीर्णोद्धार हुआ। तत्सम्बन्धी एक शिलालेख उत्कीर्ण कराके लगाया गया, जो नीचे मुजब है-

ॐ आचार्यदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के करकमलों से हुई श्री महावीर जिन मन्दिर की प्रतिष्ठा के प्रसंग में भाण्डवपुर श्री महावीर जैन कारखाना ने तथा ग्राम जनता ने सार्वजनिक हित के लिए थाना और महावीर कुण्डी सहित कुए का जीर्णोद्धार करवाया। इसके नाले को खोलने का चढ़ावा बोलकर चौधरी चमनारामजी बेटा पोता नगाजी ने लाभ लिया। विक्रम संवत् २०१० ज्येष्ठ शुक्ला दशमी १० सोमवार श्री शुभमिति।

१३. प्रतिष्ठा-मण्डप की धार्मिक रचना

नवनिर्मापित बड़ी धर्मशाला के विशाल मैदान में बने हुए हवा बंगला जो तीस फुट चौरस है उसमें प्रतिष्ठा-मण्डप बनाया गया। जिसकी भीतों पर परम पवित्र श्री सिद्धाचलजी, गिरनारजी, अष्टापदजी सम्मेतशिखरजी आदि जैन तीर्थों और सेलड़ीरस वहोरते हुए श्री ऋषभदेव प्रभु के और कायोत्सर्ग में स्थित जिनेश्वरों के उपसर्ग-दर्शक पेंट किए हुए चित्र-चित्रित के नवास के परदे लगाये। सिद्धाचलजी तीर्थों के पर्वतों की सांगोपांग सुन्दर रचनायें की गई, मण्डप के समस्त स्तम्भ और महरापें चमर ढोलते हुए इन्द्रों से, हाथों में पुष्पमालाएँ लिए हुए इन्द्राणियों से और नृत्य करती हुई अपसराओं से सजाये गए। मध्य भाग में चित्रित प्रतिष्ठा-वेदिका, उसके सम्मुख सुन्दर जलफुआरा बनाया गया और जगह-जगह विद्युत के ग्लूपों की हारमालाएँ लटकाई गईं जो विविध रंगों से सुशोभित थी। मण्डप में भारी सजावट इतनी आकर्षक थी कि देखने वालों को तृप्ति नहीं होती थी और निरीक्षक एक आवाज से कह बैठते कि यह भाण्डवा क्या बनाया गया है ? मानो स्वर्गीय विमान ही भूतल पर उतारा है। उसी के एक विभाग में मंगल-घर बना था- जिसमें प्रतिष्ठा और पूजा योग्य समग्र सामग्री संग्रहित थी और समय-समय पर विधि में चाहती वस्तु निकाल कर देने के लिए दो जानकार आदमी नियुक्त किये गये थे।

१४. दशदिनावधिक महोत्सव का प्रारम्भ

प्रतिष्ठा-महोत्सव सम्बन्धी सारा कार्य व्यवस्थित रूप से सम्पन्न हो जाने पश्चात् ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया रविवार से उत्सव का शुभ काम चालू हुआ। इसमें प्रतिदिन का

निर्धारित वेदिका पूजन, जल यात्रा, अखण्ड दीप स्थापन, जवारारोपण आदि १, क्षेत्रपाल आव्हान, यन्त्र स्थापना आदि २, नवग्रह दशदिग्पाल आव्हान, पूजा तत्मंडल स्थापनादि ३, कुम्भ स्थापनादि बीस स्थानक मण्डल पूजन स्थापना ४, मंगल कलश स्थापना, प्रतिष्ठावेदिकोपरि जिनबिम्ब स्थापन, नन्दावर्त-मण्डल पूजनादि ५, सुमेरूरचना, पंचकल्याणोत्सवादि ६, जिनबिम्ब गुरु बिम्ब, स्वर्णकलश, दण्डादि पर मन्त्राक्षर, आलेखन ७, अष्टादश स्नात्राभिषेकादि विधान ८, प्राण प्रतिष्ठा (अंजनशलाका) स्वर्णकलश, स्वर्णदण्ड और जिनबिम्ब स्थापनादि ९, उत्सवान्त में अष्टोत्तर राजाभिषेका बृहच्छान्ति-महापूजा और मन्त्रपूत जलधारा दापन और देवदेवी-विसर्जन १०, इस प्रकार शास्त्रोक्त विधि से दश दिन पर्यन्त क्रमशः क्रियाएँ यथावत कराई गई। क्रिया-कारापक स्वयं आचार्यदेव और उनकी आज्ञा से श्री विद्याविजयादि मुनिवर थे। इसमें जो सावद्य क्रियाएँ थीं उनको सायला निवासी गुरां हेमराजजी कराते थे। इनमें अवान्तर जो क्रियाएँ की गईं वे आदि शब्द से समझ लेना चाहिए।

१५. अंतिम चढ़ावों की बोलियाँ

ज्येष्ठसुदि द्वितीय ९ की रात्रि के ८ बजे कार्यकारिणी समिति के मुख्य मेम्बरों की प्राचीन धर्मशाला के हॉल में जाजम हुई, उस पर सभागत आम श्रीसंघ विराजमान हुआ। उसमें पंचों की रजा से नीचे लिखे मुताबिक चढ़ावे बोले गये-

शा. कुन्दनमलजी मिसरीमलजी सुखराज भँवरलाल जेठमल सांवलचन्द रतनलाल बेटा पोतरा हांसाजी गाडुजी, वास मेंगलवा वालारे तरफ सुं होदे तोरण बांधवारा, हस्ते मिसरीमलजी।

शा. हंसाजी रखबाजी मसराजी वस्तीचन्द सिरेमल गेवरचन्द बेटा पोतरा खसाजी, वास जीवाणा वालारे तरफ सुं माणकथम्भ रोपवारा, हस्ते खुद।

कोमतारा संघवीओ समस्त तरफ सुं श्री महावीरस्वामीजी महाराजरे मन्दिर ऊपर ध्वजा चढ़ावारा निछरावलरा, हस्ते संघवी जुहाराजी वनाजी सेराजी खुमाजी तथा हंजाजी जवानजी तथा तेजाजी कपूरजी।

मुता केसाजी अतमाजी वास बागोड़ा वालारे तरफ सुं श्री महावीरस्वामी महाराजने वधावारा, हस्ते शिवलालजी केसाजी।

शा. समरथमल हीराचन्द डाऊलाल चन्दनमल अमीचन्द बेटा पोतरा मुलताणजी, वास दाधाल वालारे तरफ सुं श्री महावीरस्वामीरे मन्दिररो बारणों खोलवारा, हस्ते खुद।

मुता हाजमल जेठमल रुघनाथमलजी सूरजमलजी सागर- मलजी भानीराम दलीचन्द लालचन्दजी पूनमचन्दजी बेटा पोतरा जोइताजी, वास नगर सीरेमन्दिरजी ऊपर ईण्डो कलश चढ़ावारा, हस्ते मुता जेठमल जी रुघनाथजी रालदर वाला।

शा. मालाजी जेठमलजी मसराजी भलेराज डूंगरमल गेवरचन्द बेटा पोतरा आसाजी, वास सुराणा वालारे तरफसुं सिरेमन्दिरजी ऊपर दण्ड चढ़ावारा।

शा. गोराजी कुन्दनमलजी ओटमलजी सांकलचन्द सुमेरचन्द बेटा पोतरा जुहाराजी, वास रेवतड़ा वालारे तरफ सुं पेली देवरड़ी ऊपर ध्वजा चढ़ावारा, हस्ते ओटमलजी।

शा. वस्तीमलजी दुधमलजी मनोहरमलजी चम्पालालजी बेटा पोतरा हांसाजी, वास सुराणा वालारे तरफसुं पेली देवरड़ी ऊपर ईण्डो चढ़ावारा, हस्ते वस्तीमलजी।

शा. मोतीजी सोनाजी सुमेरजी बेटा पोतरा रदाजी वास तलोड़ा वालारे तरफ सुं पेली देवरड़ी ऊपर दण्ड चढ़ावारा, हस्ते मोतीजी।

शा. गुलराजी मेघराजजी रामकिसनलालजी कुन्दनमलजी बेटा पोतरा जगराजी, वास सुराणा वालारे तरफ सुं दूजी देवरड़ी ऊपर ध्वजा चढ़ावारा, हस्ते गुलराजजी।

शा. समरथमलजी हस्तीमलजी पकराजजी लादाजी भँवरलालजी हेमराजजी सुमेरमलजी बेटा पोतरा छोगाजी वास सुराणा वालारे तरफ सुं दूजी देवरड़ी ऊपर ईण्डों चढ़ावारा, हस्ते समरताजी।

कबदी पूनमजी सागरजी हंजारीमल जी बेटा पोतरा परतापजी, वास सायला वालारे तरफसुं दूजी देवरड़ी ऊपर दण्ड चढ़ावारा, हस्ते हंजारीमलजी।

शाहजी अचलराजजी गुमानमलजी जगराजजी मनोहरमलजी पकराज सुमेरमल भँवरलाल परथीराज बेटा पोतरा भोमराजजी घनराजजी, वास पांथेड़ी वालारे तरफसुं तीजी देवरीड़ी ऊपर ध्वजा चढ़ावारा, हस्ते जगराजजी।

शा. सुकनराज माँगीलालजी मदनलालजी बेटा

पोतरा सरदारजी, वास सुराणा वालारे तरफसुं तीजी देवरड़ी ऊपर ईण्डो चढ़ावारा, हस्ते सुकनराजजी।

शा. गुणेसाजी सोनाजी बेटा पोतरा दीपाजी, वास तलोड़ा वालारे तरफसुं तीजी देवरड़ी ऊपर दण्ड चढ़ावारा, हस्ते गुणेसाजी।

शा. तलाजी सोनमलजी शिवराजजी गवरीचन्दजी इंदरमलजी, वस्तीमलजी गेवरमलजी डूंगरमलजी बेटा पोतरा टेकचन्दजी, वास मेंगलवा वालारे तरफसुं चौथी देवरड़ी ऊपर ध्वजा चढ़ावारा, हस्ते गेवराजी।

मुता भभुताजी पकराजजी धनराजजी वख्तावरमलजी मिश्रीमलजी पारसमलजी हस्तीमलजी पारसमलजी माँगीलालजी जावन्तराजजी बेटा पोतरा चतराजी वास सुराणा वालारे तरफसुं चौथी देवरड़ी ऊपर ईण्डों चढ़ावारा, हस्ते पुखराजजी।

शा. गुणेसाजी भभुताजी भँवरलाल जगराज डूंगरमलजी बेटा पोतरा जेरूपजी, वास सायला वालारे तरफसुं चौथी देवरड़ी ऊपर दण्ड चढ़ावारा, हस्ते भभुताजी।

शा. हंजाजी लुंबाजी समरथाजी भँवरलाल गेवरचन्द शंकरलाल सुमेरमल माँगीलाल बेटा पोतरा छोगाजी, वास सुराणा वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथजी महाराजरे शाल ऊपरे ध्वजा चढ़ावारा।

मुता भलाजी पारसमल पुखराज बेटा पोतरा हेमाजी वास जीवणा वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथ महाराजरे शाल ऊपर ईंड़ों चढ़ावारा, हस्ते भलाजी।

शा. आदाजी मेगा जी रखबाजी सुमेरमल गेबरचंद भँवरलाल बाबूलाल जुटराज बेटा पोतरा रासाजी, वास सुराणा वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथ महाराजरे शाल ऊपर दंड चढ़ावारा, हस्ते खुद।

शा. हंजाजी मसराजी केवलजी वसताजी सिरेमल चुनीलाल रखबचंद गेबरचंद रूपचंद पारसमल चंपालाल भानीराम भीकचंद बाबूलाल सायरचंद बेटा पोतरा खसाजी वास जीवाणा वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथ महाराजरी शाल में त्रिगड़ो विराजमान करवारे चढ़ावारा, हस्ते हंजाजी।

भण्डारी बदाजी अमेदाजी भभुताजी गेवरचन्द लालचन्द माँगीलाल बेटा पोतरा हांसाजी वास सायला वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथ महाराज विराजमान करवारा चढ़ावारा, हस्ते अमेदाजी।

मुता सागरजी हिमताजी सोनाजी नेणमल सुमेरमल तिलोकचन्द पारसमल बेटा पोतरा फोजाजी, वास सायला वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथ महाराज विराजमान करवारा चढ़ावारा।

शा. समरथाजी भगवानजी मनोहरजी बाबूलाल बेटा पोतरा भुताजी, वास सायला वालारे तरफसुं पेली देवरड़ी में श्री मूलनायक महाराज विराजमान करवारा चढ़ावारा।

शा. वसताजी केवलजी सुमेरजी बेटा पोतरा ऊकाजी, वास सायला वालारे तरफसुं श्री मूल नायक महाराजरे डाबी बाजु प्रतिमाजी विराजमान करवारा चढ़ावारा, हस्ते वसताजी।

शा. सरताणजी भोमाजी तगराज पुखराज पारसमल तिलोकचन्द गेवरचन्द भँवरलाल जगराज बेटा पोतरा चेनाजी, वास मेंगलवा वालारे तरफसुं मूलनायक जीरे जीमणी बाजु प्रतिमाजी विराजमान करवारा चढ़ावारा।

शा. जुटाजी मसराजी भँवरलाल गेबीचन्द शान्तिलाल बेटा पोतरा रणछोड़जी, वास दाधाल वालारे तरफसुं श्री शान्तिनाथ महाराज विराजमान करवारा चढ़ावारा।

शा. रनोजी पुखराज मोहनलाल बेटा पोतरा परागाजी वास मेंगलवा वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथजी की डाबी बाजु प्रतिमाजी विराजमान करवारा चढ़ावारा।

मुता पेराजजी मनरूपजी बेटा पोतरा तेजाजी, वास सायला वालारे तरफसुं बीजी देवरड़ी में भगवान विराजमान करवा रे चढ़ावारा, हस्ते मनरूपजी।

शा. सवाजी मलताणजी रखबाजी, शंकरजी हस्तीमल पारसमल गेबीचन्द चम्पालाल सोहनराज भँवरलाल मोहनलाल कानराज बाबूलाल बेटा पोतरा धुड़ाजी, वास जीवाणा वालारे तरफसुं तीजी देवरड़ी में भगवान विराजमान करवारा चढ़ावारा, हस्ते सवाजी।

शा. केवलजी गमानजी पुखराज भँवरलाल सांवलचन्द दाड़मचन्द बेटा पोतरा ऊकाजी वास दाधाल वालारे तरफसुं तीजी देवरड़ी में भगवान विराजमान करवारे चढ़ावारा, हस्ते केवलजी।

मुता खेतमलजी माँगीलाल बेटा पोतरा नरराजजी, वास जीवाणा वालारे तरफसुं तीजी देवरड़ी में भगवान विराजमान करवारे चढ़ावारा, हस्ते खुद।

भण्डारी आसाजी मोटाजी कपूरचन्द बेटा पोतरा मगनाजी वास मेंगलवा वालारे तरफसुं चौथी देवरड़ी में भगवान विराजमान करवारे चढ़ावारा, हस्ते खुद।

शा. इन्दरजी चुनाजी माँगीलाल बेटा पोतरा केसाजी, वास दाधाल वालारे तरफसुं चौथी देवरड़ी में भगवान विराजमान करवारे चढ़ावारा।

शा. हीराजी वसताजी पारसमल जगराज पुखराज कुन्दनमल वख्तावरमल सुमेरमल बेटा पोतरा रणछोड़जी, वास मेंगलवा वालारे तरफसुं चौथी देवरड़ी में भगवान

विराजमान करवारे चढ़ावारा, हस्ते खुद।

शा. मलाजी छगनराज भगवानचन्द भँवरलाल गटमल शान्तिलाल सेसमल बेटा पोतरा हंजाजी, वास सुराणा वालारे तरफसुं नवचोकिया ऊपर ईण्डो चढ़ावारा।

शा. भोमाजी तगराज बेटा पोतरा हिमताजी, वास मेंगलवा वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथ महाराज विराजमान करवारे चढ़ावारा, हस्ते खुद।

शा. सागरजी रुगनाथजी फुलाजी, वास सुराणा वालारे तरफसुं गौतम स्वामी महाराज विराजमान करवारे चढ़ावारा।

संघवी गुणेसाजी वसताजी वास मेंगलवा वालारे तरफसुं श्री विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजजी प्रतिमाजी विराजमान करवारे चढ़ावारा, हस्ते गुणेसाजी।

शा. पीथाजी मसराजी सांवलचन्द भीमराज देवीचन्द कपूरचन्द सोनमल बेटा पोतरा मादाजी, वास मेंगलवा वालारे तरफसुं श्री धनचन्द्रसूरिजी महाराजरी मूर्ति ऊपर नाम खोदवारे चढ़ावारा।

शा. जगराजजी दोलाजी, वास दाधाल वालारे तरफसुं श्री धनचन्द्रसूरिजी महाराजरी प्रतिमा विराजमान करवारे चढ़ावारा ह. जगराजजी।

शा. केवदाजी बाबूलाल दाड़मचन्द बेटा पोतरा सागरजी वास दाधाल वालारे तरफसुं वीरप्रभु का यक्ष-यक्षणी विराजमान करवारे चढ़ावारा

शा. रखबाजी सरूपाजी, वास रेवतड़ा वालारे तरफसुं श्री शंखेश्वरी देवी विराजमान करवारे चढ़ावारा, हस्ते खुद।

शा. नेणमलजी बाबूलाल दीपचन्दजी, वास थलवाड़ वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथ महाराजरे घूमट ऊपर ईण्डों चढ़ावारा।

भन्साली अमेदाजी सरदारजी भीमाजी छोगाजी पारसमल छगनलाल लछीराम दलीचन्द बाबूलाल बेटा पोतरा तलाजी, वास जाब वालारे तरफसुं श्री गौतम स्वामी महाराजरे घूमट ऊपर ईण्डों चढ़ावारा।

शा. रखबाजी लादाजी, वास मेंगलवा वालारे तरफसुं श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजरी छतरी ऊपर ईण्डों चढ़ावारा।

मुता अनाजी हंजाजी चुनाजी छगनाजी बेटा पोतरा आंबाजी, वास मेंगलवा वालारे तरफसुं श्री धनचन्द्रसूरिजी महाराजरी छतरी ऊपर ईण्डो चढ़ावारा।

शा. दरगाजी रखबाजी सरेमल बेटा पोतरा फोजाजी, वास दाधाल वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथ महाराजरे शाल ऊपर ईण्डों चढ़ावारा।

मुता अनाजी हंजाजी चुनाजी छगनाजी बेटा पोतरा आंबाजी, वास मेंगलवा वालारे तरफसुं श्री धनचन्द्रसूरिजी महाराजरी छतरी ऊपर ईण्डो चढ़ावारा।

शा. दरगाजी रखबाजी सरेमल बेटा पोतरा फोजाजी, वास दाधाल वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथ महाराजरे शाल ऊपर ईण्डों चढ़ावारा, हस्ते खुद।

शा. तोलाजी लुम्बाजी जानुजी भोमाजी बदाजी जगराज बेटा पोतरा सजाजी, वास बाली वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथ महाराजरी शाल ऊपर ईण्डों चढ़ावारा, हस्ते खुद।

शा. हंजाजी मूलाजी वास पोसाणा वालारे तरफसुं श्री पार्श्वनाथजीरी शाल ऊपर ईण्डो चढ़ावारा, हस्ते खुद।

शा. लछमणजी सरेमलजी हंजारीमलजी नेमीचन्दजी फूलचन्दजी बेटा पोतरा साद्दूलजी, वास गड़ामोटा राणारा वालारे तरफसुं खेलामण्डप ऊपर ईण्डो चढ़ावारा, हस्ते खुद।

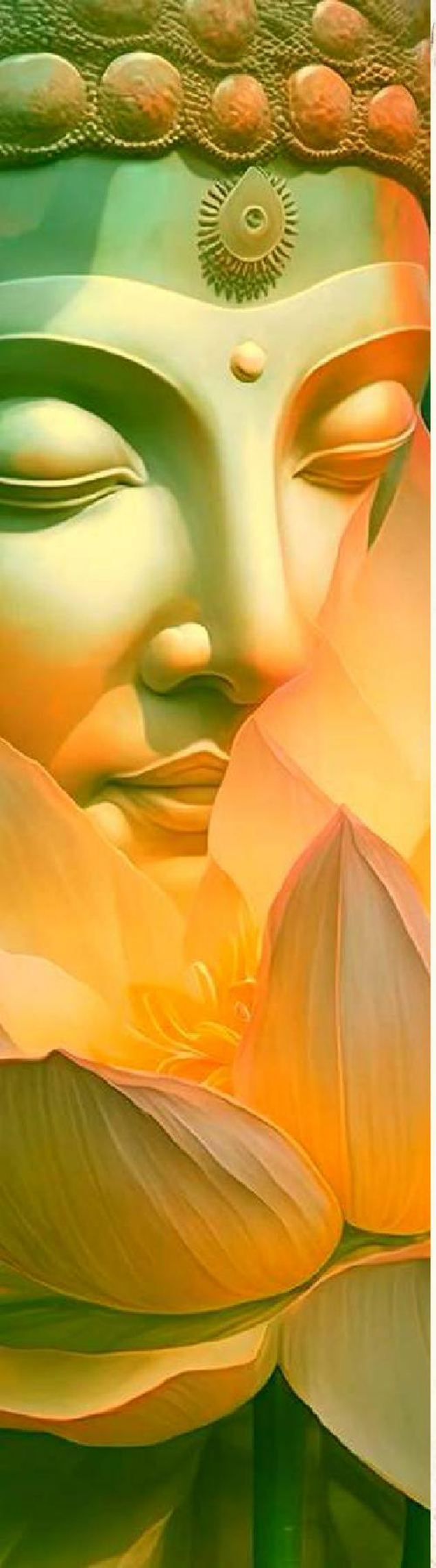

शा. हरकचन्दजी वीरमाजी, वास नांदीया वालारे तरफसुं भगवानरी पेली पूजा करवारे चढ़ावारा, हस्ते खुद।

शा. रूपाजी ओटमलजी रतीमल चम्पालाल बेटा पोतरा जेरूपजी, वास सुराणा वालारे तरफसुं पार्श्वनाथ भगवानरी पेली पूजा करवारे चढ़ावारा।

कबदी पूनमजी रखबाजी भँवरलाल जुहाराजी, वास सायला वालारे तरफसुं भगवानरी अन्तर पूजा करवारे चढावारा।

शा. हंजाजी केवलजी भानाजी बेटा मुलाजी, वास पोसाणा वालारे तरफसुं फूलपूजा करवारे चढ़ावारा।

कबदी भानाजी शिवराज बेटा अनाजी, वास सायला वालारे तरफसुं धूपपूजा करवारे चढ़ावारा।

शा. हंजाजी लालचंद बेटा पोतरा फोजाजी, वास सायला वालारे तरफसुं भगवानरे पखाल करवारे चढ़ावारा।

शा. आसुजी भगुजी, वास बागोड़ा वालारे तरफसुं भगवान रे चामर बींजवारे चढ़ावारा।शा. सुखराज धनराज बेटा परतापजी वास पोसाणा वालारे तरफसुं भगवानरी आरती उतारावारा चढ़ावारा।

शा. धरमाजी सांकलचन्द बेटा पोतरा वीरमाजी, वास तलोड़ा वालारे तरफसुं भगवानरी दूजी आरती उतारवारे चढ़ावारा।

शा. सुखराज भँवरलाल बेटा पोतरा जीवाजी, वास जीवाणा वालारे तरफसुं श्री मंगलदीवो उतारवारे चढ़ावारा।

१६. अंतिम दिन और लोगों का उत्साह

संवत् २०१० ज्येष्ठ सुदि १० चन्द्रवार के दिन स्वर्णकलश, सुवर्ण दण्डध्वज समारोपण और जिनबिम्बादि स्थापन करने का नवांश के मिथुन लग्न में ९.३० बजे का शुभ टाईम निश्चित था। इस शुभ दृश्य के निरीक्षणार्थ लगभग जैन अजैन जनता तीस-पैंतीस हजार उमड़ी हुई थी। इतनी भीड़ थी कि विशाल स्थान होने पर भी वह संकीर्ण बन गया था- जिसमें खड़े रहने के लिए भी स्थान का अभाव सा मालूम पड़ता था। इतनी जनमेदिनी भेली होने पर भी न किसी को कुछ तकलीफ हुई और न किसी की कोई चीज गुम हुई, यही क्रियाकारक का भारी अतिशय समझना चाहिए।

कतिपय विघ्नसंतोषी और ईर्ष्या से दग्ध हृदयवाले कुटिल व्यक्तियों ने इस प्रसंग पर विघ्न खड़ा करने के लिए पंचों पर पत्र लिखे, राज्य तक कागदी घोड़े दौड़ाये और उन्मत प्रलाप मचाया कि पानी खुट जाएगा, कोलेरा फुट निकलेगा और आग लग जाएगी, परन्तु आचार्यदेव के प्रभाव से किसी को कीली का भी खटका नहीं हुआ और आज भी भाण्डवपुर में अमन-चमन की आनन्द तरंगे विलास कर रही है। अन्त में उन्मत प्रलापियों को अति हताश होकर यों ही बैठना पड़ा अस्तु।

निर्धारित टाईम पर चढ़ावा लेने वाले सब धर्मप्रेमी सद्गृहस्थ स्नानपूर्वक शुद्ध वस्त्र धारण करके अपनी अपनी बोली हुई चीजें ग्रहण कर तीर्थाधिप के मन्दिर में उपस्थित हुए। आचार्यदेव ने तत्सम्बन्धी विधि-

विधान कराकर असली वेला में स्व-स्व स्थान पर सुवर्ण कलश, सुवर्ण दण्डध्वज समारोपण और जिनबिम्बादि स्थापन करवाये और उन पर अभिमन्त्रित वासक्षेप डाला। बस उसी समय जय-जयरव की ध्वनि हुई और युवतियों के मंगल गान गूंजने लगे। एक ओर संगीत मण्डली के नृत्य होने लगे और दूसरी ओर यतीन्द्र जैन बैंड मण्डल का बैंड जनता के चित्तों को आकर्षित करने लगा। इस प्रकार भारी शान्ति से सारा कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो गया।

प्रतिष्ठोत्सव में प्रतिदिन दोनों टाईम भारी जलूस के साथ वरघोड़े निकाले जाते थे जिसमें सब से पहले हजार झण्डियों वाला महेन्द्रध्वज, उसके पीछे सजा हुआ हाथी, बाद चांदी का झंझनाहट करता हुआ रथ, उसके पीछे प्रभु की रजतमय पालखी, उसके बाद क्रमशः चांदी, सोने के वेड़े, चांदी का सुशोभित आम्रवृक्ष, छड़ी, घोटा घर, चन्द्र, सूर्य मुखीधर आदि चलते थे। पालखी के चारों ओर श्रावक समुदाय उसके पीछे मंगलगीत गाती हुई श्राविकाओं का समुदाय चलता था। वरघोड़ाओं में कोलाहल को रोकने, टंटा फिसाद को न होने देने और लोगों के जान माल की रक्षा करने के लिये चारों ओर घूमते हुए स्वयं सेवक दल एवं पुलिसपार्टी के युवक भारी तकेदारी रखते थे जिससे बड़ी शान्ति रहती थी।

प्रतिष्ठा में प्रतिदिन उक्त सज-धज से निकाले गये वरघोड़ाओं के चढ़ावे हुए।

प्रतिष्ठा मण्डप में प्रतिदिन हजारों स्त्री-पुरुषों के बीच संगीत मण्डली के ड्रेसों से सजे हुए बालक प्रभु गुणगान मय स्तवना के साथ विविध नृत्य स्थली-भ्रमण, डोरगुंथन, शिक्षाजनक संवाद और ड्रामें लेजिम आदि कलायें दिखलाने तथा बैंड मण्डल के युवक बैंड सम्बन्धी वाद्यों के नाना भाँति के सुन्दर गीतों से लोगों को मन्त्र-मुग्ध करते थे। इन भक्ति-भावों को निहार-निहार कर बुजुर्ग लोग कहने लगते थे कि ऐसा आदर्श प्रतिष्ठा महोत्सव इस प्रान्त में न कभी हुआ और न कभी होगा।

१७. उत्सव में स्थपित जिन बिम्बों के स्थानादि

इंची	बड़ा देवकुलिका नं. १ -	प्रतिष्ठा सम्वत्		घूमटीत्रयशाला में-	
१५	मूल. श्री ऋषभदेवजी	१९९८ बागरा (मारवाड़) में	३७	श्री पार्श्वनाथजी (श्याम)	२००१ आहोर (मारवाड़) में
१३	श्री मल्लिनाथजी	१९९८ बागरा (मारवाड़) में	३१	श्री पार्श्वनाथजी (श्याम)	२००१ आहोर (मारवाड़) में
१३	श्री अजितनाथजी	१९५५ आहोर में	३१	श्री पार्श्वनाथजी (श्याम)	२००१ आहोर (मारवाड़) में
	देवकुलिका नं. २-		२५	श्री पार्श्वनाथजी (श्वेत)	१९९८ बागरा में
१३	मूल. श्री शान्तिनाथजी	१९९८ बागरा में	१९	श्री गौतमस्वामीजी	२००६ बाली-गोड़वाड़ में
११	श्री ऋषभदेवजी	१९९८ बागरा में		मुख्य मण्डप के आलक में-	
११	श्री महावीरस्वामीजी	१९९८ बागरा में	१३	श्री पार्श्वनाथजी (श्याम)	१३५४
	देवकुलिका नं. ३-		२१	श्री शान्तिनाथजी	१९५५ आहोर में
१३	मूल. श्री पार्श्वनाथजी (श्वेत)	२००६ बाली-गोड़वाड़ में		रंगमण्डप के आलक में-	
११	श्री पद्मप्रभस्वामीजी	१९९८ बागरा में	१५	अधिष्ठायक मातंग यक्ष	१९९८ बागरा में
११	श्री अजितनाथजी	१९९८ बागरा में	१५	अधिष्ठायिका सिद्धायिका देवी	१९९८ बागरा में
	देवकुलिका नं. ४-			रंगमण्डप प्रथम छत्री में-	
१५	मूल. श्री नेमिनाथजी (श्याम)	१९९८ बागरा में	१७	श्रीविजयराजेन्द्रसूरिजी	२००१ आहोर में
१३	श्री सुमतिनाथजी	१९९८ बागरा में		रंगमण्डप दूसरी छत्री में-	
१३	श्री चन्द्रप्रभस्वामीजी	१९९८ बागरा में	१५	श्रीविजयधनचन्द्रसूरिजी	२०१० भाण्डवपुर में

१८. पंचतीर्थी और गुरुमूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा

इसी महोत्सव के अन्दर पंच कल्याण विधि विधान होकर चांदी की पंचतीर्थियों तथा गुरुमूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा (अंजनशलाका) हुई जिनके उत्कीर्ण लेख इस प्रकार है-

१. विक्रम सं. २०१० ज्येष्ठ सुदि ९ सोमे सायला वास्तव्य अनाजी सुत सोनमलेन शा. वरदा जी पुत्र केशरीमलस्य श्रेयसे श्री श्री आदिनाथ पंचतीर्थिबिम्बं कारितं श्री भांडवपुर तीर्थोत्सवे प्रतिष्ठितं श्री विजययतीन्द्रसूरिभिः श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छे।

२. विक्रम सं. २०१० ज्येष्ठ सुदि १० सोमे सायलावास्तव्य अनाजीसुतसोनमलेन शा. वरदाजी सुत केशरीमलस्य श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ-जिनपंचतीर्थिबिम्बं कारितं श्री भांडवपुर तीर्थोत्सवे प्रतिष्ठितं श्रीविजययतीन्द्रसूरिभिः।

३. विक्रम सं. २०१० ज्येष्ठ सुदि १० सोमे सायलावास्तव्य अनाजीसुतसोनमलेन शा. वरदाजी सुत केशरीमलस्य श्रेयसे श्री महावीर-जिनपंचतीर्थिबिम्बं कारितं श्री भांडवपुर तीर्थोत्सवे प्रतिष्ठितं श्रीविजययतीन्द्रसूरिभिः श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छे।

४. विक्रम सं. २०१० ज्येष्ठ सुदि १० सोमवासरे मेंगलवा निवासीभिः शा. पिथाजी मिश्रीमलजी, सांबलचंद भमराज देवीचंद कपूरचंद सोनराज जावंतराज मादाजी पुत्र प्रपुत्र श्रीमद्धनचन्द्रसूरिशस्य बिम्बं कारितं भांडवपुरे प्र० श्री विजययतीन्द्रसूरिभिः।

१९. तीर्थाधिप के जिनालय में प्राचीन प्रतिमाएँ और उनके उत्कीर्ण लेख

श्री महावीरप्रभु के मुख्य सौधशिखरी जिनालय में शासनपति तीर्थनायक श्रीमहावीरस्वामी भगवान् की सर्वांग सुन्दर बादामी वर्ण की ३ फुट बड़ी सपरिकर प्रतिमाजी मूलनायक रूप में विराजमान है जिनका प्रभाव एवं चमत्कार प्रत्यक्ष है और यह बारह सौ वर्ष उपरान्त की पुरानी है। इनके दोनों बाजु आस-पास सं. १९५५ फाल्गुन कृष्णा ५ की प्रतिष्ठित श्री शान्तिनाथ प्रभु की भव्य दो प्रतिमाएँ विराजमान हैं जो श्वेतवर्ण २१-२१ इंच बड़ी है। इनके अलावा इस मन्दिर में धातुमय १ चौवीशी, ३ पंचतीर्थी और १ छोटी देवी की मूर्ति भी है। जिनके उत्कीर्ण लेख नीचे मुताबिक है।

१. सं. १२०२ माघ सुदि १३ छाड़ ही कारापिता।

२. सं. १३२५ फाल्गुन सुदि ८ सोमे श्री मल्लिकीयगच्छे सा. आल्हण पुत्र कुलकरणेन श्री पार्श्वनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं सिंहदोलनसूरिभिः।

३. सं. १३५९ (छोटी देवी की मूर्ति पर)

४. सं. १५१६ वर्षे पोष वदि ५ गुरौ थिरापद्रगच्छे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्य. सूरा भार्या श्रियादे सु. नीसलेन भा. नीनादे सुत धीरा काला कुटुम्बयुतेन स्वपितृ-मातृ श्रे. श्री श्रेयांसनाथ चतुर्विंशतिपट्टं का प्रतिष्ठितं श्री विजयसिंहसूरिभिः, थिरापद्रवास्तव्य श्रीः श्रीः।

५. संवत् १७५७ वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्रीथिरापद्रास्तव्य श्रीमालज्ञातीय वृद्ध शाखीय वो. देवराज भा. मातासुत वो. वासा तथा बलादिसुत भोजराजादिसहितेन स्वपुण्यार्थं श्रीसंभवनाथ- पंचतीर्थी कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ. श्री विजयप्रभसूरिपट्टे संविज्ञपक्षीय श्रीज्ञानविमलसूरिभिः।

२०. मुख्य मन्दिर की दहिनी शाला का लेख

विक्रमीय २००७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवासरे श्रीमद्विजय- यतीन्द्रसूरीश्वरस्य शिष्य-मुनि श्रीविद्याविजयोपदेशत आकोली नगरवासिनो लघुशाखीयोपकेशवंशे भंडारी शा. हंसराजश्रावकस्य दत्तक पुत्रेण मिश्रीमलाख्येन निजमातुः शांतादेश्राविकाया आत्मश्रेयसे श्री भांडवपुरजैनतीर्थे शासनाधीश्वरस्य भगवतः श्री महावीरजिनेन्द्रस्य श्री सौधशिखरिजिनालयस्येमा आरसौपलने शाला निर्मापिता निर्मापकानां दर्शकानां च ऋद्धिवृद्धिकल्याणकरा भवन्तु।

२१. जीर्णोद्धार-प्रतिष्ठा का शिलालेख

प्रातः स्मरणीय विश्वपूजीय
श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः।

आचार्यदेव श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरिश्वरजी महाराज के तत्वावधान में सकल जैनसंघ प्रदत्त द्रव्य सहाय से भांडवपुर श्रीमहावीर जैन कारखाना के मारफत दियावट पट्टी के श्वेताम्बर जैनसंघ ने इस तीर्थ जिनालय का सम्पूर्ण जीर्णोद्धार कराया और इसके चारों ओर के कोणों पर शिखरबद्ध एक देवकुलिका एवं घूमटदार तीन देरियां आरसोपल से नई बनवाईं और आचार्यदेव के ही करकमलों से दशदिनावधिक महोत्सवपूर्वक सविधि प्रतिष्ठा करा कर सं. २०१० ज्येष्ठ सुदि १० सोमवार के दिन शुभलग्नांश में मुख्य जिनालय के ऊपर स्वर्णकलश दंडध्वज और देवकुलिकाओं एवं देहरियों में जिन बिम्ब स्थापन तथा स्वर्णकलश, दंडध्वज समारोपण करवाये।

उपसंहार

प्रतिष्ठोत्सव पर दर्शकों की जनसंख्या पैंतीस हजार उपरान्त थी। गाँव में इतने लोगों का समावेश होने के लिये विशाल एवं बड़े मकान मिलने का सर्वथा अभाव था, इससे जनता झाड़ों की छाया में ठहरी हुई थी और गरमी का मौसम था। उनकी जान-माल की रक्षा का ऐसा सुन्दर प्रबन्ध किया गया था कि जनता को किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। जिन डेरों पर जिनको जितना जल आवश्यक हो उतना जल मिल जाता था। प्रति डेरों पर विविध दवाओं की पेटियाँ लिये हुए डॉक्टर घूमते रहते थे। स्वयं सेवकों का दल और पुलिस पार्टी के युवा, रात-दिन चारों ओर घूमते रह करके जान-माल की वास्तविक सुरक्षा करते थे जिससे किसी को अपने माल असबाब की निगाह रखने की आवश्यकता या चिन्ता नहीं होती थी। ऐसे अवसरों पर प्राय: गुण्डे लोग हाथ मार जाया करते हैं, परन्तु यहाँ के वास्तविक बन्दोबस्त के सामने वे लोग तनिक भी कामयाब नहीं हो सके। भांडवाजी के ठाकुर भगवानसिंहजी, उनके छोटे भाई हिम्मतसिंहजी और दईया सोनसिंहजी ये तीनों बड़ी दिलचस्पी से अपने बहादुर आदमियों के साथ सर्वत्र पूरी निगाह रखते थे जिनकी जनसेवा धन्यवाद की पात्र थी।

आहोर वाले श्री गोड़ीपार्श्व जैन युवक मंडल के वालिन्टयर युवकों ने पट्टा में लोगों को व्यवस्थित बैठाकर उनकी पुरसकारी करने की आलादर्जे की सेवा की। इसी प्रकार प्रतिष्ठा-मंडप में धर्मशाला और जिनालय में सब जगह फिरते रह कर बड़ी बहादुरी से सुव्यवस्था रखी। जिससे किसी तरह की असुविधा को स्थान नहीं मिल सका।

जो लोग पट्टा में आरोगते-आरोगते उब चुके थे उनके सुभीते के लिए कार्यकारिणी समिति के पंचों ने एक मोदीखाना खुला रखा था जिसमें आटा, दाल, मसाले, घी, दूध, दही, शक्कर (खांड) और चावल आदि सामान बिना रोक-टोक तोल कर यथा सम्भव मुफ्त में दिया जाता था। ऐसी उदारता इतर प्रतिष्ठोत्सवों में बहुत कम देखी गई है। प्रतिष्ठा में सेवक, भोजक, भट, रावल, यति आदि याचक भी अनेक आये थे, पंचों ने उनको निराश नहीं किया, सब को प्रसन्न करके विदा किया। अन्त में प्रतिष्ठा-महोत्सव में सब तरह की सुव्यवस्था करने-कराने के लिये कार्यकारिणी समिति के और उपसमितियों के पंच मेम्बरों को हार्दिक धन्यवाद देकर विश्राम लिया जाता है, शमिति।

जय जय जयति जैन शासनम्।

श्री वीरचैत्य प्रतिष्ठोत्सव
लेखक : मुनि विद्याविजयजी
(आचार्यश्री विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.)
से साभार

तपस्वी मुनिराज श्री शान्तिविजयजी के जीवन की झाँकी एवं चातुर्मास प्रवचन

लेखक : भँवरलाल सेठिया - भीनमाल

परम योगी मुनिराजश्री शान्तिविजयजी महाराज साहब एक विद्यानुरागी शिष्य मुनिराजश्री जयरत्नविजयजी "विमल" आदि ठाणा का सर्वप्रथम इस क्षेत्र में ऐतिहासिक चातुर्मास अत्यन्त उत्साह के साथ हुआ। इस चातुर्मास के स्मरणीय कार्यकलापों का उल्लेख एवं महान् तनस्वी शान्त योगीराजश्री के जीवन दर्शन की एक झलक प्रस्तुत है।

आदरणीय महाराज साहब श्री शान्तिविजयजी का जन्म सिरोही जिले के मंडार के पास हनादरा के एक गाँव जो "पीथापुरा" कहलाता है, में हुआ था। आपका जन्म समय विक्रम संवत् १९७७ के आस-पास का है।

आपके पूज्य पिताजी का नाम श्री भगवानजी एवं मातुश्री का नाम ज्योतिबाई था। आपके (स्वयं) बचपन का नाम श्री देवारामजी था। आप रबारी अहीर (देवासी) जाति के थे अत: बचपन व्यतीत होने के पश्चात् माल (गायें आदि) प्रात: घर से लेकर वन में चराने के लिये ले जाते और पुन: संध्या समय घर लौट आते थे। ऐसा नित्य प्रतिदिन आपका कार्यक्रम रहता था।

आप बचपन से ही दयालु, नम्र स्वभाव तथा धर्म प्रवृत्ति वाले थे। अतएव मूक पशुओं को कष्ट नहीं पहुंचे इसका अत्यधिक ध्यान रखते थे। आप अपना जीवन सादगी, सुन्दर विचारों तथा मृदुवाणी से व्यतीत करते हुए जा रहे थे। पूर्व भव के संस्कार एवं पुण्य के प्रभाव से आपका मिलन मांडोली नगर के योगी महाराज श्री शांतिसूरीश्वरजी से हुआ। कुछ समय पश्चात् आप गुरुदेव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी आचार्य महाराज साहब के सम्पर्क में आये।

आपकी लघु दीक्षा वि. संवत् २००३ ज्येष्ठ शुक्ला ६ के दिन जालोर जिले के हरजी गाँव में हुई। आपने गुरुदेव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में रहकर लघु दीक्षा स्वीकार की थी। इस समय आपकी अवस्था २६ वर्ष के लगभग थी। करीब एक वर्ष पश्चात् ही आपकी बड़ी दीक्षा थराद (गुजरात) राज्य में विक्रम संवत् २००४ में सम्पन्न हुई।

आपकी धर्म प्रवृत्ति शुरू से ही प्रबल थी। गुरुदेव के प्रति आस्था अटूट थी और जप तप की जिज्ञासा अटल थी अतएव दिनोंदिन प्रगति करते गये। आप गुरुदेव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के साथ विक्रम संवत् २००३ से २०१७ तक कुल पन्द्रह वर्षों तक साथ रहे। गुरुदेव की निश्रा में ही चातुर्मास, धर्म क्रिया एवं आराधना आदि का कार्य व्यवस्थापूर्वक नियमित चलता रहा और इस कार्यकाल में आपने अत्यधिक जीवन का अनुभव प्राप्त किया।

गुरुदेव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के देवलोक हो जाने के पश्चात् आपने अन्य मुनि भगवंतों को साथ दिया। इन समस्त मुनि भगवंतों में श्री विद्याविजयजी बड़े थे, किन्तु आपस में मतमतान्तर होने के कारण आचार्य पदवी में विलम्ब होता जा रहा था किन्तु आप (श्री शांतिविजयजी) निश्चिन्त थे।

अंत में आपने श्री विद्याविजयजी महाराज को आचार्य पद दिलाने के लिये भरसक प्रयत्न किया और शुभ अवसर पर समस्त मुनिराजों को एक मत करवा कर आचार्य पद की पदवी से श्री विद्याविजयजी को सुशोभित कर दिया और पदवी के पश्चात् श्री विद्याचन्द्रसूरिजी के नाम से प्रख्यात हुए। पदवी देने के पश्चात् भी आप काफी समय तक आचार्य म. सा. के साथ रहे और सहयोग देते रहे।

तपस्वी महाराज श्री शांतिविजयजी के साथ श्री जयन्तविजयजी 'मधुकर' ने सियाणा (जालोर जिला), थराद (गुजरात), जोधपुर, भीनमाल आदि में चातुर्मास किये जिसमें धर्म कार्य, आराधना, अट्ठाई महोत्सव, ओली, महापर्व पर्युषण एवं तपस्या आदि की सर्वाधिक प्रगति हुई थी एवं धर्म प्रेमियों को व्याख्यान द्वारा धर्म प्रेरणाएँ देकर जन मानस के हृदय का परिवर्तन किया गया था।

इनके पश्चात् श्री शांतिविजयजी म. साहब ने अपने ही मुनि मंडल के साथ भीनमाल, भांडवपुर, अहमदाबाद एवं लवाणा (गुजरात) में चातुर्मास किया। इन चातुर्मास में लोगों का प्रेम अत्यधिक बढ़ता गया। धर्म प्रवृत्तियों को जागृत करके विद्यानुरागी मुनि श्री

जयरत्नविजयजी ने अपनी मृदुवाणी से धर्म हितोपदेश दिये। जनमानस अत्यधिक प्रभावित हुआ और चातुर्मास में नवकार आराधना, पर्व पर्युषण की विशाल तपस्या एवं अट्ठाई महोत्सव आदि कार्यक्रमों से निवासियों को नई दिशा दी गई। जनमानस एक मत होकर धर्म कार्य में प्रगति करने लगा और चातुर्मास शांति, धर्म प्रवृत्तियों से ओतप्रोत रहा और तप जप तपस्या के कार्यों से परिपूर्ण रहा।

आपका जीवन महान तपस्वी के रूप में है। आपने आज से करीब २२ वर्ष पूर्व एक प्रतिज्ञा (संकल्प लिया था) की थी कि जब तक मैं सम्मेदशिखरजी तीर्थ की यात्रा करके दर्शन नहीं कर लूँगा तब तक अनाज का भोजन ग्रहण नहीं करूँगा। ऐसी कठिन तपस्या के कारण आप केवल मात्र दूध या चाय का ही प्रयोग करते रहे। अब आपने सम्मेदशिखरजी की यात्रा मुनि मंडल के साथ करके अपना प्रतिज्ञा पूरी की एवं पावन तीर्थ पर अनाज का भोजन ग्रहण करके करीब २२ वर्षों की तपस्या को सफल बनाया। धन्य है आपका जीवन और ऐसे महान तपस्वी शांत मुनि योगीराज श्री शांतिविजयजी म. सा. को बारम्बार मेरी वन्दना।

आपका विक्रम संवत् २०३७ का चातुर्मास दीआवट्ट पट्टी में परम पावन महान तीर्थ श्री भांडवपुर पर हुआ था। इस तीर्थ पर चातुर्मास करने के लिये आप भीनमाल नगर से नरता, दासपा, नासोली, कोरा, उनड़ी, पोसाणा तथा मेंगलवा होते हुए भांडवपुर पधारे थे। यह चातुर्मास दीआवट पट्टी ने मिलकर करवाया था। चूंकि इस क्षेत्र में आपका यह सर्व प्रथम चातुर्मास था फिर भी यह चातुर्मास जनमानस में आज भी ऐतिहासिक स्मरणीय के रूप में उभरा हुआ दिखाई देता है।

आपने मेंगलवा गांव से विहार करके चातुर्मास के लिये विक्रम सं. २०३७ ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीय १० वीं के शुभ मुहूर्त्त में प्रातः ११ बजे भांडवपुर तीर्थ में प्रवेश किया था। तीर्थ के अजैन लोगों ने, दीआवट लोगों ने तथा आस-पास क्षेत्र के जन समूहों ने आपका सामेलां, वधामणां एवं जय जयकार के अनेक नारों से स्वागत करते हुए मंदिर में प्रभु के दर्शन करने पधारे। इस प्रकार चातुर्मास के लिये प्रवेश होने के बाद आप चार मास तक के समय में आने वाले यात्रार्थ व्यक्ति, स्थानीय व्यक्ति एवं आस-पास के निवासियों को दर्शन देकर धर्म का प्रसार करते रहे।

इस चातुर्मास के अंदर श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी से पूर्णिमा तक ९ दिन नवकार मंत्र की आराधना की गई। जिसमें ९ दिन तक सदैव एकासनों का तप किया गया। इस आराधना में अनेक नर-नारियों ने भाग लिया। इसी मास में इसके पश्चात् ही श्री महावीरस्वामी का अट्ठम का भी तप किया गया। इन दोनों तपस्याओं के अवसर पर श्री यतीन्द्र जैन बैंड मंडल थराद (गुजरात) से बैंड पार्टी तथा फोटोग्राफर (थराद) से बुलवाये गये थे। चातुर्मास में गुरु सप्तमी का पोष शुक्ला सप्तमी के दिन मेला का सादृश्य उपस्थित हुआ था। दूर दूर के लोगों ने यहाँ आकर तपस्वी मुनिराज सा. की निश्रा में गुरु सप्तमी का उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाकर अपनी यात्रा को सफल बनाई। प्रभु श्री महावीर स्वामीजी की चमत्कारिक प्रतिमाजी के पावन दर्शन, सेवा पूजा तथा शाम को भक्ति एवं श्री राजेन्द्र- गुरुदेव की आराधना करके गुरु सप्तमी को सफल बनाया। चैत्र शुक्ला सप्तमी से पूर्णिमा तक कुल ९ दिन की ओली आराधना श्री वस्तीमल भला बागोड़ा निवासी की ओर से करवाई गई। ओली में अनेक भक्तों ने आराधना करके लाभ उठाया। इस पावन अवसर पर गुड़ा बालोतान से संगीत मंडल बुलाया गया था तथा सम्पूर्ण धर्मशाला और मंदिर में बिजली की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जो कि आस-पास के लोगों के लिये यह कार्यक्रम एक अद्भुत सा प्रतीत हो रहा था।

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में नवकारसी की स्वीकृति हुई। जिसका लाभ श्री वस्तीमलजी भलाजी बागोड़ा निवासी ने लिया। इस अवसर पर दीआवट्ट पट्टी के लोग, जैन अजैन एवं अन्य स्थानों के अनेकानेक व्यक्ति आने से कार्यकर्ताओं का उत्साह दुगुना हो गया। ऐसा विशाल, सुन्दर तथा अपूर्व कार्य सम्पूर्ण चातुर्मास के कार्यक्रमों से भी अद्वितीय रहा। इस अवसर पर वरघोड़ा हाथी तथा घोड़ों को सजाकर जुलूस निकाला गया। यह जुलूस धर्मशाला के सामने बड़े दरवाजे से बाहर प्रस्थान करता हुआ गांव में प्रवेश करके पुनः मंदिर के पीछे के गेट से मंदिर में प्रवेश किया। जन समूहों के विशाल जुलूस से ऐसा मालूम होता था कि मानों एक नया नगर बस गया है और उसी की यह समस्त प्रजा आनन्दित होकर धर्म कार्य को मना रही है।

रात्रि के समय प्रकाश की सुन्दर व्यवस्था करने के लिये बाहर से बिजली वाले को बुलवाया गया था। बिजली की सजावट सम्पूर्ण धर्मशाला में की गई। मंदिर को विशेष रूप से सजाया गया और रंग बिरंगी रोशनी अपनी अलग ही छटा बिखेर रही थी। धर्मशाला के अन्दर से बाहर के भाग, मुख्य गेट जहाँ तक प्याऊ है इस प्रकार छोटे छोटे बल्बों से सजाया गया था जो रात्रि में इन रंग बिरंगी रोशनियों से मंदिर और धर्मशाला ऐसी लग रही थी मानों गगन का तारा मण्डल भांडवपुर के मंदिर पर उतर कर अपने ऐश्वर्य (प्रकाश) को प्रभु के चरणों में अर्पित करके विश्व विंद्य प्रभु महावीर की सेवा कर रहा है।

रात्रि में संगीत मंडली द्वारा भक्ति का रंगारंग कार्यक्रम रखा गया। जिसने भी कार्यक्रम देखा लोट-पोट हो गया। हँसी के फव्वारों से सम्पूर्ण धर्मशाला आनंदित हो रही थी। अलौकिक, सुन्दर तथा नई-नई तर्जों से मृदुवाणी में भावभरे गीत, स्तवन तथा कथाएँ सुनाई जा रही थी। लोग मंत्रमुग्ध होकर शांति के साथ सुन रहे थे। ऐसा अनुपम कार्यक्रम रात्रि के करीब १ बजे तक चलता रहा। इस प्रकार आपकी निश्रा में नवकारसी का कार्यक्रम प्रातः से लेकर रात्रि के अन्त तक विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसकी चर्चा आज भी जनमानस में प्रचलित है।

चूंकि आपका दीआवट पट्टी में यह पहला ही चातुर्मास था और यह भी केवल अकेला (स्वयं के मुनि मंडल सहित ही)। किन्तु चातुर्मास का ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया त्यों-त्यों लोग आपके सम्पर्क में आकर प्रभावित होते गये। आप तो केवल जप, तप तथा धर्म क्रिया में ही लीन रहते थे किन्तु चातुर्मास के (अन्त तक यानी) पश्चात् इस क्षेत्र के समस्त जन आपके व्यक्तित्व को देखकर आश्चर्य चकित ही रह गये।

श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रस्ट का गठन

भांडवपुर तीर्थ की व्यवस्था एवं पेढ़ी का कार्य सुचारू रूप से चलाने के लिए आस पास के ग्रामों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने मिलकर एक संस्था बनाई थी जो 'श्री जैन श्वेताम्बर महावीर पेढ़ी भांडवपुर तीर्थ' के नाम से अब तक कार्य करती आ रही है।

यह संस्था दीर्घकाल से व्यवस्थित कार्य निरन्तर गति से इस तीर्थ में कर रही है, किन्तु संस्था के नियम, शर्तें, विधान आदि कुछ भी लिखित रूप में नहीं बनाये गये थे।

तपस्वी महामुनिराज त्यागी तथा शांत मूर्ति श्री शांति विजयजी म. सा. के चातुर्मास में संस्था के लिखित विधान आदि की कमी महसूस की गई और योगी मुनिराज साहब की निश्रा में उक्त संस्था के उद्देश्य, सदस्यों के अधिकार और कर्त्तव्यों का लिखित विधान बनाया गया।

इस विधान में संस्था का नाम- 'श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रस्ट भांडवपुर तीर्थ तथा कार्यालय श्री भांडवपुर तीर्थ पर ही रखा गया जो पूर्व में भी ऐसा था।

इस संस्था के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

१. जैन समाज का आध्यात्मिक, भौतिक, सांस्तिक, शैक्षणिक तथा धार्मिक क्रियाओं में उत्थान करना।

२. इन सब में योगदान देकर मार्गदर्शन करना।

३. समस्त प्राणी मात्र की सेवा करना।

अ. जैन मंदिरों का निर्माण, जीर्णोद्धार कराना तथा प्राचीन गौरव को अखंड रखना एवं इस कार्य को सुचारू रूप से चलाने की व्यवस्था करना।

ब. दर्शनार्थ आये यात्रियों की समुचित व्यवस्था करना। उद्देश्यों की पूर्ति के लिये कार्यों का उल्लेख करना यथा-धार्मिक अवसरों

पर चढ़ावे की बोली बोलना, चन्दा एकत्रित करना तथा दान प्राप्त करना, जमीन तथा जरूरी सामान खरीदना और जरूरत नहीं होने पर पुनः बेचना।

साधारण सभा- वर्ष में चैत्र सुदी १ एकम को प्रति वर्ष सभा होगी तथा आवश्यकता होने पर पदाधिकारियों द्वारा कभी भी बुलाई जा सकेगी। निम्नांकित गाँवों से ३१ सदस्य चुने जायेंगे। गाँवों के नाम (१) कोमता, (२) देता (३) पांथेड़ी, (४) दादाल, (५) मेंगलवा, (६) पोषाणा, (७) सुराणा, (८) जीवाणा, (९) तिलोड़ा, (१०) उनड़ी आदि।

ट्रस्ट- ट्रस्ट के ९ सदस्य चुने जायेंगे। ये लोग ट्रस्ट के पदाधिकारी कहलायेंगे। इनमें एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष, दो मंत्री, दो कोषाध्यक्ष तथा तीन मंत्री जो प्रचार करेंगे।

पदाधिकारियों के अधिकार- अध्यक्ष- (१) कार्यकारिणी व साधारण सभा की अध्यक्षता करना। (२) पाँच सौ रुपये के खर्च तक की स्वीकृति प्रदान करना। (३) मुनीम तथा कर्मचारियों की मंत्रियों की राय के अनुसार नियुक्ति करना, कर्मचारी हटाना, वेतन वृद्धि करना तथा अवकाश आदि स्वीकृत करना। (४) विधान की व्याख्या अध्यक्ष करेगा एवं इसका फैसला सर्वमान्य होगा। शास्त्रीय मामलों में त्रिस्तुतिक संघ के श्री सूरीश्वरजी या विधान मुनिराज की आज्ञा से कार्य करेगा। (५) संस्था की आर्थिक व्यवस्था के इन्तजाम की देखरेख तथा संस्था के उद्देश्य की पूर्ति के लिये कार्य करना। (६) स्वीकृत बजट के अतिरिक्त पाँच सौ रुपये तक के खर्च का कार्यकारिणी द्वारा स्वीकृति लेना।

उपाध्यक्ष के कार्य- अध्यक्ष की अनुपस्थिति में यह कार्य करेंगे।

मंत्री- (१) साधारण तथा कार्यकारिणी सभा बुलाना। (२) कार्यालय के लेखों की जाँच करना। (३) संस्था की तरफ से पत्र व्यवहार करना। (४) वार्षिक रिपोर्ट और बजट कार्यकारिणी से स्वीकृत कराकर

साधारण सभा में प्रस्तुत करना।

कोषाध्यक्ष- (१) संस्था के आय-व्यय का हिसाब रखना तथा संस्था के लिए आवश्यकतानुसार आर्थिक साधन जुटाना। (२) हिसाब किताब की ऑडिट करना।

प्रचार मंत्री- संस्था का व्यापक प्रचार करना एवं भारतवर्ष में सर्वत्र इस तीर्थ की प्रसिद्धि कराना।

जल व्यवस्था-

इस तीर्थ पर कुओं से पानी निकाल कर पीने की व्यवस्था थी। इस मंदिर में भी एक पाताल फोड़ कुआ खुदा हुआ है किन्तु इसमें तथा आसपास के गाँवों में पीने का पानी कुछ खारा एवं भारी है जो पाचक नहीं है।

भूंडवा गाँव में पानी की कमी है जिसके कारण अधिकतर ग्रामीण निवासी तीर्थ के कुए से ही पानी भरते हैं। गाँव में एक कुआ है किन्तु पानी अधिक गहरा नहीं होने के कारण वर्षा पर ही गाँव वालों को निर्भर रहना पड़ता है।

तीर्थ के बाहर पूर्व दिशा में पानी के लिए एक बड़ा हौज बनाया हुआ है तथा दो तीन और पानी के नल लगे हुए हैं। इसमें पानी अन्दर से कुए से पाईप लगाकर बाहर लाया जाता है। क्योंकि अन्दर कुए पर पानी निकालने का इंजन लगा हुआ है। इस प्रकार की व्यवस्था तीर्थ पर लगने वाले मेलों के लिये यात्रियों की सुविधा हेतु की गई है। इस कुए की एक दो बार खुदाई भी की गई जिसके फलस्वरूप अब इसका पानी पहले जितना खारा नहीं है। इसके अतिरिक्त यात्रियों को अत्यधिक सुविधा तथा तीर्थ के विकास के लिए वर्तमान में जलदाय विभाग द्वारा पानी की सुविधा सर्वत्र गाँव में हो जाने के कारण मेंगलवा से पानी, पाईप द्वारा भूंडवा तीर्थ तक लाकर मीठे पानी की व्यवस्था की गई है। इससे यात्रियों तथा इस गाँव के ग्रामीण निवासियों को राहत मिली है। यह पानी तीर्थ के कुए से ठीक है तथा पाचक भी है। मेंगलवा गाँव में जलदाय विभाग द्वारा पानी की समुचित व्यवस्था हो जाने के कारण अब भूंडवा तीर्थ में मेले के समय हजारों संख्या में आये यात्रीगणों को किसी भी प्रकार की पानी की असुविधा नहीं रहती। पानी की समस्या पूर्णतः समाप्त हो चुकी है। अन्यथा हर मेले के समय पानी की विकट समस्या उत्पन्न होती ही रहती थी।

तीर्थ का विकास

१. तीर्थ का प्रचार- इस प्राचीन तीर्थ के प्रचार के लिये गत दो वर्षों से अत्यधिक प्रयत्न किये जा रहे हैं। इस विकास का प्रमुख श्रेय शांतिमूर्ति त्यागी एवं तपस्वी मुनिराजश्री शांतिविजयजी म. सा. तथा इनके शिष्य श्री जयरत्नविजयजी को है। आपके यहाँ पर चातुर्मास होने के पश्चात् आपने तीर्थ के विकास की बागडोर अपने हाथ में ली तथा तीर्थ के ट्रस्टियों का ध्यान भी इस ओर आकर्षित करवाया। जिसके फलस्वरूप जालोर, मोदरा, सायला तथा पांथेड़ी से आने-जाने वाली निजी बसों का इस मार्ग पर अधिक आवागमन हुआ। मुख्य मार्ग के चौराहों पर तीर्थ के नाम के बड़े-बड़े पट्ट (बोर्ड) बनवाकर लगाये गये एवं दैनिक पत्रों, पुस्तकों तथा साप्ताहिक अखबारों में तीर्थ के विज्ञापन देकर तीर्थ की प्रसिद्धि को ओर अधिक बढ़ाई गई। तीर्थ स्थल पर समस्त धर्मशाला, मंदिर में पुनः रंग करवाया गया। नई पेढ़ी मंदिर के पूर्व भाग में बाहर प्याऊ अन्दर उत्तर दिशा में कई कमरे जिसें हर प्रकार की यात्रियों के लिये सुविधामय कमरे बनवाये गये। विशाल भोजनशाला आदि की व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त और भी कई सुधार किये जा रहे हैं। यह समस्त सुविधा भक्तगण दर्शनार्थ आये यात्रियों के लिए की गई है और मेले के समय तो सुविधाओं में चार चांद और भी लगा दिये जाते हैं।

भूंडवा गाँव में विद्युत नहीं आई है। अतः इस हेतु भी ट्रस्ट अथक प्रयास कर रहा है आशा है यह सुविधा भी निकट भविष्य में अतिशीघ्र हो जायेगी। ट्रस्ट के अथक परिश्रम से भूंडवा गाँव में पोस्ट ऑफिस (छोटा) का भी श्री गणेश हो चुका है। इसके पूर्व डाक आदि मेंगलवा से आदमी लेकर आता था और भूंडवा में वितरण कर पुनः मेंगलवा चला जाता था। इससे यहाँ के ग्रामीण निवासियों को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

निर्माण या रचनात्मक कार्य

आपका चातुर्मास होने के पश्चात् मंदिर के आसपास एवं बाहर परकोटे के भीतर काफी निर्माण कार्य करवाया गया।

मंदिर के दक्षिणी भाग में एक नई पेढ़ी बनवाई गई। इसी धर्मशाला के उपर व नीचे के कमरों की मरम्मत का कार्य पूर्ण करवा कर सफेदी से सुन्दर पुताई करवाई गई एवं नीचे की ओर रंग करवा कर कमरों के सामने दानदाताओं के नाम लिखवाये गये। नई पेढ़ी के सामने ही दो कमरे बनाकर रंग करवाया गया तथा नई पेढ़ी को भी रंगवा कर ऊपर सुन्दर नाम लिखाया गया।

भोजनशाला के कमरों में सुधार कर व्याख्यान हॉल बड़ा बनवाया गया। इससे व्याख्यान का लाभ अधिक

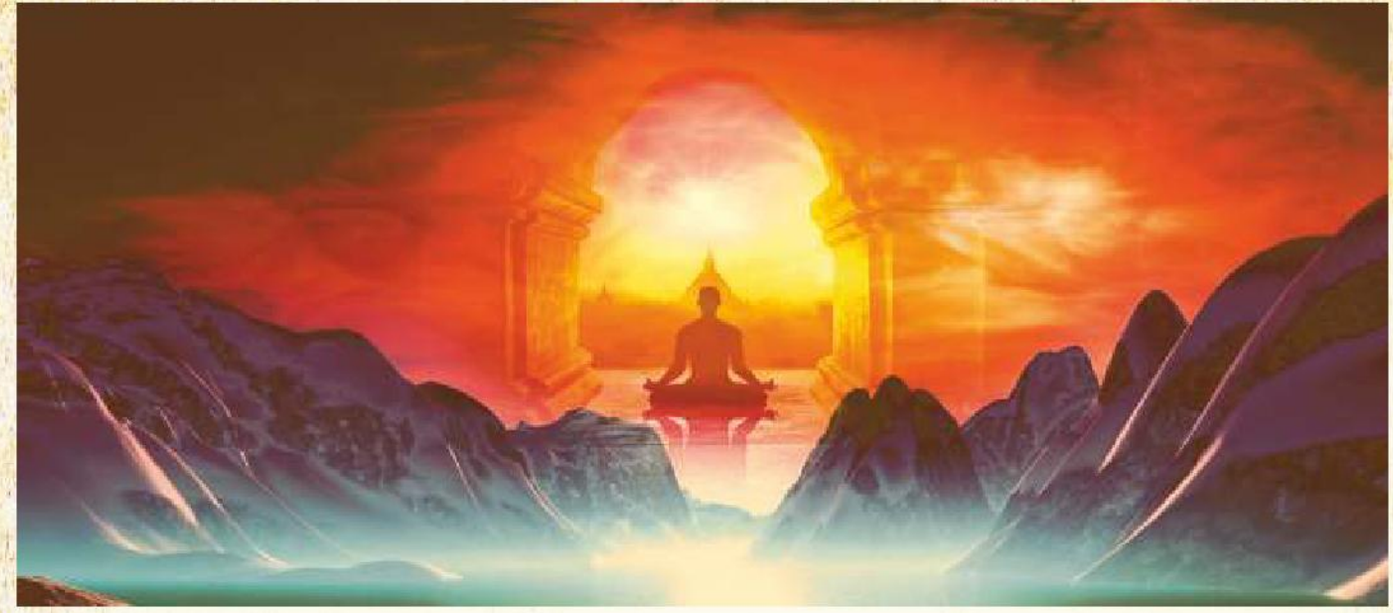

लोग उठा सकते हैं।

मंदिर के बाहर पूर्व दिशा में पड़ी हुई जमीन में उत्तर तथा पूर्व दिशा में दो धर्मशालाएँ बनवाई गई हैं जिनमें हर प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध है। चूंकि अभी निर्माण कार्य आधे से अधिक पूर्ण हो चुका है। अत: शीघ्र ही पूरा होने पर इस पर भी रंग आदि करवा कर दानदाताओं के नामों का अंकन किया जायेगा। इसी के सामने दक्षिण दिशा में दादावाड़ी के लिए जगह सुरक्षित है। अतएव इसके पश्चात् यहाँ का कार्य भी शुरू किया जाएगा।

बाहर जाते समय पहली गेट के बाद, सड़क के पास एक सुन्दर प्याउ बनाई गई है। जिसका समस्त कार्य पूर्ण हो चुका है। धर्मशाला के बिल्कुल बाहर एक पक्की पानी के लिए प्याऊ बनाई गई है जिससे राहगीरों की प्यास बुझती है। यहाँ पर एक व्यक्ति प्रात: से सांयकाल तक रहता है। जो राहगीरों एवं आने जाने वाली बसों के यात्रियों को भी पानी पिलाता रहता है।

मंदिर एवं धर्मशाला में चित्रकार द्वारा जगह जगह नाम आदि लिखवा कर दान देने वाले व्यक्तियों को प्रकाश में लाया गया है। इससे अन्य लोगों को भी दान देने की प्रेरणा मिलती है।

बड़े-बड़े बोर्ड बनवा कर तीर्थ की प्रसिद्धि करने के लिए चौराहों पर तथा मुख्य सड़क के मोड़ पर बोर्ड लगवाये गये हैं। ताकि अनभिज्ञ यात्री भी यहाँ आकर प्रभु के दर्शन सेवा पूजा से लाभ उठा सके।

मेले के अवसर पर आने वाले अत्यधिक यात्रियों के लिये भोजन बनाने हेतु मंदिर से बाहर आते समय उत्तर दिशा में विशाल भूमि को टीन से ढककर तीन चार भट्टियाँ खोद ली है, जहाँ हजारों जन समूहों का भोजन सुविधा से तैयार हो सकता है। पास ही तैयार सामग्री को रखने के लिए भंडार आदि भी बनवाये गये हैं। जिसमें खाने की वस्तुएँ आदि सुरक्षित रह सके।

यह समस्त निर्माण कार्य आप ही के सदुपदेश से किया गया है और भविष्य में भी इस पावन तीर्थ की उन्नति के लिए आपके उपदेश से रचनात्मक कार्य करवाया जाता रहेगा। आपका यह सम्पूर्ण सहयोग अत्यन्त सराहनीय है जो जन मानस के हृदय से कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

तीर्थ विकास एवं समाज अग्रणी

* शाहजी श्री अचलराजजी, गुमानमलजी, जुगराजजी, जावन्तराजजी, सुमेरमलजी-पाँथेड़ी * शा. समरथमलजी झोटा-दाधाल * शा. समरथमलजी अन्दाणी-सुराणा * शा. पुखराजजी पुनमाजी-दाधाल * शा. मनोहरमलजी अन्दाणी-सुराणा * शा. मेघराजजी जुगराजजी वोहरा-सुराणा * शा. भँवरलालजी कुन्दनमलजी बालड़-मेंगलवा * शा. बाबूलालजी लादाजी संकलेचा-मेंगलवा * शा. शिवराजजी धुड़ाजी वोहरा-जीवाणा * शा. भेरमलजी हुकमाणी-पाँथेड़ी * शा. ओटमलजी बन्दामुथा-पाँथेड़ी * शा. मिश्रीमलजी संघवी-कोमता * शा. गणेशमलजी बाफना-ऊनड़ी * शा. गणेशमलजी मिठाड़िया वोरा-ऊनड़ी * शा. जुगराजजी ओबाणी-पोषणा * शा. तिलोकचन्दजी-देता * शा. साँकलचन्दजी मुणोत-तिलोड़ा आदि।

मर्यादाओं का पालन करना है

(दिनांक १७-२-१९८४ को सूरि पद से अलंकृत होने के बाद दिया गया प्रवचन -सं.)

आचार्य जयन्तसेनसूरि

हमारी इस भारत भूमि पर हर युग में युग-युग से हमारे अपने देष के पूरे आध्यात्मिक जीवन एवं स्वयं के कल्याण का मार्ग प्रषस्त करने वाले जैन षासन के २४ तीर्थंकर हुए। इनमें अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। इनके षासन में हम अपने जीवन को सजाने संवारने के लिए तत्पर रहते हैं। परमात्मा महावीरदेव की पावन वाणी, जिस वाणी ने तड़फते जीवों का आन्तरिक कल्मष धोया है। इस

वाणी की शक्ति ने संसार के मन से निर्मल बने जीवों का मनोबल बढ़ाया है। आत्मा से कमजोर हो गये जीवों का आत्मबल बढ़ाया है, भटकते जीवों को अटकाया है और ऐसी पावन वाणी, ऐसी पावन छांव के अन्दर अपन देख रहे हैं २५०० वर्ष बीत गये हैं। अनेक धर्मधुरन्धर योगीराज हुए, ज्ञानी-ध्यानी गुरुजन हुए, तपस्वी और त्यागी आचार्य भगवन्त हुए। इन्होंने परमात्मा की वाणी का प्रभाव अपने तक लाकर छोड़ा। उनकी पावन वाणी को सुनकर देश में रहने वाले, समाज में रहने वाले, परिवार में रहने वाले तमाम जीवों को उन्होंने राष्ट्रधर्म समझाया,, समाज धर्म समझाया, पारिवारिक धर्म समझाया और आत्मधर्म भी समझाया। राष्ट्रधर्म के नाम पर राष्ट्रधर्म को सुनकर, राष्ट्रधर्म की बात देखकर मेवाड़ के भामाशाह याद आते हैं। राष्ट्रधर्म की बात सुनते हैं तो देश के अन्दर अनेक विरले पुण्यवान पुरुष हमारे सामने आते हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया था। ऐसे हमारे धर्मवीर, ऐसे समाज में सारी की सारी व्यवस्था में सर्वस्व लगाने वाले सारे केवल जैन ही नहीं अपने धर्म पर अपने धन का सदुपयोग करने वाले इतिहास के पन्ने पलटने पर महान व्यक्ति याद आते हैं। वस्तुपाल, तेजपाल, विमलशाह जैसे उन नरवीर का नाम याद आता है, इतिहास के पृष्ठों पर जिन्होंने पूरे समाज का भेदभाव रखे बिना हर मानव, समाज के लिए अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग करके जिनेश्वरदेव की वाणी, गुरुजनों के उपदेश को इस जगत के अन्दर साकार करके दिखा दिया। अब हम देखते हैं श्री आनन्दघनजी महाराज, उपाध्यायश्री यशोविजयजी महाराज जिन्होंने अपने जीवन के अन्दर त्याग पथ पर चलकर हमारे अपने पथ को प्रशस्त किया है। आचार्य श्री हरिभद्रसूरिजी, आचार्य बलदेवसूरिजी, आचार्य सिद्धसेनसूरिजी जिन्होंने हमारे अपने इस शासन के अन्दर परमात्मा की वाणी को जाज्वल्यमान बनाये रखने का जीवन-भर पुरुषार्थ करने में कोई कमी नहीं रखी है। ऐसे परमात्मा की पावन वाणी का यह सुन्दर प्रकाश पाने के बाद निश्चय ही सृष्टि का जीवन इसी तरह से प्रकाशमान रहना चाहिए। प्रकाशमान जीवन बनाने के लिए व्यक्ति को अपने जीवन का निरीक्षण करना होगा। अपनी जीवन की मर्यादाओं का नियमन करना होगा। अपनी मर्यादाओं में उसे रहना होगा और मर्यादासीन होकर के अपने आपको अपने जीवन विकास के अन्दर लगाना होगा। जीवन विकास के पथ पर समय-समय पर हमें हमारे ऐसे क्रियोद्धारक आचार्य भगवन्त हुए जिन्होंने क्रिया का समय-समय पर उद्धार किया है। हमारे सामने वर्तमान में बासवीं सदी के प्रबल समर्थक समर्थ शासन प्रभावक जिनका ज्ञान अलौकिक जिनका ध्यान अद्भुत, जिनका अपना सारा चारित्र उत्कृष्ट और जिनके जीवन उद्देश्य सदा निर्दोष रहे हैं। ऐसे परम उपकारक गुरुदेव भगवन्त श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज हुए हैं। जिनका हमें हमारे जीवन के अन्दर विकास करने के लिए मार्गदर्शन मिला। वो हमें मार्ग दिखाकर चले गये। चले गए नहीं, गुरुदेव आज भी मौजूद हैं, हमारे सामने प्रत्यक्ष हैं। हम याद करें कि हमारे सामने हाजिर हैं। जिन्होंने शासन, संघ, समाज ही नहीं पूरे देश का हित कल्याण और प्रेम का लक्ष्य रखा और सारे देश की जनता को समय आने पर उनके धर्म चारित्र का उपदेश दिया। ताज्जुब करेंगे गुरुदेव वैदिक समाज में प्रवचन देते थे, जगह-जगह पर उन्होंने गीता पर भी अद्भुत प्रवचन दिए। कहीं-कहीं के लोग हमें यहाँ आकर कहते हैं कि वहाँ भी श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज आये थे, हमको गीता का उपदेश दिया। जहाँ कहीं भी गए जिस किसी प्रकार का श्रोता मिला, श्रोता की भावना के अनुरूप गुरुदेव ने जगत के जीवों को कल्याण का पथ बतलाया। हमारे पूर्वाचार्य श्रीमद्विजय धनचन्द्रसूरीश्वरजी हुए जिन्हें लोग प्रज्ञा चक्रवर्ती के नाम से जानते हैं। जिनका ज्ञान, जिनकी कल्पनाशक्ति और जिनका अपना चिन्तन वे सब इतना असाधारण था कि जिसके सामने अच्छे-अच्छे

विद्वान हतप्रभ हो जाते थे और उसी के क्रम में उनके बाद शान्तमूर्ति, साहित्य विशारद, आचार्य भगवन्त हुए हमारे श्रीमद्विजय भूपेन्द्रसूरीश्वरजी जिनका कितना अबाध ज्ञान था, जिनकी कितनी अलौकिक ज्ञान प्रतिभा थी। संकृस्त के काव्य शास्त्र में वे इतने निष्णात थे कि दूर खड़ा कोई पण्डित संकृस्त का काव्य बोलता तो उसके काव्य के अन्दर कोई कहीं पर भी अगर ह्रस्व, दीर्घ या कहीं पर काना मात्रा का अंशमात्र भी दोष दिखता तो उसी समय कहते भाई आप गलत बोल रहे हैं, इसमें एक मात्रा लगाइये, इस वाक्य को दीर्घ कीजिये। इसको ह्रस्व कीजिये। इतना उनको गम्भीर ज्ञान था कि दूर से भी सुनते और सुनकर उसके अन्दर खलना को उसी समय सुधार देते और अपने स्वयं की शान्त प्रति, अपने स्वयं के शान्त-स्वभाव के कारण ये वीर गुरुदेव के सशक्त प्रशासन को अपने स्वयं के जीवन में अच्छी तरह से उद्वहन करते हुए आगे बढ़ते गये। इनके पथ पर हमारे गुरुदेव परम उपकारी व्याख्यान-

वाचस्पति जिनकी गम्भीर स्थिति, गम्भीर परिनामी श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज हुए । जिन्होंने अपनी ज्ञान शक्ति से अपने स्वयं के एक दृढ़ासन के बल पर गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी ने जितने ग्रन्थ लिखे थे, गुरु महाराज हस्तलिखित छोड़कर पधार गए थे । उन ग्रन्थों को प्रकाश में लाने का, उन ग्रन्थों को समाज में ले जाने का दूर-दूर तक पहुँचाने का अगर श्रेय है तो श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज को है । जिन्होंने गुरुदेव के इस गच्छ के अन्दर रहकर बचपन से अर्पित होकर आजीवन गुरुगच्छ की प्रभावना, गुरुगच्छ की महत्ता, शासन की जगह-जगह सुरक्षा की स्थिति में अपना सम्पूर्ण योग दिया । उन्होंने अपने जीवन में जन-सम्पर्क पसन्द नहीं किया । जनसम्पर्क से वे हमेशा दूर रहे । अधिक से अधिक वे गुरुदेव के साहित्य को जगत में कितना अच्छा, कितना ऊपर बनाया जा सके उसी में वे जीवन भर लगे रहे और उसी का फल, परिणाम है कि आज अगर हमारी समाज का लिखा हुआ साहित्य है उस साहित्य के अन्दर से यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के हाथ का लिख हुआ उनका सम्पादित करके छपाया हुआ साहित्य निकालकर अलग रख दें तो हमारी समाज के पास कोई ग्रन्थ नहीं मिल सकता है । हो जाय दो पाँच दस पुस्तकें लेकिन यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ने सैंकड़ों की तादाद में ग्रन्थों का प्रकाशन करवाकर साहित्य जगत के अन्दर सर्वत्र गुरुदेव के नाम को रोशन कर दिया । उनके पथ पर शान्तमूर्ति आचार्यदेव श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज हुए । शान्तमूर्ति थे, सरल स्वभावी थे, शासन की उनके अन्दर लगन थी । गुरुगच्छ की महिमा को विस्तृत करने की उनके दिल में भावना थी । गुरु महाराज का सन्देश, गुरु महाराज का गच्छ, गुरु महाराज का समुदाय, गुरु मर्यादाओं का अच्छा संरक्षण हो और उसका अच्छा विकास हो, यही उनके दिल के अन्दर की भावना थी और उसी भावना के अनुरूप हमको उन्होंने स्वयं ने प्रसन्न होकर कहा कि जाओ भाई दक्षिण भारत में और गुरुदेव का झण्डा फहरा कर आओ । उन्होंने हमें भेजा था, इसी से आप जान सकते हैं कि उनके दिल के अन्दर गुरुगच्छ के विकास, विस्तार और गुरु महाराज के सिद्धान्तों के प्रचार की कितनी भावना थी ! हमारे देव व पूर्वाचार्य हमें मार्ग बताकर चले गये । अब जवाबदारी आप और हम पर है । आप सभी ने मिलकर के निर्णय लिया कुलपाकजी तीर्थ पर निर्णय लेकर मेरे पास आये थे । मैंने उस समय कह दिया था कि भाई यह बात मैं स्वीकार नहीं करूँगा कारण कि मेरे दिल में यह भावना थी कि सब मुनि मण्डल निर्णय लें और मिलकर हमारा काम करें । सम्मेदशिखरजी और दूर-दूर से घूम-घूम कर हम राजस्थान आ गये ! गुरुदेव को क्या मन्जूर था मालूम नहीं, लेकिन संघ, चतुर्विध संघ ने मिल करके जो एक जवाबदारी मेरे ऊपर डाली है गुरु महाराज के गच्छ की सुरक्षा की । मैं आप सभी को मुख्य रूप से यह कहूँ कि मुझे जवाबदारी दे दी है उसके बाद आपकी जवाबदारी अब बढ़ गई है । आप यह न समझ लें कि एक को पहना दिया अब वो अपने आप लेकर घूमता रहेगा । गुरुगच्छ की में सारी मर्यादाओं की सुरक्षा में सहयोग देने का काम संघ का है । हमारे साधु-साध्वी मण्डल जो कि साधु मण्डल की हमारी अपनी जो भी मर्यादाएँ हैं उन मर्यादाओं के विषय में हमने बैठकर, साधु-साध्वी मण्डल ने हर बातों के ऊपर हमारा अपना निर्णय हमारी भावनाएँ व्यक्त की और अपनी लाइन में कैसे स्थिर रहेंगे इस विषय में हमने तय कर लिया है । मूलभूत बातें हमें सम्भालनी है, हम सम्भालेंगे । मंच को सम्भालने की बातों का ध्यान रखें । मैंने कहा था कल भी, हमारे अपने यहाँ पर आप लोग साधुओं के साथ में या अपने हर समय इतना ही सम्पर्क रखें जितना अपने जीवन विकास में आवश्यक हो । हमारे साधु मण्डल या साध्वी मण्डल को आप ज्ञान-ध्यान-समृद्ध कर सकते हैं। ज्ञानवान है तो जरूर बैठकर उन्हें ज्ञान दीजिए लेकिन हमारे साधु-साध्वी के पास में इधर-उधर की कोई भी कर्मबन्ध करावे ऐसी बातें न करें । साथ में हमारे अपने साधु-साध्वियों के पास जहाँ ठहरे हों, वहाँ कोई भी श्राविका, अपने घरों में सूचना दीजिये, आप अपनी बच्चियों को समझाइये कि साधु-साध्वियों के मुकाम पर संध्या होने के बाद चाहे वन्दन हो, चाहे मिलना हो कभी भी हमारे यहाँ कोई भी औरतें आने का काम न करें और साथ में अकेली औरतें प्रवेश न करें । कारण हमारे अपने स्वयं के जीवन के अन्दर अपने आपको सम्भालना है । हमारे अपने समुदाय को ऊँचा उठाना है। उसी प्रकार साध्वी मण्डल ठहरा हो वहाँ पर भी श्रावकों का कर्त्तव्य है कि संध्या हो गई, रात पड़ने आ गई श्रावकों को साध्वियों के उपाश्रय में कभी प्रवेश करना नहीं । कारण गुरुदेव ने अपनी २५ कलमों में यह कलम स्पष्ट लिखी हम उस कलम को भूल जाते हैं । हम कहते हैं साधु शिथिल होते हैं लेकिन श्रावकों को पालन करने की कलम श्रावक खुद भूल रहे हैं । आप गुरु महाराज क ी इन कलमों पर थोड़ा ध्यान करलें । गुरु महाराज की कलमों का हमारे साधु-साध्वी पूर्ण रूप से पालन कर सकते हैं । मैं उसका वाचन साधु-साध्वी मण्डल में बैठकर करूँगा और उसके साथ गुरुदेव की कलमों का हर गुरु सप्तमी को फिर

सकल संघ के बीच में पूरा वाचन होगा, पूरे संघ को सुनाया जाएगा कि गुरुदेव ने हमें क्या कहा है। हम संघ के लोग क्या कर रहे हैं। आप लोगों को सुन करके समझाना होगा, ध्यान देना होगा कि सच में गुरुदेव ने हमें सिखाया है, उसकी गच्छ व्यवस्था और उसकी रक्षा हमें करना है और उसी तरह से देखना यह है कि आप आज दिन तो जो कुछ भी जिसको जँच गया और मन आया उसे दे मारा, उसी ने छपा दिया, उसी ने प्रकाशित कर दिया और समाज को ऊँचा ले जाने का लक्ष्य ही भुला दिया। आज के बाद में सारे समस्त श्रीसंघ चतुर्विध संघ को मेरी तरफ से गुरुदेव की साक्षी से निवेदन है कि किसी तरह का संघ के किसी अंग पर कोई भी उनके जीवन के ऊपर किसी तरह का गलत असर करे, उनकी आत्मा को ठेस पहुँचे ऐसा इस प्रकार का कोई कार्य न करें। ऐसे कार्यक्रम के पथ पर अपने आपको न चलाएँ, इसी में अपने संघ, समाज का विकास है। अपने समाज का हित और अपने समाज की उन्नति है। उसी के साथ-साथ में मुख्य रूप से कहूँ गुरुदेव के स्वर्गवास के बाद में जब से मुझे आजाद घूमने का, अलग रहने का मौका आया और मैंने अलग विहार किया है, तब से मेरे साथ मेरे अपने सहयोग से मुनिराजश्री शान्तिविजयजी महाराज एवं पुण्यविजयजी महाराज का सहयोग मेरे जीवन के अन्दर स्मरणीय रहेगा। उन्होंने मेरे कठिन पलों का, मेरी अपनी कठिनाइयों में, मेरी अपनी समस्त मुसीबतों में मेरे मार्ग को कभी भी किसी तरह से अन्धकारपूर्ण नहीं होने दिया। मेरे मार्ग को हमेशा उन्होंने प्रशस्त किया है और मुझे हमेशा हिम्मत दी और मुझे अपने पथ पर पूर्ण रूप से चलते रहने का साथ और सहयोग दिया। मैं आज उनको भी नहीं भुला सकता हूँ। साथ ही समाज के समस्त प्रत्येक भाई-बहन गुरुदेव के द्वारा, गुरुदेव ने जो-जो हमारे सामने समाज के हित और विकास के लिए कार्यक्रम बताए हैं, कार्य प्रणालियाँ बताई है उन कार्य प्रणालियों को हमें बराबर पूर्ण रूप से व्यवस्थित कर उन्नतिशील करना है, रखना है और जारी रखना है। गुरुदेव की अन्तिम संध्या के समय जो संस्थाएँ आज समाज में चल रही है उन संस्थाओं को समाज का हर व्यक्ति सहयोग देकर गुरुदेव के दिल में जो भावना थी, जो धारणा थी, जो उनकी कामना थी और कल्पना थी उसको साकार करने में पूरा-पूरा योग दें। साथ ही मैं भविष्य में समाज के सामने कुछ कार्य करने की बात कहता हूँ। समाज के हित और विकास के लिए समाज में कुछ ऐसे संघ बनाना चाहता हूँ। संघ के सहयोग से कि जिससे ये मौका न आवे कि साधुओं के पास जाओ तो पैसे की बात करते हैं। जहाँ चातुर्मास हो वहाँ भेज दो वहाँ भेज दो ये चर्चा करते हैं। मैं इस चर्चा को भी चलाने देना नहीं चाहता हूँ और इसीलिए समाज का एक बहुत बड़ा भारी फण्ड गुरु राजेन्द्र फाउण्डेशन से एक ट्रस्ट में शुरू करने वाला हूँ। समाज के हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि उस फण्ड के अन्दर सहयोग दें। उस फण्ड से आने वाली निधि का ब्याज समाज के हर छोटे बड़े गाँव में जहाँ मन्दिर, उपाश्रय, जीर्णोद्धार की आवश्यकता हो उसकी एक मुश्त से एक वर्ष में एक गाँव के काम को पूरा करवा दिया जाय जिससे कि जगह-जगह लोगों को जाना नहीं पड़े। उसी प्रकार से एक ट्रस्ट और बनाना चाहता हूँ। आज मैं अपनी भावना बता देना चाहता हूँ, सहयोग आपका काम आयेगा, मेहनत मेरी काम आयेगी। अब मैं जो यह बनाने की सोच रहा हूँ। समुदाय के अन्दर चतुर्विध संघ में जो कोई अच्छा लेखक हो साधु-साध्वी कोई अच्छा ग्रन्थ लिखे उन ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए हमें किसी को कहना नं। समाज का ही ट्रस्ट हो, समाज के ही सम्भालने वाले हों उस ट्रस्ट के माध्यम से किताबों का प्रकाशन हो और वह ट्रस्ट ही सारे साहित्य को पहुँचाने की सारी जगह प्रचार करने की व्यवस्था रखे और अपना काम करे। इस प्रकार

का दूसरा ट्रस्ट मैं श्री राजेन्द्र जैन ज्ञान ट्रस्ट के नाम से बनाने जा रहा हूँ। ये मेरी भावना है। जो ट्रस्ट बना है उसका नाम बन गया है, कार्यरत हो गया है। वो ट्रस्ट है- गुरु राजेन्द्र कल्याण ट्रस्ट है। उस ट्रस्ट का कार्यक्रम शुरू हो गया, रजिस्ट्रेशन हो गया है। उसके अन्दर रहने वाली रकम से समाज के मध्यमवर्गीय भाइयों को, समाज के कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों को धन्धे के लिए और पढ़ाई के लिए उसमें से उनको बराबर दिया जायेगा। समाज का कोई व्यक्ति समाज के सामने किसी का मुँह ताकता फिरे नहीं, किसी के सामने हाथ फैलाता फिरे नहीं और किसी प्रकार की परेशानी उठानी नहीं। इस प्रकार का यह ट्रस्ट जो कार्यरत हो गया है। इसकी सारी की सारी उपलब्धि वर्ष भर में, दो वर्ष में मालूम पड़ेगी कि ट्रस्ट ने कितना कार्य किया उसी के साथ मैं आज समस्त गुरुदेव के इन गुरुभक्तों को बता दूँ, आज अपने जीवन में हमने जो कुछ भी पाया, हमने जो कुछ भी सीखा है और सीखने का काम किया है सच पूछो तो वर्तमान के पिछले तीन वर्षों का वातावरण देखते हुए मामूली आदमी टिक नहीं सकता है।

लेकिन मेरे आत्मबल, मेरे को जो ज्ञान बल, मेरे को जो समझ का बल दिया है वो सच में अहमदाबाद के अन्दर रहकर मैंने तीन वर्ष अध्ययन किया, गगलभाई ने मेरी पूरी देखरेख करी। मुझे शिक्षा देने वाले, मुझे ज्ञान देने वाले पण्डित शान्तिलालजी शाह और पण्डित धीरजलालजी शाह जो आज इस प्रसंग पर अहमदाबाद से चलकर आये उनके द्वारा मनोबल बढ़ाने का, उनके द्वारा आत्मबल बढ़ाने का, आत्म-जागृति का मुझे समय-समय पर बराबर ज्ञान मिलता रहा। उन्होंने मुझे ज्ञान दिया सारी दुनियाभर की आन्धियाँ आती रही, उसका मेरे आत्मबल पर कोई असर नहीं हुआ। उसी प्रकार भविष्य में आप समस्त श्रीसंघ का परम कर्तव्य है समाज एकता, समाज में संगठन, समाज में किसी भी प्रकार से कोई विवाद नहीं हो, ऐसी स्थिति निर्मित करने का संकल्प करना है, ऐसी स्थिति में ही हमें संघ को उन्नतिशील बनाना है। इस प्रसंग पर भी आए हुए राजस्थान विधानसभा के स्पीकर और लोकसभा के सदस्यों ने अपनी-अपनी भावना व्यक्त की और राष्ट्र व जनकल्याण कार्यों में भाग लेने का आह्वान किया। मैं उसके विषय में भी एक भावना संघ के सामने रख दूँ कि भाण्डवपुर तीर्थ छोटासा एक गाँव के रूप में है। भाण्डवपुर तीर्थ के आसपास में निकट में एक अच्छा स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है जो जनहित का सबसे बड़ा काम कर सकता है। अनेक प्रकार के रोगों, अनेक प्रकार के दर्दी जो दीन स्थिति में, सामान्य स्थिति में हों उसका लाभ उठा सकें, मैं अपनी भावना रखता हूँ, संघ के सामने यह बात कहता हूँ कि यहाँ भाण्डवपुर तीर्थ के अन्दर अपने को एक महावीर जैन अस्पताल या महावीर सार्वजनिक हॉस्पीटल भवन बनाना चाहिये। मैं विधानसभा स्पीकर, विधानसभा सदस्य और एम. पी. सा. से निवेदन करता हूँ कि भवन बनाने की जवाबदारी श्रीसंघ लेता है तो अस्पताल खोलने की जवाबदारी आप लेकर अस्पताल बनवाएँ ताकि इस प्रसंग की हमेशा याद रहेगी, आम जनता का कल्याा होगा। जनता लाभान्वित होगी और सारी की सारी अपने इस संघ के गुण गायेगी। इसीलिए मेरी यह बात संघ के सामने मुझे कहनी थी। मेरे ये भाव मेरे उद्गार व्यक्त किए हैं। आपको मैं यह जो कह रहा हूँ उसी के साथ-साथ अब जब इस बात को देख रहे हैं भाण्डवपुर तीर्थ के अन्दर इस कार्यक्रम को आयोजित किया, मुनिराज श्री शान्तिविजयजी ने कार्यक्रम को किस तरह से सुन्दर, गुरुगच्छ जैन शासन की शोभा बढ़े ऐसा कार्य करने में सन्तोषप्रद परिश्रम किया। आज सब देख रहे हैं संघ का साथ है, इधर इन मुनियों का साथ एवं मार्गदर्शन था, उस मार्गदर्शन में आप सभी ने मिलकर ये काम किया। हमारे मुनि संघ में आज आपके सामने बैठे हैं, हम सबमें दीक्षा में और उम्र में बड़े हैं, वडील हैं। उन शान्तिविजयजी महाराज को मैं इस प्रसंग की शुभ स्मृति में, इस प्रसंग पर अपने स्वयं के भाव प्रगट करता हूँ और श्रीसंघ के सामने कहता हूँ कि उनका मान, सन्मान, बहुमान श्रीसंघ को पूर्णरूप से रखना है। और साथ में मैं उनको आप सभी जानते हैं उनको दीक्षा लिए ३७-३८ वर्ष हो चुके हैं। हमारे सब में आज वर्तमान में बैठे मुनियों में वयोवृद्ध ये हैं। हमारे इन मुनियों के अन्दर संयमवृद्ध भी ये हैं और इसीलिए मैं अपने तरफ से हमारे अपने साधु-साध्वी चतुर्विध संघ की ओर से आपको आज 'संयम स्थविर' पद से विभूषित करता हूँ, आप सभी लोग इनको 'संयम स्थविर' पद से 'संयम स्थविर' नाम से पहचाने जाने उनका मान, सन्मान, बहुमान करें। मैं इसी के लिए इसी पद के साथ आपश्री को कम्बली अपनी ओर से समर्पित करता हूँ। आप सभी गुरुभक्ति, गुरुगच्छ के इस माहौल के अन्दर बैठे हैं। (शाश्वत-धर्म सूरि पद पाटोत्सव विशेषांक से -सम्पादक)

इस प्रश्न पर विचार करने से पूर्व यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम श्री भाण्डवपुर जैन तीर्थ का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लिया जावे। परिचय या इतिहास इस प्रकार बताया जाता है-

सूरिपद पाटोत्सव भाण्डवपुर में ही क्यों?

-मुनिराजश्री जयरत्नविजय

भाण्डवाजी अथवा भाण्डवपुर नामक ग्राम जोधपुर से रानीवाड़ा जाने वाली रेलवे लाईन के मोदरा स्टेशन से लगभग ३० कि.मी. की दूरी पर उत्तर पश्चिम में स्थित है। इस ग्राम को काफी प्राचीन बताया जाता है। सबसे पहले जालोर के परमार भाण्डुसिंह ने इसे बसाया और इस पर शासन किया था। समय के प्रवाह के साथ वि. स. १३२२ में बावतरा के दय्या राजपूत बुहड़सिंह ने परमारों को परास्त कर इस पर अपना अधिकार कर लिया जिससे कालान्तर में प्रान्त का नाम ही दियावट पट्टी हो गया। वि. सं. १८०३ में जोधपुर नरेश रामसिंह ने दय्या लुम्बाजी से इसे छीन कर समीपस्थ आसाणा ग्राम के ठाकुर मालमसिंह को दे दिया।

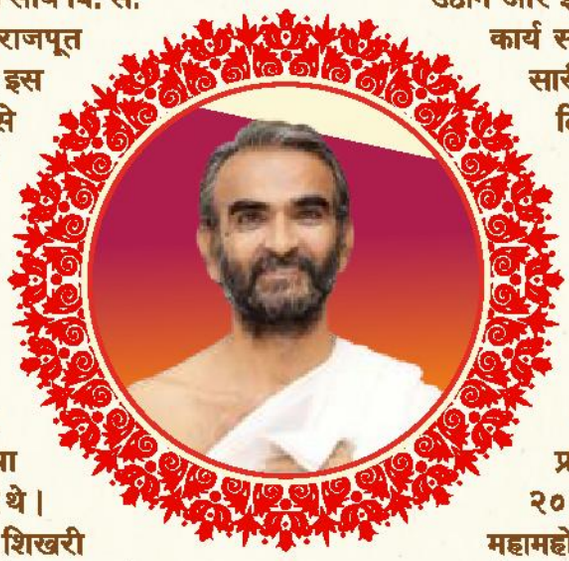

विक्रम की सातवीं शताब्दी में इस क्षेत्र में बेसाला नामक नगर था जिसमें श्वेताम्बर जैनों के सैंकड़ों घर थे। वहाँ एक भव्य मनोहर विशाल सौंध शिखरी जिनालय था। एक स्तम्भ पर 'सं. ८१३ श्री महावीर' लिखा हुआ मिलता है। इससे इसकी प्राचीनता प्रमाणित होती है।

बेसाला पर मेमन ठाकुरों के नियमित आक्रमण होते रहने से यहाँ के निवासी अन्यत्र जा बसे। डाकुओं ने यहाँ के मन्दिर पर भी आक्रमण और उसे तोड़ डाला। किसी प्रकार प्रतिमाजी को बचा लिया गया। किंवदन्ती के अनुसार कोमता के निवासी संघवी पालजी की प्रतिमाजी को एक गाड़ी में विराजमान कर कोमता ले जा रहे थे कि गाड़ी भाण्डवा में आकर रुक गयी और सभी प्रकार के प्रयत्न करने पर भी गाड़ी नहीं चली, तब सभी निराश हो गये। रात्रि में पालजी को स्वप्न आया कि प्रतिमा को यहीं विशाल मन्दिर बनवाकर विराजमान कर दो। स्वप्न के अनुसार पालजी संघवी ने यह मन्दिर वि. सं. १२३३ माघ शुक्ला ५ गुरुवार को बनवाकर उत्साहपूर्वक प्रतिमाजी की स्थापना कर दी।

इसका प्रथम जीर्णोद्धार वि. सं. १३५९ में और द्वितीय जीर्णोद्धार वि. सं. १६५४ में दियावट पट्टी के श्री जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ ने करवाया था।

महान ज्योतिर्धर परम क्रियोद्धारक प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. जब सं. १९३५ में आहोर में पधारे तो समीपवर्ती ग्रामों के निवासी श्री संघ ने उक्त प्रतिमा को यहाँ से उठाकर अन्यत्र विराजमान करने की प्रार्थना की। इस पर गुरुदेव ने प्रतिमा को यहाँ से नहीं उठाने और इसी चैत्य का विधिपूर्वक पुनरुद्धार कार्य सम्पन्न करने को कहा। गुरुदेव ने सारी पट्टी में भ्रमण कर जीर्णोद्धार के लिए उपदेश भी दिये।

पूज्यपाद व्याख्यान-वाचस्पति, तीर्थोद्धारक, श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. ने भी स्थान- स्थान के जैन श्रीसंघ को इस विषयक उपदेश दिया और इस तीर्थ के अन्तिम तृतीयोद्धार को आपने वि. सं. १९८८ में प्रारम्भ करवाया जो कि वि. सं. २००७ में पूर्ण हुआ। इसकी प्रतिष्ठा का महामहोत्सव वि. सं. २०१० ज्येष्ठ शुक्ला १० को दसदिनावधिक उत्सव के साथ सम्पन्न हुआ था।

संघवी पालजी के वंशजों की ओर से आज भी प्रति वर्ष ध्वजा चढ़ाई जाती है। अभी भी यह चमत्कारिक स्थल माना जाता है व हजारों जैन व जैनेतर यहाँ की मानता रखते हैं। प्रति वर्ष चैत्र शुक्ला १३ से पूर्णिमा तक व कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है। तब हजारों भक्तगण आकर प्रभु भक्ति में तल्लीन होते हैं। एकान्त जंगल में विशाल परकोटे के मध्य स्थित इस प्राचीन भव्य जिनालय के मन्दिर में प्रतिमा की कला अति ही आकर्षक है। तीर्थाधिराज श्री महावीर भगवान श्वेत वर्ण पद्मासनस्थ हैं।

यहाँ ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही विशाल धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन, बिस्तर व भोजनशाला की सुविधा उपलब्ध है। इस तीर्थ की देखभाल के लिए एक पेढ़ी है जिसका पता इस प्रकार है- श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी, गाँव- भाण्डवपुर, पोस्ट- मेंगलवा, जिला- जालोर (राजस्थान) तारघर- सायला, टेलिफोन- भी है। प्रत्येक धर्मप्रेमी को कम से कम एक बार अवश्य ही इस तीर्थ भूमि के दर्शनों का लाभ अवश्य लेना चाहिए।

तीर्थ का इतिहास जान लेने के पश्चात् यह स्पष्ट हो गया है कि यह तीर्थ राजस्थान के जालोर जिले में एकदम जंगल में स्थित है जहाँ आवागमन के साधन भी सुलभ नहीं हैं। ऐसे स्थान पर सूरि पद प्रदान पाटोत्सव का आयोजन क्यों रखा गया ? यह प्रश्न लगभग प्रत्येक जिज्ञासु के मस्तिष्क में आया। इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास यहाँ किया जा रहा है।

विश्ववंद्य प्रातःस्मरणीय पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की यह क्षेत्र तपोभूमि रही है। श्रीमद् के हृदय में इस क्षेत्र का जीर्णोद्धार कर एक विशाल तीर्थ के रूप में विकसित करने के भाव थे। यही कारण है कि उस समय आपश्री ने प्रतिमाजी को अन्यत्र स्थानन्तरित करने के लिए अपनी असहमति व्यक्त करते हुए यहीं मन्दिर निर्माण का सुझाव दिया और इस कार्य के लिए अपने भक्तों को प्रोत्साहित भी किया। आपश्री के पश्चात् आपके विद्वान शिष्य एवं पट्टधर पूज्यपाद श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. ने यहाँ के कार्य को सम्भाला और जीर्णोद्धार भी करवाया। आपश्री के उपदेश से यहाँ बहुत कुछ विकास कार्य हुए। प्रतिष्ठा कार्य भी और निर्माण कार्य भी।

स्व. आचार्य श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की यहाँ रहने की भावना थी। यहाँ रहने की भावना के पीछे आपका उद्देश्य इस तीर्थ को विकसित करना था किन्तु उनकी यह भावना भी उनके जीवन काल में पूर्ण नहीं हो सकी। इस प्रकार हम देखते हैं कि पूज्य आचार्य भगवन्तों की भावना इस तीर्थ को विकसित करने की रही और वही भावना परम पूज्य संयमवयः स्थविर मुनिराजश्री शान्तिविजयजी म. सा. की भी रही। जब-जब भी जहाँ-जहाँ भी संघ की बैठक हुई श्रावकों का मिलना हुआ पूज्य मुनिराजश्री तीर्थ के विकास के लिए सदैव प्रेरणा देते रहे और बताते रहे कि हमारे आचार्य भगवन्तों की भावना इस तीर्थ के प्रति क्या थी। वास्तव में इस तीर्थ के प्रति मुनिराजश्री ने श्रीसंघ में जागृति उत्पन्न की यह निर्विवाद है।

इसके अतिरिक्त प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. 'मधुकर' का भी इस तीर्थ के प्रति अटूट प्रेम है तथा इस तीर्थ को सर्वदृष्टि से विकासशील बनाने की भावना भी आपश्री की है। अतः पूज्य आचार्य भगवन्तों के स्वप्न को साकार रूप देने के लिए अ. भा. श्री बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ की सम्मति से एवं समस्त मुनिमण्डल एवं साध्वी मण्डल की सहमति से परम पूज्य संयम स्थविर मुनिराजश्री शान्तिविजयजी म. सा. ने सूरि पद प्रदान पाटोत्सव का मुहूर्त्त ज्येष्ठ शुक्ला १० सं. २०३९ दिनांक २०-६-८३ को श्री जैन श्वेताम्बर सकल श्रीसंघ को प्रदान किया। तदनुसार पाटोत्सव भाण्डवपुर में रखा गया। इस प्रकार मुनिराजश्री शान्तिविजयजी म. सा. की प्रेरणा मुख्य रही। इसके साथ ही मुनिराजश्री की प्रेरणा और उनके श्रम एवं सहयोग से यह पाटोत्सव भाण्डवपुर में आयोजित हुआ।

(शाश्वत-धर्म सूरि पद पाटोत्सव विशेषांक से -सम्पादक)

अहमदाबाद से भाण्डवपुर तक

आचार्य भगवन्त श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी के दिवंगत होने के पश्चात् समाज में एक सूनापन आ गया था। उनके पाट पर किसे विराजित किया जावे ? इस विषय को लेकर कुछ विवाद भी चला। ऐसा भी लगने लगा कि कहीं समाज में बिखराव नहीं आ जावे। इसी बीच कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने अपना खेल खेलना प्रारम्भ कर दिया किन्तु पूज्य गुरुदेव की कृपा से वे अपना स्वार्थ पूरा ना कर सके। समाज की बिगड़ती स्थिति को देखकर अनेक समाज हितैषियों के मन में चिंता व्याप्त हो गई। इसी बीच सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय अ. भा. त्रिस्तुतिक संघ के अध्यक्ष श्री गगलदास हालचन्द संघवी परम पूज्य संघ स्थविर शांत स्वभावी मुनिराजश्री शांतिविजयजी म. सा. की प्रेरणा से उन्हीं के पावन सानिध्य में अहमदाबाद में सकल श्रीसंघ के एक सम्मेलन का दि. १०-१०-८१ से ११-१०-८१ तक का आयोजन किया। अन्य विचारणीय विषयों के अतिरिक्त इस सम्मेलन में भावी आचार्य कौन हो। इस

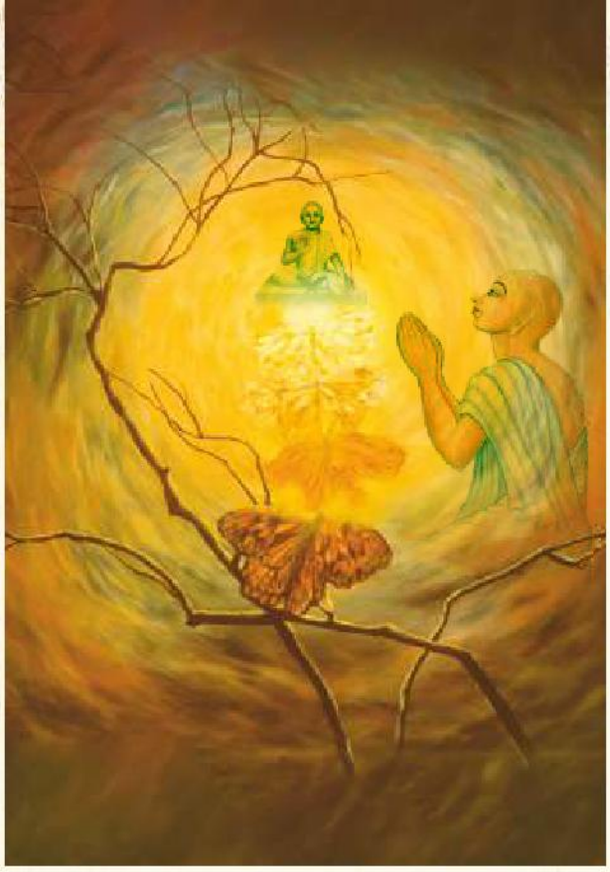

विषय पर भी विचार किया और एक समिति भी इस हेतु गठित की गई। यह अहमदाबाद सम्मेलन जिस उद्देश्य को लेकर बुलाया गया था उस दृष्टि से पूर्ण रूप से सफल रहा। इसके पश्चात् अहमदाबाद में गठित समिति की एक बैठक निम्बाहेड़ा (चितौड़-राज.) में हुई।

इन दो आयोजनों में कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आया। यद्यपि कार्य को गति अवश्य मिली। इसी बीच विघ्नसंतोषियों की कार्यवाही बढ़ चली। ये सब कार्य हो ही रहे थे कि इसी बीच दक्षिण भारतीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के अध्यक्ष श्री पन्नालालजी रामाणी के आमन्त्रण पर अखिल भारतीय श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ का सम्मेलन दि. २६-२७ नवम्बर ८२ को आंध्रप्रदेश के पावन जैनतीर्थ श्री कुलपाकजी पर हुआ। जिसमें समस्त भारत से लगभग १३० श्रीसंघों ने भाग लिया और इस सम्मेलन में एक स्वर से परम पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी 'मधुकर' को परम पूज्य गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी की परम्परा में परमपूज्य श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरिजी के पाट पर आचार्य घोषित किया।

इसी बीच चर्चाएँ चलती रही कि सूरि-पद प्रदान पाटोत्सव कहाँ एवं कब आयोजित किया जावे। परम पूज्य संघ स्थविर शांत स्वभावी मुनिराजश्री शांतिविजयजी म. सा. ने माघ शुक्ला त्रयोदशी १५-२-८४ को श्री भांडवपुर तीर्थ जालोर की पावन भूमि पर पाटोत्सव के आयोजन का मुहूर्त्त प्रदान कर दिया आपश्री के मुहूर्त प्रदान कर देने से एवं स्थान की घोषणा हो जाने से श्रीसंघ में उत्साह की लहर व्याप्त हो गई पाटोत्सव की तैयारियाँ जोर शोर से होने लगी और अन्ततोगत्वा १५-२-८४ को पूज्य मुनिराज जयन्तविजयजी 'मधुकर' को विशाल भव्य समारोह में सूरि पद से अलंकृत किया गया और वे आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरि हो गए।

इस आयोजन के लिए परम पूज्य संघ स्थविर शांत स्वभावी मुनिराजश्री शांतिविजयजी म. सा. नियमित रूप से प्रेरणा देते रहे। गुरु भक्तों में उत्साह का संचार करते रहे और मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी म. सा. भी अपने गुरुदेव के कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग करते रहे। इ स प्रकार अहमदाबाद से भाण्डवपुर तक का यह सफर अनेक सौपानों को पार करता हुआ सफल हुआ।

(शाश्वत-धर्म सूरि पद पाटोत्सव विशेषांक से - सम्पादक)

॥ प्रभु-शासननायक-श्रीमद्दावीरस्वामिभ्यो नमः ॥

पू. गुरुदेवश्री शान्तिविजयजी म.सा. के वि. सं. २०३७ के चातुर्मास के लाभार्थी

मेंगलवा, उनड़ी, पांथेड़ी, कोमता, देता, सुराणा, तिलोड़ा, दादाल, जीवाणा इत्यादि गाँवों के श्रीसंघ की पानड़ी से सामूहिक चातुर्मास का आयोजन हुआ।

श्री सूरिपद प्रदान महोत्सव 2040 के लाभार्थी

1. मुनिमजी रो चढ़ावो
   शा. मनोहरलालजी वस्तीमलजी अंदाणी, सुराणा
2. तिलक द्वारा बहुमान रो चढ़ावो
   शा. धरु हालचन्दभाई खेमारभाई, थराद (मफतभाई)
3. माला द्वारा बहुमान रो चढ़ावो
   शा. ओपचन्दजी जवाजी ओस्तवाल, सायला
4. माघ सुद 6 सुबह की नवकारसी
   शा. धरु देवचन्दभाई तलकसीभाई पेपराल, थराद(गगलदास)
5. माघ सुद 6 शाम की नवकारसी
   शा. मुता सरेमलजी गोदाजी, सुराणा
6. माघ सुद 7 सुबह की नवकारसी
   शा. पुखराजजी कुम्बाजी फोलामुता, सायला
7. माघ सुद 7 शाम की नवकारसी
   शा. संघवी पारसमलजी सरेमलजी, रेवतड़ा
8. माघ सुद 8 सुबह की नवकारसी
   शा. संघवी वीरचन्दजी सरूपचन्दजी, थराद
9. माघ सुद 8 शाम की नवकारसी
   शा. संघवी पारसमलजी मानमलजी, दादाल
10. माघ सुद 9 सुबह की नवकारसी
    शा. दरजाजी ऊकचन्दजी हीराणी, रेवतड़ा

11. माघ सुद 9 शाम की नवकारसी
शा. मुथा मानमलजी मिश्रीमलजी, जीवाणा (नेमीचन्दजी)

12. माघ सुद 10 सुबह की नवकारसी
शा. श्री सौधर्मतपोगच्छ थराद नवयुवक मण्डल, अहमदाबाद (बसुभाई धरु)

13. माघ सुद 10 शाम की नवकारसी
शा. कबदी हेमराजजी पूनमचन्दजी, सायला

14. माघ सुद 11 सुबह की नवकारसी
शा. संघवी दलीचन्दजी मिश्रीमलजी, नेनावा

15. माघ सुद 11 शाम की नवकारसी
शा. जेठमलजी वगतावरमलजी बागरेचा, जीवाणा

16. माघ सुद 12 सुबह की नवकारसी
शा. आसुलालजी मदाजी पालरेचा, चोराऊ

17. माघ सुद 12 शाम की नवकारसी
शा. सुकनराजजी नेमीचन्दजी, कोशिलाव

18. माघ सुद 13 सुबह व शाम की नवकारसी
शा. काँकरिया मिश्रीमलजी मालाजी, सुराणा

19. माघ सुद 14 सुबह की नवकारसी
शा. मोरखिया कल्याणभाई लखमीचन्दजी लाखणी, थराद

20. माघ सुद 14 शाम की नवकारसी
शा. संघवी सुखराजजी भगाजी वेदमुथा, रेवतड़ा

21. पत्रिका में जयजिनेन्द्र रो चढ़ावो
शा. मनोहरलालजी वस्तीमलजी अंदाणी, सुराणा

22. आचार्य जयन्तसेनसूरिजी ने प्रथम चादर रो चढ़ावो
शा. केवलचन्दजी वस्तीमलजी, जालोर

23. आचार्य जयन्तसेनसूरिजी ने दुसरी चादर रो चढ़ावो
शा. मोहनलालजी साँकलचन्दजी, भैंसवाड़ा

24. आचार्य जयन्तसेनसूरिजी ने तीसरी चादर रो चढ़ावो
शा. पुखराजजी हस्तीमलजी, सायला

25. श्री विद्याचन्द्रसूरिजी मंत्र वासक्षेप रो चढ़ावो
शा. ओटमलजी वेलचन्दजी, सुराणा

26. पहली काम्बल सूरिजी ने ओडावारो चढ़ावो
शा. माँगीलालजी शेषमलजी रामाणी, गुडा बालोतान्

27. दूसरी काम्बल सूरिजी ने ओडावारो चढ़ावो
शा. मीठालालजी सरेमलजी, आहोर

28. तीसरी काम्बल सूरिजी ने ओडावारो चढ़ावो
शा. हटीचन्दभाई सतुरभाई, थराद

29. श्री शांतिविजयजी म.सा. ने चादर ओढ़ावारो चढ़ावो
शा. मिश्रीमलजी तेजराजजी वेदमुथा, नेनावा

30. प्रथम हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा रो चढ़ावो
शा. भण्डारी जेठमलजी देवीचन्दजी, सुराणा

31. द्वितीय हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा रो चढ़ावो
शा. विजयराजजी गेबचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

32. तृतीय हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा रो चढ़ावो
शा. पुखराजजी प्रतापचन्दजी, (सरत वाला) गोल

33. चतुर्थ हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा रो चढ़ावो
शा. बंदामुथा लालचन्दजी प्रतापचन्दजी, पांथेड़ी

34. पाँचवी बार हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा रो चढ़ावो
शा. लालचन्दजी ऊकचन्दजी भंसाली, भीनमाल

35. सूरिजी म. सा. ने चोल पटो वहोरावा रो चढ़ावो
शा. कबदी माँगीलालजी रिखबचन्दजी,सायला

36. छठी बार हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा रो चढ़ावो
शा. कबदी हेमराजजी पूनमचन्दजी, सायला

37. सातवी बार हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा रो चढ़ावो
शा. टेकचन्दजी कस्तुरचन्दजी, (मूलचन्दजी)

38. वासक्षेप पूजा रो चढ़ावो
शा. शान्ति ज्वेलर्स रामाणी, नेलुर (गुड़ा बालोतान)

39. पहलों चंदन करवा रो चढ़ावो
शा. जोगाणी लालचन्दजी केवलचन्दजी, भीनमाल

40. सूरिजी ने आसन वेरावारो चढ़ावो
शा. मिश्रीमलजी नाथाजी, आहोर

41. सूरिजी म. सा. ने पहली गुणी करवा रो चढ़ावो
शा. लुंकड़ सुमेरमलजी हंजारीमलजी, भीनमाल

42. सूरिजी ने वधावारो चढ़ावो
शा. सालेचा मिश्रीमलजी ऊकाजी, धाणसा

43. लावण्याश्रीजी ने काम्बली वहेरावो रो चढ़ावो
शा. सरेमलजी वागाजी संघवी, आलासन

44. भगवान रे आरती रो चढ़ावो
शा. शाहजी रामरत्नजी नरसिंहजी, जालोर

45. भगवान रे मंगलदीवो रो चढ़ावो
शा. सोफाडिया वेलचन्दजी मादाजी, रेवतड़ा

46. गुरु म. सा. रे आरती रो चढ़ावो
शा. रिखबचन्दजी सरुपचन्दजी सोफाडिया, रेवतड़ा

47. आठवी बार हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा रो चढ़ावो

शा. देसाई केशवलाल अमुलकभाई, (रसीकभाई)

48. नवमी बार हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा रो चढ़ावो
शा. कालीदासभाई त्रिकमभाई, (रसीकभाई)

49. थापना रो चढ़ावो
शा. धुड़ालालजी बेवरदासजी छाजेड़, नेनावा

50. पाटली रो चढ़ावो
शा. ऊकचन्दजी ताराजी, भीनमाल

51. गुलाल रो चढ़ावो
शा. मिश्रीमलजी दुदाजी कटारिया संघवी, सांचोर

52. पुण्यविजयजी म. सा. काम्बली चढ़ावो
शा. लालचन्दजी मगनाजी भंडारी, सियाणा

53. अविचलश्रीजी ने काम्बली चढ़ावो
शा. सोमतमलजी सॉवलचन्दजी दोशी, भीनमाल

54. सूरिपद प्रदान पाटोत्सव में भेंट प्रथम चढ़ावो
शा. सुमेरमलजी जुगराजजी शाहजी, पांथेड़ी

55. सूरिपद प्रदान पाटोत्सव में भेंट द्वितीय चढ़ावो
शा. पुखराजजी पूनमचन्दजी झोटा, दादाल

56. सूरिपद प्रदान पाटोत्सव में भेंट तृतीय चढ़ावो
शा. मेगराजजी जुगराजजी छत्रियावोरा, सुराणा

57. सूरिपद प्रदान पाटोत्सव में भेंट चौथो चढ़ावो
शा. माणकचन्दजी छोगाजी बालगोता, मेंगलवा

58. सूरिपद प्रदान पाटोत्सव में भेंट पाँचवों चढ़ावो
शा. पारसमलजी पूनमचन्दजी झोटा, दादाल

59. फागण सुद 1 सुबह री भक्ति रो चढ़ावो
शा. काँकरिया मिश्रीमलजी भलेचन्दजी, सुराणा

60. फागण सुद 1 शाम री भक्ति रो चढ़ावो
शा. मुथा पारसमलजी सुखराजजी, जीवाणा

61. नवकारसी
शा. मुथा मानमलजी मिश्रीमलजी, जीवाणा

श्री राजेन्द्रसूरि जैन दादावाड़ी प्रतिष्ठा महोत्सव–2040, माघ शुक्सा–10 के लाभार्थी

1. मुनिमजी रो चढ़ावो
शा. माणकचन्दजी छोगालालजी बालगोता, मेंगलवा

2. माला रो चढ़ावो
शा. वख्तावरमलजी साँकलचन्दजी हुकमाणी, पांथेड़ी

3. तिलक करवा रो चढ़ावो
शा. जेठमलजी बदाजी हुकमाणी, पांथेडी

4. माघ सुद 1 सुबह की नास्ता
शा. साँकलचन्दजी मिश्रीमलजी बालगोता, मेंगलवा

5. माघ सुद 1 सुबह की नवकारसी
शा. जुगराजजी वगतावरमलजी मुणोत, तिलोड़ा

6. माघ सुद 1 शाम की नवकारसी
शा. भंडारी जेठमलजी देवीचन्दजी, सुराणा

7. माघ सुद 1 महावीर पंचकल्याणक पूजा, अंगरचना
शा. शान्तिलालजी हरकचन्दजी संघवी, मेंगलवा

8. माघ सुद 2 सुबह की नास्ता
शा. रतनचन्दजी कुन्दनमलजी संकलेचा, मेंगलवा

9. माघ सुद 2 सुबह की नवकारसी
शा. वख्तावरमलजी साँकलचन्दजी हुकमाणी, पांथेड़ी

10. माघ सुद 2 शाम की नवकारसी

शा. बंदामुथा भँवरलालजी जामतराजजी, धाणसा

11. माघ सुद 2 समकित अष्टप्रकारी पूजा, अंगरचना
शा. फोलामुथा छोगालालजी वरदाजी, सायला

12. माघ सुद 4 सुबह का नास्ता
शा. वस्तीमलजी रणछोड़जी बागरेचा, मेंगलवा

13. माघ सुद 4 सुबह की नवकारसी
शा. मनोहरलालजी वस्तीमलजी, सुराणा

14. माघ सुद 4 शाम की नवकारसी
शा. धनराजजी हेमाजी, राजनगर (ऊनड़ी)

15. माघ सुद 4 आदिनाथ पंचकल्याणक पूजा, अंगरचना
शा. गोकुलचन्दजी परभाजी बन्दामुथा, पांथेड़ी

16. माघ सुद 5 सुबह का नास्ता
शा. पुखराजजी पूनमचन्दजी झोटा, दादाल

17. माघ सुद 5 सुबह की नवकारसी
शा. भण्डारी दलीचन्दजी भूरमलजी, मेंगलवा

18. माघ सुद 5 शाम की नवकारसी
शा. पारसमलजी नैनमलजी संकलेचा मेंगलवा

19. माघ सुद 5 शान्तिनाथ पंचकल्याणक पूजा, अंगरचना
शा. जावतराजजी सोहनराजजी (सोनाजी) भंसाली, पांथेड़ी

20. माघ सुद 6 सुबह की नास्ता
शा. भँवरलालजी तेजराजजी संघवी, कोमता

21. माघ सुद 6 सुबह की नवकारसी
शा. डूँगरमलजी हंजारीमलजी कबदी, सायला

22. माघ सुद 6 शाम की नवकारसी
शा. मेघराज आदाजी छत्रिय वोहरा, सुराणा

23. माघ सुद 6 पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा, अंगरचना
शा. सुखराजजी सुल्तानमलजी संकलेचा, मेंगलवा

24. माघ सुद 7 का नास्ता
शा. तिलोचन्दजी सजाजी संकलेचा मेंगलवा

25. माघ सुद 7 सुबह की नवकारसी
शा. भीमराज जुगराजजी छतरगोता वोरा, सुराणा

26. माघ सुद 7 शाम की नवकारसी
शा. गणेशलालजी तोलाजी मिठडीया वोरा, राजनगर (ऊनड़ी)

27. माघ सुद 7 बारह भावना पूजा, अंगरचना
शा. ओटमल कुपाजी छत्रिया वोहरा, सुराणा

28. माघ सुद 8 सुबह की नास्ता
शा. आसुलालजी मादाजी पालरेचा, चोराऊ

29. माघ सुद 8 सुबह की नवकारसी
शा. जेठमलजी वदाजी हुकमाणी, पांथेड़ी

30. माघ सुद 8 शाम की नवकारसी
शा. मलराजजी हंजाजी छत्रिया वोरा, सुराणा

31. माघ सुद 8 बारह व्रत पूजा, अंगरचना
शा. सुमेरमलजी साँकलचन्दजी संकलेचा

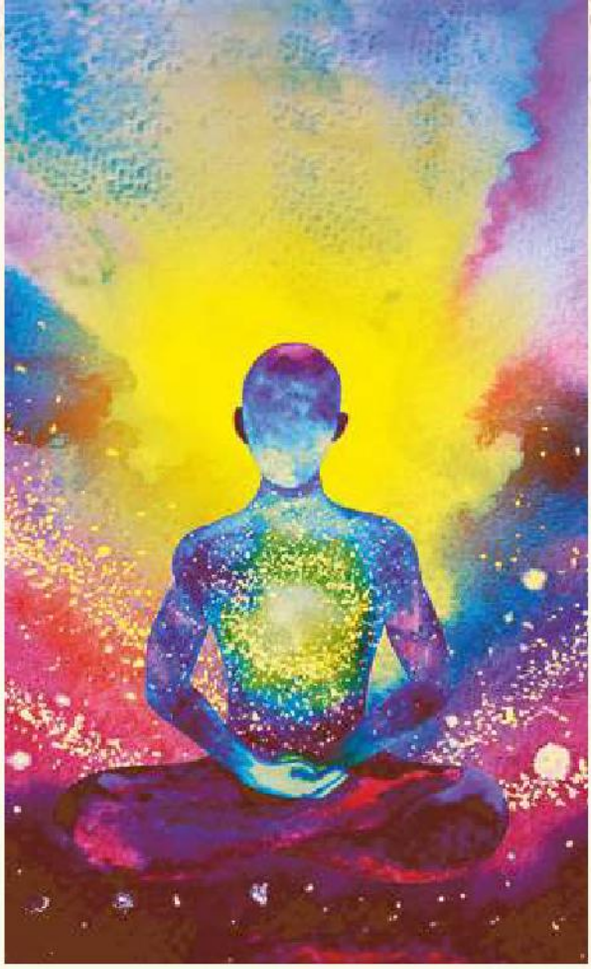

32. माघ सुद 9 सुबह की नास्ता
शा. गणेशलालजी लादाजी छत्रगोता परिवार, चोराऊ

33. माघ सुद 9 सुबह की नवकारसी
शा. जुहाराजी कबदी परिवार, सायला

34. माघ सुद 9 शाम की नवकारसी
शा. छोगाजी हीराणी परिवार, रेवतड़ा

35. माघ सुद 9 नवपद पूजा, अंगरचना
शा. तगराजजी हिम्मताजी संकलेचा, मेंगलवा

36. माघ सुद 10 फले चुनड़ी
शा. दरगचन्दजी हरकचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

37. माघ सुद 10 श्री राजेन्द्रसूरिजी अष्ट प्रकारी पूजा
शा. जेठमलजी कीनाजी संकलेचा, मेंगलवा

38. माघ सुद 11 सुबह का नास्ता
शा. रूपचन्द मूलाजी

39. माघ सुद 11 सुबह शाम की नवकारसी
शा. हस्तीमलजी भबुतमलजी पालगोता, सुराणा

40. माघ सुद 11 शन्ति स्नात्र पूजा
शा. नरसींमलजी आसाजी बाफना, कोरा

41. पत्रिका में जय-जिनेन्द्र रो चढ़ावो
शा. जुहाराजजी कबदी परिवार, सायला

42. अंजनशलाका मंडप
शा. पारसमलजी सवाजी छत्रिया वोरा, जीवाणा

43. मुख्य बड़ी ध्वजा
शा. वस्तीमलजी पारसमलजी रणछोड़जी, मेंगलवा

44. मुख्य बड़ा ईंडा
शा. हरकचन्दजी बाबूलालजी पारसमलजी बेटा पोता लालाजी, मेंगलवा

45. मुख्य बड़ा दंड
शा. मिश्रीमल मालाजी काँकरिया, सुराणा

46. उत्तर दिशा में मूर्ति विराजमान
शा. हस्तीमलजी भबुतमलजी, सुराणा

47. पूर्व दिशा में मूर्ति विराजमान
शा. जेठमलजी कुन्दनमलजी बालगोता, मेंगलवा

48. दक्षिण दिशा में मूर्ति विराजमान
शा. पारसमलजी जेठमलजी, कवराड़ा

49. पश्चिम दिशा में मूर्ति विराजमान
शा. नरसाजी छोगाजी, दादाल

50. श्रीमद् प्रमोदसूरीश्वरजी की मूर्ति विराजमान
शा. बेजाजी लुम्बाजी, मेंगलवा

51. श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी की मूर्ति विराजमान
शा. संघवी पारसमलजी सरेमलजी, रेवतड़ा

52. उत्तर दिशा में प्रथम ध्वजा
शा. नेणमलजी राजाजी संकलेचा, मेंगलवा

53. उत्तर दिशा का ईंडा
शा. घेवरचन्दजी तलाजी, मेंगलवा

54. उत्तर दिशा का दण्ड
शा. माँगीलालजी जानुजी, मेंगलवा

55. पूर्व दिशा की ध्वजा
शा. पारसमलजी भबुतमलजी, जीवाणा

56. पूर्व दिशा का ईंडा
शा. रिखबचन्दजी नेतीजी, पांथेड़ी

57. पूर्व दिशा का दण्ड
शा. हीराचन्दजी समरथमलजी झोटा, दादाल

58. दक्षिण दिशा की ध्वजा
शा. जेठमलजी बदाजी, पांथेड़ी

59. दक्षिण दिशा का ईंडा
शा. जावन्तराजजी अचलचन्दजी, पांथेड़ी

60. दक्षिण दिशा का दण्ड
शा. प्रतापचन्दजी नवाजी, सायला

61. पश्चिम दिशा की ध्वजा
शा. हेमराजजी समरथमलजी अंदाणी, सुराणा

62. पश्चिम दिशा का ईंडा
शा. पारसमलजी मिश्रीमलजी, दादाल

63. पश्चिम दिशा का दण्ड
शा. भानमलजी भँवरलालजी गेबाजी, मेंगलवा

64. हाथी और तोरण रो चढ़ावो
शा. मगनराजजी आदाजी, धुम्बडिया

65. गुरु मन्दिर अन्दर भाग मुख्य ईंडा
शा. माँगीलालजी रिखबचन्दजी, सुराणा

66. उत्तर दिशा का ईंडा
शा. पुखराजजी केवलचन्दजी, दादाल

67. पूर्व दिशा ईंडा
शा. अचलचन्दजी भीमराजजी गाँधीमुथा, सायला

68. दक्षिण दिशा ईंडा
शा. सोनमलजी पेराजी, पांथेड़ी

69. पश्चिम दिशा का ईंडा
शा. सुमेरमलजी साँकलचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

70. श्रीमद्विजय प्रमोदसूरीश्वर म. सा. ईंडा
शा. कालुचन्दजी साँकलचन्दजी, पांथेड़ी

71. श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. ईंडा
शा. लखाजी दोलाजी, गुढ़ा बालोतान

72. मोबन रो चढ़ावो
शा. नैनमलजी छोगाजी, चौराऊ

73. गुरु मन्दिर गम्भारा खोलवारो चढ़ावो
शा. भगवानजी शंकरजी कोठारी, सियाणा

74. आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. काम्बली वहेरावा रो चढ़ावो
शा. कपूरचन्दजी मसराजी, मेंगलवा

75. मुनिराज श्री शान्तिविजयजी म. सा. काम्बली वहेरावा रो चढ़ावो
शा. मिश्रीमलजी देवाजी, सुराणा

76. झालर बजावारो चढ़ावो
शा. पारसमलजी हिम्मताजी, राजनगर (ऊनड़ी)

77. रंग का थापा लगावा रो चढ़ावो
शा. शान्तिलालजी भोपाजी, मेंगलवा

78. सुघोषा घण्ट बजाना
शा. शेषमलजी थानमलजी, सुराणा

79. चाँदी का भण्डार रखने का लाभ
शा. गणेशमलजी वसनाजी, मेंगलवा

श्री गुरुदेव शान्तिविजयजी म. सा. के अन्तिम संस्कार के लाभार्थी

2053 जेठ सुदी 10 सोमवार 16-6-1996

1. लोछ करवा रो चढ़ावो
   श्री पंच महाजन समस्त
2. स्नान सम्पाड़ा करवारो चढ़ावो
   शा. पारसमलजी दीपाजी, ओटवाडा
3. केसर, ब्रास, चन्दन विलेपन करवारो चढ़ावो
   श्री राजेन्द्रसूरीश्वर जैन ट्रस्ट चैन्नई, मद्रास
   हस्ते- टेकचन्दजी
4. चोल पट्टा वेरावारो व गुरु म. आँगी करवारो चढ़ावो
   शा. मेगराजजी जुगराजजी छत्रिया वोरा, सुराणा
5. चादर ओड़ावारो व अग्नि संस्कार रो चढ़ावो
   श्री पंच महाजनों समस्थों-धाणसा ह. माँगीलालजी संघवी
6. काम्बली वहेरावारो चढ़ावो
   शा. जेठमलजी कुन्दनमलजी बालगोता, मेंगलवा
7. ओघो वहेरा वारो चढ़ावो
   शा. दरगचन्दजी हरकचन्दजी संकलेचा मेंगलवा
8. मुहपत्ती वहेरा वारो चढ़ावो
   श्री (पंचों महाजनों समस्थों) जैन संघ, दादाल
9. माला वहेरा वारो चढ़ावो
   शा. जेठमलजी कीनाजी संकलेचा, मेंगलवा
10. आसन वहेरा वारो चढ़ावो
    शा. खुशालचन्दजी गेबाजी डामरानी, मेंगलवा
11. पातरा वहेरा वारो व बैकुन्ठी में विराजमान करवारो चढ़ावो
    शा. भँवरलालजी मेघराजजी छत्रिया वोरा, सुराणा
12. झोली वहेरा वारो चढ़ावो
    शा. माँगीलालजी पारसमलजी, मेंगलवा
13. मोदक लाडू वहेरा वारो चढ़ावो
    शा. सुमेरमलजी नरसाजी बालगोता, मेंगलवा
14. मुँह में मोती डालवारो चढ़ावो
    शा. मिश्रीमलजी सागरमलजी मुथा, धाणसा
15. मोडी रे आगे दीपक करवारो चढ़ावो
    शा. पारसमलजी भभूतमलजी मुथा, जीवाणा
16. मोडी रे आगे धूप करवारो चढ़ावो
    शा. पारसमलजी नैनमलजी संकलेचा, मेंगलवा
17. मोडी आगे झालर वजावारो चढ़ावो
    श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन संघ, लवाणा
18. गुलाल उड़ावा रो चढ़ावो
    शा. संघवी माँगीलालजी हरकचन्दजी, धाणसा
19. वरसीदान रो चढ़ावो
    शा. संघवी सोहनमलजी पुखराजजी मेगाजी, धाणसा
20. सोना-चाँदी फूल वरसावा रो चढ़ावो
    शा. सुमेरमलजी पुखराजजी, चोराऊ
21. बैंकुण्ठी में गठरी वसावारो चढ़ावो
    श्री (पंचों महाजनों समस्थों) जैन संघ, तिलोड़ा
22. वोदवा रो चढ़ावो
    शा. भंसाली अमरचन्दजी धुड़ाजी, धाणसा
23. पहली (काठ) कांध देवारो चढ़ावो
    शा. हस्तीमलजी भभुतमलजी पालगोता, सुराणा
24. बीजी कांध देवारो चढ़ावो
    शा. संघवी पुखराजजी नेकाजी, धाणसा
25. तीसरी कांध देवारो चढ़ावो
    शा. मनोहरमलजी वस्तीमलजी अंदाणी, सुराणा
26. चौथी कांध देवारो चढ़ावो
    शा. माँगीलालजी पुखराजजी पालगोता, सुराणा
27. अन्तिम विश्राम
    शा. मोरखिया उम्मेदमलजी मलूकचन्दजी, लवाणा
    ह.-रसिकभाई
28. वदावा रो चढ़ावो
    शा. भँवरलालजी तेजराजजी संघवी, कोमता
29. भूमि शुद्ध करवा रो चढ़ावो
    शा. वस्तीमलजी रणछोड़मलजी बागरेचा, मेंगलवा
30. आरोगी उपर विराजमान करवो चढ़ावो
    शा. सुखराजजी केशाजी बालगोता, मेंगलवा

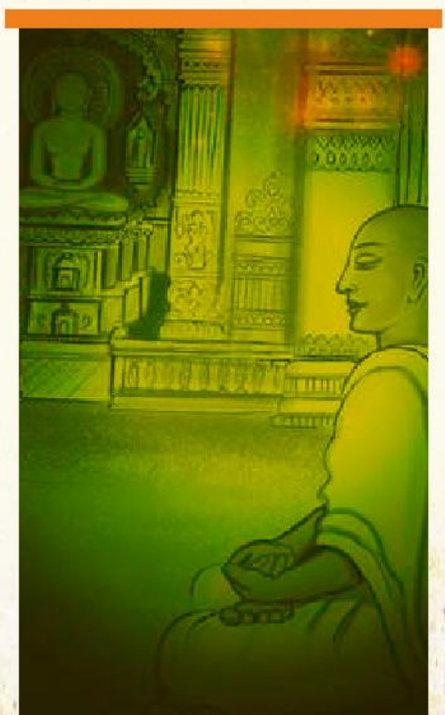

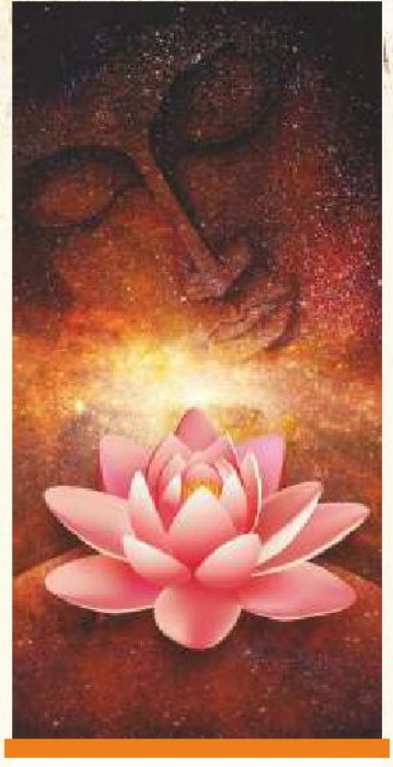

31. घृत (घीरत) चन्दन आरोगी उपर चढ़ावा रो
शा. तगराजी हिम्मताजी संकलेचा, मेंगलवा

32. पहली स्वामी भक्ति
शा. गणेशमलजी धुड़ाजी, भंसाली, धाणसा

33. दूसरी स्वामी भक्ति
शा. भंसाली अमरचन्दजी धुड़ाजी, धाणसा

34. तीसरी स्वामी भक्ति
शा. मुथा पारसमलजी केवलचन्दजी, जालोर

35. चौथी स्वामी भक्ति
शा. दरगचन्दजी हरकचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

36. पाँचवी स्वामी भक्ति
शा. श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ, डीसा

37. छठी स्वामी भक्ति
शा. सुमेरमलजी सॉकलचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

38. सातवी स्वामी भक्ति
शा. मोहनलालजी वस्तीमलजी दाँतेवाडिया, मांडवला

39. नवकारसी
शा. वस्तीमलजी हेमराजजी छत्रिया बोहरा, जालोर

40. पहली पूजा
शा. श्री राजेन्द्रसूरीश्वर जैन ट्रस्ट नागेश्वरी पोल, अहमदाबाद

41. दूसरी पूजा
शा. कानराजजी रामजी हुकमाणी, पांथेड़ी

42. तीसरी पूजा
शा. जेठमलजी बदाजी हुकमाणी, पांथेड़ी

43. चौथी पूजा
शा. स्वरूपचन्दजी बाबुलालजी संकलेचा, मेंगलवा

44. पाँचवी पूजा
शा. जीतमलजी रिखबचन्दजी, पांथेड़ी

45. छठी पूजा
शा. वस्तीमलजी नैनमलजी संकलेचा, मेंगलवा

46. सातवी पूजा
शा. कालुचन्दजी हंजारीमलजी संकलेचा, मेंगलवा

47. आठवी पूजा
शा. रतनचन्दजी कुन्दनमलजी संकलेचा, मेंगलवा

48. पहली अंगरचना
शा. पुखराजजी सरूपचन्दजी, जीवाणा

49. दूसरी अंगरचना
शा. हस्तीमलजी फूलचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

50. तीसरी अंगरचना
शा. फूसालालजी छोगाजी कंकुचौपड़ा, मेंगलवा

51. चौथी अंगरचना
शा. डायालालजी भूरचन्दजी, मेंगलवा

52. पाँचवी अंगरचना
शा. पुखराजजी सोनाजी, मेंगलवा

53. छठी अंगरचना
शा. श्री (पंचो महाजनों समस्थों) जैन संघ (थरवाड़) थलवाड़

54. सातवी अंगरचना व आरती
शा. माणकचन्दजी छोगाजी बालड़, मेंगलवा

55. गुरु म. सा. रे पहली अंगरचना
शा. शाहजी सुमेरमलजी जुगराजजी, पांथेडी

56. गुरु म. सा. रे दूसरी अंगरचना
शा. संघवी पारसमलजी मिश्रीमलजी, दादाल

57. गुरु म. सा. रे तीसरी अंगरचना
शा. मिश्रीमलजी जुबरमलजी संघवी, कोमता

58. गुरु म. सा. रे चौथी अंगरचना
शा. कालुचन्दजी हंजाजी संकलेचा,मेंगलवा

59. गुरु म. सा. रे पाँचवी अंगरचना
शा. मानमलजी वीरवाजी संघवी, दादाल

60. गुरु म. सा. रे छठी अंगरचना
शा. बंदामुथा ओटमलजी फूलाजी, पांथेड़ी

61. गुरु म. सा. रे सातवी अंगरचना
शा. दरकचन्दजी हरकचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

परम उपकारी गुरुदेवश्री शान्तिविजयजी म.सा. समाधि मन्दिर प्रतिष्ठा

संवत् 2058 जेठ सुद 10 के लाभार्थी

1. भगवान ने मुनिम बनवारों चढ़ावो
शा. पारसमलजी शिवराजजी धुड़ाजी छत्रिया वोरा, जीवाणा

2. श्रीफल, तिलक द्वारा बहुमान करवारो चढ़ावो
शा. कानराजजी रामजी हुकमाणी ह. कांतिलालजी, पांथेड़ी

3. माला द्वारा बहुमान रो चढावो
शा. संघवी कानराजजी मिश्रीमलजी हस्ते नेमीचंदजी, जीवाणा

4. जेठ सुद 10 री फलेचूनड़ी
शा. घेवरचंद सांकलचंदजी वाणीगोता, तिलोड़ा

5. पत्रिका में जय-जिनेन्द्र रो चढ़ावो
श्री पंच महाजन हस्ते पुखराजजी, धाणसा

6. जेठ सुद 3 सुबह री नवकारसी
शा. जेठमलजी कुन्दनमलजी बालागोता हस्ते पारसमलजी, मेंगलवा

7. तपस्वी मुनिराज श्री शांतिविजय म. सा. मूर्ति भराई रो चढ़ावो

श्री पंच महाजन समस्त-धानसा

8. जेठ सुद 3 शाम री नवकारसी
शा. चंपालालजी मनोहरमलजी अंदाणी, सुराणा

9. जेठ सुद 4 सुबह री नवकारसी
शा. जेठमलजी कीनाजी संकलेचा, मेंगलवा

10. जेठ सुद 4 शाम री नवकारसी
शा. हस्तीमल भबूतमलजी पालगोता चौहान, सुराणा

11. जेठ सुद 5 सुबह री नवकारसी
शा. लादाजी संकलेचा परिवार ह. भँवरलालजी, मेंगलवा

12. जेठ सुद 5 शाम री नवकारसी
श्री पंचमहाजन तिलोड़ा हस्ते पारसमलजी, तिलोड़ा

13. जेठ सुद 6 सुबह री नवकारसी
श्री पंच महाजन दाधाल, दादाल

14. जेठ सुद 6 शाम री नवकारसी
शा. कपूराणी परिवार हस्ते घेवरचंदजी, दाधाल

15. जेठ सुद 7 सुबह री नवकारसी
शा. भँवरलालजी (भमराजी) खीमचंदजी, जीवाणा

16. जेठ सुद 7 शाम री नवकारसी
शा. दरगचंदजी हरकचंदजी संकलेचा, मेंगलवा

17. जेठ सुद 8 सुबह री नवकारसी
शा. नेणमलजी संकलेचा परिवार, मेंगलवा

18. जेठ सुद 8 शाम री नवकारसी
शा. जेठमल कुंदनमलजी बालगोता ह. लालचंदजी मेंगलवा

19. जेठ सुद 9 सुबह री नवकारसी
शा. फूलचंद संकलेचा परिवार, मेंगलवा

20. जेठ सुद 9 शाम री नवकारसी
शा. भँवरलालजी मेगराजजी छत्रिया वोरा, सुराणा

21. जेठ सुद 11 सुबह री नवकारसी
शा. दलीचंद ताराचंदजी संकलेचा, मेंगलवा

22. जेठ सुद 11 शाम री नवकारसी
शा. चंपालालजी ओटमलजी छत्रिया वोरा (चंपालालजी), सुराणा

23. जेठ सुद 3 सुबह नास्ता
शा. अशोककुमारजी जेठमलजी बागरेचा, जीवाणा

24. जेठ सुद 4 सुबह नास्ता
शा. जेठमलजी कीनाजी संकलेचा, मेंगलवा

25. जेठ सुद 5 सुबह नास्ता
शा. पुखराजजी सोनाजी संकलेचा, मेंगलवा

26. जेठ सुद 6 सुबह नास्ता
श्री पंच महाजन, दाधाल

27. जेठ सुद 7 सुबह नास्ता
शा. पारसमलजी हंजारीमलजी मुणोत, तिलोड़ा

28. जेठ सुद 8 सुबह नास्ता
शा. घेवरचंदजी मादाजी पालरेचा, चौराऊ

29. जेठ सुद 9 सुबह नास्ता
शा. हस्तीमलजी छोगाजी सालेचा, जालोर

30. जेठ सुद 11 सुबह नास्ता
शा. उम्मेदमलजी प्रताचंदजी कंकूचौपड़ा, मेंगलवा

31. भगवान रे माता-पिता बनवारो चढ़ावो
शा. कानराजजी रामजी हुकमाणी, पांथेड़ी

32. शांति स्नात्र पूजा रो चढ़ावो
शा. माणकचंदजी छोगाजी बालगोता, मेंगलवा

33. चैत्य अभिषेक
शा. सुखराजजी भूरमलजी बालगोता, मेंगलवा

34. प्रसाद पुरुष थापना
शा. मेगराज जुगराज जी छत्रिया वोरा, सुराणा

35. भगवान अभिषेक
शा. गांधीमुथा लक्ष्मणराजी सुखराजजी, सुराणा

36. जेठ सुद 6 गुरु म. सा. पूजा
शा. मेघराजजी जुगराजजी छत्रिया वोरा, सुराणा

37. श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा
शा. जवेरचंदजी गोपीलालजी श्रीश्रीमाल, पादरू

38. श्री शांतिनाथ पंचकल्याणक पूजा
शा. चंदनमलजी हीराचंदजी झोटा, दादाल

39. श्री नेमीनाथ पंचकल्याणक पूजा
शा. बंदामुथा गोकलचंदजी परबाजी (औटमलजी) पांथेड़ी

40. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक पूजा
शा. सुमेरमलजी सांकलचंदजी संकलेचा, मेंगलवा

41. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा
शा. मांगीलालजी जानुमलजी बालगोता, मेंगलवा

42. सत्तरभेदी पूजा
शा. जुगराजजी वेजाजी संकलेचा, मेंगलवा

43. कुंभ स्थापना
शा. चंपालालजी पुखराजजी झोटा
हस्ते– बाबूलालजी, दादाल

44. अखंड ज्योत
शा. पृथ्वीराजजी टीलचंदजी कावेडी, भीनमाल

45. ज्वारारोपण
शा. चुन्नीलालजी हिम्मतमलजी श्रीश्रीमाल, दादाल

46. जल यात्रा
शा. कांतिलालजी पुखराजजी श्रीश्रीपत बोराणा राठोड़, पांथेड़ी

47. वेदिका पूजन
शा. भँवरलालजी मुल्तानमलजी बालड, पादरू

48. जेठ सुद 10 आंगी भावना
शा. घेवरचंदजी सांकलचंदजी वाणीगोता, तिलोड़ा

49. जेठ सुद 11 आंगी भावना
शा. मेघराजजी जुगराजजी छत्रिया वोरा, सुराणा

50. जेठ सुद 6 आंगी भावना
शा. घेवरचंदजी हंजारीमलजी श्रीश्रीमाल, दादाल

51. जेठ सुद 8 आंगी भावना
शा. देसाई रमेशकुमारजी किर्तीलालभाई, थराद

52. जेठ सुद 7 आंगी भावना
शा. रमेशकुमारजी भँवरलालजी दोशी, भीनमाल

53. जेठ सुद 3 व 4 आंगी भावना
शा. लूंकड सुमेरमलजी हंजारीमलजी, भीनमाल

54. जेठ सुद 5 आंगी भावना
शा. नेमीचंद धरमाजी संकलेचा रासाणी, पादरू

55. नवग्रह, अष्ट मंगल, दसदिगूपाल, पाटला पूजन
श्री थराद जैन संघ युवक मंडल ह. चमन भाई आणंद

56. श्री नंदावर्त्त पूजन
शा. जामतराजजी भीमराजजी बालगोता, मेंगलवा

57. चैत्र सुद 13 स्वामी भक्ति व आंगी
श्री दादाल पंच महाजन दादाल

58. लघु बीसस्थानक पट पूजन
शा. भँवरलाजी सरेमलजी विशाणी, पोसाणा

59. लघु सिद्धचक्र पूजन
शा. गणेशमलजी तोलाजी मिठडीया वोरा, राजनगर (ऊनड़ी)

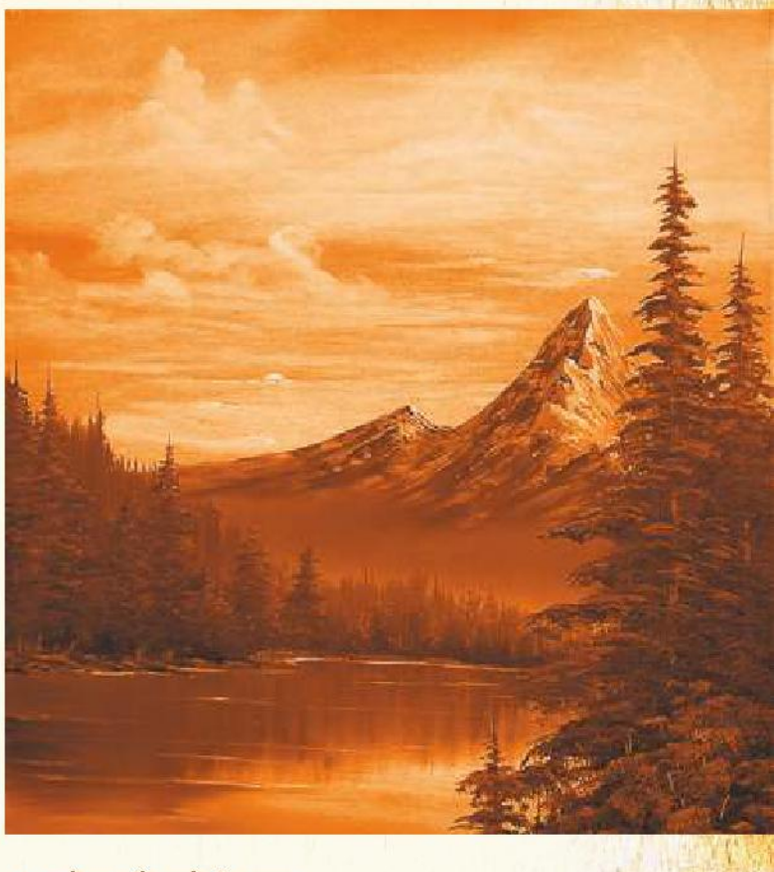

60. षोडश विद्यादेवी पूजन
शा. शांतिलालजी मिश्रीमलजी झोटा, दाधाल

61. क्षेत्रपाल पूजन
शा. ओटमलजी सरेमलजी संघवी, कोमता

62. पूजा मंडप
शा. भूरमलजी वस्तीमलजी बाफना, थलवाड़

63. जिनशासन देवी पूजन
शा. पृथ्वीराजजी दूदमलजी निमाणी, पोषाणा

64. धर्माचार्य पूजन
शा. मांगीलालजी अनराजजी पालगोता,

राजनगर (ऊनड़ी)

65. जेठ सुद 2 आंगी भावना
शा. कालूचंदजी हंजारीमलजी संकलेचा, मेंगलवा

66. राजगृही नगरी मंडप
श्री पंच महाजन चौराऊ, चौराऊ

67. मेहन्दी वितरण
शा. नेमीचंदजी नागराजजी झोटा, दादाल

68. इन्द्र इन्द्राणी बनवारो चढ़ावो
शा. मांगीलालजी लखमीचंदजी लुंकड़, पोषाणा

69. भगवान रे मामा–मामी बनवारो चढ़ावो
शा. साँकलचंदजी भँवरलालजी छत्रिया वोरा, जीवाणा

70. भगवान से भुआ भुआडोजी बनवारो चढ़ावो
शा. भंडारी दलीचंदजी भूरमलजी, मेंगलवा

71. भगवान रे बहेन–बहनोई बनवारो चढावो
शा. छगनराजजी कुंदनमलजी संकलेचा, मेंगलवा

72. चौदह स्वप्न दर्शन
शा. किशोरमलजी हस्तीमलजी संकलेचा, मेंगलवा

73. भगवान रे सास–ससुर बनवारो चढ़ावो
शा. मीठालालजी पारसमलजी नैणाजी संकलेचा, मेंगलवा

74. भगवान रे प्रधानमंत्री बनवारो चढ़ावो
शा. कबदी सुखराजजी चमनाजी, धाणसा

75. नगरसेठ बनवारो चढ़ावो
शा. कांकरिया जीतमलजी मिश्रीमलजी सुराणा

76. भगवान रे खजाँची बनवारो चढ़ावो
शा. मुथा सुखराजजी भबूतमलजी जीवाणा

77. राज ज्योतिषी बनवारो चढ़ावो
शा. उदयराजजी नथमलजी छाजेड़, जीवाणा

78. समाधि मंदिर ध्वजा चढ़ावो
शा. डामराणी परिवार, मेंगलवा

79. समाधि मंदिर दंड चढावो
शा. फूसालालजी छोगालालजी कंकूचौपड़ा, मेंगलवा

80. समाधि मंदिर कलश चढ़ावो
शा. सुरेशकुमारजी सोमतमलजी बोहरा, भीनमाल

81. गुरुदेव शांतिविजयजी म. सा. विजराजमान करवा रो चढ़ावो
शा. सुमेरमलजी नरसाजी बालगोता, मेंगलवा

82. हाथी रे होदे तोरण बान्दवा रो चढ़ावो
शा. मूलचन्दजी सुखराजजी बालगोता, मेंगलवा

83. माणक स्तम्भ रोपण रो चढ़ावो
शा. देसाई कीर्तिभाई दलसुखभाई, थराद

84. आचार्य जयन्तसेनसूरिजी ने कांबली रो चढ़ावो
शा. जेठमलजी कुन्दनमलजी बालगोता, मेंगलवा

85. प्रथम मंगल कलश
शा. शाहजी परिवार हस्ते मदनराजजी, पाथेड़ी

86. द्वितीय मंगल कलश
शा. ओटमलजी सरेमलजी संघवी, कोमता

87. तृतीय मंगल कलश
शा. पारसमलजी मिश्रीमलजी संघवी, दादाल

88. समाधि मंदिर में भंडार रो चढ़ावो
श्री थराद जैन संघ नव युवक मंडल (ह. हरि भाई) अहमदाबाद

89. समाधि मंदिर में घंट बांधवारो चढ़ावो
श्री थराद जैन संघ, नडियाद

90. मुनिराज जयरत्नविजयजी म. सा. ने कांबली रो चढ़ावो
शा. कुन्दमलजी जेठमलजी हुकमाणी, पांथेड़ी

91. प्रथम विमान द्वारा पुष्पवर्षा रो चढ़ावो
शा. पारसमलजी शिवराजजी छत्रिया वोरा, जीवाणा

92. द्वितीय विमान द्वारा पुष्पवर्षा रो चढ़ावो
शा. देसाई कीर्तिभाई दलसुख भाई, थराद

93. तृतीय विमान द्वारा पुष्पवर्षा रो चढ़ावो
शा. भँवरलालजी मिश्रीमलजी झोटा, दादाल

94. चतुर्थ विमान द्वारा पुष्पवर्षा रो चढ़ावो
शा. हस्तीलमलजी भबूतमलजी पालगोता, सुराणा

95. पंचम विमान द्वारा पुष्पवर्षा रो चढ़ावो
शा. कुन्दनमलजी रिखबचंदजी सोफाड़िया, रेवतड़ा

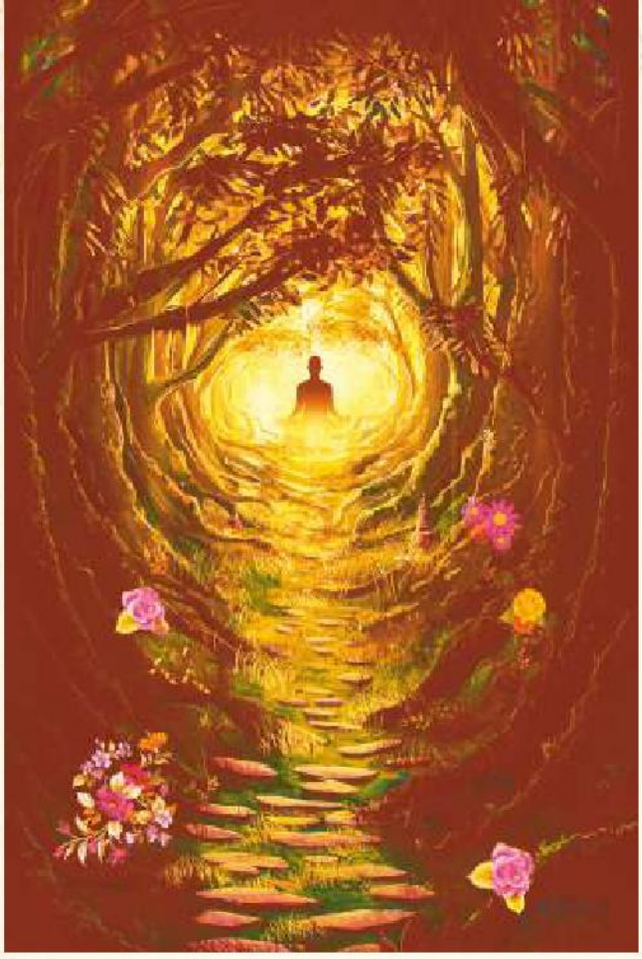

96. छठो विमान द्वारा पुष्पवर्षा रो चढ़ावो
शा. रमेशकुमार भूरमलजी, रेवतड़ा

97. समाधि मंदिर में अखंड ज्योत रो चढ़ावो
श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ हस्ते सेवंती भाई, थराद

98. केसर छाटणा करवा रो चढ़ावो
शा. राणमलजी पूनमचंदजी संघवी, दादाल

99. सकल संघ रे केसर रा थापा करवारो चढ़ावो
शा. चंपालालजी मनोहरमलजी अंदाणी, सुराणा

100. झालर बजाने का चढ़ावा
शा. मुन्नीलालजी दीपचंदजी संघवी, आलासण

101. गुरु महाराज पुखणा रो चढ़ावो
श्री महावीर मित्र मण्डल, अहमदाबाद

102. प्रतिमाजी ने वधावारो चढ़ावो
शा. वोरा बूदरमलजी जीवराजजी, डीसा

103. श्री महावीरस्वामीजी मंदिर गंभारो खोलवारो चढ़ावो
शा. पारसमलजी हिम्मतमलजी बंदामुथा, राजनगर (ऊनड़ी)

104. श्री गुरुमहाराज सा. मंदिर गंभारो खोलवारो चढ़ावो
शा. शंकरलालजी भेरमलजी, सुराणा

105. श्री समाधि मंदिर गंभारो खोलवारो चढ़ावो
शा. भँवरलालजी मिश्रीमलजी छत्रिया वोरा, जीवाणा

106. गुरुदेव श्री शांतिविजयजी म. सा.
प्रथम अष्टप्रकारी पूजा
शा. भँवरलालजी मिश्रीमलजी छत्रिया वोरा, जीवाणा

107. गुरुदेव श्री शांतिविजयजी म. सा. पहली आरती चढ़ावो
शा. भँवरलालजी मिश्रीमलजी छत्रिया वोरा, जीवाणा

108. गुरु महाराज सा. पाट परम्परा फोटू नाम लगावारो चढ़ावो
शा. फूलचंदजी संकलेचा परिवार, मेंगलवा

109. गुरु महाराज सा. पाट परम्परा फोटू नाम लगावारो चढ़ावो
शा. हीराणी परिवार, रेवतड़ा

110. गुरु महाराज सा. पाट परम्परा फोटू नाम लगावारो चढ़ावो
श्री पंच महाजन तिलोड़ा, तिलोड़ा

त्रिवेणी संगम, अट्ठाई महोत्सव

1. प्रथम दिन जेठ सुद 3 तारीख 24.05.2012 गुरुवार

- प्रथम बंदोला, सुबह नास्ता व दोनों समय की नवकारसी
शा. जुगराज जी सूरजमलजी संकलेचा परिवार, दासपा
- श्री समकित अष्टप्रकारी पूजा
शा. संघवी नेमीचंदजी पारसमलजी वेदमुथा, रेवतड़ा
- अंगरचना
श्रीमती अ.सौ. उमरीदेवी नरेन्द्रकुमारजी हेमराजजी कबदी, सायला
- भक्ति
श्रीमती सकूदेवी सांकलचंदजी हुकमाणी, पांथेड़ी

2. द्वितीय दिन जेठ सुद 4 तारीख 25.05.2012 शुक्रवार

- द्वितीय बंदोला, सुबह नास्ता व दोनों समय की नवकारसी
शा. गेबचंद शिवराजजी छत्रिया वोरा, जीवाणा
- श्री शांतिनाथ पंचकल्याणक पूजा
शा. चंपालालजी मनोहरमलजी अंदाणी, सुराणा
- अंगरचना
शा. लालचंदजी हस्तीमलजी छत्रिया वोरा जीवाणा
- भक्ति
श्रीमती मधुबेन कांतिलालजी भंसाली, थराद

3. तृतीय दिन जेठ सुद 5 तारीख 26.05.2012 शनिवार

- तृतीय बंदोला, सुबह नास्ता व दोनों समय की नवकारसी

शा. कीर्तिलाल दलसुख भाई देसाई, थराद

- श्री नेमीनाथ पंचकल्याणक पूजा
  शा. वसन्तकुमारजी शांतिलालजी पारेख, थराद
- अंगरचना
  श्रीमती माथुरीबेन चिमनलाल त्रिभुवनदास बोहेरा, थराद
- भक्ति
  श्रीमती शांताबेन खूबचंदभाई वोहेरा, थराद

4. चतुर्थ दिन जेठ सुद 6 तारीख 27.05.2012 रविवार

- चतुर्थ बंदोला, सुबह नास्ता व दोनों समय की नवकारसी
  शा. मांगीलालजी अनराजजी पालगोता चौहान, राजनगर ऊनड़ी
- श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा
  शा. हेमराजजी रिखबचंदजी मोदी, धानसा
- अंगरचना
  शा. जवेरीलालजी गोपीलालजी ओसवाल, पादरू
- भक्ति
  शा. पारसमलजी सोहनराजजी भंसाली, भीनमाल

5. पंचम दिन जेठ सुद 7 तारीख 28.05.2012 सोमवार

- पंचम बंदोला, सुबह नास्ता व दोनों समय की नवकारसी
  शा. सुमेरमलजी नरसाजी बालगोता, मेंगलवा
- श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा
  शा. सुखराजजी चमनाजी कबदी, धानसा
- अंगरचना
  श्रीमती शांतिदेवी छगनराजजी सेठ, धानसा
- भक्ति
  शा. मिश्रीमलजी ऊकाजी सालेचा, धानसा

6. षठ दिन जेठ सुद 8 तारीख 29.05.2012 मंगलवार

- षष्ठ बंदोला, सुबह नास्ता व दोनों समय की नवकारसी
  शा. चंदनमलजी नगराजजी बाफना परिवार, थलवाड़
- श्री आदिनाथ पंचकल्याणक पूजा
  शा. लालचन्दजी चिमनलालजी छाजेड़, नेनावा
- अंगरचना
  संघवी श्रीमती संतोकबाई दलीचंदजी नथमलजी, नेनावा
- भक्ति
  शा. सागरमलजी दुदमलजी कटारिया संघवी, सांचोर (सत्यपुर)

7. सप्तम दिन जेठ सुद 9 तारीख 30.5.2012 बुधवार

- षष्ठ बंदोला, सुबह नास्ता व दोनों समय की नवकारसी
  शा. वाघजीभाई गगलदास वोहेरा, थराद
- श्री सिद्धचक्र नवपद पूजा, अंगरचना, भक्ति
  शा. जयन्तीलालजी पुरुषोत्तमदासजी वोहेरा, थराद
- मेहन्दी वितरण
  शा. बाबूलालजी धनराजजी डोडिया गाँधी, धुम्बडिया
- मंगल गीत साँझी
  शा. मांगीलालजी हरकचंदजी कटारिया संघवी, धानसा

8. अष्टम् दिन जेठ सुद 10 तारीख 31.5.2012 गुरुवार

- फले चुनड़ी, जय जिनेन्द्र, सत्तर भेदी पूजा, गुरु शांतिविजयजी अष्टप्रकारी पूजा, अंगरचना, भक्ति
  शा. जवाहरलालजी नागजीजी चन्दन परिवार, साँचोर (राज.)

श्री महावीरस्वामी जैन मंदिरजी के शिलालेख

१. मुख्य प्रवेश द्वार पर

प्रातः स्मरणीय विश्वपूज्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः

आचार्यदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के तत्वावधान में सकल जैन संघ प्रदत्त द्रव्य सहाय से भांडवपुर श्री महावीर जैन कारखाना के मार्फत श्री दियावट पट्टी के श्वेताम्बर जैन संघ ने इस तीर्थ का जिनालय का संपूर्ण जीर्णोद्धार कराया और इसके चारों ओर के कोणों पर शिखरबद्ध एक-एक देवकुलिका एवं घुम्मटदार तीन देहरियां आरसोपल से नई बनवाई और आचार्यदेव के ही कर कमलों से ही दश दिनावधि के महोत्सवपूर्वक सविधि प्रतिष्ठा करवा कर संवत् २०१० ज्येष्ठ सुदी दशम सोमवार के शुभ दिन शुभ लग्नांशं में मुख्य जिनायल के ऊपर स्वर्ण कलश, दंड, ध्वज और देवकुलिकाओं एवं देहरियों में जिन प्रतिमाएँ स्थापन, स्वर्ण कलश तथा दंड ध्वज समारोपण करवाए।

२. श्री राजेन्द्रसूरि गुरु छत्री

शा. रिखबदासजी जांमतराजजी सरेमलजी मिश्रीमलजी भभुतमलजी बेटा माणकचंदजी ओतवास आहोर वाला रे तरफ सु. संवत् २००६ रा माह वदि ५ सोमवार

३. श्री आदिनाथ भगवान की देहरी नंबर -१

श्री मल्लिनाथ भगवान, श्री आदिनाथजीसंघवी जोनुंजी रे बड़ भाई सुन्दरवास कोमता वालों रे तरफ सूं संवत् २००६ रा माह वदि ५ सोमवार

४. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी का फोटो बड़ा

शाह चुनीलाल छतरमल रणजीतमल जीतमल मदनलाल अशोककुमार प्रकाशकुमार बेटा पोतरा छिम्मतमलजी श्रीश्रीमाल दादाल वालों की तरफ से दर्शनार्थ विक्रम सं. २०३३ गुरु सप्तमी श्री भांडवपुर तीर्थ

५. श्रीसमवसरण पट्ट

कोरा निवासी शा. पारसमलजी सोनाजी ने श्री महावीर समवसरण के पट्ट के लिए सं. २०१७ के वैशाख वदि १६. श्री शंत्रुजय गिरिवर पट्टमोदरा निवासी शा. पेलादमलजी कुंदनमल तलकचंद बेटा पोतरा प्रतापजी ने श्री सिद्धाचलजी के पट्ट के लिए संवत् २०१७ के वैशाख वदि २

७. श्री अष्टापद महातीर्थ पट्ट

कांकरिया शा. मालाजी जेठमलजी मिश्रीमलजी भलेचंद डूंगरचंद, घेवरचंद जीतमल घमंडीलाल मांगीलाल बेटा पोता आसाजी सुराणा निवासी श्री अष्टापद तीर्थ के पट्ट के लिए संवत् २०१७ के वैशाख सुदि २

८. श्री राजगिरी तीर्थ पट्ट

नून निवासी शा. टेकचंदजी मूलचंदजी, कस्तूरचंदजी, ने श्री राजगृही पंच पहाड़ के तीर्थ के पट्ट के लिए संवत् २०१७ के वैशाख वदि १

९. श्री शांतिनाथ भगवान देहरी नंबर-२ श्री श्रेयांसनाथ भगवान, श्री आदिनाथ भगवान

शा. सूरताजी केशाजी भेरमलजी बेटा चेनाजी, ओतवास पांथेडी वालों रे तरफ सें संवत् २००६ रा माह वदि ५ वार सोम

१०. घुमटित्रय श्री पार्श्वनाथनाथजी श्वेत तीन श्यामवर्णीय पार्श्वनाथ गुरु गौतमस्वामीजी

शाह अचलराजजी सुपुत्र धनराजजी व गुमानमलजी जुगराजजी सुपुर्द भोमराजी निवासी पांथेड़ी वालों की तरफ से हस्ते अचलराजजी संवत् २००६ रा माह वदि ५ सोमवार

११. पार्श्वनाथ भगवान देहरी नंबर-३ श्री अजीतनाथ श्री पद्मप्रभु भगवान

शा. मुथा वरदाजी पूनमचंद छोगालाल बेटा सूरताजी ओतवास सायला वालों रें तरफ से संवत् २००६ माह वदि ५ सोमवार

१२. जलमंदिर पावापुरी पट्ट

मोदरा निवासी शा. सरेमलजी हरकचन्दजी तिलोकचंदजी बेटा पोता हांसा जी श्री पावापुरी जल मंदिर के पट्ट के लिए संवत् २०१७ वैशाख वदि १

१३. श्री गिरनार जी पट्ट

मेंगलवा निवासी शा. भूरमल दलीचंद बेटा पोता भानाजी भण्डारी ने श्री गिरनारजी तीर्थ के पट्ट के लिए संवत् २०१७ के वैशाख वदि १

१४. श्री सम्मेतशिखरजी सिद्ध क्षेत्र पट्ट

मोरसीम निवासी शा. मोजाजी हेमाजी भूरमल बेटा पोता जानूजी संघवी ने श्री सम्मेतशिखरजी तीर्थ के पट्ट के लिए सं. २०१७ के वैशाख वदि १

१५. श्री नेमिनाथजी की बारात का पट्ट

मेंगलवा निवासी शा. हरकचंद बागुलाल पारसमल भँवरलाल, मनोहरलाल, जुगराज, सरूपचंद, चंदनमल, कांतिलाल, बेटा पोता लादाजी ने श्री नेमीनाथजी की बरात के पट्ट के लिए संवत् २०१७ के वैशाख वदि १

१६. श्री नेमिनाथ भगवान देहरी नंबर-४ श्री चन्द्रप्रभु, श्री सुमतिनाथ

शा. मोनंगजी समरताजी मादाजी दलाजी ओतवास रेवतड़ा वालों रे तरफ सु संवत् २००६ रा माह वदि ५ सोमवार

१७. श्री धनचन्द्रसूरीश्वरजी गुरु छत्री

भण्डारी बदाजी उमेदाजी भूराजी भबूतमलजी बेटा हांसाजी ओतवास साहेला वालों रे तरफ सुं संवत् २००६ रा माह वदि ५ वार सोम।

श्री भांडवपुर जैन तीर्थ परिचय

वीर तीर्थ की स्थापना- विक्रम की छठी शताब्दी में दियावटी प्रान्त में वैशाला नगर था जिसमें हजारों घर आबाद थे। जैनों की बस्ती काफी संख्या में थी। उन्होंने सौद शिखरी जिनालय बनाकर प्रतिष्ठा की। कालान्तर में मेमन धाडेतियों की धाड़े पडना आरम्भ हुई। श्रीमंत अपनी जान माल की रक्षा के लिए अन्यत्र जा बसे। नगर वीरान सा हो गया। कोमता वासी संघवी पालजी आदि प्रतिमा लेने आए लाख यत्न करने पर भी प्रभु की पालखी (रथ) कोमता की ओर ले जाना चाहा, पर नहीं चली। फिर देता पोषाणा, मेंगलवा, होकर भांडवपुर आकर रूक गई। एक पहिया नष्ट हो गया, उसके बाद बहुत उपाय करने पर भी निष्फल हुए।

रात्रि में अधिष्ठायक देव ने स्वप्न दिया कि यहाँ पर तीर्थ स्थापना विशाल मंदिर बनाकर करे। फिर पालजी संघवी ने नूतन सौध शिखरी जिनालय का विक्रम सं. १००३ में खात मुहूर्त कराया। विक्रम सं. ११०० के लगभग प्रतिष्ठा कराई। विक्रम सं. १३वीं शताब्दी में पुनः जीर्णोद्धार हुआ। फिर विक्रम सं. १६वीं शताब्दी में दीयावट पट्टी वालों ने दूसरा जीर्णोद्धार कराया। तीसरा जीर्णोद्धार उपस्थित हुआ। चर्चाचक्रवर्ती श्रीमद् विजय धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से वि.सं.१९७७ में श्री दियावट पट्टी जैन श्वे. संघ ने जिर्णोद्धार हेतु चन्दा इकट्ठा किया। वि.सं. १९८५ माघ शुक्ला दशमी को आचार्य विजय भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के कर कमलों से श्री महावीरजी मन्दिर पर ध्वजा, दण्ड, कलश प्रतिष्ठा की गई।

व्याख्यान वाचस्पति वयोवृद्ध भांडवपुर तीर्थोद्धारक श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के तत्वावधान में विक्रम. सं. १९८९ में जीर्णोद्धार प्रारम्भ हुआ। जिसमें नूतन जिनालयों धर्मशालाओं का निर्माण हुआ। विक्रम सं. २०१० ज्येष्ठ सुदी दशमी की शुभवेला में श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के कर-कमलों से स्वर्ण कलश दंड नूतन जिनालयों प्रतिमा आदि की अंजनशलाका प्रतिष्ठा हुई। अब यह तीर्थ विशालकाय में स्थित है। अनेकानेक विशेषताओं से भरापूरा तथा मानसिक शारीरिक व्याधि नाशक इष्टफल दातार यह शस्य शामला मरुधर में स्थित है।

पूज्य मुनिवर श्री शान्तिविजयजी म. सा. के चातुर्मास अन्तर्गत तीर्थ परिचय पट्ट बनवाया गया।

विक्रम सं. २०३७ वीर निर्माण संवत् २५०७, श्री राजेन्द्रसूरि सं. ७४

मंदिर के बाहर की जीमणी तरफ की नीचे की रूम

मंदिरजी के जीमणी तरफ रूम नंबर-१

शा. माणकचंदजी तिलोकचंद, तगराज, प्रकाशराज, गुलाबचंद, मूलचंद बेटा पोता छोगाजी वास मेंगलवा वाला री तरफ से संवत् २०२८ का फाल्गुन सुद १४

मंदिरजी के जीमणी तरफ रूम नंबर-२

शा. सागरजी समनाजी ओतवास आलासण वाला की तरफ से संवत् २००७ रा चैत्र सुद पूनम

मंदिरजी के जीमणी तरफ रूम नंबर-३

सेठ शा. हरकचंदजी बेटा प्रतापमलजी मुकाम उम्मेदाबाद वाला की तरफ से संवत् २००७ का कार्तिक सुद पूनम

मंदिरजी के जीमणी तरफ रूम नंबर-४

सेठ शा. साहेबचंदजी रिखबचंदजी मुन्नीलालजी बेटा पोता ताराचंदजी वास उम्मेदाबाद (गोल) तरफ सु भेंट संवत् २००७ कार्तिक सुद १

मंदिरजी के जीमणी तरफ रूम नंबर-५

शाहजी मेघराजजी के जावंतराजजी वास जालोर वाला की तरफ से संवत् २००८ वैशाख वद १

पुरानी पेढ़ी में पेढी के नीचे का भोयरा

संघवी वागमल प्रभुदान साँकलचंद कसनाजी ओतवास मोरसीम वाला री तरफ सुं संवत् २०१० रा वैशाख वद ५ ह. खुद

पुरानी पेढ़ी

शा. साहेबचंद पुखराज पारसमल रूपचंद पूनमजी वास मेंगलवा वालों रे तरफ से

केशरघर के नीचे का रूम

शा. नारायणजी रूगनाथजी वास मेंगलवा वाला रे तरफ सु वैशाख वद २

रूम

शा ताराचंद मादाजी वास मेंगलवा वालों रे तरफ सुं संवत् १९९८ रा वैशाख वद २ ली. सा.

शा. रूगनाथजी रत्नाजी वास उनड़ी वालों रे तरफ से हस्ते मुलताणजी खंगारजी राजगजी संवत् १९९८ रा मति वैशाख वद २ ली.सा.

शा. नवलमलजी पूनमचंदजी वास एलाणा वालों रे तरफ से दुकान सूं संवत् १९९८ रा मति वैशाख सुद ली.सा.

कोठारी शा हंजाजी हिन्दुजी वास दासपा वालों रे तरफ सु संवत् १९९८ रा वैशाख वद २ ली.सा.

नवाजी रिखबदासजी डामरजी वास एलाणा वालों रे तरफ सुं संवत् १९९८ रा वैशाख वद २ ली.सा.

गुरुदेव के पाट स्थापना का लाभ

शा. हस्तीमल पारसमल दूदमल उत्तमचन्द सूरजमल दिनेशकुमार कपूरचन्द नेमीचन्द, नरेशकुमार, राजेशकुमार, रमेशकुमार, शैलेशकुमार, विनोदकुमार, बेटा पोता भबूतमलजी पालगोता चौहान सुराणा वालों की तरफ से भेंट

श्री गुरु पाट पर नाम

श्री जैन श्वेताम्बर संघ मेंगलवा की ओर से श्री भांडवपुर तीर्थ में भेंट संवत् २०४० माघ सुदी १३ सूरिपद पाटोत्सव स्मृति तारीख १५.०२.१९८४

श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय गुर्वावली
शासनपति श्री महावीरस्वामीजी

१. श्री सुधर्मास्वामीजी
२. श्री जम्बूस्वामीजी
३. श्री प्रभवस्वामीजी
४. श्री शय्यंभवसूरिजी
५. श्री यशोभद्रसूरिजी
६. श्री संभूतिविजयजी श्री भद्रबाहुस्वामीजी
७. श्री स्थूलिभद्रसूरिजी
८. श्री आर्यमहागिरिजी श्री आर्यसुहस्तिसूरिजी
९. श्री सुस्थितसूरिजी श्री सुप्रतिबद्धसूरिजी
१०. श्री इन्द्रदिन्नसूरिजी
११. श्री दिन्नसूरिजी
१२. श्री सिंहगिरिजी
१३. श्री वज्रस्वामीजी
१४. श्री वज्रसेनसूरिजी
१५. श्री चन्द्रसूरिजी
१६. श्री सामन्तभद्रसूरिजी
१७. श्री वृद्धदेवसूरिजी
१८. श्री प्रद्योतनसूरिजी
१९. श्री मानदेवसूरिजी
२०. श्री मानतुंगसूरिजी
२१. श्री वीरसूरिजी
२२. श्री जयदेवसूरिजी
२३. श्री देवानन्दसूरिजी
२४. श्री विक्रमसूरिजी
२५. श्री नरसिंहसूरिजी
२६. श्री समुद्रसूरिजी
२७. श्री मानदेवसूरिजी
२८. श्री विबुधप्रभसूरिजी
२९. श्री जयानन्दसूरिजी
३०. श्री रविप्रभसूरिजी
३१. श्री यशोदेवसूरिजी
३२. श्री प्रद्युम्नसूरिजी
३३. श्री मानदेवसूरिजी
३४. श्री उद्योतनसूरिजी
३५. श्री विमलचन्द्रसूरिजी
३६. श्री सर्वदेवसूरिजी
३७. श्री देवसूरिजी
३८. श्री सर्वदेवसूरिजी
३९. श्री यशोभद्रसूरिजी श्री नेमीचन्द्रसूरिजी
४०. श्री मुनिचन्द्रसूरिजी
४१. श्री अजितदेवसूरिजी
४२. श्री विजयसिंहसूरिजी
४३. श्री सोमप्रभसूरिजी श्री मणिरत्नसूरिजी
४४. श्री जगत्चन्द्रसूरिजी
४५. श्री देवेन्द्रसूरिजी श्री विद्यानन्दसूरिजी
४६. श्री धर्मघोषसूरिजी
४७. श्री सोमप्रभसूरिजी
४८. श्री सोमतिलकसूरिजी
४९. श्री देवसुन्दरसूरिजी
५०. श्री सोमसुन्दरसूरिजी

५१. श्री मुनिसुन्दरसूरिजी
५२. श्री रत्नशेखरसूरिजी
५३. श्री लक्ष्मीसागरसूरिजी
५४. श्री सुमतिसाधुसूरिजी
५५. श्री हेमविमलसूरिजी
५६. श्री आनन्दविमलसूरिजी
५७. श्री विजय दानसूरिजी
५८. श्री हीरविजयसूरिजी
५९. श्री विजय सेनसूरिजी
६०. श्री विजय देवसूरिजी
६१. श्री विजय सिंहसूरिजी
६२. श्री विजय प्रभसूरिजी
६३. श्री विजय रत्नसूरिजी
६४. श्री वृद्धक्षमासूरिजी
६५. श्री विजय देवेन्द्रसूरिजी
६६. श्री विजय कल्याणसूरिजी
६७. श्री विजय प्रमोदसूरिजी
६८. श्री विजय राजेन्द्रसूरिजी
६९. श्री विजय धनचन्द्रसूरिजी
७०. श्री विजय भूपेन्द्रसूरिजी
७१. श्री विजय यतीन्द्रसूरिजी
७२. श्री विजय विद्याचन्द्रसूरिजी
७३. श्री विजय जयन्तसेनसूरिजी
७४. श्री विजय नित्यसेनसूरिजी
७५. श्री विजय जयरत्नसूरिजी

रूम

१. शा. हरकचंद छगनराज लालचंद छोगाजी वास साहेला वालों रे तरफ सु हस्ते हंजारीमल हेमताजी वास साहेला संवत् १९९८ रा वैशाख वद ३

२. शा. छोगालाल पनेलाल सिरदारमल, भँवरलाल, आसुलाल वास मांडवा वालों रे तरफ सुं संवत् १९९८ रा वेशाख वद ३

३. शा. चुन्नीलाल गेनमल छगनराज दीपचंद नेमाजी वास मांडलवा वालों रे तरफ सुं संवत् १९९८ रा वैशाख वद ३

४. शा. रिखबदास सुगराज दुकान मद्रास मारवाड़ रूणीचा वालों रे तरफ सुं संवत् १९९८ रा वैशाख वद २

पाट स्थापना हॉल के ऊपर की रूम-१

मोदीजी मदनसिंहजी सकनसिंहजी वास जालोर वालों रे तरफ से संवत् २००७ रा मिगसर वदि १३

रूम नं. २

मुथा मसरीमल गेनाजी वास साहेला वालों रे तरफ सुं संवत् २००७ रा मगसर वद १३ ह. मुलताणजी

रूम नं. ३

शा. रिखबचंदजी छोगाजी वास साहेला रे तरफ सुं संवत् २००७ रा काती सुद १५ ह. रिखबदास

रूम नं. ४

शा. उकाजी केवलचंद बस्तीमल हांसाजी वास साहेला वालों रे तरफ से संवत् २००७ रा मगसर वद १३

मूर्ति भण्डार

शा. रतनाजी गेनाजी वास पोषाणा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा वैशाख वद २

शा. पूनमचंदजी धर्मपत्नी बाई भूति वास वादनवाड़ी की तरफ से ह. मुनीम भेमाजी देवाजी वास नगर वाला संवत् २००२ वैशाख वद

श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी

शा. पूंजाजी गेनाजी वाणीगोता परिवार जालोर वाला ह. नेनमलजी बागोड़ा वाला संवत् २०३८ रा चैत्र सुदी १५

अंदर रूम

शाहजी शा. अचलराजजी सुपुत्र धनराजजी तथा गुमानमलजी जुगराजजी सुपुत्र भोमराजजी निवासी पांथेड़ी वालों की तरफ से विक्रम सं. १९९९ वैशाख वदि ७

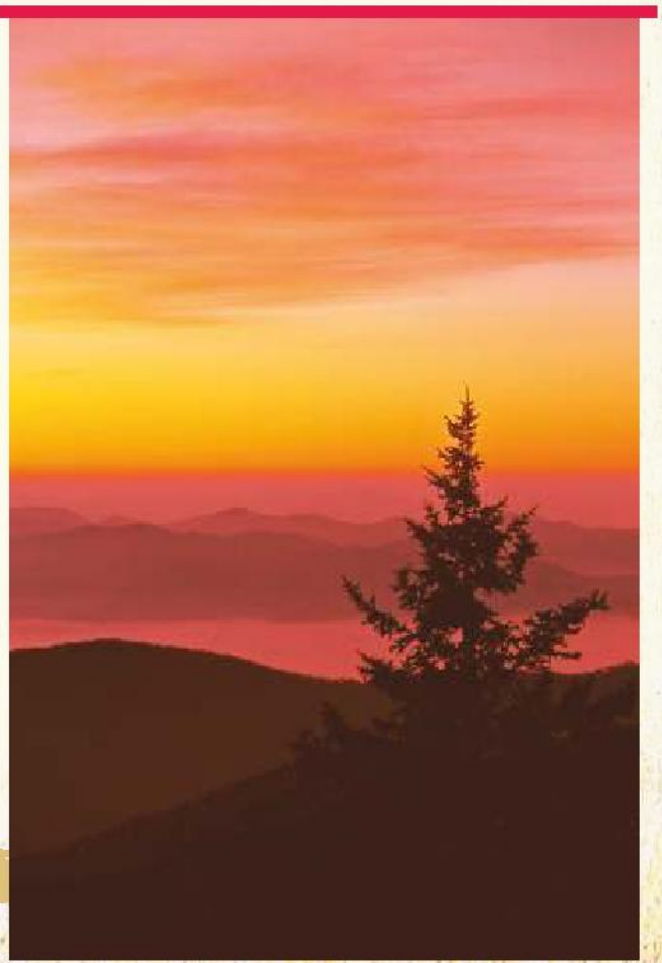

पुराना मुख्य गाँव का द्वार सिरे पोल

आचार्यदेव श्री श्री १००८ श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज साहब के सद्उपदेश से सायला निवासी कबदी प्रतापमलजी भेराजी की तरफ से भेंट ह. हजारीमल संवत् २००८ आषाढ़ शुक्ला।

श्री गुरु यतीन्द्र विद्या शांति कक्ष

प्रथम द्वार- शाह नथमल वरदाजी वास गोल वालों रे तरफ सुं संवत् १९९९ रा वैशाख वद २-चां.

द्वितीय द्वार- कोठारी सुनाजी मेसाजी हिन्दुजी वास दासपा वालों रे तरफ से संवत् १९९९ रा वैशाख वद २ लि.सां.

अन्दर का रूम- भण्डारी छोगाजी हांसाजी बदाजी हिमाजी बेटा तीराजी ओतवास साहेला वालों री तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद वार सोम

मंदिरजी रे डाबी तरफ री पूजा का रूम

मुथा रूपाजी ताराजी पुखराज पारसमल केसराजी ओतवास देता वालों की तरफ से संवत् २००७ वैशाख वद-१

रूम- शाह अखाजी हंजारीमलजी जीफाजी वास रेवतड़ा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

सूरजपोल पर कोई नाम नहीं
सूरजपोल की रूम संख्या ६३ से

शा. चदणमल पेमाजी वास सुराणा वालों रे तरफ से सं. १९९९ रा वैशाख वद १ लि.सां.

रूम संख्या ६४

शा. रूपाजी ओटमल जेरूपजी वास सुराणा वालों की तरफ से संवत् १९९९ रा वैशाख वद १ लि.सां.

रूम संख्या ६५

शा. केशाजी तगतमल बदाजी वास साहेला वालों की तरफ से संवत् १९९९ का वैशाख वद १ ली.सा.

रूम संख्या ६६

शा. छोगाजी वोलोजी वास पादरू वालों की तरफ से संवत् १९९९ का वैशाख वद १ ली.सा

पानी की टंकी रूम में

शा. भेराजी मगनाजी वास जीवाणा वालों की तरफ से संवत् १९९९ रा वैशाख वद १

रूम संख्या ६७

सा. नरसाजी अजाजी वास वागोड़ा वालों रे तरफ से संवत् १९९९ रा वैशाख वद १

रूम संख्या ६८

शा. चमनाजी सेनाजी वास नींबलाणा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ६९

शा. ताराजी भीमाजी वास मोरसीम वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ७०

शा. नाहर कपूरचंदजी वास केसवणा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती शुद १

रूम संख्या ७१

शा. नेणमल गुणेशमल भमरलाल बेटा पोता रत्नाजी वास गोल वालों रे तरफ से संवत् १९९८ वैशाख वद २ ह. नेणमल

रूम संख्या ७२

मुथा वनराजजी भीमराजजी कपूरचंदजी वास नींबलाणा वालों ने तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ७३

शा. केसरीमल दलीचंद बनाजी वास आहोर वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ७४

शा. गामाजी पोलाजी नरसिंगजी वास रेवतड़ा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ७५

शा. देवीचंद मूलचंदजी हीराचंदजी धुड़ाजी वास मांडवला वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ७६

शा. जोधाजी मनीरामजी वास मांडलवा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ७७

शा. मगाजी करताजी वास गोल वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ७८

शा. केराजी मुलताणजी वनाजी वास मेंगलवा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ७९

शा. आर्सींगजी वरदाजी शहर जालोर वाला रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ८०

शा. धनाजी पीराजी केशवणा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ८१

शा. प्रागाजी जेठमलजी कपूरजी वास एलाणा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम संख्या ८२

शा. हरण ताराजी गेनाजी वास नरता वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ लि. गुरा सिरेमल

रूम संख्या ८३

शा. फूलचंद मानाजी गुलाबाजी वास आहोर वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ लि.गु.सि.

रूम संख्या ८४

शा. छोगाजी चमनाजी दलाजी वास हरजी वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ लि.गु.सि.

रूम संख्या ८५

शा. भभूबाजी हेमाजी खीमाजी वास मेंगलवा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ लि.गु.सि.

रूम संख्या ८६

शा. मगनाजी जीवाजी वास आहोर वालों की तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ लि.गु.सि. । खो. जालोर वाला सि. शीक समन्दर खाँ

रूम संख्या ८७

शा. भुबाजी हीमाजी वेजाजी वसराजजी गेबाजी खीमाजी वास मेंगलवा वाला रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ लि.गु.सि.

रूम संख्या ८८

शा. रखबाजी तिलोकजी वास आहोर वालों की तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ लि.गु.सि. खो. शीक

रूम संख्या ८९

शा. जीवाजी प्रेमाजी वास जीवाणा वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ लि.गु.सि.

रूम संख्या ९०

शा. केराजी मोनीजी नरसिंगजी वास आंवलोज वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ लि.गु.सि.

रूम संख्या ९१

शा. पूनमचंदजी हरकचंदजी खुबाजी वास गोल वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १लि.गु.सि.

रूम संख्या ९२

शा. भूरमल हस्तीमलजी लालचंदजी छोगाजी हिन्दुजी वास आहोर वालों की तरफ से रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १लि.गु.सि. खो. सिकन्दर

रूम संख्या ९३

शाह फूलचंदजी मगाजी वास आहोर वालों रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

इलेक्ट्रिक रूम

शा. केशाजी जूठाजी समरताजी भूताजी वास साहेला वालों की तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

कुआ

शा. पुखराज खूबचंदजी संकलेचा श्री जालोर संवत् १९९० रा मिति वैशाख सुदी ३ दिने

सूरजपोल में ऊपरी रूम

रूम संख्या ९४

शा. जेठमल दलीचंदजी ओतवास नगर मालाणी वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ९५

शा. खंगारजी जवाजी ओतवास ओटवाला वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ९६

शा. हाथीजी मालाजी ओतवास कोरा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ९७

शा. माणकजी कसनाजी ओतवास ओटवाला वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वै. सुद १ ह.- शा. सोनाजी हरीशजी वास सुराणा वाला

घृत रूम

दोशी नेणाजी सांकलजी ओतवास भीनमाल वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ९८

शा. छोगाजी लुंबाजी रूपाजी बोताजी ओतवास पादरू वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ९९

शा. इन्दरजी गेमाजी रिखबचंदजी पुखराज बेटा पोता भभूताजी ओतवास ओटवाला वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १००

शा. रणछोड़मल खूमचंद दुकान मद्रास मारवाड़ में ओटवाला वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १०१

शा. दीपाजी मकनाजी रणछोड़जी बेटा पोता लखाजी ओतवास ओटवाला वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १०२

शा. भगाजी मिश्रीमल जगराज पदमाजी ओतवास सांथूवालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १०३

शा. भदरजी उमाजी ओतवास दासपा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १०४

शा. मोनाजी हरकाजी मोतीजी ओतवास चौराऊ वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १०५

मुथा धरमा भेराजी बादरजी हंजाजी ओतवास जीवाणा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १०६

शा. रावताजी रे भार्या बाई कंकु वास पांथेड़ी वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १०७

शा. तलोकजी प्रतापजी ओतवास गोल वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १०८

शा. भूरमलजी कालूरामजी ओतवास नगर वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १०९

शा. मुथा धरमाजी कुन्दनमलजी उकाजी ओतवास मोरसीम वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ११०

मुथा जुहाराजी रे भार्या बाई सारा वास गोल वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १११

शा. तेजाजी वस्तीचंद अमरचंद बेटा पोता छोगाजी ओतवास बागोड़ा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ११२

शा. उमेदा असलाजी वास पादरा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ११३

शा. छोगाजी मोहनलाल भूताजी ओतवास एलाणा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ११४

मुथा भलाजी केशरीमल अनोपजी बाली वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ११५

शा. जेरूपजी भूताजी पोरवाल वास आहोर वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १ ह. वजेराज जी गोड़ीदासजी

रूम संख्या ११६

शा. प्रागाजी माणकजी गदिया वास आहोर वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या ११७

शा. चंदाजी थानाजी रे बहू वा. सीतलवाणा की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १ ह. मुणोत छोगाजी वास जालोर

रूम संख्या ११८

पर कोई नाम की लादी नहीं है।

रूम संख्या ११९

शा. राजाजी दीपाजी वन्नाजी ओतवास मेंगलवा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १२०

शा. सांकलचंद जवेरचंद फूलचंद शोभागमल हांसाजी ओतवास बागरा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १२१

शा. प्रेमाजी जेरूपचंद रे माता नाथूबाई वास बागरा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १ ह. प्रेमाजी

रूम संख्या १२२

शा. खुमाजी ओटमलजी नथमलजी हिन्दुजी वास बागरा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १२३

शा. भीमाजी अमीचंद चुन्नीलाल नथमल वरधीचंद सोभागमल दला जी वास बागरा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १२४

शा. गेनाजी केशराजी भीमचंद भीकमचंद चुनीलाल जवेरमल गुणेशमल ओखाजी वास बागरा वालों की तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम संख्या १२५

शा. जेठमल गेनमलजी दुकान मदरास मारवाड़ में मांडवला वाला रे दुकान तरफ तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद-१

वर्तमान मुख्य द्वार

भंडारी उम्मेदमल भबूतमल घेवरचंद मांगीलाल धीरजकुमार चंपालाल बेटा पोता हंसराजजी व ताराचंदजी एवं समस्त भंडारी परिवार सायला जालोर सं. २०३७ चैत्र सुदी पूनम

रूम नंबर -१

मुथा हंजारीमलजी सरेमलजी पुखराजजी बेटा कालूजी वास आहोर वाला रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम नंबर -२

शा. जेसाजी हेमाजी गुलबाजी वास पादरु वाला रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ लि.सां.

रूम नंबर -३

शा. वसाजी कस्तुरजी समरताजी घुडाजी वास केसवणा वाला रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम नंबर -४

शा. नरसिंगजी भूताजी वास आहोर वाला रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर -५

शा. गणेशमलजी भीमराजजी जोईताजी जेसुपजी वास गोल वाला रे तरफ से संवत् १९९८ रा काती सुद १

रूम नंबर -६

शा. मुता सोगाजी सोनाजी इन्दरजी जुगराज मोटमल वास रेवतड़ा वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १

रूम नंबर -७

शा. सूरजमलजी भलाजी पीराजी ओतवास बालवाड़ा वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर -८

शा. घोडा जोईताजी भूरमलजी सोनाजी ओतवास के सवणा वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर -९

शा. घोडा जोईताजी भूरमलजी सोनाजी ओतवास के सवणा वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर -१०

मुथा जोधाजी भलाजी पुखराज गुलबाजी वास गोल वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

गुरुमंदिर तरफ के द्वार (पोल) परकोई नाम नहीं।

रूम नंबर -११

शा. दीपाजी सागरमलजी चंदाजी वास गोल वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर -१२

मुथा केसाजी रत्नाजी वास केसवणा वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर -१३

शा. माणकजी कपूरजी छोगाजी दानाजी वास केसवणा वाला रे तरफ से संवत् १९९८ रा वैशाख सुद १ सा. लि.

रूम नंबर -१४

शा. धुड़ाजी किसनाजी वास मेंगलवा वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १

रूम नंबर -१५

शा. खंगारजी पुखराज हीराजी वास साहेला वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ सोम

रूम नंबर - १६

शा. मसराजी मगनाजी वास साहेला वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर - १७

शा. धर्माजी जामताजी वास हरमु वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर - १८

शा. रकबाजी मोड़ाजी केवलजी वास खेतड़ा वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर - १९

शा.समरताजी भादाजी दलाजी वास रेवतड़ा वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर - २०

शा. हेमताजी जेरूपजी वास चौराऊ वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर - २१

शा. हस्तीमलजी जीवाजी वास नींबलाणा वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर - २२

शा. सुखराज केशाजी वास साहेला वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १ वार सोम

रूम नंबर - २३

शा. जेरूपजी मसरीमलजी बेटा पोतरा फूसाजी ओतवास नींबलाणा वाला रे तरफ से संवत् १९९५ रा काती सुद १

गुरु यतीन्द्र विद्या शांति कक्ष के ऊपर की धर्मशाला

रूम नंबर - ३४

शा. छोटमल जीसरेमलजी जगराजजी बेटा पोता कसनाजी वास आहोर वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर - ३५

शा. हंजामलजी नथमलजी शेषमलजी समनमाजी बेटा पोता किस्तूरजी वास गुढा बालोतान वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर - ३६

संघवी हिम्मतमलजी रामचंदजी ताराचंदजी वास आहोर वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर - ३७

संघवी हिम्मतमलजी रामचंदजी ताराचंदजी वास आहोर वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर - ३८

कोठारी तलोकचंदजी उमेदमलजी हस्तीमलजी मोतीचंदजी बेटा पोता नथमलजी वास आहोर वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर - ३९

शा. मुथा मुलतानमलजी संपतराजजी चुन्नीलालजी वास आहोर वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर - ४०

संगी रिखबचंदजी देवीचंदजी रतनचंदजी वास आहोर वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर - ४१

शा. नेमीचंदजी मांगीलालजी घेवरचंदजी बेटा पोता पूनमचंदजी वास आहोर वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर - ४२

शा. मुलताणजी प्रतापजी वास भीनमाल वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर - ४३

बाई प्यारी मुथा शा. दानमलजी रे आर्या वास जालोर वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

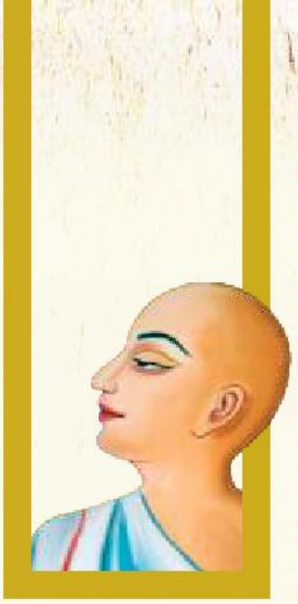

रूम नंबर -४४

मुता पुराजी सरेमलजी वास जालोर वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -४५

कोठारी वस्तीमलजी खूबजी हिन्दूजी वास दासपा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -४६

मुथा फूलचंदजी जालमचंदजी चंदनमल भंवरलालजी वास एलाणा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -४७

शा. मसराजी मूलाजी पारसमल पुखराज बेटा पोता राजा ओतवास मेंगलवा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -४८

शा. पासाजी मानाजी देवीजी ओतवास सिराणा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -४९

मुथा छोगाजी लालाजी सवाजी केनाजी, वनाजी, ओतवास सिराणा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -५०

शा. रदाजी केवदाजी बाबूजी हिम्मतमल सरेमल दाडमचंद नेमीचंद चंपालाल बेटा पोता देवाजी ओतवास दादाल वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -५१

शा. सोगाजी हंजाजी लुम्बाजी समरथाजी बेटापोता गोमाजी वास सुराणा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -५२

शा. जुटाजी आदाजी रासाजी ओतवास सुराणा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -५३

शा. मोदी सेसमल मिश्रीमलजी बेटा पोता जसराजजी ओतवास एलाणा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -५४

शा. मिश्रीमल,सूरजमल बेटा पोता जेठाजी ओतवास दादाल वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -५५

मुथा मूलाजी सेनाजी वास सुराणा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -५६

भंडारी सागरमलजी पुखराज बेटा पोता दलाजी ओतवास सुराणा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -५७

शा. मियाचंदजी भोमाजी छोगाजी, सरेमलजी केवलचंद जी मुलतानमलजी बेटा पोता रामाजी निवासी पांथेड़ी वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -५८

शा. रामाजी मियाचंदजी भोमाजी, छोगाजी, सरेमलजी केवलचंद बेटा पोता वनाजी निवासी पांथेड़ी वालारे तरफ से संवत् २०१६ वैशाख सुद १

रूम नंबर -५९

मुथा नथमलजी माणकचंदजी चुन्नीलालजी ओतवास आहोर वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -६०

मुथा दीपाजी तगाजी वनाजी ओतवास सायला वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १

रूम नंबर -६१

शा. तेजाजी ताराजी हंजाजी, बेटा पोता गलबाजी जोगाजी ओतवास जीवाणा वाला रे तरफ से संवत् २०१६ रा वैशाख सुद १ह. रावाजी

श्री शान्तिविजयजी समाधि मन्दिरके सामने के रूम

रूम नंबर-१

श्री यात्रिक संघ भीनमाल की तरफ से यह कमरा बनवाने में भेंट वि.स. २०२७ रा चैत्र सुदी पूनम

रूम नंबर-२

श्री सायला निवासी सुराणा सागरमलजी रे धर्मपत्नी बाई भूरी की तरफ से भेंट हस्ते सम्पतराज नथमलजी गोल वाला संवत् २०२८ का फाल्गुन सुदी ८

दोनों उपरोक्त रूमें समाधि मन्दिर प्रतिष्ठा के समय तोड़ी गई है।

रूम नंबर-३

तलावट शाह पुखराज धर्मचन्द टीकमचन्द बाबूलाल नथमल, कांतिलाल जयन्तीलाल, रमेशकुमार, नरपतलाल, फूटरमल, मनोरमल, राजकुमार, शांतिलाल बेटा पोता भीमाजी निवासी गोल (उम्मेदाबाद) वालों की तरफ से भेंट। संवत् २०२८ का चैत्र सुद १

रूम नंबर-४

शाह चुन्नीलाल प्रतापजी चुन्नीलालजी की धर्मपत्नी सिणगारीबाई निवासी ओटवाला वालों रे तरफ से

रूम नंबर-५

गाँधी मेहता अचलचन्द गुलाबचन्द अशोककुमार बेटा पोता भीमराजजी सायला निवासी रे तरफ से भेंट

रूम नंबर-६

शाह सूरजमलजी सरदारमलजी फोजाजी निवासी सायला वालों की तरफ से भेंट

रूम नंबर-७

शाह पुखराजजी हीराचन्दजी बेटा पोता लखाजी निवासी ओट वाला वालों की तरफ से भेंट

रूम नंबर-८

शाह मगराजजी आदाजी निवासी धुम्बड़िया वालों की तरफ से भेंट

रूम नंबर-९

शाह पुखराज तगराजजी, रमेशकुमार, सूरजकुमार, हरीचन्द बेटा पोता पीराजी धुम्बड़िया वालों की तरफ से भेंट

भातीखाता में-रूम-१

शाह गेनाजी वक्ताजी निवासी मोरसीम वाला गेनाजी रे धर्मपत्नी बम्सुबाई हाल मुकाम धुम्बडिन्रया वालों की तरफ से सं. २०२२ रा

रूम-२ मिठाई गोदाम पर कोई नाम नहीं।
रूम-३ अन्दर के सम पर कोई नाम नहीं।
रूम-४ रथ गेरेज व भाती घर के बीच में रूम पर भी नाम नहीं है।

रथ गेरेज-मंगल घर

फोलामुथा मांगीलाल हीरालाल, ललितकुमार, महेन्द्रकुमार, जुगराज, दिनेशकुमार, किशोर, कमलेश, विक्रम, विशाल, बेटा पोता छोगालाल वरदाजी सायला वालों की तरफ से बनवा कर सप्रेम भेंट किया।

सभा मंडप पर लिखित शिलालेख

॥ श्री भांडवपुर नयरे श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः॥

। श्री वन्दे प्रभु वीरम्।

विश्व प्रभाकरतेज अनुपम, उद्यत भांडवपुर सुआजे।
राय सिद्धधारण के कुल मंडण, हे त्रिशला जननी सुतराजे।
कीध कई उपकार महीतल, ज्ञान प्रकाशक तारक छाजे।
ताही प्रभु परिणाम किये, भवि सम्पत धाम वधे शुभकाजे ॥१॥

मरुधर देश मही जबर जोधाण,
राज भूपत उम्मेदसिंह जाकी राजधानी है।
दुरग जालोर धरा दीयावट पटी,
देखो धाम प्रभु वीर तणो सहुजन जानी है।
चाली अठ नग्र तांबे वतन दाधाल,
वारु शाह मोतीचंद वाला राह मनमानी है।
नवा फोजमल अरु मलताणमल,
सम्रथ सपूत पेढ़ी बम्बई में ठानी है ॥२॥

ताहि सुत हीराचंद संवत् अठाणु,
गुणी काती शुक्ल प्रतिप्रदा दिवस सुआए है।
मिले सहु संघ भाव जानी जन काजे,
जोष के रावा भुवन सभाकाजे सित पाए है।
तैंतीस रोकड़ दे समरथमल शोभा,
बेठवा श्री संघ काजे लाभ तो लेवाए है।
निगराणी मुनीमजी साँकलचन्दनी,
सागे मन्दिरजी आगे मोटा बंगलो बंधाए हैं ॥३॥

संवत् १९९९ रा काती सुदी १ शनिवार। फोजा मलताण समरथमल दत्तम्। दाधाल वास्तत्य। लि.गु. सिरेमल

उत्तराभिमुख-पूर्वाभिमुख द्वार, वर्तमान पेढ़ी, सभा मण्डप, मंगल घर, एवं प्याऊ के पुराने लाभार्थियों को स्वद्रव्य से नव निर्माण करने में पेढ़ी के नियमानुसार प्राथमिकता दी जावेगी।

शुभ संवत् २०६४ प्रथम जेठ सुदी पूनम शुक्रवार

दिनांक ०१.०६.२००७ को उपरोक्त सभी रूमों के लादी पर लिखित नाम जाँच परख कर लिखे गए जो सही सत्य है । गुरु मन्दिर के पास चौक की प्याऊ स्वर्गीय पिताजी श्री तोलाजी समनाजी की स्मृति में शा. गुणेशमल देवीचन्द मांगीलाल, कांतिलाल, इन्द्रमल अशोककुमार बेटा पोता तोलाजी वास राजनगर (ऊनड़ी)

दिनांक २६.०३.२००८ को नकल किया ।

यतीन्द्र विहार उपाश्रय के पास की प्याऊ

स्व. जमनादेवी धर्मपत्नी श्री मेघराजजी जैन एवं सुपुत्र भूरमल, दिनेशकुमार एवं सुपौत्र नितेश, परेश, विकेश लिलेस, कल्पेश बेटा पोता श्री मेघराजजी जैन निवासी सुराणा वालों की तरफ से सप्रेम भेंट। वि. सं. २०४८ जेठ सुदी ३ बुधवार ।

श्री यतीन्द्र विहार उपाश्रय

मुख्य द्वार पर

शा. मांगीलाल, अशोककुमार जयन्तीलाल बेटा पोता मिश्रीमलजी जांवतराजजी वेद मेहता झाब हाल सांचोर निवासी की ओर से श्री यतीन्द्र विहार (उपाश्रय) बनवाया वि.सं. २०५१ पोष सुदी ७

रूम नंबर-१

शा. मांगीलाल मिश्रीमलजी वेदमेहता झाब सांचोरवालों की तरफ से

रूम नंबर-२

शा.जयन्तीलाल मांगीलाल वेद मेहता सांचोर वालों की तरफ से भेंट

रूम नंबर-३

शा. अशोककुमार मांगीलाल वेद मेहता सांचोर वालों की तरफ से भेंट

रूम नंबर-४

शाह मिश्रीमलजी जांवतराजजी वेद मेहता झाब वालों की ओर से

ऊपरी मंजिल के रूम

नाल रूम पर-१ श्रीमती नीरूबेन जयन्तीलाल वेद मेहता, झाब सांचोर वालों की तरफ से भेंट

रूम २- श्रीमती संगीताबेन ललितकुमारजी बोथरा सांचोर वालों की तरफ से ।

रूम ३- श्रीमती मीनाबेन अशोककुमार वेद मेहता सांचोर वालों की तरफ से ।

रूम ४- श्रीमती उगमबेन मांगीलाल वेद मेहता सांचोर वालों की ओर से भेंट ।

रिपेयरिंग होने वाले रूमों की नामावली भोजनशाला के पास से

रूम नंबर-१

श्री माता बादीबाई स्वर्गवास यादगार में । शा. पुकराजजी सरूपाजी सोनमलजी हिम्मतमलजी वास ऊनड़ी

रूम नंबर-२

हरण फाउलाल राजकुमार बेटा पोता भूराजी वास कोमता वाला (हाल- भीनमाल)

रूम नंबर-३

शा. सोवलचंद मनोहरमल मोतीलाल रमेशकुमार उत्तमचंद बेटा पोता कसनाजी गोत वाणीगोता (वास बागोड़ा)

रूम नंबर-४

शा. खेतमल पुखराज भँवरलाल ओटमल उम्मेदमल बेटा पोता नरसाजी वास दादाल

रूम नंबर-५

काँकरिया जेठमल भँवरलाल कुन्दनमल मांगीलाल नरपतराज बेटा पोता आसाजी मु. सुराणा

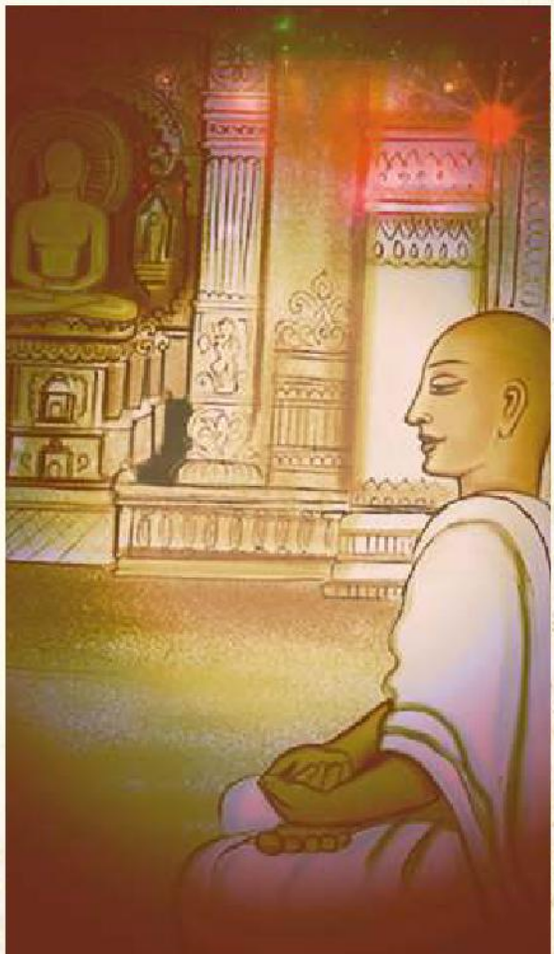

रूम नंबर-६

पांथेड़ी निवासी स्व. तेजराजजी, बदाजी की यादगार में भाई जेठमल नेणमल, कुन्दनमल, मोतीलाल, ताराचन्द वेणीचन्द किशोरकुमार राजेश नरेन्द्र कमलेश महेन्द्र, दिलीप बेटा पोता बदाजी की तरफ से भेंट

रूम नंबर-७

सुराणा निवासी स्व. भाई शा. मूलाजी सीनाजी की यादगार में । शा. हस्तीमल पारसमल दुदमल बेटा पोता भबूताजी सुराणा वालों की ओर से भेंट

रूम नंबर-८

शा. हस्तीमल पारसमल दुदमल उत्तमचन्द, सूरजमल, दिनेशकुमार, कपूरचन्द, नेमीचन्द, नरेशकुमार, राजेशकुमार, रमेशकुमार शैलेशकुमार, विनोदकुमार बेटा पोता भबूतमलजी पालगोता चौहान मु. सुराणा ।

रूम नंबर-९

शाह उदेचंद अशोककुमार सुरेशकुमार किशोरकुमार हरीशकुमार बेटा पोता नाथाजी छाजेड़ मु. जीवाणा ।

रूम नंबर-१०

शा. रिखबचंद सुखराज दिनेशकुमार अशोककुमार दिलीपकुमार, जितेन्द्रकुमार बेटा पोता मुलतानमलजी काँकरिया ग्राम निवासी बागोड़ा वाला की तरफ से सप्रेम भेंट

रूम नंबर-११

सोलंकी हजारीमल भगराज बाबूलाल, सुमेरमल महेन्द्रकुमार, जयन्तीलाल, रमेशकुमार, अशोककुमार जयन्तीलाल, नेमीचंद बेटा पोता अचलाजी वास सायला

ऊपर मंजिल की रूमों की नाम सूचि

रूम नंबर-१२

शा. मांगीलाल रकबाजी वास सुराणा

रूम नंबर-१३

शा. भँवरलाल सुरेशकुमार राजेशकुमार बेटा पोता हंजारीमल रत्नाजी, भेंसवाड़ा

रूम नंबर-१४

शा. रिखबचंद, सुमेरमल, घेवरचंद, नैनमल जयन्तीलाल अरविन्दकुमार, विकास, विशाल, महिपाल, बेटा पोता आदाजी निवासी सुराणा

रूम नंबर-१५

स्व. सेठ छगनराजजी तगराजजी की स्मृति में श्रीमती शांतिदेवी की ओर से भेंट निवासी धानसा ।

रूम नंबर-१६

संघवी पूरीबाई ध. प. भूरमलजी शिवगंज हाल मद्रास सिरेमल मिलापचन्द्र, कांतिलाल, मोहनलाल बोराणा राठोड़ परिवार ।

रूम नंबर-१७

समस्त यात्रीगण जैसलमेर, राणकपुर, पदमपुर, देलवाड़ा तीर्थयात्रा संघ निवासी रामसीन

रूम नंबर-१८

गाँधी मुथा पिता श्री मनोहरमलजी दलीचंदजी मातुश्री उखीदेवी बेटा पोता किशोरमल डायालाल, रायचंद, चेनराज वास भीनमाल

रूम नंबर-१९

श्रीमती शांतिदेवी पुखराजजी कानूंगा, पुखराजजी मिश्रीमलजी परिवार वास भीनमाल ।

रूम नंबर-२०

सेठ संघवी भीमराजजी भेराजी निवासी भीनमाल संघ आयोजन की शुभ स्मृति में ।

रूम नंबर-२१

सेठ संघवी भीमराजजी भेराजी निवासी भीनमाल संघ आयोजन की शुभ स्मृति में ।

रूम नंबर-२२

गाँधी मुथा किशोरमल, महेशकुमार, उत्तमचंद, हीराचंद, राजेश, भावेश, विकेश, बेटा पोता मनोहरमलजी दलीचंदजी वास भीनमाल ।

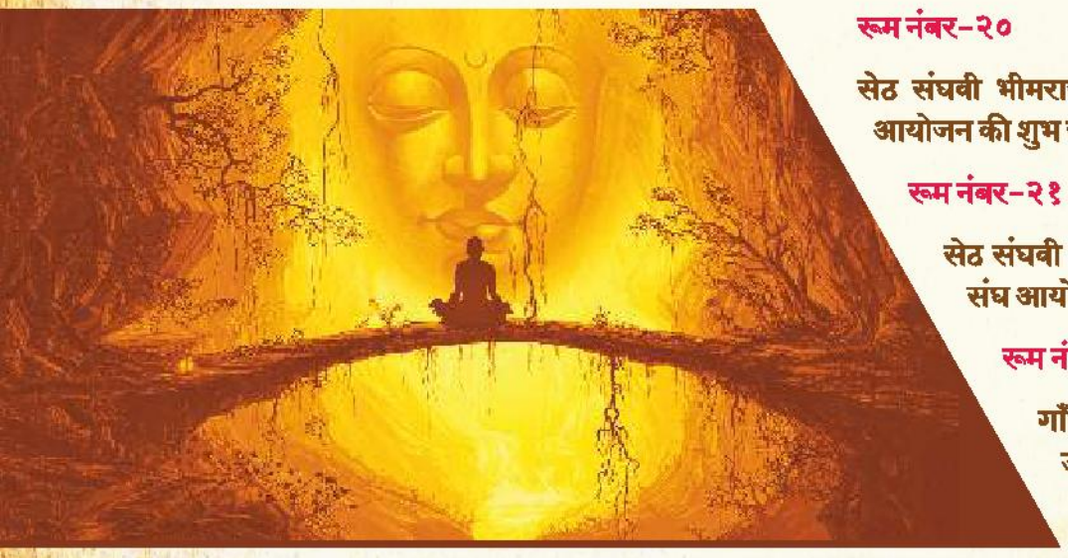

बागोड़ा पोल के पास की नीचे की रूमों की लाईन

१. शा. केवलचंद वस्तीमल सरेमल, चुन्नीलाल, घेवरचंद, पारसमल, चंपालाल, भानमल, भीकचंद, बाबूलाल बेटा पोता हीमाजी जीवाणा वाला वास जालोर

२. शा. दरगाजी सुपुत्र सरेमलजी रे वऊ जबुबाई वास दादाल

३. संघवी पारसमल रणमल धींगड़मल कांतिलाल, कुंदनमल, जयन्तीलाल बेटा पोता मिश्रीमलजी मु. दादाल

४. काँकरिया मालाजी मिसरीमलजी जीतमल, मांगीलाल नेनमल नरपतराज राजमल हीरालाल गुलाबचंद बेटा पोता आसाजी वास सुराणा

५. शा. हस्तीमल गेनमल चंपालाल, गुणेशमल, कांतिलाल, केवलचंद, भलेचंद, मनोहरलाल, सुमेरमल, अशोककुमार, सूरजमल प्रवीणकुमार बेटा पोता केशाजी मु. बागोड़ा वालों की तरफ से भेंट

६. शा. फूलचंद पुखराज सुमेरमल मांगीलाल मनोहरमल रमेशकुमार नेमीचंद, गौतमचंद, अशोककुमार बेटा पोता अन्नाजी बापना मु. कोरा वालों की ओर से भेंट

७. शा. अचलचंद ललितकुमार बेटा पोता जोईताजी ओट वाला की तरफ से भेंट

८. बंदा मुथा प्रभुलाल, रतनलाल, मांगीलाल, किशोरकुमार, अशोककुमार, दिनेशकुमार, जयन्तीलाल बेटा पोता रूगनाथजी बागोड़ा वालों की तरफ से भेंट

९. फोलामुथा समरथमल लालचंद, मनोहरमल, पारसमल, विजयराज, विमलकुमार जीतमल बेटा पोता ओबाजी परिवार सायला वालों की तरफ से भेंट

१०. शा. मूलाजी देवाजी सवराजजी बगसीराम बेटा पोता खूमाजी मु. बोरटा

११. शा. सोकलचंद, वगतावरमल कानराज तिलोकचंद कांतिलाल, फतेहराज, रमेशकुमार डायालाल, राजमल, मुकेशकुमार, प्रकाशचन्द्र, ललितकुमार नरपतराज बेटा पोता सोनाजी नेथीजी पांथेड़ी वालों की तरफ से।

१२. स्वर्गीय पिताजी श्री भंडारी सरेमलजी की यादगिरी में भंडारी पुकराज जयन्तीलाल राजेन्द्रकुमार बेटा पोता सरेमलजी सायला वाला की तरफ से सप्रेम भेंट

१३. बागोड़ा निवासी उपनाम केसरीमलजी मुथा स्वर्गवासी किशोरीलालजी की धर्मपत्नी रामूदेवी हाल निवासी जोधपुर वालों की तरफ से सप्रेम भेंट।

१४. शा. हंजारीमलजी भीमराजजी वास धानसा वाला हस्ते जीवीबाई की ओर से सप्रेम भेंट

१५. श्रीमती जड़ावीबाई ध. प. नथमलजी तोलाजी साकरिया गोता वीसा पोरवाल निवासी सियाणा, हा. जवेरचंदजी नोपाजी की ओर से सप्रेम भेंट

१६. श्रीमती झमकुदेवी रिखबचंदजी लूंकड नारादरा वाला मु.सियाणा वालों की तरफ से सप्रेम भेंट

१७. शा. मांगीलाल हेमराज, महेन्द्रकुमार बेटा पोता हरकाजी कानूंगा मु. आसाणा हाल चौराऊ वालों की तरफ से सप्रेम भेंट

१८. गाँधी मुथा पुखराज घेवरचंद, भँवरलाल, चंपालाल, रमेशकुमार, लक्ष्मीचंद, सुरेशकुमार, रमेशकुमार, सोभाग- चंद, कमलेशकुमार बेटा पोता कुंभाजी सायला वालों की तरफ से भेंट

१९. भंडारी लालचंद घेवरचंद मीठालाल बसन्तकुमार, रमेशकुमार, उत्तमचंद बेटा पोता मगनाजी वास सियाणा वालों की तरफ से सप्रेम भेंट

२०. शा. सोनमल गुमानमल कुम्भराज, गौतमकुमार, भीमराज, नरेन्द्रकुमार, वीरकुमार, राजेशकुमार, बेटा पोता पेलादजी मु. पांथेडी वालों की तरफ से सप्रेम भेंट।

२१. शा. घेवरचंद भगाजी गोल (उम्मेदाबाद) श्रीमती शांतिदेवी ध. प. भगाजी की तरफ से सप्रेम भेंटप्रथम

द्वार

२२. शा. सरेमल हरकचंद तिलोकचंद, मांगीलाल, सुमेरमल, मुन्नीलाल, प्रेमचंद, बाबूलाल, कांतिलाल, अशोककुमार, जीतमल बेटा पोता होसाजी वास मोदरा वालों की तरफ से भेंट

द्वितीय द्वार पर

२३. शा. पुखराज चंपालाल बाबूलाल, चंदनमल, ललितकुमार, किरणकुमार, विनोदकुमार, अमितकुमार, बेटा पोता पूनमचंदजी वास दाधाल वालों की तरफ से सप्रेम भेंट

ऊपर के रूमों की सूचि

स्वर्गीय श्रीमती हरियादेवी ध. प. हरकचंदजी वास चौराऊ हस्ते पंकजी मगनाजी

बागोड़ा गेट के ऊपर के रूम

१. स्वर्गीय श्रीमती हरीयादेवी पत्नी हरकचंदजी वास चौराऊ हस्ते पकजी भगाजी।

२. धुम्बड़िया निवासी पालगोता चौहान स्व. कानमलजी की यादगिरी में मनोहरमल उदयचंद, लक्ष्मीचंद, किशोरमल, टिकमचंद, पृथ्वीराज, हस्तीमल, जीतमल, जयन्तीलाल, विक्रम, दीपक बेटा पोता आदाजी।

३. हरणेचा शा. नरसिंगमल, भँवरलाल, चंपालाल, शांतिलाल, महेन्द्र, सोहनलाल, बेटा पोता गोवर्द्धनजी वास सिणधरी।

४. वीरवाड़िया तखतमलजी की स्मृति में हा. मिश्रीमल जुगराज, नरसिंगराज हरकचंद, केसरीमल, नेमीचंद, राणमल, सोहनराज, चन्द्रप्रकाश दिनेश राजेश बेटा पोता भुदा जी वास गुडा मालाणी।

५. श्रीमती संगीदेवी धर्मपत्नी शा. हंजारीमलजी केराजी पालरेचा वास धाणसा।

६. स्वर्गीय श्रीमती मेतीदेवी पेराजमलजी रतनपुरा बोरा निवासी मोदरा की स्मृति में । ह. मांगीलाल, घेवरचंद, मनोहरमल, सुमेरमल, जयन्तीलाल।

७. भंडारी चंपालालजी, प्रभातकुमार, महेन्द्रकुमार, बेटा पोता मिश्रीमलजी निवासी जालोर हाल जोधपुर, ह. विमलादेवी

८. स्वर्गीय सुमेरमलजी की यादगार में भँवरलाल हीराचंद किशोरमल नितेश महेश बेटा पोता मिश्रीमलजी वास नरता हाल भीनमाल।

९. श्रीमती संघवी शांतादेवी चुन्नीलालजी वास कवराड़ा ह. पारसमलजी

१०. स्वर्गीय श्रीमती सुंगीदेवी धर्मपत्नी हंजारीमलजी केराजी वास धाणसा।

११. श्रीश्रीमाल बालगोता श्रीमती पानीबाई धर्मपत्नी मेगराज अशोक, जगदीश विजय, नरेन्द्र, महावीर, सुरेन्द्र दिनेश, हुक्मीचंद, संजय बेटा पोता पूनमजी (डूंगरजी) वास दियोड़ा हाल जोधपुर

१२. शा. सरेमलजी हीराचंदजी बागरा ह. पाबूबेन

१३. शा. खीमचंदजी नैनमल, गौतमचंद, संजयकुमार हितेष, कमलेश, बेटा पोता धुड़ाजी संघवी नि. मोरसीम वालों की ओर से।

१४. शा. पारसमल, हितेषकुमार, महावीरकुमार बेटा पोता जेठमलजी सेनाजी वास कवराड़ा।

१५. संघवी कांतिलालजी कीर्तिकुमार बेटा पोता वछराजजी निवासी सियाणा ह. कांतिलाल

१६. धाणसा निवासी पटियात देशमलजी धरमाजी की यादगार में पुत्र पृथ्वीराज सुरेशकुमार राजेन्द्रकुमार पौत्र अशोक, पप्पू, पंकज, अजय, भावेश की ओर से विक्रम संवत २०४८ चैत्र सुदी १३

१७. श्रीमती चंपादेवी धर्मपत्नी साँकलचंदजी, घेवरचंदजी, किशोरमल, मांगीलाल, बाबूलाल, महावीरकुमार, बेटा पोता साँकलचंदजी, फोलामुथा नि. सायला वालों की ओर से।

१८. संघवी शाह प्रभुलालजी सुरेशकुमार उत्तमचंद, नरपतकुमार, रमेशकुमार बेटा पोता खीमाजी गेमाजी वास मोरसीम वालों की तरफ से ।

१९. फोलामुथा स्वर्गीय नरसाजी समरथमलजी की यादगार में विजयराज, विमलकुमार बेटा पोता नरसाजी सायला की तरफ से।

२०. शा. सोहनमल संपतराज, विजयकुमार, रूपेशकुमार, दिलीपकुमार, प्रकाशकुमार, बेटा पोता

जवाजी दीपाजी वाणीगोता तिलोड़ा निवासी की तरफ से।

२१. पूज्य छोगमलजी माता पाँकूदेवी भाई विरधीचंदजी की पुण्य स्मृति में हस्ते सूरजमल जुगराज संकलेचा निवासी दासपां जिला जालोर

२२. बंदामुथा हजारीमल, चंपालाल, कांतिलाल, कैलाशकुमार, जयन्तीलाल, दिनेशकुमार, विक्रमकुमार बेटा पोता गजाजी वास धाणसा वालों की तरफ से।

भोजनशाला

मुख्यद्वार-

मातुश्री मालूबाई हजारीमलजी एवं श्रीमती सीताबाई किशोरमलजी लूंकड़ की स्मृति में भीनमाल निवासी संघवी शाह सुमेरमल, किशोरमल, माणकचंद, पुत्र रमेशकुमार, भरतकुमार, महेन्द्रकुमार, पौत्र दीपककुमार, राहुलकुमार, पलाशकुमार लूंकड़ ने भोजनशाला हॉल बनवाया।

भोजनशाला हॉल-

मातुश्री मालूबाई हजारीमलजी एवं श्रीमती सीताबाई किशोरमलजी लूंकड़ की स्मृति में भीनमाल निवासी संघवी शाह सुमेरमल, किशोरमल, माणकचंद, पुत्र रमेशकुमार, भरत कुमार, महेन्द्रकुमार, पौत्र दीपककुमार, राहुलकुमार, पलाशकुमार लूंकड़ एवं श्रीमती सुआबाई, मोहनीबाई पुत्रवधू श्रीमती पवनबाई, मंजूबाई, लूंकड ने भोजनशाला हॉल बनवाया।

भोजनशाला हॉल कमरा एक व दो

संघवी शाह सुमेरमल, किशोरमल, माणकचंद, पुत्र रमेशकुमार, भरतकुमार, महेन्द्रकुमार, दीपककुमार, राहुलकुमार, पुत्र पौत्र हजारीमलजी जवाजी लूंकड़ भीनमाल निवासी द्वारा भोजनशाला में कमरा बनवाया।

भोजनशाला पेढ़ी (ऑफिस)

कोठारी स्व. भाई चंपालाल की स्मृति मेंश्री श्री १००८ श्री आचार्य भगवंत श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी , मुनि श्री शांतिविजयजी के उपदेश से कोठारी सरेमल उनकी धर्मपत्नी असलीदेवी (बदामी बहेन) पुत्र माणकचंद, भँवरलाल, पृथ्वीराज, पौत्र दिनेश, राजेश, मुकेश, राकेश, संदीप, टिंकू, नितेश, केतन, विवेक, प्रपौत्र मेहूल, विशाल, बेटा पोता प्रपौत्रा कपूरचंदजी हिन्दुजी कोठारी भीनमाल वालों ने यह भोजनशाला की पेढ़ी बनवा कर भेंट की।

भोजनशाला कोठार रूम

छत्रगोता शा. प्रतापचंद, पारसमल, दरगचंद, रमेशकुमार, मदनराज, सुरेशकुमार (राज्) किशोरकुमार, राजेशकुमार, नरपतकुमार, मुकेशकुमार बेटा पोता नवाजी सायला वालों की तरफ से श्री उपधान तप आयोजन की शुभ स्मृति में बना। माघ वदि ९ शनिवार दिनांक १६.०१.१९९३ श्री वर्द्धमान राजेन्द्र जैन भोजनशाला,श्रीभांडवपुर तीर्थ जालोर, राजस्थान।

बर्तन बिस्तर गोदाम

कोठारी वस्तीमल, चंपालाल, संदीपकुमार, टिंकूकुमार, नितेशकुमार, बेटा पोता खूबाजी दासपां वालों की ओर से

संघवी छगनराज, सुखराज, भूरमल, बेटा पोता पूनमचंदजी नरसिंगजी वास बागरा वालों की तरफ से सप्रेम भेंट

शा. कुशलराजजी भूरमलजी मुणोत वास आहोर वालों की तरफ से

शाह इदाजी वेवा चुनी नवाजी थरवाड़ वाला

शा. घेवरचंदजी मिश्रीमलजी मु. धाणसा वालों की तरफ से

शाह सुकनराजजी पारसमलजी कुईयालालजी कान्तिलालजी बेटा पोता देवजी वास गोल बनाकर भेंट

ज्ञान मंदिर हाल के ऊपरी मंजिल सूचि

द्वार पर नाम-

वेदमुथा स्वर्गीय श्रीमती रूपादेवी धर्मपत्नी पुखराज उनके सुपुत्र पोतरा भँवरलाल, ताराचंद महेन्द्रकुमार, शैलेषकुमार, कमलेश कुमार बेटा पोता भूराजी मु. झाब वालों की तरफ से।

दाहिनी ओर कमरा नंबर ७-

मुथा रूपचंदजी मुल्तानमलजी एवं सुआदेवी पत्नी रूपचंदजी तातेड़ निवासी पादरू वालों की तरफ से भेंट ह. घेवरचंदजी

कमरा नंबर ८-

मातुश्री ज्योतिदेवी पत्नी हरकचंदजी सुराणा जैन शाह भंवरलाल, मनोहरमल, अशोक कुमार, अभिषेक कुमार, आकाश कुमार,कल्पेश कुमार बेटा पोता हरका जी सायला वालों की तरफ से भेंट तारीख ०७.०८.१९८८

कमरा नंबर ९-

हरण वेरीमलजी होसाजी, श्रीमती जम्मुदेवी, मुकाम नरता वालों की तरफ से सप्रेम भेंट पुत्र बाबूलाल नेमीचंद

कमरा नंबर १०-

शा. चांदमल समरथमल कुंदनमल अंकुरकुमार हितेशकुमार बेटा पोता भबूतमलजी धुड़ाजी श्री सियाणा वालों की ओर से सप्रेम भेंट

कमरा नंबर ११-

शा. हरकाजी, हिमताजी, वास गांव मेंगलवा वालों की यादगिरी में धर्मपत्नी ज्योतिबाई द्वारा सप्रेम भेंट

कमरा नंबर १२-

शा. रिखबचंद, संजयकुमार राजेशकुमार, मनीषकुमार, हरकाजी, हीमताजी वास गांव मेंगलवा (हाल जोधपुर) वालों की तरफ से सप्रेम भेंट

कमरा नंबर १३-

श्रीमती वीराबाई के सुपुत्र कुशलराज ललितकुमार सुरेशकुमार हितेशकुमार बेटा पोता भूरमलजी मांडोत आहोर वालों की तरफ से सपेम भेंट

कमरा नंबर १४-

शा. हिम्मतमल मूलचंदजी करताजी वास ऊनड़ी वालों की यादगिरी में श्रीमती घेरोबाई की तरफ से सप्रेम भेंट

कमरा नंबर १५-

श्रीमती मुंगीबाई धर्मपत्नी कस्तूरचंदजी जयन्तीलालजी बोडिया निवासी टांडा (म. प्र.) वालों की तरफ से सप्रेम भेंट

कमरा नंबर १६-

संघवी जोमतराजजी स्वर्गीय हस्ते तिलोकचंद लकमीचंद पारसमल, शांतिलाल, मदनलाल बेटा पोता कनजी वास जाखल हाल सांचोर

कमरा नंबर १७-

कमरा नंबर १८-

लुणिया फोजमलजी गमनाजी स्व. श्रीमती रमकुदेवी मगनाजी वास वालों की ओर से।

कमरा नंबर १९-

श्रीमती हस्तुबाई की यादगिरी में सुमेरमल, भरतकुमार, किशोरकुमार, चुन्नीलालजी वास गांव चौराऊ वालों की तरफ से सप्रेम भेंट

कमरा नंबर २०-

श्रीमती टीपूबाई धर्मपत्नी शा. मिश्रीमलजी हीमताजी बालगोता निवासी ऊनड़ी वालों की तरफ से भेंट

कमरा नंबर २१-

शा. कुन्दनमल, मिश्रीमल सुकराज, भँवरलाल, जेठमल, साँकलचंद, रतनचंद बेटा पोता गाडुजी व केसाजी साकीन गांव मेंगलवा वालों की तरफ से सप्रेम भेंट

कमरा नंबर २२-

शा. दुरणचंद, शांतिलाल, उत्तमचंद, मदनलाल, अशोककुमार, प्रेमचंद, दिनेशकुमार, सुरेशकुमार, कैलाशचन्द, कमलेश, विक्रम, बेटा पोता हरकाजी वास गांव मेंगलवा वालों की तरफ से भेंट

कमरा नंबर २३-

शा. बंदामुता भँवरलाल, जुगराज, छगनराज, अशोककुमार, रविन्द्रकुमार, संतोषकुमार, बेटा पोता जोमतराजजी वास गांव घाणसा वालों की तरफ से सप्रेम भेंट।

ज्ञान मंदिर नीचे बरामदा पश्चिम भाग-

पहला गेट १-

श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वर गुरूभ्यो नमः

चिठी के पास

श्री धर्मनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर संघ, चौराऊ जिला-जालोर वालों की तरफ से

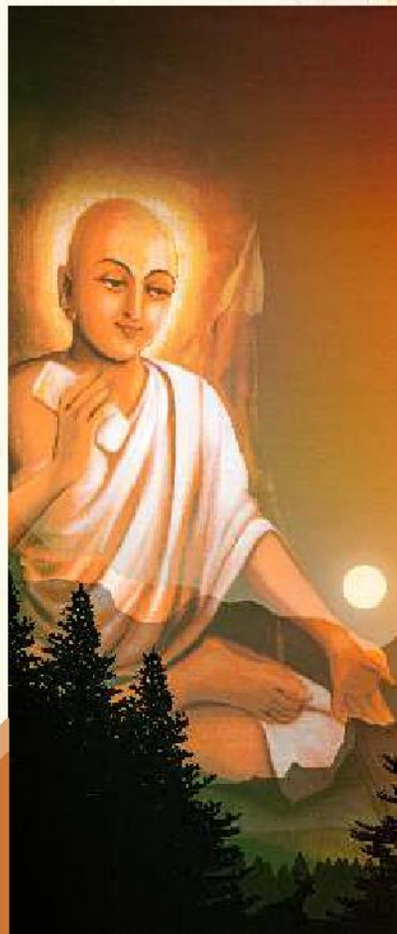

पहला गेट २-

श्री धर्मनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर संघ, चौराऊ जिला-जालोर वालों की तरफ से

पहला गेट ३-

परम पूज्य आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से श्री वासुपूज्य स्वामी जैन मंदिर प्रतिष्ठा की स्मृति में श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, मद्रास की ओर से।

ज्ञान मंदिर नीचे हॉल अंदर

नोट- बाहर बरामदा कमरा नंबर १ व ६ पर नाम नहीं है।

कमरा नंबर-२ दाहिनी ओर-

सुखराज पारसमल, तिलोकचंद, घेवरचंद, भंवरलाल, जुगराज, प्रेमचंद, अशोक, राजेन्द्र, जयन्तीलाल, विनोद, सुरेश, महावीर, पृथ्वीराज, दिनेश, विकास, अमित, अभिनव, बेटा पोता सुलतानमलजी संकलेचा, निवासी मेंगलवा

कमरा नंबर- ३ सामने दाहिना-

संघवी मिश्रीमल सागरमल दुदाजी वास सांचोर वालों की तरफ से सप्रेम भेंट

कमरा नंबर-४ सामने बांया-

श्री राजेन्द्रसूरि नमः

शा. सदाजी मिश्रीमलजी एण्ड कं. विजयवाड़ा (आ. प्र.) संघवी इन्दरमल मिश्रीमलजी धानसा वालों की तरफ से यह बनवा कर श्री संघ को भेंट

कमरा नंबर- ५ गेट से बांयी ओर-

शा. वस्तीमल जवानमल, भैरूलाल, प्रकाशचन्द, गौतमकुमार, मनोजकुमार, अभिषेककुमार बेटा पोता चंदाजी सरूपजी खींवेसरा आकोली (राज.) की ओर से

ज्ञान मंदिर मेन गेट पर

श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर, श्रीभांडवपुर जैन तीर्थ, जालोर (राज.)

व्याख्यान हॉल-

मेंगलवा निवासी बालगोता श्री कुंदनमलजी, एवं सुपुत्र भँवरलाल की पुण्य स्मृति में मिश्रीमल, सुखराज, जेठमल, साँवलचंद, रतनचंद, रमेशकुमार, लालचंद, पारसमल, अशोककुमार, गौतमचंद, मूलचंद, सुरेशकुमार, महेन्द्रकुमार, नरेन्द्रकुमार, दिनेशकुमार, महावीरकुमार, अमृतकुमार, गौतमचंद, दिनेशकुमार, जयन्तीलाल, कैलाशचन्द, विमलकुमार, भावेशकुमार, बेटा पोता केसाजी एवं गाडुजी परिवार की तरफ से सप्रेम भेंट। वि. सं. २०४५ पोष सुदी ७ गुरु सप्तमी।

ज्ञान मंदिर के बाहर शिलालेख-

दाहिनी ओर-१-

भाण्डवपुर तीर्थाधिपति श्री वर्द्धमान स्वामीने नमःविश्वपूज्य प्रातःस्मरणीय प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः। श्री भाण्डवपुर मोहनखेड़ा तीर्थ छरि पालक संघ श्री वीर सं. २५१३, श्री राजेन्द्र सूरी सं. ७९, विक्रम सं. २०४२, फाल्गुन सुद ३ गुरुवार दिनांक १३.३.८६

शुभ प्रस्थान की पुनीत स्मृति में-

श्री भांडवपुर मोहनखेड़ा तीर्थ छरिपालक संघ समिति, संघपति समिति

१. बेदमुथा भूराजी चुन्नीलालजी कांतिलाल लालाजी मूलाजी नेनावा गुजरात

२. भंडारी लालचंद, घेवरचंद, मीठालाल, मगनाजी सियाणा (राज.)

३. संघवी जुगराज कांतिलाल, कुन्दनमलजी भूताजी आहोर (राज.)

४. कबदी जुहारमलजी सुपुत्र स्व. नथमलजी पूनमचंदजी कुंदनमलजी रिखबचंदजी, सायला (राज.)

५. शा. केवलचंदजी वस्तीमलजी, पारसमल, चंपालाल, भानमल, भीकमचंद, बाबूलाल, हेमाजी, जीवाणा (राज.)

६. शा. नगराज हाजमल रूपाजी कटारिया संघवी, मोरसीम (राज.)

७. कबदी गणेशमल, शिवराज, हेमराज, कांतिलाल अनाजी सायला

८. शा. हस्तीमल कुंदनमल, सुखराज केनाजी चतुरगोता सायला

९. कबदी डूंगरमल घेवरचंद, जुगराज, देवीचंद चंपालाल हंजारीमलजी सायला

१०. सोलंकी पुखराज हस्तीमल शांतिलाल सोहनलाल उकाजी सायला (राज.)

११. मुथा कुंदनमल बाबूलाल धीरजमल धरमाजी सायला (राज.)

१२. शा. ओपचंद चंपालाल जवाजी सायला (राज.)

१३. मुथा लक्ष्मीचंद मिश्रीमल बाबूलाल भीमराज प्रतापजी रेवतड़ा (राज.)

१४. दरजमलजी उकचंदजी हस्तीमलजी तगराजजी हिराणी परिवार रेवतड़ा (राज.)

१५. संघवी सुकराजजी भारतमलजी पारसमलजी रिखबचंदजी सांकलचंदजी रेवतड़ा (राज.)

१६. भंडारी भूरमल दलीचंद, चंपालाल, भानाजी मेंगलवा (राज.)

१७. साजीशा. जावंतराजजी सुमेरमलजी, पृथ्वीराजजी कानमलजी पांथेड़ी (राज.)

१८. शा. घेवरचंद सांकलचंद, खीमचंद, विमलकुमार, कुंदनमलजी धानसा (राज.)

१९. शा. मिश्रीमल छगनराज बाबूलाल जम्बूकुमार भोपाजी हीराजी सोलंकी सियाणा (राज.)

२०. शा. हीरालाल पुखराज, नरेशकुमार, महावीरकुमार, प्रतापचंदजी सवाजी सिवाणा (राज.)

२१. प्राग्वाट सत्तावत चुन्नीलाल की धर्मपत्नी शणगारीबाई पुत्र बाबूलाल सिवाणा (राज.)

२२. दोशी सोमतमल गुमानमल सुकराज सांवलचंदजी भीनमाल (राज.)

२३. कबदी दरगचंद मीठालाल सुखराज केसाजी व चमनाजी धानसा (राज.)

२४. संघवी रिखबचंदजी छोगालाल, भँवरलाल, पूनमचंदजी कटारिया संघवी धानसा (राज.)

२५. सेठ मनोरमल बाबूलाल, लालचंद, पुखराज, जामतराज, मुफतलाल, सागरमलजी बाफना परिवार भीनमाल (राज.)

बांयी ओर २-

भांडवपुर तीर्थाधिपति श्री वर्द्धमानस्वामीने नमः,

विश्वपूज्य प्रातःस्मरणीय प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ।

श्री भांडवपुर मोहनखेड़ा तीर्थ छरि पालक संघ श्री वीर सं. २५१३, श्री राजेन्द्रसूरि सं. ७९, विक्रम सं. २०४२, फाल्गुन सुद ३ गुरुवार दिनांक १३.३.८६ शुभ प्रस्थान की पुनीत स्मृति में श्री भांडवपुर मोहनखेड़ा तीर्थ छरि पालक संघ समिति संघ में पावन सानिध्य-

श्री भांडवपुर तीर्थोद्धारक परम पूज्य व्या. वा. श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की पट्टालंकार शांतमूर्ति आचार्यप्रवर श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टादित्य तीर्थ प्रभावक साहित्य मनीषी गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज, शांतमूर्ति संयमवयः स्थवीर मुनिराजश्री शांतिविजयजी महाराज, ज्योतिर्विद मुनिराजश्री पुण्यविजयजी, मुनिश्री चेतनविजयजी, मुनिश्री विनयविजयजी, मुनिश्री नित्यानंदविजयजी, मुनिश्री केवलविजयजी, मुनिश्री जयकीर्तिविजयजी, मुनिश्री जयरत्नविजयजी, मुनिश्री मुक्तिचन्द्र- विजयजी, मुनिश्री धर्मरत्नविजयजी, मुनिश्री वीररत्नविजयजी, मुनिश्री हेमरत्नविजयजी, मुनिश्री अशोकविजयजी, मुनिश्री आनन्दविजयजी, मुनिश्री विश्वरत्नविजयजी, मुनिश्री गुणरत्नविजयजी, मुनिश्री पद्मरत्नविजयजी, मुनिश्री सिद्धरत्नविजयजी आदि मुनि मण्डल

साध्वीजी श्री हेतश्रीजी एवं साध्वीजी श्रीलावण्यश्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वीजी श्री प्रेमलताश्रीजी, श्री पूर्णकिरणाश्रीजी, श्री कोमललताश्रीजी, श्री सूर्योदयाश्रीजी,श्री स्नेहलताश्रीजी, श्री कैलाशश्रीजी, श्री शशिकलाश्रीजी, श्री आत्मदर्शनाश्रीजी, श्री वसन्तमालाश्रीजी, श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी, श्री अनन्तदृष्टाश्रीजी, आदि साध्वी मंडल चतुर्विध संघ सह शुभ मुहूर्त में श्री भाण्डवपुर तीर्थ से संघ प्रयाण हुआ ।

॥ शुभम् भूयात् चिरंजयतु ॥

श्री वर्षीतप पारणा हॉल-

शा. मानमल, शान्तिलाल, सागरमल, सूरजमल, अमीचन्द, जवाहरमल, सोहनलाल, हीराचन्द, मदनराज, ललितकुमार, महेन्द्रकुमार, महावीरकुमार, भरतकुमार, जितेन्द्रकुमार, पवनकुमार, मुकेश, प्रवीण, विक्रम, फ्रिनेश, चेतन, राकेश, अंकित, अजित, प्रवेश, अंकुश, नितीन, क्रितेश, मयूर, भावेश, भाविक, हर्षित, लोकेश, गौरव,

संयम, श्लोक, दर्शन, यश, (बेटा-पोता- शा. भीमराजजी जूठाजी छत्रियावोरा परिवार-सुराणा)

भण्डारी प्याऊ-महावीर यात्री प्रतिक्षालय-निर्माण जनसाधारण हितार्थ

श्री लालचन्जी की पावन स्मृति में सायला-जालौर निवासी भण,डारी उम्मेदमल, भबूतमल, घेवरचन्द, माँगीलाल, धीरजकुमार बेटा-पोता-हंसराजजी ने बनाकर श्री भाण्डवपुर तीर्थ को सप्रेम भेंट। सन् १९८० वि. सं. २०३६

गुरु श्री राजेन्द्र-जयन्तसेन-शान्ति जल घर-

श्री शान्तिविजयजी म. सा. की सद्प्रेरणा से मेंगलवा निवासी श्रीश्रीमाल नेणगोत्रीय (डामराणी) परिवार से शा. खुशालचन्द, अमीचन्द, बाबूलाल, कान्तिलाल, रूपचन्द, जुगराज, उत्तमचन्द, रमेश, महेन्द्र, प्रवीण, हरीश, राजेन्द्र, धीरज, दिनेश, अशोक, मुकेश, विमल, राकेश, महिपाल, सुमित, विक्रम ने मातुश्री ढेलीबाई धर्मपत्नी गेबाजी की पुण,य स्मृति में उनके पुत्र कान्तिलाल, पौत्र महिपाल, सुमित ने बनवाकर श्री भाण्डवपुर जैन तीर्थ को समर्पित किया। दिनांक १७ मई २०००

टावर चबूतरा-

राष्ट्रसन्तश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के आशीर्वाद एवं मुनिराजश्री शान्तिविजयजी म. सा. की प्रेरणा से मेंगलवा निवासी श्रीश्रीमाल नेणगोत्रीय (डामराणी) परिवार से शा. खुशालचन्द, अमीचन्द, बाबूलाल, कान्तिलाल, रूपचन्द, जुगराज, उत्तम, रमेश, महेन्द्र, राजेन्द्र, हरीश, प्रवीण, धीरज, दिनेश, अशोक, विमल, मुकेश, राकेश, विकास, संजय, महिपाल, योगेश, विक्रम, सुमित, गुलशन बेटा-पोता- शा. गेबाजी धर्माजी ने बनवाकर श्री भाण्डवपुर जैन तीर्थ को समर्पित किया। दिनांक ९ अप्रेल १९९८, वि. सं. २०५५ चैत्र सुदी १३ गुरुवार।

पोस्ट ऑफिस भवन (राजेन्द्र भवन)

जीवाणा निवासी वोहरा माँगीलाल, मगराज, डूँगरमल, गणपतकुमार, बकीमकुमार, कमलेशकुमार, अमितकुमार, विक्रमकुमार बेटा-पोता- सरेमलजी हिमाजी खसाणी परिवार, यह पोस्ट भवन बनवाकर जनतासेवार्थ समर्पण। सौजन्य श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी, भाण्डवपुर तीर्थ, वि. सं. २०४८, पौष शुक्ला-७ गुरु सप्तमी मेला।

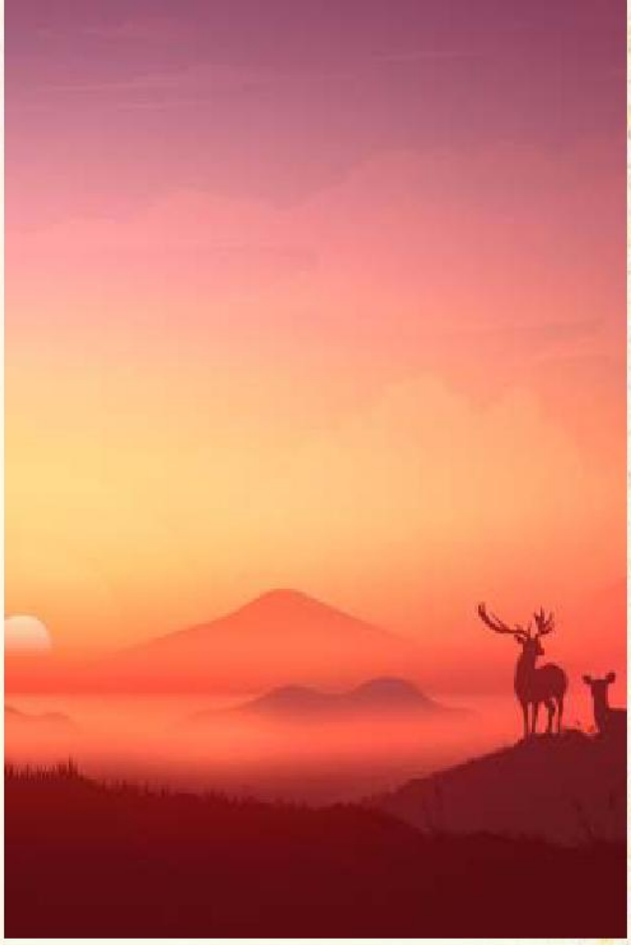

पुराने कबूतरा चबूतरा लाभार्थी सूचि (जीवदया कायम तिथि)

१. शा. साँकलचन्द बख्तावरमल कान्तिलाल बेटा पोता नेथीजी, पांथेड़ी

२. शा. कानराज तिलोकचंद डायालाल बेटा पोता रामजीजी - पांथेड़ी

३. शा. रमेशकुमार अशोककुमार सुभाषकुमार बेटा पोता मीठालालजी - लेटा

४. शा. सुखराजजी भगाजी - रेवतड़ा

५. शा. लुकचंदजी सरेमलजी - सायला

६. शा. सागरमलजी किस्तुरचंदजी - रोईड़ा

७. मुथा चुन्नीलालजी सजूजी - भीनमाल

८. शा. कुन्दनमलजी सुखराजजी - सायला

९. शा. बागुलाल सुमेरमल हंजाजी - सायला

१०. शा. सुमेरमलजी मुल्तानमलजी - करड़ा

११. शा. मांगीलालजी जीतमलजी - थराद

१२. शा. मुथा समरथमल नरपतराज भबूताजी - जीवाणा

१३. मुथा भूरमल दीपचंद मूलचंद बादरजी - जीवाणा

१४. शा. धनराज गुमानमल सुरेशकुमार बेटा पोता हीमाजी - उनड़ी

१५. शा. मांगीलाल मीठालालजी - सायला

१६. शा. मेघराज खुशालचंद रमेशकुमार बेटा पोता तिलोकजी - सिवाना

१७. मुथा चंपालाल घेवरचंद खेताजी – जीवाणा

१८. शा. नेमीचंद मीठाजी की पुण्य स्मृति में – सुराणा

१९. शा. जामतराज अशोककुमार जीतमल बेटा पोता धनराजजी – सुराणा

२०. शा. सुखराज भारतमल सांकलचंदजी

२१. शा. अमृतराज जी नाहटा – जोधपुर

२२. वी. पी. जैन – मद्रास

२३. श्रीमती मोवनीदेवी धर्मपत्नि शान्तिलाल हरकाजी – मेंगलवा

२४. शा. कुन्दनमलजी कन्हैयालालजी गदैया – आहोर

२५. शा. चुन्नीलाल क्रेकाजी सुथार – आहोर

२६. स्व. पिताजी तिलोकचंदजी की स्मृति में शा. जवानमल जयन्तीलाल बाबूलाल–डूडसी

२७. श्रीमती तीजाबाई धर्मपत्नि नेमाजी – आकोली

२८. शा. मंगलचंदजी ओखाजी – आकोली

२९. शा. राजेशकुमार विनोदकुमार बेटा पोता पारसमलजी प्रेमाजी भंडारी – लेटा

३०. संघवी पूनमचंदजी उम्मेदमलजी छाजेड़ – पादरू

३१. शा. नेणमल हजारीमलजी – सियाणा

३२. श्रीमती बिदामीबाई धर्मपत्नि मोहनलालजी मुणोत – जोधपुर

३३. श्रीमती रमकुदेवी धर्मपत्नि पारसमलजी संघवी – दादाल

३४. शा. साहेबचंदजी सोहनराज बाबूलाल बेटा पोता बच्छराजजी – घाणसा

३५. संघवी कान्तिलालजी रतीकुमार बेटा पोता बच्छराजजी – सियाणा

३६. शा. सुखराजजी बाबूलालजी नाहर चेरिटेबल ट्रस्ट – भीनमाल

३७. श्रीमती प्यारीदेवी धर्मपत्नि मेघराजजी आदाजी – सुराणा

३८. शा. पारसमलजी जुगराज हीराचंद बेटा पोता नाथाजी – गोल

३९. मोदी कन्हैयालाल ओमप्रकाश पृथ्वीराज बेटा पोता सुखदेवजी – आलासण

४०. मोदी मिश्रीमलजी रमेशकुमार मुकेशकुमार बेटा पोता रामनारायणजी – सांथू

४१. राजस्थान स्थानकवासी जैन संघ – अहमदाबाद

४२. शा. रूपचंदजी उमाजी संघवी – सांचोर

४३. शा. जेठमलजी अशोककुमार भरतकुमार दिनेशकुमार ललितकुमार बेटा पोता वगताजी – जीवाणा

४४. शा. छगनलाल हरखाजी – आहोर

४५. शा. मिश्रीमलजी जुहारमलजी – पूना

४६. शा. प्रेमचदंजी जीवराजजी – सांडेराव

४७. मुथा शान्तिलालजी पुखराजजी शंभूमलजी – जीवाणा

४८. शा. घेवरचंद लालचंद अशोककुमार बेटा पोता मनोहरमलजी ताराचंदजी भूरमलजी – भीनमाल

४९. शा. हस्तीमलजी अचलाजी – जीवाणा

५०. श्रीमती सुखीदेवी धर्मपत्नि कुन्दनमलजी एवं उनके पुत्र सुमेरमल देवीचंद जीतमल कबदी – सायला

५१. शा. हरकचंद सोवनराज झूमरमल उतमचंदजी नितेशकुमार बेटा पोता रामदानजी – पादरू

५२. सोलंकी गेनमलजी जुहारमलजी जेठमल कांतिलाल सुरेशकुमार दिनेशकुमार बेटा पोता सांकलचंदजी – सियाणा

५३. संघवी मिश्रीमलजी छगनराज बाबूलाल जम्बूकुमार बेटा पोता भोपाजी हीराजी सोलंकी – सियाणा

५४. शा. बाबूलाल चम्पालालजी सीलधर हाल – पूना

५५. शा. हेमराजजी राजेन्द्रकुमार भरतकुमार बेटा पोता छोगालालजी अचलाजी केशवणा हाल – मद्रास
५६. श्रीमती प्यारीबाई धर्मपत्नि तलसाजी हून्डीया – दांसपा
५७. शा नागालालजी कन्हैयालालजी वजाजी – सांथू
५८. शा भूरमलजी रमेशकुमार किशोरकुमार राजेश बेटा पोता सुखराजजी सोफाडीया – रेवतड़ा
५९. संघवी श्रीमती फालूबाई हस्ते संघवी जीवदास प्रकाशमल चम्पालाल अरविन्द रमेश बेटा पोता भूरमलजी – जावाल
६०. शा छगनराजजी फूलचंदजी हस्तीमलजी शंकरलाल बेटा पोता मेघराजजी जुहारमलजी – आहोर
६१. श्रीमती हरकदेवी धर्मपत्नि भीमरराजजी गोडीदासजी मुथा – मांडवला
६२. श्रीमती सुआदेवी धर्मपत्नि सुमेरमलजी हस्ते जीतमल अशोककुमार – रेवतड़ा
६३. शा इन्द्रमलजी जुगराजजी कान्तीलाल जुठाजी – मेंगलवा
६४. शा. घेवरचंद किशोरलाल मांगीलाल बेटा पोता सांकलचंदजी – सायला
६५. श्रीमती मोहनदेवी धर्मपत्नि थानमलजी भेराजी – सुराणा
६६. शा. देवीचंदजी रूपचंदजी संकलेचा – समदड़ी
६७. श्रीमती सुन्दरबाई धर्मपत्नि भानमलजी – पोशाणा
६८. श्रीमती टिपुबाई धर्मपत्नि मिश्रीमलजी – उनड़ी
६९. मुथा गोकुलचन्द ओटमल कानराज बेटा पोता फुलाजी – पांथेड़ी
७०. मुथा ईश्वरचंद महावीरकुमार बेटा पोता मिश्रीमलजी – पांथेड़ी
७१. शा. रतनचंद रिखबचंद पुखराज बेटा पोता नेथीजी – पांथेड़ी
७२. शा. जेठमल कुन्दनमल किशोरमल बेटा पोता वदाजी – पांथेड़ी
७३. शा. नेनमल मुन्नीलाल ताराचंद बेटा पोता तेजाजी – पांथेड़ी
७४. शाहजी सुमेरमल कानराज रमेशकुमार बेटा पोता जुगराजजी – पांथेड़ी
७५. शा. मिश्रीमलजी जुगराज राजेशकुमार बेटा पोता जुहारमल – कोमता
७६. शा. मेघराज भुरमल दिनेशकुमार बेटा पोता जुगराजजी – सुराणा
७७. शा. हस्तीमल पारसमल दुदमल बेटा पोता भबुताजी – सुराणा
७८. शा. रीखबचन्द सुखराज दिनेशकुमार बेटा पोता मुलतानजी – बागोड़ा
७९. शा. मनोहरमल चम्पालाल दुदमल बेटा पोता वस्तीमलजी अन्दाणी – सुराणा
८०. शा. समरथमल हीराचंद चन्दनमल बेटा पोता मुलतानमलजी – दादाल
८१. शा. गुटराज सूरजमल चन्दनमल बेटा पोता मनोहरमलजी – सुराणा
८२. शा. बाबूलाल सरूपचंदजी विनोदकुमार बेटा पोता लादाजी – मेंगलवा
८३. शा. विजयकुमार बाबुलाल मद्रास – जीवाणा
८४. शा. सरेमल मांगीलाल मगराज बेटा पोता हीमाजी – जीवाणा
८५. शा. उदेयचन्द अशोककुमार सुरेशकुमार बेटा पोता नाथाजी – जीवाणा
८६. शा. पारसमल कान्तिलाल राजेशकुमार बेटा पोता दीपाजी – ओटवाला
८७. शा. भँवरलाल जेठमल बेटा पोता कुन्दनमलजी – मेंगलवा
८८. शा. सावलचंद रतनचंद बेटा पोता कुन्दनमलजी – मेंगलवा
८९. शा. शिवराज डुगचंद हीराचंद बेटा पोता जुठाजी – मेंगलवा
९०. शा. घेवरचंद मदनलाल किशोरीलाल बेटा पोता तलाजी – मेंगलवा
९१. शा. मनोहरमल शंकरलाल कुन्दनमल बेटा पोता इन्द्रजी – मेंगलवा
९२. शा. उकचन्द चम्पालाल कान्तिलाल बेटा पोता मगनाजी – मेंगलवा
९३. श्रीमती ढेलीबाई धर्मपत्नि गेबचन्दजी धरमाजी – मेंगलवा

९४. शा. हरकचंद सरूपचंदजी – मेंगलवा
९५. शा. माणकचंद दुदमल खुशालचंद बेटा पोता वेनाजी – मेंगलवा
९६. शा. गुणेशमल देवीचंद मांगीलाल बेटा पोता तोलाजी – उनड़ी
९७. शा. पुखराज चम्पालाल बाबुलाल बेटा पोता पुनमचंदजी – दादाल
९८. शा. मिश्रीमल तलसाजी पारसमल बेटा पोता देवाजी – सुराणा
९९. शा. सावलचंद भीमराज कपूरचंद बेटा पोता मिश्रीमलजी – मेंगलवा
१००. शा. जेठमल अशोककुमार भरतकुमार बेटा पोता वगताजी – जीवाणा
१०१. श्रीमती ढेलीबाई धर्मपत्नि खीमराजजी गुमानमलजी हुंडीया – दासपा
१०२. शा. घेवरचंद राजु हेमराज बेटा पोता सोमाजी – दासपा
१०३. श्रीमती पेपीबाई धर्मपत्नि सरेमलजी हुंडीया – दासपा
१०४. शा. सुमेरमल प्रकाशकुमार बेटा पोता वजाजी हुंडीया – दासपा
१०५. शा. गुटराजजी हंजाजी – सुराणा
१०६. शा. उकचन्द अशोककुमार दिनेशकुमार बेटा पोता मगनाजी – मेंगलवा
१०७. शा. डुंगरमल घमण्डीलाल हीराचंदजी बेटा पोता मालाजी – जालोर
१०८. शा. घेवरचंद जयन्तिलाल विनोदकुमार बेटा पोता मालाजी – जालोर
१०९. शा. सुमेरमल प्रकाशकुमार हुंडीया बेटा पोता वजाजी – दासपा
११०. पूज्य पिताजी लादाजी माताजी उजीदेवी सुपुत्र पारसमलजी की धर्मपत्नि शान्तादेवी – मेंगलवा
१११. शा. हस्तीमल जेठमल जुहारमल बेटा पोता कीनाजी – मेंगलवा
११२. शा. गेबचन्द भीकमचन्द पृथ्वीराज बेटा पोता हीमाजी – मेंगलवा
११३. शा. गुणेशमल जेठमल जयन्तिलाल बेटा पोता सागरमलजी – मेंगलवा
११४. भंडारी जेठमल कान्तिलाल तिलोकचन्द बेटा पोता देवाजी – सुराणा
११५. शा. मनोहरमल साँवलचन्द महेन्द्रकुमार बेटा पोता लालचन्दजी – दासपा
११६. शा. भँवरलाल बाबूलाल गुटराज बेटा पोता मेघराजजी – सुराणा
११७. शा. जुगराज दाडमचन्द बेटा पोता मुन्नीलालजी – पोषाणा
११८. शा. थानमल शंकरलाल सूरजमल बेटा पोता भेराजी – सुराणा
११९. शा. माणकचंद तिलोकचन्द जुगराज बेटा पोता छोगाजी – मेंगलवा
१२०. शा. मगराज आदाजी – धुम्बड़ीया
१२१. शा. कपूरचन्द वसन्तलाल ललितकुमार महेन्द्रकुमार – सांथू
१२२. मया देवीचंन्द चम्पालाल मेघराज बेटा पोता कस्तुरचंद – सांथू
१२३. गाँधी मुथा श्रीमती राजूबाई धर्मपत्नि हीमताजी – सांथू
१२४. श्रीमती लासीदेवी धर्मपत्नि रत्नादेवी – सांथू
१२५. शा. भीमराजजी जुठाजी – सुराणा
१२६. शा. सागरमल शंकरलाल कपूरचंद बेटा पोता परताजी – सांथू
१२७. श्री संघ यात्रा समुदाय – शिवगंज
१२८. गाँधी मुथा घेवरचंद लकमीचंद बेटा पोता कुम्बाजी – सायला
१२९. बंदामुथा पुखराज भंवरलाल जवानमल बेटा पोता छोगाजी – आहोर
१३०. शा. ताराचंद मदनलाल केलाशकुमार बेटा पोता मनोहरमलजी – सुराणा
१३१. श्रीमती धर्मीबाई धर्मपत्नि फाऊलालजी कोमता वाला हरणवास – भीनमाल
१३२. मांगीलालजी मिश्रीमलजी अशोककुमार बेटा पोता पुखराजजी – घाणसा

१३३. श्रीमती रमकुबाई धर्मपत्नि शा. दरगचंदजी भोमाजी – सायला
१३४. शा. रिखबचंद सरेमल घेवरचंद बेटा पोता दरगाजी – दादाल
१३५. मुथा मानमल कानमल नेमीचंद बेटा पोता मिश्रीमल – जीवाणा
१३६. मुथा घेवरचंद पृथ्वीराज अशोककुमार बेटा पोता हरकाजी – जीवाणा
१३७. शा. करनाजी सोवलजी वाणीगोता – बागोड़ा
१३८. शा. अचलचन्द ललितकुमार बेटा पोता जोईताजी – ओटवाला
१३९. शा. वस्तीमलजी रणछोड़जी बागरेचा – मेंगलवा
१४०. शा. दरगचन्द भँवरलाल चम्पालाल बेटा पोता सरेमलजी – पोषाणा
१४१. शा. भँवरलाल किशोरकुमार सुरेशकुमार बेटा पोता हंजाजी – सुराणा
१४२. संघवी उकचन्द नागेन्द्रकुमार बेटा पोता जुहारमलजी दिपाजी – सियाणा
१४३. शा. गेबीचन्द अमृतलाल महावीरचन्द बेटा पोता मुल्तानजी – जीवाणा
१४४. मुथा पारसमल सुखराज गेबचन्द कुन्दनमल – जीवाणा
१४५. बोहरा कुन्दनमल मोहनलाल पारसमल बेटा पोता समरथमलजी – जालोर
१४६. शा. हजारीमल छगनराज जुगराज बेटा पोता जेठाजी – जीवाणा
१४७. शा. सुखराज भंवरलाल धीरजमल कानराज जीवाणा वाले – जालोर
१४८. शा. तिलोकचंद हासाजी – मोदरा
१४९. शा. मांगीलाल हिराचन्द बेटा पोता वरदाजी – सायला
१५०. संघवी घेवरचंद भंवरलाल हंजाजी – धाणसा
१५१. शा. मलराज हंजाजी – सुराणा
१५२. शा. ओटमल जीतमल चम्पालालजी बेटा पोता रूपाजी – सुराणा
१५३. शा. गणेशमल घेवरचंद अमीचंद बेटा पोता वेजाजी – ऊनड़ी
१५४. शा. सुमेरमल जामतराज सोनाजी – पांथेड़ी
१५५. शा. पुखराज अमृतलाल सुरेशकुमार बेटा पोता सागरजी संघवी – आलासन
१५६. शा. मांगीलाल शांतिलाल लुकचंद बेटा पोता रिखबचन्दजी – सुराणा
१५७. शा. धनराज डायालाल सुमेरमल बेटा पोता सुखराजजी – पोषाणा
१५८. शा. छतरचंद जीतमल ओककुमार रगनाथजी – दादाल
१५९. शा. मांगीलाल मुकेशकुमार कमलेशकुमार बेटा पोता पुखराजजी – सुराणा
१६०. पटवारी खीमचंद अमीचंद जुठमल रूपचंद – आलासन
१६१. शा. हरकचंद देवीचंद छगनलाल बेटा पोता हिम्मतमलजी
१६२. संघवी भलेचंद जवेरचंद कुशलराज बेटा पोता कस्तूरजी – केशवना
१६३. शा. साँकलचंद सोनाजी बेटा पोता फुआजी – चूरा
१६४. मुणोत डूंगरमल मोहनलाल बेटा पोता वस्तीमलजी – तिलोड़ा
१६५. मुणोत पारसमल बाबुलाल रमेशकुमार बेटा पोता हंजारीमलजी – तिलोड़ा
१६६. श्रीमती विमलाकुमारी मनोहरमलजी – सुराणा
१६७. शा. जीतमल अशोककुमार पिन्टू बेटा पोता सुमेरमलजी – रेवतड़ा
१६८. शा. अचलचंद गोलराज तिलोकचंद बेटा पोता कुम्बाजी बन्दामुथा – बागोड़ा
१६९. शा. भोमराज रायचन्द निर्मलकुमार बेटा पोता कुम्बाजी बन्दामुथा – बागोड़ा
१७०. स्वर्गीय श्रीमती बालुबेन धर्मपत्नि अचलदासजी मेहता – साँचोर
१७१. शा. उम्मेदमल अमृतलाल मीठालाल बेटा पोता प्रतापजी – मेंगलवा

(१)

प्रभु वीर जिनवर सयल सुखकर जगत जनमन मोहनं ।
नयर भांडव भाण भलहल दीप्ति दिनकर सोहनम् ।।
जसु नाम नवनिधि होत सब सिद्धि दुःख दोहग भयहरं ।
भवि भाव भगते जुगते त्रेशलेय जिनेश्वरम् ।। १ ।।

भवभीति भागे सुगति जागे कर्म अरिदल तोडणं ।
भ्रम भूत भूंडा प्रेत चूंडा डाकिनी मद मोडणम् ।।
अति तेज दीपित मिलत सम्पति जपत जन शिव सुखकरं ।
नयर भांडव भाण भलहल दीप्ति दिनकर सोहनम् ।। २ ।।

मिलत सम्यग् ज्ञान चारित्र भमे कलिमल भंजनं ।
सहु कोई रोगा मिटे सोगा मोह चोर अगंजनम् ।।
जग कीर्त्ति जंपे सूरिराजेन्द्र सिंह लंछन सुखकरं ।
नयर भांडव भाण भलहल दीप्ति दिनकर सोहनम् ।। ३ ।।

(२)

वर्धमान जिनेसर नमत सुरेसर अति अलवेसर तीर्थपति ।
सुख सम्पत्ति दाता जगत विख्याता सर्व विज्ञाता शुद्ध यति ।।
जसु नामथी रोगा शोक वियोगा कष्ट कुयोगा लहे शंका,
भाण्डवपुर राजे सयल समाजे, वीर विराजे अति बंका ।। १ ।।

डायण ने सायण प्रेत परायण भूत भवायण सहु भांजे ।
चुडेल चण्डाला अति विकराला सख्त सीयाला नहीं गाजे ।।
दुसमन ने दाटे, कुष्टही काटे भय नहिं वाटे बलि रंका ।
भाण्डवपुर राजे सयल समाजे, वीर विराजे अति बंका ।। २ ।।

सब काम समारे सर्प निवारे कुगति वारे अरिहन्ता ।
जल जलण भगन्दर मन्त्र वशंकर वारण शंकर समरन्ता ।।
ए 'सूरि राजेन्द्रा' हरे भव फन्दा नाम महन्दा जस डंका ।
भाण्डवपुर राजे सयल समाजे, वीर विराजे अति बंका ।। ३ ।।

(३)

वन्दो श्री जिन वीर को, भांडव अधिपति धीर ।
जनमन वंछित पूरणो, ए सम न कोई वीर ।। १ ।।

त्रिशलानन्दन चन्द सम, सिद्धार्थ कुल भाण ।
प्रबल प्रभावे सोहता, समतारस गुण खाण ।। २ ।।

भवदव तापे संतप्यो, शरणे आयो आप ।
तरण तारक तुम खरा, टालो मुझ सन्ताप ।। ३ ।।

करुणानिधि दया करी, दीजे शिवपुर वास ।
सूरियतीन्द्र की याचना, सफल करो प्रभु खास ।। ४ ।।

(४)

भांडवपुर में भेटिया, सिद्धारथ कुलचन्द ।
त्रिशला कूंखे अवतर्यो, शिवरमणी सुखकन्द ॥ १ ॥

मानव भव सफलो करी, दीधुं वरसी दान ।
बारे वरस तपस्या करी, लीधुं केवल ज्ञान ॥ २ ॥

मुक्ति गया पावापुरी, अमावसरी रात ।
गौतम केवल पामिया, प्रह ऊगे परभात ॥ ३ ॥

शासन वरते जेहनो, वरस इक्कीस हजार ।
सूरिविजय राजेन्द्रजी, अमृत विजय जयकार ॥ ४ ॥

(५)

वर्धमान जिनराजजी, जिन शासन के भूप ।
जिनको ध्यावत प्राणिया, पाते निज गुण रूप ॥ १ ॥

चउदश सुपना योगते, जन्मे वीर जिणिन्द ।
त्रिशला माता खुश हुए, सिद्धारथ कुलचन्द ॥ २ ॥

छप्पन दिक्कुमरी करे, वीर जन्म उछरंग ।
मात पिता पण एम ही, करते पूर्ण उमंग ॥ ३ ॥

मेरु पे न्हवरावतां, पंच रूप धर इन्द ।
बालकवय में क्रीडतां, वधते यौवन कन्द ॥ ४ ॥

राजरमणी सुख भोगतां, मात पिता ले स्वर्ग ।
तदनन्तर दीक्षा लही, चले पन्थ अपवर्ग ॥ ५ ॥

परीषह लश्कर जीपता, दुष्ट कर्म बलवान ।
बहुविध तप जप आदरी, पाये केवल ज्ञान ॥ ६ ॥

भविक कमल प्रतिबोधत, समवसरण के मांय ।
त्रणसी त्रेसठ वादी भी, बोल सके कछु नांय ॥ ७ ॥

जन्म मरण दुख टाल के, पावापुरि ले मुक्ति ।
भांडवपुर जिन मूर्ति के, दर्शन कीध सुयुक्ति ॥ ८ ॥

उगणी वाणुं चैत्र में, धाणा युवक सुसंग ।
सूरिराजेन्द्र आण में, गुलाब मुनि नित रंग ॥ ९ ॥

(६)

वन्दु वीर जिणन्द ने, चौवीसमा जग भाण ।
समवसरण में राजता, सर्व गुणी सावधान ॥ १ ॥

मृगपति लंछन पाउले, भामण्डल झलकंत ।
बार पर्षदा आगले, मधुर ध्वनि वरसंत ॥ २ ॥

इन्द्रभूति आदि कर्या, एकादश गणधार ।
उपदेश्या कई प्राणिया, शिववास मनुहार ॥ ३ ॥

पायो दरिसण ताहरो, मरुधर देश मझार ।
भांडवपुर तीरथ भलो, वन्दो बारम्बार ॥ ४ ॥

दायक मुझने दीजिये, सेवक सनमुख भाल ।
सुन्दर शिवसुख साहेगा, दायक तात दयाल ।। ५ ।।

(७)

वीर जिणिन्द समरूं सदा, भांडवपुर मझार ।
त्रिशलानन्दन गुणनिलो, तीन भुवन हितकार ।। १ ।।
सिद्धारथ कुले अवतर्या, सृष्टिना शिरताज ।
कंचन वरणे शोभता, चरणे मृगपति राज ।। २ ।।
इकदश गणधर ओपता, इन्द्रभूति आदेय ।
चौद सहस मुनिवर कह्या, ते सहु गुणना गेय ।। ३ ।।
सहस छत्रीस साधवी, प्रभुजीनो परिवार ।
हाथ दीक्षित सवि भाषिया, गणधरे सूत्र मझार ।। ४ ।।
सात सौ प्रभु केवली, वरिया शिववधु माल ।
सूरिराजेन्द्रे इणि परे, भज वाणी उजमाल ।। ५ ।।

(८)

(तीर्थमाला-चैत्यवन्दन-इन्द्रवज्रा)

(१)

सिद्धार्थ के नन्दन बन्दना है ।
संसार मायामय जान आया है ।।
हे आत्म शरणागत मैं तुम्हारे ।
तार विभो ! श्रेणिक आदि को भी ।।

(२)

पावापुरी राजगढोसिया में ।
कोरंट, सांचोर, थराद स्वामी ।।
श्री भांडवा, बामनवाड़ स्वामी ।
राता महावीर विभो ! मुछाला ।।

(३)

श्री तीर्थ भद्रेश्वर कच्छ देशे ।
है पंचतीर्थी गिरीराज आबू ।।
भूति, सिरोही, बढ़वाण स्वामी ।
महावीर हैं जैसलमेर दुर्गे ।।

(४)

आहोर, जालोर, गढ़े महावीर ।
श्रीमाल, कुशीपुरी में बिराजे ।।

ओ बागरा बाव हणादरा में ।
आनन्दकारी प्रतिमा जुहारी ।।

(५)

वन्दूँ अजारी, अरु नान्दिया में ।
लोटाण, भोटाण विभो ! दयाणा ।।
सूरीश राजेन्द्र यतीन्द्र विद्या ।
तीर्थस्थली की तति को नतोऽहं ।।

(विभिन्न स्थानों के प्रभु महावीर का चैत्यवन्दन किया गया है।)

(९)

पुरुषोत्तम जग शासका, प्रभुवर गुणमणि खान।
तीरथपति भवि सेवंते, भांडवपुर नित जान ।। १ ।।

प्रभु प्रतिमा मुख मोहती, उपशम भाव ललाम ।
दरिसन करूँ उल्लास से, होजो कोटि प्रणाम ।। २ ।।

राजेन्द्र चरण पूजतां, यति पति जग जयकार ।
देवेन्द्र ध्यावे सर्वदा, महावीर सुखकार ।। ३ ।।

(१०)

तीरथपति श्री वीरजी, सेवे सुरनर इन्द ।
दुःख दोहग निवारतां, करुणाचन्द जिनन्द ।। १ ।।

जंगल, झाड़ी, भरपूरा, भांडवपुर शुभ ठाम ।
मरु मंडन तिहां राजतां, प्राचीन तीर्थ धाम ।। २ ।।

अनुपम छवि दिल मोहता, हरती कर्म निकन्द ।
पुण्य प्रभावे भेटियो, मोहक त्रिशलानन्द ।। ३ ।।

सद्गुण दायक जिनवरा, शासन लायक खास ।
ध्यान धरूँ नित प्रेम सुं, आणी भाव विशेष ।। ४ ।।

अवलोकी राजेन्द्रजी, जाग्यो हर्ष उमंग ।
देवेन्द्र पद पूजतां, नरेन्द्र भाव सुरंग ।। ५ ।।

श्री महावीर जिन स्तुति युगलानि

(१)

प्रभु वीर जिणिन्दा, मेटिये दुःख फन्दा ।
भांडवपुर चन्दा, दीजिये सुक्ख कन्दा ।। १ ।।

जग जन सुखकारी, तीर्थ तिहुं लोक गेरा ।
सुरनर सहु वन्दे, भक्ति भावे भलेरा ।। २ ।।

भविजन हितकारी, वाणि जैनेन्द्र केरी ।

मुनिपति मन धारी, गूंथी ग्रन्थेन्द्र फेरी ।।
अति अर्थ विकासे, सप्त भंगी हुलाशे ।
नमत भव विनाशे, सूरिराजेन्द्र भाषे ।। ३ ।।

(२)

तुमतणा गुण कोण गणी शके, प्रचुर वीर जिनेन्द्र दमीश के ।
सुपुर भांडव मांय सुशोभता, कुमति मान महोदय मोड़ता ।। १ ।।

जग जन उपकारी, तीर्थ जे लोक मांहीं ।
जिनमत जिन केरा, वन्दता पाप जाहीं ।।
पठत ऋषभ वीरो, पश्चिमो तीर्थ नाथे ।
चउजिन नित भावे, पूजिये नित्य हाथे ।। २ ।।

सूत्राणां वर्णपंक्तिर्मुनिवररचिता अस्ति सा वन्द्यमाना ।
वन्दे तां सौख्यदात्रीं विविधनयमतेरर्थगम्भीरभाजाम् ।।
निक्षेपैर्व्याप्तभाषां भवभयशमनीं मोक्षदं सुप्रतीतां ।
राजेन्द्रैर्वन्दिता सा अतितरविमला सद्गिरा वै पुनातु ।। ३ ।।

(३)

महावीर जिनेश्वर, जगदीश्वर जयकार ।
सिद्धारथ नन्दन, त्रिशला मात मल्हार ।।
भांडवपुरे भेटी, सहु सम्पद दातार ।
'सुन्दर' प्रभु सेवत, पावे वांछित सार ।। १ ।।

(४)

विभिन्न प्रभु महावीर की स्तुति
सुन्दर भाषा में की गई है जो निम्नानुसार है ।

(स्तुति- बसन्ततिलका)

(१)

राजगृही श्रमण श्री प्रभु वीर स्वामी ।
सांचोर मण्डन सुमण्डित शिल्प राशि ।।
जालोर दुर्ग विलसे जिन पंचतीर्थी ।
श्री भांडवा परम तीर्थ सुरेन्द्र सेवी ।।

(२)

पावापुरी रूचिर तीर्थ सुधाम स्वामी ।
यों पाप पुण्य फल दर्शक सर्वदर्शी ।।
भव्यात्म के हृदय में मन मोद भारी ।
योगी मनुष्य कर ध्यान लीला ।।

(३)

वैराग्य राग अति रम्य अनन्त पाये ।
केवल्य प्राप्त करके त्रिपदी शुभादी ।।
राजेन्द्र के गणधरा गम ज्ञानदर्शी ।
श्रीसंघ चौविध बना जिन मार्ग पंथी ।।

श्री महावीर जिन स्तवनानि

(१)

(राग- देशी जल्ला की....)

मना रे वीर जिणिन्दनी, मूरति मोहनगारी रे-
जयकारी जिनराज, वीर. दयाल ।। १ ।।
मना रे भावट भवनी, भमवानी सहु भागी रे-
जयकारी जिनराज, भा. दयाल ।। २ ।।
मना रे जागी लागी चितड़े प्रीत सुरागी रे-
जयकारी जिनराज, जा. दयाल ।। ३ ।।
मना रे वसिया रसिया वालम, परम वैरागी रे-
जयकारी जिनराज, व. दयाल ।। ४ ।।
मना रे राखुं किणविध, चितड़ो चंचल थोरी रे-
जयकारी जिनराज, रा. दयाल ।। ५ ।।
मना रे धुतारा दोय, लारे लागा मोरी रे-
जयकारी जिनराज, धु. दयाल ।। ६ ।।
मना रे मिलवा प्रीतम, मोज महिल मन रंगे रे-
जयकारी जिनराज, मि. दयाल ।। ७ ।।
मना रे पूरवपुण्य, संयोगे सुरती साधी रे-
जयकारी जिनराज, पू. दयाल ।। ८ ।।
मना रे कृप कर चित, अरजी सुण प्रभु आई रे-
जयकारी जिनराज, कृ. दयाल ।। ९ ।।
मना रे भांडवपुर में, सूरिराजेन्द्र सहाई रे-
जयकारी जिनराज, भां. दयाल ।। १० ।।
मना रे प्रमोदरुचि मन या, छवि वसज्यो सदाई रे-
जयकारी जिनराज, प्र. दयाल ।। ११ ।।

(२)

(चन्दा प्रभुजी से ध्यान रे.... ए राह)

शासनपति जिन चन्द रे, सेवो लहो सुखन को ।
सेवो लहो सुखन को, जिनराज गुणन को, से. ।। टेर ।।
भांडवपुर के मंडन जिनवर, शिवसजना सुखकन्द रे, से. ।। १ ।।
जैन जैनेतर सबही अति, दर्शन वीर जिणिन्द रे, से. ।। २ ।।

कर्म भर्म सहु रोग निवारक, तारक त्रिशलानन्द रे, से. ॥ ३ ॥
लक्ष चौराशी योनी अन्दर, आन मिल्यो आनन्द रे, से. ॥ ४ ॥
सायला नगर की बाल मंडली, चरण शरण गहन्द रे, से. ॥ ५ ॥
बाण वसु निधी भूतल वरसे, पूनम चैत्री वन्द रे, से. ॥ ६ ॥
सूरिराजेन्द्र को पयकज सेवक, गावे मुनियतीन्द्र रे, से. ॥ ७ ॥

(३)

(माता मोरादेवीना नन्द.... ए राह)

प्रभुजी भले विराजेजी, श्री भांडवपुर के
वासी साहेब भले विराजेजी ॥ आंकडी ॥

त्रिशलानन्दन धर्म सुमंडन, सिद्धारथ कुलचन्द ।
तुम मुखपंकज सुन्दर सोहे, तरणी तेज अमन्द प्र. ॥ १ ॥

अज अविनाशी अन्तरयामी, धारक पद जिनराज ।
आतमरंगी गुणमणि आगर, शमदरशी शिव साज प्र. ॥ २ ॥

कृत अपराधी जन तुं तारक, वारक मिथ्या टेव ।
चरिम जिनेश्वर सद्गति दाता, परतिख साचो देव प्र. ॥ ३ ॥

विद्या विवेक पर सागर रूपे, आपो पद श्रीकार ।
भयवन त्रासक तुं प्रतिपाला, नाम जपुं जयकार प्र. ॥ ४ ॥

बालमण्डली सौ संघ संगाथे, कीनी निरमल जत्त ।
सूरिविजय राजेन्द्र प्रतापे, सूरियतीन्द्र भये तत्त प्र. ॥ ५ ॥

(४)

(तोहिद का डंका आलम में.... ए राह)

अहिंसा परमो धर्म मन्त्र को, सिखला दिया वीर विभुवर ने ।
सत्यधर्म का रास्ता दुनिया को, बतला दिया वीर विभुवर ने ॥ टेर ॥

क्षत्रियकुण्ड जन्म लिया प्रभु, लोकोत्तर धाम को धार लिया ।
बालकपन में मेरु महीधर, कम्पा दिया वीर विभुवर ने अ. ॥ १ ॥

वेदपादों का अर्थ बताकर, सब संशय निरमूल किये ।
गौतम आदि ग्यारे गणधर, थापन किया वीर विभुवर ने अ. ॥ २ ॥

अमृत सम वाणी बरसा कर, भविपंकज प्रतिबोध किया ।
कृत अपराधी जन को भी, तार दिया वीर विभुवर ने अ. ॥ ३ ॥

करुणासागर ने चंडकोशिय को, अष्टम स्वर्ग पहुँचाय दिया ।
चन्दनबाला के भवबन्धन को, तुड़वा दिया वीर विभुवर ने अ. ॥ ४॥

देवशर्मा द्विज प्रतिबोधन को, गौतम को तत्र पठाय दिया ।
अनन्त सुखराशी स्वयंवर की, स्वीकार लिया वीर विभुवर ने ॥ ५ ॥

प्रेम बन्धन तूटे तब ही, गौतम ने केवलज्ञान लिया ।
जन मन रंजन पर्व दिवाली, स्थाप दिया वीर विभुवर ने अ. ॥ ६ ॥

सूरिविजय राजेन्द्र गुरुजी, यतीन्द्रपति सरताज हुए ।
विद्यामुनि को भांडवपुर में, दर्श दिया वीर विभुवर ने अ. ॥ ७ ॥

(५)

(मांड की राह में....)

हुँ दर्श को आशी, भांडव वासी ।
दर्शन दो महाराज ।। आंकडी ।।

भांडवपुर में प्रगट प्रभावी, त्रिशलानन्दन वीर ।
लाख चोराशी भ्रमण मिटावो, अपो शिवपद तीर रे-
बाजे यश डंका महावीर बंका दर्शन दो महाराज हुँ. ।। १ ।।

बालक ने निज नयने निहालो, आश्रय राखो स्वाम ।
तीन भुवन के आप हो त्राता, सारो वंछित काम रे-
प्रभु वीर जिणिन्दा, कर्म निकन्दा दर्शन दो महाराज हुँ. ।। २ ।।

जैन जैनेतर माने पूजे, परचो सांचो दिट्ठ ।
रेगीस्थान में आन विराजे, पूरत आश गरिट्ठ रे-
सेवे चौंसठ इन्दा, भाव विलिन्दा, दर्शन दो महाराज हुँ. ।। ३ ।।

नाग वासु निधि हिमकर वर्षे, शुक्ल माघ सुखकार ।
दण्ड-ध्वजारोपण दशमी दिन, वरत्या मंगलाचार रे-
दया भाव विलासी, शिवपुर वासी, दर्शन दो महाराज हुँ. ।। ४ ।।

सूरिविजय राजेन्द्र प्रतापी, पूजित इन्द्र नरेन्द्र ।
सूरियतीन्द्र पदपंकज सेवी, लहे सदा सुखकेन्द्र रे-
विद्यामुनिन्दा, करो सुखीन्दा दर्शन दो महाराज हुँ. ।। ५ ।।

(६)

(घूँसा की राह में....)

तीर्थपति प्रभु वीर जिनेश्वर,
महिमावन्त दयानिधि का द. ।। १ ।।

दूर देशों में परचो परगट,
ध्यावत पावे सुख नौका द. ।। २ ।।

कौम छत्तीसो पूजे प्रभु ते,
बोले मान्याता तहती का द. ।। ३ ।।

फक्त आपकी श्रद्धा राखे,
और देवता सब फीका द. ।। ४ ।।

उगणीसो अठ्यासी वर्षे,
जलशा जबरा जिनजी का द. ।। ५ ।।

माघ मास शुदि दशमी दिवसे,
दण्डध्वजा स्थापन कीना द. ।। ६ ।।

सूरिराजेन्द्र यतीन्द्र प्रतापी,
विद्या वन्दत है गुण अधिका द. ।। ७ ।।

(७)

(गिरु आ रे गुण तुम तणा.... ए राह)

वन्दूं वीर जिणिन्द ने, त्रिशला राणीरा जाया रे ।
तुझ गुण गातां माहरी, पावन थाये काया रे वन्दूं ।। १ ।।

बालपना में साहेबा, मेरु गिरी कम्पाया रे ।
दीक्षा लई केवल वरी, शासन जय वरताया रे वन्दूं ।। २ ।।

इन्द्रभूति आदि कर्या, एकादश गणधार रे ।
शुलपाणी चण्डकोसी ने, दीनो सुर अवतार रे वन्दूं ।। ३ ।।

तेजु लेश्या जल तो घणो, गुणहीनो गोशाल रे ।
शीत लेश्या थे मूकीने, शीतल कियो गुण माल रे वन्दूं ।। ४ ।।

समवसरण में राजता, सुर नर केई हजार रे ।
वाणी अमृतमय करी, भव जल तारण हार रे वन्दूं ।। ५ ।।

भांडवपुर में भेटीया, मेटिया अघ आरि दूर रे ।
कलियुग कल्पतरू परे, मनवंछित सवि पूर रे वन्दूं ।। ६ ।।

सोहमतपगण सुन्दरू, धनचन्द्रसूरि गुरु पसाय रे ।
गुलाब मुनि नित शुभ मने, सुन्दर जिन गुण गाय रे वन्दूं ।। ७ ।।

(८)

(तुम तो भले विराजो जी.... ए राह)

आज भांडवपुर जासां जी, वीरप्रभु को वन्दन करके-
पावन थासां जी आ. ।। टेर ।।

पावन थासां प्रभु गुण गासां, करसां पातिक दूर ।
भीड़ भंजन प्रभु सन्मुख भाले, रहेसां आप हजूर आ. ।। १ ।।

हजूर हमारे हिरदे निशदिन, मैं हूँ आप मजूर ।
भूरि गुणे करी भरिया प्रभुजी, दुखड़ा कर तूं दूर आ. ।। २ ।।

दूर थकी जपतां दुख जावे, हुँ आयो प्रभु ठाम ।
सुर तरु माहरे आंगण फलिया, तूठा त्रिभुवन स्वाम आ. ।। ३ ।।

स्वामी हुई मुझ आश सफलता, पूर्या वंछित कोड़ ।
त्रिशलानन्दन आगल दूजा, देव करे नहीं होड़ आ. ।। ४ ।।

होड़ करे कुण आगल मेरु, सरसव अन्तर जोय ।
त्रिभुवन तारक प्रभु जग दानी, मिलिया पुण्ये मोय आ. ।। ५ ।।

मोय लगी प्रभु मोहन मुद्रा, शासन के सिणगार ।
मस्तक मुकुट मनोहर राजे, हियड़े नवसर हार आ. ।। ६ ।।

हार गये जग वादी प्रभु से, भये गौतम गणधार ।
सुधर्म गणधर पाट परम्पर, सूरिराजेन्द्र सुखकार आ. ।। ७ ।।

कार कदी नहीं लोपे ज्यांरी, पंच महाव्रत धार ।
गुलाब मुनि जिन दर्शन पाकर, सफल गिणे अवतार आ. ।। ८ ।।

तार धाणसा बालमण्डली, गुलाब मुनि संगाथ ।
उगणीसो एकाणुं वरसे, चैत्री पूनम परभात आ. ।। ९ ।।

भांति-भांति की अंगिया सोहे, पूजा विविध प्रकार ।
कर जोड़ी सुन्दर गुण गाते, वन्दना बारम्बार आ. ।। १० ।।

(९)

(सरोता कहाँ भूल आये प्यारे.... ए राह)

महावीर मन मोहना, दरस मोय दीजे ।। टेर ।।

माता तोरी त्रिशलादे ने, क्षत्रियकुण्ड मांहिजी ।
राय सिद्धारथ नन्दन नीका, जन्म्या कुल में तांही ।। म. ।। १ ।।

छप्पन दिशि कुमरी मिल आवे, केलिगृह के मांहिजी ।
न्हवरावे मिल चौंसठ सुरपति, मेरुगिरी ले जाही ।। म. ।। २ ।।

वैरागी संयम गुणरागी, त्यागी ततखिण भाई जी ।
कर्म भोगवी बारा वर्षे, केवल पदवी पाई ।। म. ।। ३ ।।

अहि उगार्यो आपे जिनजी, शूलपाणी समझाई जी ।
गौतम वाद करंता साथ में, दीक्षा दिलवाई ।। म. ।। ४ ।।

गुणहीनो आयो गौसालो, तेजु लेश्या लाई जी ।
शुभ नजरे स्वामी उगार्यो, शीतलेश्या दाई जी ।। म. ।। ५ ।।

अविनासी अजरामर पद ने, वरिया ध्यान लगाई जी ।
चिदानन्द आनन्द के दाता, सिद्धि गति ने पाई ।। म. ।। ६ ।।

परमात्म पूरण विश्रामी, तीर्थंकर पद पाई जी ।
चौबीसमा जिनवरजी शोभे, भांडवपुर के मांई ।। म. ।। ७ ।।

चैत्री पूनम मेले सुन्दर, अब्द तिराणुं आई जी ।
तुं तारक त्रिभुवन के दाता, शरण में चित्त लाई ।। म. ।। ८ ।।

नयर सायला छोगे बुधमल, यात्रु संघ जीमाई जी ।
पूजन संगीत भक्ति रंगे, चंगी अंगी रचाई ।। म. ।। ९ ।।

बालमण्डली आवत गावत, नृत्य करत मन चाई जी ।
मनोहर महावीर तोरी मूर्त्ति, देखी आनन्द लाई ।। म. ।। १० ।।

आप दया के सागर प्रभुजी, हम पै करुणा लाईजी ।
हेमहर्ष हाजर में आगे, अरजी याही गाई ।। म. ।। ११ ।।

(१०)

(जिनमत का डंका आलम में.... ए राह)

महावीर तुम्हारे दरिसन को, भांडवपुर तीरथ आया हूँ ।
अति ज्योति झगमग जिनवर की, देखी दिल आनन्द पाया हूँ ।।टेर।।

हो माता त्रिशला के नन्दा, शारद मुख है पूनमचन्दा ।
दरिसन से दुर्गति टले फन्दा, चरणों में शीश नमाया हूँ ।।म.।।१।।

तारक विश्व दयालु तू ही, हर्या संकट भक्त अनेक मही ।
मोचन पाप प्रलाप सही मैं, निशदिन ध्यान लगाया हूँ ।।म.।।२।।

रत्न चिन्तामणी तू स्वामी, अलवेसर प्रभु अंतरयामी ।
सेवा नित चाहते गुणधामी, उमेद धरी मैं आया हूँ ।।म.।।३।।

प्रभु सहज स्वभाव विलासी हो, चिदानन्द स्वरूप अविनासी हो ।
शिव पंथन के वासी हो, लयलीन ध्यान में लाया हूँ ।।म.।।४।।

शरणागत सेवक को तारो, कर महेर निजर करूणा लावी ।
शिष्य हेम लहे सुखनो आरो, भवोदधि से पार तिराया हूँ ।।म.।।५।।

(११)

(हे दुरमतिनी.... ए राह)

मन मोहना रे लाल, आजुनी आंगीनो रस मोय दीजिए ।
जग सोहना रे लाल, प्रेम अतीत विचारी रे अरजी लीजिए ।।टेर।।

तुम ध्येय रूप ध्याने आओ, अम मन मंदिरये पधरावो ।
थांरो वीर नाम जग शुभ पावो ।।मन.।।१।।

अमे चरण कमल सेवा करसुं, निज वीर्य वीर पणे वरसुं ।
तिहां तु उपगार ते नवि गिणसुं ।।मन.।।२।।

सहु जीवतणा संकट कापो, वलि वीरनाम साचुं थापो ।
तो आ भव मुक्ति श्ये नापो ।।मन.।।३।।

पिण अमचा कर्म अति बलिया, तिण भवस्थिति दोषे तुमे कलिया ।
ऐसो कायर हाय ते हुवे गलिया ।।मन.।।४।।

तु कर्मारि गंजन शुरो, तो सेवक ना वंछित पूरो ।
होसी वीर नाम नहीं तो क्रुरो ।।मन.।।५।।

भाँडवे वीरजिणन्द भारी, सुणिआयो करुणानिधी धारी ।
हिवे तारिये तारक वीर ।।मन.।।६।।

जग तारक तीन भुवन स्वामी, सूरि राजेन्द्र पद विसरामी ।
कीजे धनमुनि चरण शरण गामी ।।मन.।।७।।

(१२)

(हे प्रभो आनन्द दाता.... ए राह)

वीर स्वामी आप मेरी, अर्ज स्वीकृत कीजिये ।
द्वार तेरे आज आया, दास जानी लीजिये ।। टेर ।।

विश्व रूपी विकट अटवी, पार करना है मुझे ।
पार होकर शुद्ध मन से, ध्यान धरना है मुझे ।
हो सहायक शीघ्र ही, अब तो सहारा दीजिये ।। वी. ।। १ ।।

अखिल जनमन मोदकारी, तीर्थ भांडव धाम में ।
मोहिनी तव मूर्त्ति निरखी, पूर्ण प्रणयारमें में ।
आत्मरूप स्वरूप सदृश, आत्म पावन कीजिये ।। वी. ।। २ ।।

पुण्ययोगे जन्म पाया नाथ ! नर अवतार का ।
टाल आवागमन काटो, दुःख सब संसार का ।
ज्ञान गुण कण को दयालु ! धीर मम मन कीजिये ।। वी. ।।३।।

सूरिवर राजेन्द्र राजित, श्री यतीन्द्र प्रसाद से ।
ध्यान धरकर सफल जीवन, भक्तिमय गुणनाद से ।
प्रार्थना स्वीकार कर प्रभु !, दान विद्या दीजिये ।। वी. ।। ४ ।।

(१३)

(घर आया मेरा परदेशी प्यास बुझे.... ए राह)

मैं आया तेरे गुण गाने, वीर प्रभो ! भांडव-स्वामी ।
आ.....आ.....आ.....आ.....आ..... ।। टेर ।।

पद्मासन मुद्रा प्यारी है, अब दुःख भेदनकारी है ।
अन्तर मन्दिर के स्वामी, वीरप्रभो ! भांडव-स्वामी ।। मैं. ।। १ ।।

अज्ञान तिमिर को दूर हरो, मन में सम्यक्त्व भाव भरो ।
नमन करूँ मैं गुणधामी, वीरप्रभो ! भांडव-स्वामी ।। मैं. ।। २ ।।

अरजी पर मरजी करना, मन का मैल मिटा देना ।
नैया तिरा अन्तरजामी, वीरप्रभो ! भांडव-स्वामी ।। मैं. ।। ३ ।।

प्रतिष्ठा महोत्सव है भारी, निरखी हरखे नर-नारी ।
यतीन्द्रसूरीश्वर यश पामी, वीरप्रभो ! भांडव-स्वामी ।। मैं. ।। ४ ।।

जेठ सुदि दशमी प्यारी, थी संघ की आनन्दकारी ।
विद्याविजय नित प्रणमामि, वीरप्रभो ! भांडव-स्वामी ।। मैं. ।। ५ ।।

(१४)

(राह ख्याल की....)

हाँ संघ आया रे महोत्सव देखनकुं संघ आया रे ।। टेर ।।

भांडवपुर में वीर बिराजे, देखत दिल हरषायो रे सं. ।
देवकुलिका चार बनाई, गौतम राजेन्द्र सवायो रे सं. हाँ. ।। १ ।।

पृष्ठभाग में पार्श्व बिराजे, अनुपम छबियाँ छाजे रे सं. ।
जीर्णोद्धार कियो मन्दिर रो, बनियो संगमरमर से सं. हाँ. ।। २ ।।

देवविमान ज्यों मण्डप सोहे, नर-नारी मन मोहे रे सं. ।
सिद्धाचल गिरिवर गिरनारा, सोहे प्रभुजी प्यारा रे सं. हाँ. ।। ३ ।।

मण्डली नाचे जिनगुण गावे, बैंडघुरे घनघोरा रे सं. ।
जेठ सुदि दशमी उत्तम, ध्वज कलश चढ़ायो रे सं. हाँ. ।। ४ ।।

ग्यारस दिन शुभ मंगलवारा, शान्ति स्नात्र पढ़ाया रे सं. ।
प्रतिष्ठाकारक यतीन्द्रसूरीश्वर, विद्याविजय गुण गायारे सं.हाँ. ।।५।।

(१५)

(राह त्रिभंग छन्द- वीरस्तोत्रम्....)

वर्धमान जिनेश्वर जग परमेश्वर नमत सुरेश्वर पाद सारं,
विनती उर धारो कष्ट निवारो आत्म सुधारो चित धारम् ।
मद मदन निवारी शर्ण तिहारी आनन्दकारी दातारं,
भांडवपुर स्वामी अन्तरजामी जग विसरामी हितकारम् ।। १ ।।

पातिकहारं पतितोद्धारं पावनकारं सुखकारं,
जनमन रंजन भवभय भंजन अरिदल गंजन हो दुखहारम् ।
वर केवल दासी अज अविनासी मोक्षविलासी जयकारं,
भांडवपुर स्वामी अन्तरजामी जग विसरामी हितकारम् ।। २ ।।

असुर पिशाचा चुडेल चण्डाला अति विकराला नितवारं,

रोग सोग जावे सम्पति पावं तुमको ध्यावे भव पारम् ।
नाग विषहारं स्नायुकवारं मन-मन्दिर धारं नर-नारं,
भांडवपुर स्वामी अन्तरजामी जग विसरामी हितकारम् ।। ३ ।।

गुण पारावारं करुणागारं भव निस्तारं सुखकारं,
हो निज गुणशुद्धि निर्मल बुद्धि अष्टनवसिद्धि शिवसारम् ।
सूरिराजेन्द्रा श्रमण यतीन्द्रा विद्यामुनीन्द्रा भयहारं,
भांडवपुर स्वामी अन्तरजामी जग विसरामी हितकारम् ।। ४ ।।

(१६)

(राग- वणझारा....)

भांडवपुर तीरथ भारी, वीर जिणिन्द जयकारी ।। टेर ।।

त्रिशला की कुंख में आये, कुल सिद्धारथ दीपायेजी ।
हुए जग में अवतारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी ।। भां. ।। १ ।।

प्रभु रेगिस्थान में आई, महा महिमा रूप लखाईजी ।
भवि जीवन के हितकारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी ।। भां. ।। २।।

प्रभु आप विश्व के त्राता, अब नहीं कोई से नाताजी ।
आप दरश सुख दातारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी ।। भां. ।। ३ ।।

कर्म उरग मुझ पूठे, पड़ा महा भयंकर रूठेजी ।
यह पीड़ा दो मम टारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी ।। भां. ।। ४ ।।

प्रभु दूर देश में विराजे, आप भक्तजनों के राजेजी ।
मम सफल करो आशारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी ।। भां. ।।५।।

उन्नीसो अठ्यासी वरसे, सुदि माघ दशम बुध हर्षेजी ।
मुहूर्त्त महोदय कारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी ।। भां. ।। ६ ।।

श्रीसकल संघ मिल आये, भक्ति भाव से पूजा रचायेजी ।
विभु वीर से प्रेम लगारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी ।। भां. ।। ७ ।।

ध्वजा-दण्ड चढ़ाया रंगे, प्रतिमास्थापन थई मनचंगेजी ।
किया उत्सव गुलजारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी ।। भां. ।। ८ ।।

करी शुद्धविधि नरविघ्ने, भव्य भाव मंगल शुभ करनेजी ।
गुरुयतीन्द्रविजय अनगारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी।।भां.।।९।।

सज्जन दिल हुलसाये, आठ दिवस जलशायेजी ।
महावीर चरण बलिहारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी ।। भां.।।१०।।

तपगच्छ महीयल राजे, सूरिराजेन्द्र संघ समाजे जी ।
शिष्य उत्तम के निस्तारी, तिहाँ वीर जिणिन्द जयकारी ।।भां.।।११।।

(१७)

(नदी यमुना के तीर उड़े दो पंखिया....ए राह)

जगतारक जिनराज, तुम जगपति ।।
मुझ हिवड़ानुं हार, तुहीं त्रिभुवनपति ।।
भाषक भासन रूप, तिणे जाणो छती ।

तो पण बालक बोल, वीनऊ तुझ प्रती ।। १ ।। ज. ।।

वर महेलां धन माल, छाया मोहनी ।
लागी तृषना लार, अशुभ शुभ लोहनी ।।
जो निर्याभिक श्रेष्ठ, इष्ट छे तो भणी ।
तारो दीन दयाल, दया करी मो भणी।। २ ।। ज. ।।

बुठो अम घर आज, अमीरस मेहुलो।
नयने निरख्यो नाह, संभारी नेहुलो ।।
अनुभव रूप स्वरूप के, प्रभु ने अटकल्यां ।
ते मह मांग्या आजख सखी पाशा ढल्यां ।। ३ ।। ज. ।।

सात राज महाराज, अलग जईने वस्या ।
मुझ मन पंकज महेल, छेल थईने धस्या ।।
जो ह्वावे स्वजन विदुर, तोही पासे वसे ।
किहाँ सायर किहाँ चन्द, देखी मन उल्लसे ।। ४ ।। ज.।।

पण निरागीसुं राग, करी शुं कीजिये ।
जल थल मरेरे पतंग, दीपक न पतीजिये ।।
तिणे सरागी सुं राग, करन्ता सोहिलो ।
पिण वितरागी , राग, निर्वाहन दोहिलो ।। ५ ।। ज. ।।

पेख्यो प्रतिरूप के, परतिख तुझ भणी ।
मोहनी पुत्र नो नेह, ते जाणो जगधणी ।।
सकल कला घट माहीं के, प्रगटी तुझ अछे ।
नेह कला निर्वाह के, प्रगटी ना अछे ।। ६ ।। ज. ।।

जेहने जेहसुं राग, ते पण तेहसुं मिले ।
आंबा केरो स्वाद, निंबोलिया किम भले ।।
जेरम्या जाया ने फूल , तेम बाबल किम रमे ।
जे झील्या गंगा नीर, छिल्लर कहो किम गमे ।। ७ ।। ज. ।।

चरणकमल जिनराजसुं, लागी प्रीतड़ी ।
अवर संसारी देव, न ध्याऊं एक घड़ी ।।
भांडवे वीर जिणिन्द, सम ते पोखियो ।
तिमिर अनादि मिथ्यात्व, सहज गयो लेखियो ।। ८।।ज.।।

उगणिसो इकतीस, वरस शुभ मास में ।
चैत्र अमावस घस्र, भटयो उल्लास से ।।
सूरि राजेन्द्र महाराज, हृदय थी आप जो ।
धन मुनि चरण सरोज, सदा माय थापजो ।। ९ ।। ज. ।।

(१८)

(नेम की जान बनी भारी.... ए राह)

भांडवपुर महावीर सुखकारी, मूरति मन मोहनगारी ।
अवर्णित आनन्द करनारी, करमरिपु दूरे हरनारी ।। टेर ।।

"त्रिशलानन्दन वीरजी, सिद्धरथ सुतनन्द ।
जंगल में मंगल किया, चरण शरण सुखकन्द ।।"

दिये मम दर्शन सुखकारी, भांडवपुर महा सुखकारी ॥ भां ॥ १ ॥

संघ सहु यात्रार्थे आवे, महावीर महावीर गुण गावे ।
मोह मद माया ने टारे, किलेश को दूर वारे ॥
'पांडव निधि निधि चंद्र में, हुई प्रतिष्ठा जान ।
प्राचीन तीर्थ प्रमाण है, सहस्राब्दि गुणखाण ॥'

इन्द्राणी थई थई करनारी, भांडवपुर महा सुखकारी ॥ भां. ॥ २ ॥

अब्द बीस शत सप्तम चैत्र, शनि पूनम निरख्या नेत्रे ।
वेदना दूर करी क्षेत्रे, भावना भाई शुभ मैत्रे ॥
'सूरीश्वर यतीन्द्रजी, समकित विद्या दान ।
भूरी वस्ती साथे स्तवे, चरित्र तप गुण गान ॥'

जय जय मंगल करनारी, भांडवपुर महावीर सुखकारी ॥ भां. ॥ ३ ॥

(१९)

(रखिया बंधाओ भैया.... ए राह)

सेवक चरणों में आया, भांडव राया रे ॥ टेर ॥

भव सागर में दुख पाया, कहीं नहीं में साता पाया ।
करुणा सागर हो अब तो, तारो नैया रे ॥ से. ॥ १ ॥

तुं अधम उद्धारक विसरामी, तु है मुझ अन्तरयामी ।
सांचो साहिब मेरो, पूजूं पाया रे ॥ से. ॥ २ ॥

कर्मो का दलबल भारी, मोह माया जिसमें सरदारी ।
इनसे बचाओ स्वामी, प्रभु शिवगामी रे ॥ से. ॥ ३ ॥

कइक दिनों की अभिलाषा, दर्शन की थी अति प्यासा ।
तेरस मधुमासे आया, दरिसन पाया रे ॥ से. ॥ ४ ॥

राजेन्द्रसूरीश्वर राया, लक्ष्मी विद्या मेरु आया ।
विद्या गुण गरिमा गाई, हरिलंछन पाया रे ॥ से. ॥ ५॥

(२०)

(राग- लाल गुलाल आंगी बनी.... ए राह)

आज सुरंग वधामणा रे, सकल फली मन आस हो लाल ।
त्रिशला मातानो लाडलो रे, भेटयो जग सुखवास हो लाल ॥ १ ॥

पूर्णानन्द परमेश्वरू रे, लोकालोक प्रकाश हो लाल ।
वंछित दान ने मेलवा रे, सुरतरुनी जाणी रास हो लाल ॥ २ ॥

भांडवे वीर जिणिन्दनी रे, मूरति मोहन-वेल हो लाल ।
काम कुम्भ चिन्तामणि रे, चरण करण गुणकेल हो लाल ॥ ३ ॥

दा आस आवियो रे, चरणे गरीबनिवाज हो लाल ।
अब द्वारान्तर जावतां रे, किम वधसे तुम हो लाल ॥ ४ ॥

जाचक दान दया करो रे, वरस्या वरसी जेम हो लाल ।
आ चेला कहो नाथजी रे, मौन धरि रह्या केम हो लाल ॥ ५ ॥

वीर धीर जाणस्यूं रे, सूरिराजेन्द्र महाराज हो लाल ।
धनमुनि भवदधि तारवा रे, दीजो दयानिधि जहाज रे ॥ ६ ॥

दिनांक 8-6-1914, जेठ सुदी-10, श्री शान्तिविजयजी म. सा. की
17वीं पुण्यतिथि एवं समाधि मन्दिर की 12वीं ध्वजारोहण लाभार्थी

शा. हरकचन्दजी जोमताजी गोवाणी परिवार,
गोवाणी ज्वेलर्स, रतनराज बुलियन, तेनाली

दिनांक 2-4-2017, चैत्र सुदी-6, शाश्वती नवपद ओली आराधना,
चातुर्मास उद्घोषणा, बृहद्दीक्षा सह चैत्री पूनम पर्व प्रसंग लाभार्थी

शा. नेनमलजी घेवरचन्दजी छत्रियावोरा

दिनांक 30-7-2017, नवकार आराधना
तथा चातुर्मास एवं उपधान तप लाभार्थी एवं चातुर्मास आयोजक

शा. मँवरलालजी मेघराजजी छत्रियावोरा, सुराणा

प. पू. पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा.
देवलोकगमन चढ़ावों के लाभार्थियों की सूचि

चैत्र (वैशाख गु.) कृष्णा–7, सोमवार वि. सं. 2074, दिनांक 17–4–2017

1.	मुनीमजी रो चढ़ावो	:	शा. भँवरलालजी मेघराजजी छत्रियावोरा–सुराणा
2.	लोच करवारो चढ़ावो	:	श्री सम्भवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट–विजयवाड़ा
3.	स्नान करवारो चढ़ावो	:	श्री जैन संघ–बागरा
4.	केसर–चन्दन–विलेपन रो चढ़ावो	:	श्री नेनावा जैन संघ–नेनावा
5.	चोल पट्टा रो चढ़ावो	:	श्री थराद जैन संघ–थराद
6.	चादर ओढावारो चढ़ावो	:	श्री आदिनाथ जैन संघ–रेवतड़ा
7.	काम्बली ओढावारो चढ़ावो	:	श्रीमती पाबूदेवी ओटमलजी गोराजी वेदमुथा–रेवतड़ा
8.	रजोहरण रो चढ़ावो	:	शा. मीठालालजी मनोहरमलजी झोटा–दाधाल
9.	मुहपत्ती वोहरावारो चढ़ावो	:	श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट–चैन्नई
10.	आसन बिछावारो चढ़ावो	:	श्री थराद त्रिस्तुतिक जैन संघ–थराद
11.	पालकी में बिराजमान करवारो चढ़ावो	:	श्री जीवाणा जैन संघ–जीवाणा
12.	पातरा वोरावारो चढ़ावो	:	श्री के. एम. एस. ग्रुप–मेंगलवा
13.	तरपणी वोरवारो चढ़ावो	:	श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ–बेंगलोर
14.	नवकारवाली वोरावारो चढ़ावो	:	श्रीमती गुणीदेवी सुमेरमलजी बालगोता–मेंगलवा
15.	पुस्तक वोरावारो चढ़ावो	:	श्री सुमतिनाथ–राजेन्द्र जैन संघ–मेंगलवा
16.	झोली वोरावारो चढ़ावो	:	श्री बी. एम. शाह–जोधपुर
17.	मोदक वोरावारो चढ़ावो	:	शा. कटारिया संघवी दीपचन्दजी सोहनराजजी–धानसा
18.	डण्डा वोरावारो चढ़ावो	:	श्री पाँथेड़ी जैन संघ–पाँथेड़ी
19.	डण्डासण वोरवारो चढ़ावो	:	श्री बीजापुर जैन संघ–बीजापुर
20.	कलश/ध्वजा रो चढ़ावो	:	श्रीमती वसन्तीदेवी किशोरमलजी खिमावत–खीमेल
21.	अग्नि संस्कार रो चढ़ावो	:	शा. मुन्नीलालजी मंगलचन्दजी हिराणी–रेवतड़ा
22.	आगे जीमणी काँध देवारो चढ़ावो	:	शा. रमेशकुमारजी ऊकचन्दजी हिराणी–रेवतड़ा
23.	आगे डावी काँध देवारो चढ़ावो	:	श्रीमती मोहनदेवी साँवलचन्दजी बालगोता–मेंगलवा
24.	पीछे जीमणी काँध देवारो चढ़ावो	:	शा. नरेन्द्रकुमारजी पारसमलजी श्रीश्रीमाल (मेडिसेल्स)–जोधपुर–चैन्नई
25.	पीछे डाबी काँध देवारो चढ़ावो	:	अदाणी शाह चुन्नीलाल नागरदासभाई–थराद–सूरत
26.	दीपक रो चढ़ावो	:	शा. बाबूलालभाई लल्लूभाई वोहेरा–थराद
27.	धूप रो चढ़ावो	:	श्री आदिनाथ–राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर संघ–लवाणा
28.	अक्षत सूँ वधावारो चढ़ावो	:	शा. रमेशचन्दजी सुमेरमलजी लुंकड़–भीनमाल
29.	सिरा रो चढ़ावो	:	शा. रणजीतमलजी ईराजी भंसाली–पाँथेड़ी
30.	पालकी के आगे झालर रो वजावोरो चढ़ावो	:	श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ–राजेन्द्र जैन संघ–गुंटूर
31.	सोना–चाँदी फूल से वधावारो चढ़ावो	:	शा. माणकचन्दजी छोगाजी बालगोता–मेंगलवा
32.	गुलाल रो चढ़ावो	:	शा. कटारिया संघवी नथमलजी प्रागजी–नेनावा
33.	वर्षीदान रो चढ़ावो	:	शा. कटारिया संघवी नथमलजी प्रागजी–नेनावा
34.	अन्तिम विश्राम रो चढ़ावो	:	श्री सुराणा जैन संघ–सुराणा
35.	भूमि शुद्धि रो चढ़ावो	:	श्री धर्मनाथ–राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर संघ–चौराऊ
36.	आरोगी पर बिराजमान रो चढ़ावो	:	शा. मुन्नीलालजी मंगलचन्दजी हिराणी–रेवतड़ा
37.	आरोगी पर घी लगावा रो चढ़ावो	:	श्रीमती सुमटीदेवी हेमराजजी कबदी–सायला
38.	आरोगी पर चन्दन रखवा रो चढ़ावो	:	श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट–कुलपाकजी तीर्थ (हैदराबाद)

प. पू. पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.
मासिक पुण्य तिथि सह पट्टधरद्वय
आचार्य श्री नित्यसेनसूरिजी म. सा. एवं आचार्य श्री जयरत्नसूरिजी म.सा.
पाटोत्सव अनुमोदनार्थ अष्टाह्निका महोत्सव लाभार्थी

दिनांक 11-5-2017 से 18-5-2017

1. प्रथम दिन दिनांक 11-5-2017 स्वामीवात्सल्य सम्पूर्ण लाभ
   शा. राजेन्द्रकुमारजी पारसमलजी बन्दामुथा-गोल (उम्मेदाबाद)
2. प्रथम दिन दिनांक 11-5-2017 पूजा, भक्ति व आँगी लाभ
   शा. सूर्यप्रकाशजी मिश्रीमलजी भण्डारी (बी. एम. शाह)-जोधपुर
3. दूसरा दिन दिनांक 12-5-2017 स्वामीवात्सल्य सम्पूर्ण लाभ
   शा. बाबूलालजी धनराजजी डोडिया गाँधी-धुम्बड़िया
4. दूसरा दिन दिनांक 12-5-2017 पूजा, भक्ति व आँगी लाभ
   शा. जयन्तीलालजी सुखराजजी संघवी-आलासन
5. तीसरा दिन दिनांक 13-5-2017 स्वामीवात्सल्य सम्पूर्ण लाभ
   शा. चम्पालालजी ओपचन्दजी जवाजी ओस्तवाल-सायला
6. तीसरा दिन दिनांक 13-5-2017 पूजा, भक्ति व आँगी लाभ
   शा. विजयराजजी नरसिंगजी फोलामुथा-सायला
7. चौथा दिन दिनांक 14-5-2017 स्वामीवात्सल्य सम्पूर्ण लाभ
   श्री शीतल शान्ति जिन राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर संघ-दाधाल
8. चौथा दिन दिनांक 14-5-2017 पूजा, भक्ति व आँगी लाभ
   शा. राणमलजी हिम्मताजी श्रीश्रीश्रीमाल-दाधाल
9. पाँचवाँ दिन दिनांक 15-5-2017 स्वामीवात्सल्य सम्पूर्ण लाभ
   शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भण्डारी-सायला
10. पाँचवाँ दिन दिनांक 15-5-2017 पूजा, भक्ति व आँगी लाभ
    संघवी शा. पारसमलजी मिश्रीमलजी-दाधाल
11. छठा दिन दिनांक 16-5-2017 स्वामीवात्सल्य सम्पूर्ण लाभ
    श्रीमती मोहनदेवी साँवलचन्दजी बालगोता-मेंगलवा
12. छठा दिन दिनांक 16-5-2017 पूजा, भक्ति व आँगी लाभ
    शा. सुखराजजी चमनाजी कबदी-धानसा
13. सातवाँ दिन दिनांक 17-5-2017 स्वामीवात्सल्य सम्पूर्ण लाभ
    शा. पारसमलजी हंजारीमलजी बन्दामुथा-गोल (उम्मेदाबाद)
14. सातवाँ दिन दिनांक 17-5-2017 पूजा, भक्ति व आँगी लाभ
    शा. ऊकाजी सदाजी सोलंकी-सायला
15. आठवाँ दिन दिनांक 18-5-2017 स्वामीवात्सल्य सम्पूर्ण लाभ
    शा. चिमनलाल नथुभाई वोहेरा-थराद
16. आठवाँ दिन दिनांक 18-5-2017 बृहत् शान्ति स्नात्र पूजा लाभ
    शा. सरूपचन्द देवचन्दभाई धरू परिवार-पेपराल
17. आठवाँ दिन दिनांक 18-5-2017 नवग्रह सर्वविधान लाभ
    शा. हीराचन्दजी समरथमलजी झोटा-दाधाल
18. पत्रिका में जय-जिनेन्द्र का चढ़ावा
    शा. रमेशकुमारजी सुमेरमलजी लुंकड़-भीनमाल

श्री सूरि पदोत्सव में उपकरण वोहराने के लाभार्थी

वि. सं. 2074, ज्येष्ठ कृष्णा–6 बुधवार, दिनांक 17–5–2017

प. पू. पुण्य–सम्राटश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधरद्वय
नूतन आचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा.
नूतन आचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

	नूतन आचार्य नामोद्घोषणा	:	शा मिलापचन्दजी जेठमलजी चौधरी–गढ़सिवाणा
1.	काम्बली	:	श्री धानसा जैन संघ–धानसा
2.	चादर	:	शा. चिनूभाई मफतलालजी मोरखिया–लवाणा
3	चोल पट्टा	:	शा. रणजीतमलजी ईराजी भंसाली–पाँथेड़ी
4.	पात्रा	:	श्री सुखसागर चेरिटेबल ट्रस्ट–मेंगलवा–दिल्ली
5.	माला	:	शा. मिलापचन्दजी जेठमलजी चौधरी–गढ़सिवाणा
6.	ठवणी	:	श्री आदिनाथ–राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर संघ–लवाणा
7.	पुस्तक	:	श्री गाँधी परिवार–सियाणा
8.	आसन	:	शा. चिमनलालजी धरमचन्दजी छाजेड़–नेनावा
9.	उत्तरपट्टा	:	श्री दंगवाड़ा परिवार हस्ते– श्री राजेन्द्रजी–बड़नगर
10.	डण्डा	:	श्रीमती मन्जूबेन रमेशचन्दजी बाफना–भीनमाल
11.	डण्डासण	:	शा. बाबूलालजी धनराजजी डोडिया गाँधी–धुम्बड़िया
12.	झोली बड़ी	:	शा. संघवी मगराजजी हाँसाजी खिंवेसरा–आकोली
13.	झोली छोटी	:	शा. सरूपचन्दजी बागुचन्दजी संकलेचा–मेंगलवा
14.	कामली	:	शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भण्डारी–सायला
15.	सूरिमन्त्र पट्ट	:	शा. सागरमलजी दुदाजी कटारिया संघवी–साँचोर
16.	ओघा की डण्डी	:	शा. देसाई कीर्तिलालभाई दलसुखभाई–थराद
17.	गुरु गौतमस्वामीजी मूर्ति	:	शा. रणजीतमलजी ईराजी भंसाली–पाँथेड़ी
18.	गुरु राजेन्द्रसूरिजी मूर्ति	:	शा. शान्तिलालजी रामाणी–गुड़ा बालोतान
19.	गुरु पूजन का चढ़ावा	:	श्री पुराणिक परिवार–कुक्षी
20.	प्रथम गहुँली कर वधाने	:	शा. शा. रणजीतमलजी ईराजी भंसाली–पाँथेड़ी
21.	सकल संघ को कुंकुं–केसर थापे	:	शा. शा. रणजीतमलजी ईराजी भंसाली–पाँथेड़ी
22.	श्री जयन्तसेनसूरिजी की आरती	:	शा. भँवरलालजी मेघराजजी छत्रियावोरा–सुराणा

दिनांक 18-3-2018, वैशाख शुक्ला-3, सामूहिक वर्षीतप पारणा

लाभार्थी : श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट) एवं
श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भाग्योदय ट्रस्ट (संघ)

दिनांक 31-3-18, श्री महावीर जन्म कल्याणक,
चैत्री पूनम निमित्त त्रिदिवसीय महोत्सव

लाभार्थी : शा. शान्तिलालजी भबूतमलजी बन्दामुथा-ऐलाणा

दिनांक 18-7-2018, आषाढ़ शुक्ला-6,
वर्षावास प्रवेशोत्सव, पर्यूषण पर्व आदि आराधना

निश्रा : माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवं
विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा

लाभार्थी : श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी श्रीश्रीमाल-पादरू

दिनांक 18-8-2018 , से 26-8-2018,
श्री नवकार महामन्त्र एवं चातुर्मासिक आराधना प्रसंग

निश्रा : माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवं
विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा

लाभार्थी : श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी श्रीश्रीमाल-पादरू

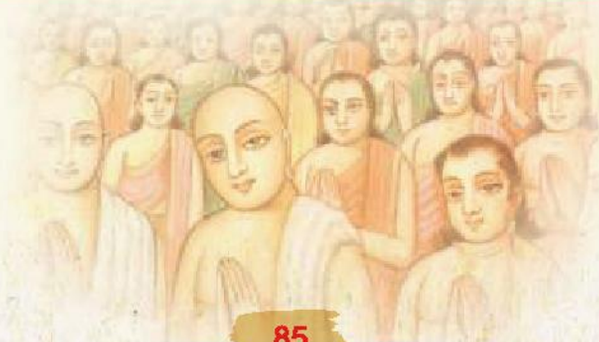

विदुषी गुरुमैयाश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. के 50वें संयम पर्याय निमित्त आयोजित 50वाँ सूर्य संयम स्वर्ण पंचाह्निका महोत्सव लाभार्थी

निश्रा : भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा एवं
विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा

मुनीमजी बनने के लाभार्थी : शा. हिम्मतमलजी श्रीश्रीमाल–दाधाल
माला द्वारा बहुमान के लाभार्थी : शा. माँगीलालजी अनराजजी मुलतानमलजी पालगोता–चौहान–राजनगर (ऊनड़ी)
तिलक द्वारा बहुमान के लाभार्थी : शा. रिखबचन्दजी सरूपाजी सोफाड़िया–रेवतड़ा
साफा–चुनड़ी द्वारा बहुमान के लाभार्थी : शा. मीठालालजी मनोहरमलजी झोटा धर्ममत्नी भाग्यवन्तीबाई–दाधाल
श्रीफल द्वारा बहुमान के लाभार्थी : शा. मुल्तानमलजी मेसाजी बाफना–पाँथेड़ी
श्री सूर्य संयम स्वर्ण स्मारिका प्रकाशन लाभार्थी : श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय जैन संघ–आलासन
आयम्बिल तप प्रभावना लाभार्थी : प्रीतिकुमारी बाबूलालजी ताराचन्दजी वाणीगोता–बागोड़ा
वैयावच्च एवं ज्ञानोपकरण लाभार्थी : श्रीमती भावीबेन नगीनदास रायचन्दभाई मोरखिया–धानेरा
अट्ठम तप प्रभावना लाभार्थी : शा. साँकलचन्दजी नेथीजी हुकमाणी–पाँथेड़ी

प्रथम दिन मगसर शुक्ला–2, दिनांक 28–11–2019
प्रातः नास्ता लाभार्थी : संघवी साँवलचन्दजी कुन्दनमलजी बालगोता–मेंगलवा
दोपहर की नवकारसी के लाभार्थी : शा. दरगचन्दजी, शान्तिलालजी, सुपुत्र– हरकचन्दजी संकलेचा–मदुरै
शाम की नवकारसी के लाभार्थी : शा. भीमराजजी जुटाजी छत्रियावोरा–सुराणा
श्री उवसग्गहरं महापूजन लाभार्थी : शा. मिश्रीमलजी मादाजी बालगोता–मेंगलवा
प्रभावना : शा. गोमराजजी हंजारीमलमलजी रायगाँधी–डुडसी
अंगरचना : श्रीमती पुष्पादेवी ताराचन्दजी भण्डारी–सेरणा–जोधपुर

दूसरा दिन मगसर शुक्ला–3, दिनांक 29–11–2019
प्रातः नास्ता लाभार्थी : शा. जेठमलजी देवाजी भण्डारी–सुराणा
दोपहर की नवकारसी के लाभार्थी : शा. जीतमलजी देवीचन्दजी पालगोता–चौहान–ऐलाणा
शाम की नवकारसी के लाभार्थी : शा. रणजीतमलजी ईराजी भंसाली–पाँथेड़ी
श्री ऋषिमण्डल महापूजन लाभार्थी : शा. शान्तिलालजी डायालालजी परीख–थराद
प्रभावना : शा. हरकचन्दजी रुगनाथमलजी श्रीश्रीमाल गुडालगोत्रीय संघवी–आलासन
अंगरचना : शा. हरकचन्दजी रुगनाथमलजी श्रीश्रीमाल गुडालगोत्रीय संघवी–आलासन

तीसरा दिन मगसर शुक्ला–4, दिनांक 30–11–2019
श्री वर्धमान–राजेन्द्र द्वार निर्माता एवं उद्घाटनकर्ता : श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ–राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर संघ–जीवाणा
रत्नजड़ित आँगी एवं मुकुट समर्पणकर्ता : शा. सुखराजजी चमनाजी कबदी–धानसा (मुम्बई)
प्रातः नास्ता लाभार्थी : शा. कुन्दनमलजी अन्नाजी संकलेचा–मेंगलवा
दोपहर की नवकारसी के लाभार्थी : शा. भगवानचन्दजी केशाजी फोलामुथा–सायला
शाम की नवकारसी के लाभार्थी : शा. भारताजी रतनाजी फोलामुथा–सायला
श्री राजेन्द्रसूरि गुरुपद महापूजन लाभार्थी : शा. भगवानचन्दजी केशाजी फोलामुथा–सायला
प्रभावना : शा. साहेबचन्दजी पुनमाजी बालगोता–मेंगलवा
अंगरचना : शा. जुगराजजी मुनीलालजी ओबाणी–पोषाणा

चौथा दिन मगसर शुक्ला–5, दिनांक 1–12–2019

प्रातः नास्ता लाभार्थी : श्री पंच महाजन समस्त, श्री धर्मनाथ–राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर संघ पेढ़ी–चौराऊ

दोपहर की नवकारसी के लाभार्थी : शा. साँकलचन्दजी समरथाजी एवं रिखबचन्दजी आदाजी तलावट–उम्मेदाबाद (गोल)

शाम की नवकारसी के लाभार्थी : श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी श्रीश्रीमाल–पादरू

श्री 108 पार्श्वनाथ महापूजन लाभार्थी : शा. माणकचन्दजी लुम्बाजी कोठारी–सियाणा

प्रभावना : शा. कोजमलजी बाँठिया–बालोतरा

अंगरचना : मुथा शाह कुन्दनमलजी धर्माजी गुलेच्छा–मदुराई

पाँचवाँ दिन मगसर शुक्ला–6, दिनांक 2–12–2019

प्रातः नास्ता लाभार्थी : शा. घेवरचन्दजी आदाजी छत्रिया वोरा–सुराणा

दोपहर की नवकारसी के लाभार्थी : शा. मिश्रीमलजी मादाजी बालगोता–मेंगलवा

शाम की नवकारसी के लाभार्थी : शा. हंजारीमलजी अनाजी संकलेचा–मेंगलवा

श्री वीशस्थानक महापूजन लाभार्थी : श्रीमती मन्जूदेवी रमेशचन्दजी कोलचन्दजी बाफना–भीनमाल (मुम्बई)

प्रभावना : शा. घेवरचन्दजी चुनाजी भंसाली (मालाणी)–उम्मेदाबाद (गोल)

अंगरचना : मातुश्री कान्ताबेन चन्दुलाल मफतलाल वोहेरा–दुधवा–थराद–मुम्बई

विदुषी गुरुमैयाश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा. 50वें संयम पर्याय निमित्त
श्री सूर्य संयम स्वर्ण महोत्सव

50 वें दीक्षा दिवस उपकरण लाभार्थी सूचि दिनांक 30–11–2019

1.	सूरिजी को कामली का चढ़ावा	:	शा. सुखराजजी चमनाजी कबदी–धानसा (गोल्डन ग्रुप)–मुम्बई
2.	ओघा वोहराने का चढ़ावा	:	शा. कालूचन्दजी हंजाजी संकलेचा–मेंगलवा
3.	मुहपत्ती वोहराने का चढ़ावा	:	शा. हीराचन्दजी समरथमलजी झोटा–दाधाल
4.	कपड़ा वोहराने का चढ़ावा	:	शा. भगवानचन्दजी केसाजी फोलामुथा–सायला
5.	नवकारवाली वोहराने का चढ़ावा	:	श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी ओसवाल–पादरू
6.	ठवणी वोहराने का चढ़ावा	:	शा. सायरमलजी गुणेशमलजी छत्रियावोरा–सुराणा
7.	पुस्तक वोहराने का चढ़ावा	:	शा. धुड़ाजी छत्रियावोरा–जीवाणा
8.	डण्डा–डण्डासण वोहराने का चढ़ावा	:	शा. मीठालालजी नेनमलजी संकलेचा–मेंगलवा
9.	पात्रा वोहराने का चढ़ावा	:	शा. कान्तिलालजी साँकलचन्दजी हुकमाणी–पाँथेड़ी
10.	कामली वोहराने का चढ़ावा	:	शा. किशोरकुमारजी साँवलचन्दजी बालगोता–मेंगलवा
11.	आसन वोहराने का चढ़ावा	:	श्रीमती गुणीदेवी सुमेरमलजी नरसाजी बालगोता–मेंगलवा
12.	दर्शन चौवीसी का चढ़ावा	:	शा. पुखराजजी जेठमलजी मुणोत–जीवाणा
13.	स्थापनाचार्य वोहराने का चढ़ावा	:	श्रीमती गीताबेन विनोदभाई झवेरी–पाटण
14.	संथारिया वोहराने का चढ़ावा	:	शा. भँवरलालजी मेघराजजी छत्रियावोरा–सुराणा
15.	द्वार पर प्रथम गहुँली	:	शा. कालूचन्दजी हंजाजी संकलेचा–मेंगलवा
16.	द्वार पर साध्वीवर्या को अक्षत से वधाने का चढ़ावा	:	शा. भँवरलालजी मेघराजजी छत्रियावोरा–सुराणा
17.	पाद प्रक्षालन एवं पगलिया कराने का चढ़ावा	:	शा. मिश्रीमलजी मादाजी बालगोता–मेंगलवा
18.	गुरु पूजन करने का चढ़ावा	:	श्रीमती गीताबेन विनोदभाई झवेरी–पाटण
19.	केसर छाँटने का चढ़ावा	:	श्रीमती मोहिनीदेवी साँवलचन्दजी बालगोता–मेंगलवा

श्री वर्धमान-राजेन्द्र द्वारोद्घाटन सह मुमुक्षुश्री आजादकुमार जैन के भागवती दीक्षा निमित्त रत्नत्रयी महोत्सव के लाभार्थी

दिनांक 11-2-2020 से 13-2-2020

निश्रा- भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा एवं
विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा

1. प्रथम दिन फाल्गुन कृष्णा-3, मंगलवार, दिनांक 11-2-2020

प्रातः नास्ता व सुबह-शाम की नवकारसी लाभार्थी : शा. हरकाजी भगाजी कंकुचौपड़ा-जीवाणा
श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा लाभार्थी : शा. हरकाजी भगाजी कंकुचौपड़ा-जीवाणा
अंगरचना लाभार्थी : शा. खेताजी भगाजी मुणोत-तिलोड़ा

2. दूसरा दिन फाल्गुन कृष्णा-4, बुधवार, दिनांक 12-2-2020

वर्षीदान वरघोड़ा व श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा लाभार्थी : शा. जेठमलजी वगताजी बागरेचा-जीवाणा
प्रातः नास्ता लाभार्थी : शा. सागरमलजी दुदाजी कटारिया संघवी-साँचोर
दोपहर नवकारसी लाभार्थी : शा. मोड़मलजी जोईताजी राजींगजी बाफना-सायला (थलवाड़)
सायं नवकारसी लाभार्थी : शा. चम्पालालजी पुखराजजी पीथाजी पालगोता-चौहान-सुराणा
अंगरचना लाभार्थी : शा. चम्पालालजी पुखराजजी पीथाजी पालगोता-चौहान-सुराणा

3. तीसरा दिन फाल्गुन कृष्णा-5, गुरुवार, दिनांक 13-2-2020

दीक्षा एवं द्वारोद्घाटन व श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा लाभार्थी : शा. जुगराजजी शिवराजजी ताराजी बागरेचा-जीवाणा
प्रातः नास्ता लाभार्थी : शा. पारसमलजी भबूतमलजी गुलेच्छा-जीवाणा
दोपहर नवकारसी लाभार्थी : श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ-राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर संघ-जीवाणा
सायं नवकारसी लाभार्थी : शा. मेघराजजी आदाजी छत्रियावोरा-सुराणा
अंगरचना लाभार्थी : शा. बाबूलालजी श्रीमती कान्तादेवी-दानपुर (बाँसवाड़ा) व
श्रीमती पुखराजबाई रमाकान्तजी कटारिया-पिपलौदा

नूतन मुनिश्री पुष्पदन्तविजयजी म. सा. दीक्षा उपकरण वोहराने के लाभार्थी

वि. सं. 2077, दिनांक 13-2-2020

निश्रा- भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा एवं
विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा

1.	विजय तिलक करने का चढ़ावा	:	शा. राजेशकुमारजी वस्तीमलजी मुथा-चौराऊ
2.	ओघा-मुहपत्ती गुरुदेव को वोहराना	:	दीक्षार्थी परिवार
3.	पात्रा वोहराने का चढ़ावा	:	शा. भँवरलालजी मेघराजजी छत्रियावोरा-सुराणा
4.	मुहपत्ती वोहराने का चढ़ावा	:	सांसारिक परिवार
5.	कामली वोहराने का चढ़ावा	:	शा. नरपतराजजी सरेमलजी गाँधीमुथा-सुराणा
6.	चादर वोहराने का चढ़ावा	:	शा. ओटमलजी धरमचन्दजी संघवी-आलासण
7.	चोलपट्टा वोहराने का चढ़ावा	:	श्रीमती देवुदेवी सुखराजजी बालगोता-मेंगलवा
8.	संथारिया वोहराने का चढ़ावा	:	शा. जीवराजजी चुन्नीलालजी-नैनावा
9.	उत्तरपट्टा वोहराने का चढ़ावा	:	मोरखिया जासुबेन हरिलालजी-लाखणी (डीसा)
10.	आसन वोहराने का चढ़ावा	:	मोरखिया रमेशकुमारजी हरिलालजी-लाखणी (डीसा)
11.	डण्डा वोहराने का चढ़ावा	:	शा. महेन्द्रकुमारजी रणजीतमलजी ईराजी भंसाली-पाँथेड़ी
12.	डण्डासण वोहराने का चढ़ावा	:	शा. बाबूलालजी उत्तमकुमारजी धींग-बाँसवाड़ा
13.	नवकारवाली वोहराने का चढ़ावा	:	शा. बाबूलालजी उत्तमकुमारजी धींग-बाँसवाड़ा
14.	पुस्तक वोहराने का चढ़ावा	:	नूतन मुनिराजश्री पुष्पदन्तविजयजी म. सा. सांसारिक परिवार
15.	ठवणी वोहराने का चढ़ावा	:	शा. अरविन्दभाई पूनमचन्दजी वोहेरा-थराद
16.	झोली छोटी वोहराने का चढ़ावा	:	शा. सागरमलजी दुदाजी कटारिया संघवी-साँचोर
17.	झोली बड़ी वोहराने का चढ़ावा	:	शा. राजेशकुमारजी वस्तीमलजी मुथा-चौराऊ
18.	चौवीसी ज्ञान पौथी वोहराने का चढ़ावा	:	शा. राजेशकुमारजी वस्तीमलजी मुथा-चौराऊ
19.	सुपड़ी पुँजणी वोहराने का चढ़ावा	:	शा. पारसमलजी साँवलचन्दजी बालगोता-मेंगलवा
20.	नामकरण करने का चढ़ावा	:	शा. राजेशकुमारजी वस्तीमलजी मुथा-चौराऊ

साध्वीजी श्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. देवलोकगमन चढ़ावा लाभार्थी

दिनांक 12-1-2021

निश्रा- माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा

1.	मुनीमजी रो चढ़ावो	:	शा. हीराचन्दजी समरथमलजी झोटा-दाधाल
2.	लोच करवारो चढ़ावो	:	श्री सुराणा जैन संघ हस्ते- श्री चम्पालालजी ओटजी
3.	स्नान करवारो चढ़ावो	:	श्री सौधर्मतपोगच्छ त्रिस्तुतिक जैन संघ-धानेरा
4.	केसर-चन्दन-विलेपन	:	श्री सुविधिनाथ जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ-सियाणा
5.	केसर (वासक्षेप) चढ़ावा रो चढ़ावो	:	श्रीमती शान्तिदेवी सोहनलालजी बालगोता-मेंगलवा-बैंगलोर
6.	साडा रो चढ़ावो	:	श्री आलासन जैन संघ-आलासन
7.	चादर ओढावारो चढ़ावो	:	शा. जीतमलजी देवाजी पालगोता-चौहान-ऐलाना
8.	काम्बली ओढावारो चढ़ावो	:	शा. विजयराजजी भगवानचन्दजी फोलामुथा-सायला
9.	रजोहरण रो चढ़ावो	:	शा. रतनचन्दजी कुन्दनमलजी संकलेचा-मेंगलवा
10.	मुहपत्ती वोहरावारो चढ़ावो	:	शा. अशोककुमारजी कुन्दनमलजी गोलेच्छा-सायला
11.	संथारिया रो चढ़ावो	:	शा. सोहनलालजी पारसमलजी छत्रियावोरा-सुराणा
12.	उत्तरपट्टा रो चढ़ावो	:	शा. जुगराजजी सूरजमलजी संकलेचा-दासपा
13.	आसन बिछावारो चढ़ावो	:	श्रीमती सुआदेवी लालचन्दजी भण्डारी-सायला
14.	पालकी में बिठावारो चढ़ावो	:	शा. जामतराजजी भीमराजजी बालगोता-मेंगलवा
15.	पातरा वोरावारो चढ़ावो	:	शा. श्रीमती देवुदेवी सुखराजजी बालगोता-मेंगलवा
16.	तरपणी रो चढ़ावो	:	शा. कान्तिलालजी सुमेरमलजी बालगोता-मेंगलवा
17.	नवकारवाली रो चढ़ावो	:	श्री एम. पी. ग्रुप-भीनमाल
18.	पुस्तक वोरावारो चढ़ावो	:	शा. माणकचन्दजी छोगाजी बालगोता-मेंगलवा
19.	झोली वोरावारो चढ़ावो	:	शा. लालचन्दजी चिमनलालजी छाजेड़-नैनावा
20.	मोदक वोरावारो चढ़ावो	:	शा. कालूचन्दजी हंजाजी संकलेचा-मेंगलवा
21.	डण्डा रो चढ़ावो	:	श्रीमती मोहनदेवी साँवलचन्दजी बालगोता-मेंगलवा
22.	डण्डासण रो चढ़ावो	:	शा. सूरजमलजी छगनराजजी ओबानी-पोषाणा
23.	कलश/ध्वजा रो चढ़ावो	:	शा. चम्पालालजी पुखराजजी पालगोता-चौहान-सुराणा
24.	जीमणी काँध देवारो चढ़ावो	:	शा. मँवरलालजी मेघराजजी छत्रियावोरा-सुराणा
25.	डावी काँध देवारो चढ़ावो	:	शा. मिश्रीमलजी मादाजी बालगोता-मेंगलवा
26.	पीछे जीमणी काँध देवारो चढ़ावो	:	शा. कालूचन्दजी हंजाजी संकलेचा-मेंगलवा
27.	पीछे डावी काँध देवारो चढ़ावो	:	शा. जवेरीलालजी मोतीलालजी (अणसीदेवी) ओसवाल-पादरू
28.	दीपक पूजा रो चढ़ावो	:	शा. अशोककुमारजी शान्तिलालजी हरकाजी संकलेचा-मेंगलवा
29.	धूप पूजा रो चढ़ावो	:	शा. नेनमलजी साहेबचन्दजी बालगोता-मेंगलवा, मदुराई
30.	अक्षत सूँ वधावारो चढ़ावो	:	शा. नेनमलजी घेवरचन्दजी छत्रियावोरा-सुराणा
31.	सिरा रो चढ़ावो	:	शा. महेन्द्रकुमारजी जेठमलजी भण्डारी-सुराणा
32.	पालकी के आगे झालर बजावारो चढ़ावो	:	शा. बाबूलालजी धनराजजी डोडियागाँधी-धुम्बड़िया
33.	सोना-चाँदी फूल से वधावारो चढ़ावो	:	शा. जेठमलजी जुहारमलजी कीनाजी संकलेचा-मेंगलवा
34.	गुलाल रो चढ़ावो	:	श्रीमती नाविदेवी मिश्रीमलजी बालगोता-मेंगलवा
35.	वर्षीदान रो चढ़ावो	:	शा. मीठालालजी नेनमलजी संकलेचा-मेंगलवा
36.	अन्तिम विश्राम रो चढ़ावो	:	शा. मिश्रीमलजी हंजाजी गाँधीमुथा-गोल-उम्मेदाबाद
37.	भूमि शुद्धि रो चढ़ावो	:	शा. बाबूलालजी पुखराजजी तलावट-गोल-उम्मेदाबाद
38.	आरोगी पर बिराजमान रो चढ़ावो	:	शा. विजयराजजी भगवानचन्दजी फोलामुथा-सायला
39.	आरोगी पर घी लगावा रो चढ़ावो	:	श्रीमती मोवनदेवी हस्तीमलजी पालगोता-चौहान-सुराणा
40.	आरोगी पर चन्दन राखवा रो चढ़ावो	:	शा. सूरजमलजी मनोहरमलजी अन्दाणी-सुराणा
41.	अग्नि संस्कार रो चढ़ावो	:	शा. मिश्रीमलजी मादाजी बालगोता-मेंगलवा (साँसारिक परिवार)

विदुषी गुरुमैयाश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. देवलोकगमन दीक्षा निमित्त आयोजित अष्टाह्निका महोत्सव श्री सूर्य स्मरणोत्सव

शुभारम्भ : माघ कृष्णा-5 मंगलवार, दिनांक 2-2-2021
समापन : माघ कृष्णा-13 मंगलवार, दिनांक 9-2-2021

* प्रथम दिन माघ कृष्णा-5 मंगलवार, दिनांक 2-2-2021 *

निश्रा : माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा

प्रातः नास्ता लाभार्थी : श्रीमती बल्मीदेवी सोहनराजजी बालड़-सिवाणा (मेंगलवा वाला)
दोपहर नवकारसी लाभार्थी : श्रीमती मन्जूदेवी रमेशकुमारजी बाफना-भीनमाल (मुम्बई)
सायं नवकारसी लाभार्थी : श्रीमती हंसीदेवी मूलचन्दजी शाहजी-भीनमाल
महापूजन लाभार्थी : शा. अशोककुमार शान्तिलालजी संकलेचा-मेंगलवा
प्रभु अंगरचना लाभार्थी : श्रीमती पुष्पादेवी ताराचन्दजी भण्डारी-जोधपुर
प्रभु भक्ति एवं प्रभावना लाभार्थी : शा. पुखराजजी सौभागमलजी लौम्बगोत्र-चौहान-बागरा, चैन्नई, बेंगलोर

* द्वितीय दिन माघ कृष्णा-6 बुधवार, दिनांक 3-2-2021 *

प्रातः नास्ता लाभार्थी : श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय जैन श,वेताम्बर संघ-आलासन
दोपहर नवकारसी लाभार्थी : शा. नरपतराजजी मिश्रीमलजी काँकरिया-सुराणा
सायं नवकारसी लाभार्थी : श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर संघ-आलासन
महापूजन लाभार्थी : शा. पारसमलजी हंजारीमलजी बागरेचा-सिवाणा (जीवाणा वाला)
प्रभु अंगरचना लाभार्थी : श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर संघ-आलासन
प्रभु भक्ति एवं प्रभावना लाभार्थी : श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर संघ-आलासन

* तृतीय दिन माघ कृष्णा-7 गुरुवार, दिनांक 4-2-2021 *

प्रातः नास्ता लाभार्थी : सुश्रावक परम गुरुभक्त
दोपहर नवकारसी लाभार्थी : सुश्रावक परम गुरुभक्त
सायं नवकारसी लाभार्थी : सुश्रावक परम गुरुभक्त
महापूजन लाभार्थी : सुश्रावक परम गुरुभक्त
प्रभु अंगरचना लाभार्थी : सुश्रावक परम गुरुभक्त
प्रभु भक्ति एवं प्रभावना लाभार्थी : सुश्रावक परम गुरुभक्त

* चतुर्थ दिन माघ कृष्णा-8 शुक्रवार, दिनांक 5-2-2021 *

प्रातः नास्ता लाभार्थी : श्रीमती सुकीदेवी सरदारमलजी गोवाणी-चौराऊ
दोपहर नवकारसी लाभार्थी : गुरुणिजी उपासिका सुश्राविका
सायं नवकारसी लाभार्थी : श्रीमती पानीदेवी पुखराजजी शाहजी-पाँथेड़ी
महापूजन लाभार्थी : शा. अशोककुमार कुन्दनमलजी गुलेच्छा-सायला
प्रभु अंगरचना लाभार्थी : शा.पुखराजजी जेठमलजी मुणोत-जीवाणा
प्रभु भक्ति एवं प्रभावना लाभार्थी : शा. नरपतराजजी सरेमलजी गाँधीमुथा-सुराणा

* पंचम दिन माघ कृष्णा–9 शनिवार, दिनांक 6–2–2021 *

प्रातः नास्ता लाभार्थी : श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी ओसवाल परिवार–पादरू
दोपहर नवकारसी लाभार्थी : श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी ओसवाल परिवार–पादरू
सायं नवकारसी लाभार्थी : श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी ओसवाल परिवार–पादरू
महापूजन लाभार्थी : श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी ओसवाल परिवार–पादरू
प्रभु अंगरचना लाभार्थी : श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी ओसवाल परिवार–पादरू
प्रभु भक्ति एवं प्रभावना लाभार्थी : श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी ओसवाल परिवार–पादरू

* षष्ठ दिन माघ कृष्णा–10 रविवार, दिनांक 7–2–2021 *

प्रातः नास्ता लाभार्थी : सुश्री प्रीतिकुमारी सुपुत्री बाबूलालजी ताराचन्दजी वाणीगोता–बागोड़ा
दोपहर नवकारसी लाभार्थी : शा. नरपतराजजी मिश्रीमलजी काँकरिया–सुराणा
सायं नवकारसी लाभार्थी : श्रीमती रूखमबेन वाघजीभाई मोरखिया–लवाणा (डीसा)
महापूजन लाभार्थी : श्रीमती सकुदेवी साँकलचन्दजी हुकमाणी–पाँथेड़ी
प्रभु अंगरचना लाभार्थी : श्रीमती सकुदेवी साँकलचन्दजी हुकमाणी–पाँथेड़ी
प्रभु भक्ति एवं प्रभावना लाभार्थी : गुरुणिजी उपासिका सुश्राविका

* सप्तम दिन माघ कृष्णा–12 सोमवार, दिनांक 8–2–2021 *

प्रातः नास्ता लाभार्थी : श्रीमती गीताबेन विनोदभाई झवेरी–पाटन
दोपहर नवकारसी लाभार्थी : श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक संघ–बागरा
सायं नवकारसी लाभार्थी : श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ–पादरू
महापूजन लाभार्थी : शा. भँवरलालजी मेघराजजी छत्रियावोरा–सुराणा
प्रभु अंगरचना लाभार्थी : श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर संघ–आलासन
प्रभु भक्ति एवं प्रभावना लाभार्थी : श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय जैन श,वेताम्बर संघ–आलासन

* अष्टम दिन माघ कृष्णा–13 मंगलवार, दिनांक 9–2–2021 *

प्रातः नास्ता लाभार्थी : शा. साँवलचन्दजी मिश्रीमलजी बालगोता–मेंगलवा
दोपहर नवकारसी लाभार्थी : शा. साँवलचन्दजी मिश्रीमलजी बालगोता–मेंगलवा
सायं नवकारसी लाभार्थी : शा. साँवलचन्दजी मिश्रीमलजी बालगोता–मेंगलवा
महापूजन लाभार्थी : शा. साँवलचन्दजी मिश्रीमलजी बालगोता–मेंगलवा
प्रभु अंगरचना लाभार्थी : शा. साँवलचन्दजी मिश्रीमलजी बालगोता–मेंगलवा
प्रभु भक्ति एवं प्रभावना लाभार्थी : शा. साँवलचन्दजी मिश्रीमलजी बालगोता–मेंगलवा

मुमुक्षु श्री प्रतीककुमार श्रवणकुमारजी भण्डारी-जालोर (बोरटा वाला) के भागवती दीक्षा निमित्त प्रतीक प्रव्रज्या प्रयाणोत्सव पंचाह्निका महोत्सव लाभार्थी

दिनांक 4-6-2023 से 8-6-2023

निश्रा- भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा एवं

1. प्रथम दिन ज्येष्ठ पूर्णिमा, रविवार, दिनांक 4-6-2023 प्रातः नास्ता व सुबह-शाम की नवकारसी लाभार्थी :
   मातुश्री कलावतीदेवी पवनचन्दजी किशोरचन्दजी भण्डारी-बेंगलोर-जालो
2. प्रथम दिन ज्येष्ठ पूर्णिमा, रविवार, दिनांक 4-6-2023 श्री आदिनाथ पंचकल्याणक पूजा-आँगी-भक्ति लाभार्थी :
   श्रीमती पुष्पादेवी माँगीलालजी पालगोता-चौहान-राजनगर (ऊनड़ी)
3. दूसरा दिन आषाढ़ कृष्णा-2, सोमवार, दिनांक 5-6-2023 प्रातः नास्ता व सुबह-शाम की नवकारसी लाभार्थी :
   शा. बादरमलजी प्रतापजी बालड़-पादरू (मुम्बई-दुबई)
4. दूसरा दिन आषाढ़ कृष्णा-2, सोमवार, दिनांक 5-6-2023 श्री शान्तिनाथ पंचकल्याणक पूजा-आँगी-भक्ति लाभार्थी :
   शा. जयन्तीलाल वस्तीमलजी कंकुचौपड़ा-सायला-हुबली
5. तीसरा दिन आषाढ़ कृष्णा-3, मंगलवार, दिनांक 6-6-2023 प्रातः नास्ता व सुबह-शाम की नवकारसी लाभार्थी :
   श्रीमती मंछीदेवी सुमेरमलजी भण्डारी-अमरसर (सरत)-भिवण्डी
6. तीसरा दिन आषाढ़ कृष्णा-3, मंगलवार, दिनांक 6-6-2023 श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा-आँगी-भक्ति लाभार्थी :
   मातुश्री ताराबेन जयन्तीलाल पुरषोत्तमदास वोहेरा-दुधवा-थराद
7. चौथा दिन आषाढ़ कृष्णा-4, बुधवार, दिनांक 7-6-2023 प्रातः भव्य वरघोड़ा, मेहन्दी, मंगलगीत, सायं विदाई समारोह
   प्रातः नास्ता व सुबह-शाम की नवकारसी लाभार्थी :
   मातुश्री जेठीबेन चिमनलाल मूलचन्दभाई शेठ (दैयप वाला-थराद (मुम्बई)
8. चौथा दिन आषाढ़ कृष्णा-4, बुधवार, दिनांक 7-6-2023 श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा-आँगी-भक्ति लाभार्थी :
   शा. शान्तिलाल कमलेशकुमार महेन्द्रकुमार रोनककुमार बाँठिया-बालोतरा
9. चौथा दिन आषाढ़ कृष्णा-4, बुधवार, दिनांक 7-6-2023 वर्षीदान लाभार्थी :
   शा. मिलापचन्द जेठमलजी लादाजी गोवर्धन गौत्रीय चौधरी-बेंगलोर
10. चौथा दिन आषाढ़ कृष्णा-4, बुधवार, दिनांक 7-6-2023 मेहन्दी वितरण लाभार्थी :
    एक आराधिका सुश्राविका
11. चौथा दिन आषाढ़ कृष्णा-4, बुधवार, दिनांक 7-6-2023 मंगलगीत लाभार्थी :
    शा. फुसाजी छोगाजी चौपड़ा-सायला (बेंगलोर-अहमदाबाद)
12. पाँचवाँ दिन आषाढ़ कृष्णा-5, गुरुवार, दिनांक 8-6-2023 प्रातः नास्ता व सुबह-शाम की नवकारसी लाभार्थी :
    शा. धनराजजी हरजीजी डोडिया गाँधी-शान्तिनगर-अहमदाबाद
13. पाँचवाँ दिन आषाढ़ कृष्णा-5, गुरुवार, दिनांक 8-6-2023 श्री जिनेन्द्र पंचकल्याणक पूजा-आँगी-भक्ति लाभार्थी :
    शा. जेठमलजी बगताजी बागरेचा-चैन्नई

नूतन मुनिश्री जितरत्नविजयजी म. सा. को उपकरण वोहराने के लाभार्थी
श्री प्रतीक प्रव्रज्या प्रयाणोत्सव

शुभ दीक्षा : आषाढ़ कृष्णा–5, सोमवार, वि. सं. 2080, दिनांक 8–6–2023

निश्रा : भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा

1.	विजय तिलक करने का चढ़ावा	:	शा. बगदावरमलजी इन्द्रमलजी हरण–भीनमाल
2.	ओघा–मुहपत्ती गुरुदेव को वोहराना	:	शा. चुन्नीलालजी फोजाजी कटारिया संघवी –नैनावा
3.	पात्रा वोहराने का चढ़ावा	:	श्रीमती मोवनदेवी गुलाबचन्दजी भण्डारी–जालोर (बोरटा वाला)
4.	मुहपत्ती वोहराने का चढ़ावा	:	शा. श्रवणकुमार गुलाबचन्दजी भण्डारी–जालोर (बोरटा वाला)
5.	कामली वोहराने का चढ़ावा	:	श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ–जालोर
6.	चादर वोहराने का चढ़ावा	:	सांसारिक बहिन की ओर से
7.	चोलपट्टा वोहराने का चढ़ावा	:	शा. दलीचन्दजी नथमलजी कटारिया संघवी–नैनावा
8.	संथारिया वोहराने का चढ़ावा	:	शा. बाबूलालजी धनराजजी डोडिया गाँधी–धुम्बड़िया
9.	उत्तरपट्टा वोहराने का चढ़ावा	:	शा. सूरजमलजी मनोहरमलजी अन्दाणी–सुराणा
10.	आसन वोहराने का चढ़ावा	:	शा. हिम्मतमलजी चमनलालजी वोरा–थराद
11.	डण्डा वोहराने का चढ़ावा	:	वोरा चमनभाई उजमसीभाई–थराद
12.	डण्डासण वोहराने का चढ़ावा	:	शा. जुगराजजी बाबूलालजी देवड़ा धोका–गढ़सिवाणा (बीजापुर)
13.	नवकारवाली वोहराने का चढ़ावा	:	शा. बगदावरमलजी इन्द्रमलजी हरण–मदुराई (नरता)
14.	पुस्तक वोहराने का चढ़ावा	:	श्रीमती सुमटीदेवी देवीचन्दजी भण्डारी–जालोर
15.	ठवणी वोहराने का चढ़ावा	:	शा. लालचन्दजी चिमनलालजी छाजेड़–नैनावा
16.	झोली छोटी वोहराने का चढ़ावा	:	शा. चमनलालजी उजमसीभाई–थराद
17.	झोली बड़ी वोहराने का चढ़ावा	:	शा. सागरमलजी दूदाजी कटारिया संघवी–साँचोर
18.	चौवीसी ज्ञान पौथी वोहराने का चढ़ावा	:	शा. ताराचन्द वीरचन्दभाई अदाणी–थराद
19.	सुपड़ी पुँजणी वोहराने का चढ़ावा	:	वोरा चमनलालभाई उजमसीभाई–थराद
20.	नामकरण करने का चढ़ावा	:	सांसारिक भुआ मन्जूबेन छगनराजजी कोठारी–कमलादेवी जगदीशजी मेहता–जालोर
21.	श्री जयरत्नसूरिजी को काम्बली	:	शा. बगदावरमलजी इन्दरमलजी हरण–नरता

गुरु सप्तमी पर्व एवं श्री जयरत्नसूरिजी 48वें दीक्षा दिवस के लाभार्थी

1.प्रथम दिन पौष शुक्ला–6, रविवार, दिनांक 8–1–2021 : श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा

2.द्वितीय दिन पौष शुक्ला–7, सोमवार, दिनांक 9–1–2021 : श्री श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा,

दोनों दिन के सम्पूर्ण आयोजन के लाभार्थी : शा. छतरचन्दजी वेजाजी ताराचन्दजी मादाजी झोटा–दाधाल (चैन्नई)

शाश्वत ओली आराधना, चैत्री पनम सह श्री सूर्य स्मृति भवन उद्घाटन प्रसंग लाभार्थी

दिनांक 7–4–2022 से 16–4–2022 : सम्पूर्ण आयोजन के लाभार्थी : शा. दलीचन्दजी खेताजी मुणोत–तिलोड़ा

प्रतिष्ठा मुहूर्त्त उद्घोषणा प्रसंगे प्रभावना लाभार्थी

भाद्रव शुक्ला–12, बुधवार, दिनांक 7–9–2022

सम्पूर्ण आयोजन के लाभार्थी : श्रीमती शान्तिदेवी भँवरलालजी भारताजी फोलामुथा–सायला

श्री भाण्डवपुर महातीर्थ में आयोजित विविध धार्मिक आयोजनों एवं लाभार्थियों की सूचि

जो अप्रकाशित है वह श्री तत्त्वत्रयी प्रतिष्ठोत्सव स्मारिका में प्रकाशित की जावेगी ।

व्यवस्थापक : श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट) * श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भाग्योदय ट्रस्ट (संघ)

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

स्व. शा. देवीचन्दजी केशरीमलजी जैन, जोधपुर

शा. माँगीलालजी उकाजी श्रीश्रीमाल, पादरू

श्रीमती सोहनदेवी धींगड़मलजी, पादरू

स्व. शा. मुथा हस्तीमलजी चुन्नीलालजी, जीवाणा

शा. कुन्दनमलजी हिम्मतमलजी लुंकड़, पोषाणा

श्रीमती मीठूदेवी घेवरचन्दजी चौराऊ

शा. रिखबचन्दजी जमेरचन्दजी बरलूट

श्रीमती राजीबाई भीनमाल

शा. सोहनमलजी मोतीजी तिलोड़ा

श्रीमती पानीदेवी स्व. पारसमलजी

श्रीमती डाऊदेवी आसुलालजी पालरेचा, चौराऊ

स्व. श्रीमती मन्जूदेवी श्रीश्रीमाल, पोषाणा

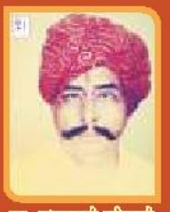
स्व. दुधमलजी खीमाजी श्रीश्रीमाल, पोषाणा

श्रीमती सुआदेवी छगनराजजी ओबाणी, पोषाणा

मण्डारी नैनमलजी हरकाजी सायला

शा. भलराजजी हंसाजी सुराणा

शा. देवीचन्दजी गौराजी पालरेचा, ऐलाणा

शा. जेठमलजी सागरमलजी मेंगलवा

श्रीमती बदामीदेवी पूनमचन्दजी, भीनमाल

श्रीमती पेपीबाई नैनमलजी लाखाणी, सायला

शा. समेरमलजी मेसाजी दादाल

श्रीमती सीतादेवी समेरमलजी दादाल

स्व. श्रीमती गेरोदेवी तेजराजजी बाफना, पांथेड़ी

सरेमलजी धनाजी छत्रगौता चौराऊ

शा. मनोहरमलजी दलीचन्दजी मेहता, भीनमाल

सुआदेवी हस्तीमलजी कटारिया-संघवी, पादरू

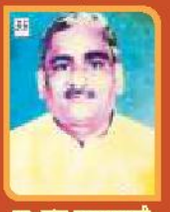
शा. मुथा कुन्दनमलजी मिश्रीलालजी, बागरेचा, आहोर

स्व. झमुबाई प्यारचन्दजी मोदी, राजगढ़

श्रीमती किरनदेवी वस्तीमलजी बाफना, थलवाड़

मिश्रीमलजी पूनमचन्दजी बालड़, पादरू

शा. धनराजजी सुखराजजी ओबाणी, पोषाणा

शा. जीतमलजी देवीचन्दजी पालरेचा, ऐलाणा

श्रीमती हरकूदेवी माँगीलालजी श्रीश्रीमाल, पादरू

श्रीमती प्यारीबाई देवीचन्दजी ऐलाणा

श्रीमती जड़ावीदेवी रूपचन्दजी बागरेचा, जीवाणा

शा. वस्तीमलजी कपूरचन्दजी बाफना, थलवाड़

स्व. रमेशकुमार सुरेशकुमार डागलेचा, राउता

श्रीमती कमलादेवी चालचन्दजी पांथेड़ी

स्व. शैलेशकुमार सुमेरमलजी डागलेचा, राउता

श्रीमती रोहिणीदेवी गुमानमलजी श्रीश्रीमाल, सिवाणा

श्रीमती मेतीबाई कपूरचन्दजी बाफना, थलवाड़

लाखाणी नैनमलजी जेठमलजी सायला

श्रीमती भँवरीदेवी सुमेरमलजी फोलामुथा, सायला

शा. सुमेरमलजी भाराजी फोलामुथा, सायला

शा. आसुलालजी भादाजी पालरेचा, चौराऊ

शा. घेवरचन्दजी भादाजी चौराऊ

स्व. शा. चालचन्दजी रूपाजी पांथेड़ी

शा. गुमानमलजी रूपचन्दजी श्रीश्रीमाल, सिवाणा

अरुणादेवी धनसुखलालजी तखतगढ़

श्रीमती अकलकँवर देवीचन्दजी जैन, जोधपुर

हीरादेवी मिश्रीमलजी पादरू

शा. हंजारीमलजी जेठाजी ओबाणी, पोषाणा

शा. भदाजी मेसाजी दादाल

शा. हिम्मतमलजी प्रेमाजी हत्थिम, दादाल

शाह जालुजी सुरताजी मेंगलवा

शा. सौभागमलजी चम्पालालजी सेठ, राणापुर

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

मुथा घमण्डीरामजी फौजाजी चितलवाना

श्रीमती सुबटीदेवी रणमलजी दादाल

शा. रिखबचन्दजी रूपाजी सतरियाबोरा, जीवाणा

श्रीमती हरकीदेवी खीदमलजी दादाल

श्री सुमेरमलजी सोनाजी मसाली, भीनमाल

शा. चम्पालालजी तगमलजी चौहटन

श्रीमती शान्तिदेवी नगराजजी दादाल

स्व. राजीबाई खीमाजी श्रीश्रीमाल, पोषाणा

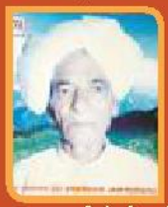
शा. छगनराजजी हंजारीमलजी ओबाणी, पोषाणा

श्रीमती पातीदेवी वस्तीमलजी सायला

श्रीमती सूरजदेवी भूरमलजी बाफना, थलवाड़

शा. भूरमलजी कपूरचन्दजी बाफना, थलवाड़

श्रीमती पुष्पादेवी दूधमलजी श्रीश्रीमाल, पोषाणा

श्री भूदरमलजी जीवराजजी चोहट्य, डीसा

श्रीमती सुगीबाई नैनमलजी सायला

स्व. रूपचन्दजी सादाजी बागरेचा, जीवाणा

भूरीदेवी बागमलजी बोहरा भीनमाल

श्रीमती भानकोबाई माँगीलालजी संघवी, राजगढ़

शा. माँगीलालजी मिश्रीमलजी सराफ-संघवी, राजगढ़

बोहरा बागमलजी मिश्रीमलजी भीनमाल

मण्डारी मोटमलजी अचलचन्दजी, गढ़सिवाना

श्रीमती हीरादेवी गणेशमलजी गोल

श्रीमती लहरीदेवी घमण्डीरामजी, चितलवाना

श्रीमती सुआदेवी धनराजजी ओबाणी, पोषाणा

स्व. शा. हस्तीमलजी किनाजी संकलेचा, मेंगलवा

श्रीमती झमुदेवी हूँगरमलजी डोसी, भीनमाल

शा. हूँगरमलजी मिश्रीमलजी डोसी, भीनमाल

शा. धींङमलजी गिरिधारीमलजी श्रीश्रीमाल, पादरू

श्रीमती कमलादेवी जीतमलजी ऐलाणा

श्रीमती लेहरीदेवी प्रतापचन्दजी चौपड़ा, मेंगलवा

श्री भँवरलालजी गेबाजी श्रीश्रीमाल, डामराणी

श्रीमती झमुदेवी नोगजी मेहता, भीनमाल

स्व. भूरमलजी सकाजी सोफाढ़िया, रेवतड़ा

शा. धूकचन्दजी राठौड़ पांथेड़ी

श्रीमती टमीदेवी शाह नरसाजी

शा. पृथ्वीराजजी गेबाजी संकलेचा, मेंगलवा

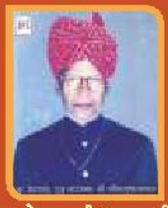
शा. भेवरचन्दजी भारतमलजी फोलामुथा, सायला

श्रीमती शान्तिदेवी भेवरचन्दजी फोलामुथा, सायला

हीराचन्दजी शिवराजजी पोषाणा

श्रीमती धर्मादेवी हीराचन्दजी पोषाणा

शा. चेलाजी रासाजी चौराऊ

श्रीमती ढेपीदेवी चेलाजी चौराऊ

स्व. जेठमलजी बदाजी बाफना, पांथेड़ी

श्रीमती सुबटीदेवी जेठमलजी बाफना, पांथेड़

शा. हूँगरमलजी मालाजी कांकरिया, जालोर

श्रीमती बगदूदेवी हूँगरमलजी कांकरिया, जालोर

संघवी नेमीचन्दजी मिश्रीमलजी जीवाणा

श्रीमती दरियादेवी नेमीचन्दजी संघवी, जीवाणा

स्व. मिश्रीमलजी मालाजी कांकरिया, सुराणा

स्व. श्रीमती अतियादेवी जेठाजी कांकरिया, सुराणा

शा. जेठमलजी सदाजी जीवाणा

श्रीमती प्यारीदेवी जेठमलजी जीवाणा

श्रीमती चुन्नीदेवी मिश्रीमलजी साँचोर

शा. माँगीलालजी मिश्रीमलजी साँचोर

स्व. शा. मेघराजजी आदाजी छत्रियाबोरा, सुराणा

श्रीमती चम्पादेवी रिखबचन्दजी छत्रियाबोरा, सुराणा

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

स्व. कुकीबाई साहेबचन्दजी मेंगलवा

स्व. कानुदेवी मगराजजी बागोड़ा

शा. रामलजी पूनमाजी दादाल

स्व. कुन्दनमलजी लादाजी चौराऊ

स्व. प्यारचन्दजी रूपचन्दजी मोदी, राजगढ़

श्रीमती मोहनीदेवी गुटराजजी छत्रियावोरा, सुराणा

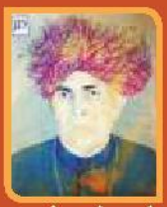
शा. सुमेरमलजी अदाजी छत्रगोता वोरा, सुराणा

श्रीमती झमुदेवी कुन्दनमलजी लुकड़, पोषाणा

श्रीमती माणीदेवी समेरमलजी छत्रियावोरा, सुराणा

शा. नैनमलजी हिन्दुजी हरण नरता

श्रीमती शान्ताबेन नैनमलजी हरण नरता

स्व. तेजराजजी बदाजी बाफना, पांथेड़ी

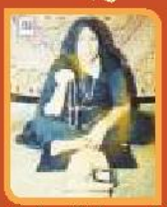
श्रीमती गवरीदेवी मसराजी काकरिया, सुराणा

शा. भँवरलाल मेघराजजी छत्रियावोरा, सुराणा

स्व. जेठमल आशाजी कांकरिया, सुराणा

टिंकूबाई मिश्रीमलजी बालगोता, मेंगलवा

शिवराजजी जुठाजी मेंगलवा

श्रीमती कानुदेवी भँवरलालजी छत्रियावोरा, सुराणा

संघवी शा. तिलोकचन्द सदाजी, धाणसा

श्रीमती रूपीदेवी पुखराजजी झोटा, दादाल

शा.सोनमलजी पेराजजी बाफना, पांथेड़ी

श्रीमती सुवटीदेवी बेवरचन्दजी जैन मेंगलवा

स्व. प्यारीदेवी मेघराजजी छत्रगोता, सुराणा

शा. गणेशलालजी सागरमलजी, मेंगलवा

श्रीमती झुमटीदेवी सायला

श्रीमती पार्वतीबाई शिवराजजी आहोर

श्रीमती सुन्दरबाई रावतमलजी, बागोड़ा

श्री बाबुलालजी श्री अचलाजी सालेचा, भीनमाल

शाह तोलाजी चमनाजी ऊनड़ी

शा. गुटराजजी मेगाजी छत्रियावोरा, सुराणा

शा. रतनलालजी मोहनलालजी सुराणा, कच्चारा (म.प्र)

श्रीमती शान्तिदेवी बाबुलालजी सालेचा, भीनमाल

शा. तिलोकचन्दजी मदाजी नाणेचा, आकोली(पूना)

श्रीमती उगमबाई माँगीलालजी सोंचोर

श्रीमती यशोदाबाई भैरमलजी आकोली

श्रीमती छठीबाई सरेमलजी गेनाजी, सियाणा

शा. तगराजजी छिम्मतमलजी मेंगलवा

मोहनदेवी रिखबचन्दजी छत्रियावोरा, सुराणा

श्रीमती गट्टूदेवी हुंजाजी धाणसा

श्रीमती पुष्पादेवी कानराजजी बडेर मुथा, ऊनड़ी (सायला)

श्रीमती सूकीदेवी रणजीतमलजी मसाली, पांथेड़ी

श्रीमती बदामीबाई कुन्दनमलजी चौराऊ

फोलामुथा कुन्दनमलजी सरदारजी, सायला

शा. कानराजजी केसरीमलजी बडेर मुथा, सायला

शा. मुथा कानमलजी वस्ताजी, जीवाणा

श्रीमती शान्तिदेवी गणेशमलजी मेंगलवा

श्रीमती माँगीदेवी भँवरलालजी, चौराऊ

मफतलाल हंसराजजी वारिया, डीसा

कान्तावेन मफतलाल वारिया, डीसा

पवनीदेवी जयन्तीलालजी बाफना, अम्मेदाबाद

श्रीमती शान्तिदेवी भानमलजी ओखाणी, ऊनड़ी

श्रीमती तगीबेन कुम्भराज संघवी, सोंचोर

संघवी कुम्भराजजी सागरमलजी, सोंचोर-जावाल

श्रीमती सीमुदेवी हस्तीमलजी चौराऊ

स्व. श्री धूपाजी आदाजी बन्दामुथा, बागोड़ा

शा. तिलोकचन्दजी सरतानजी संकलेचा, मेंगलवा

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

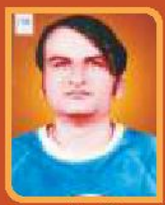

श्रीमती झमुदेवी तिलोकचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा	श्रीमती सुकीदेवी भूरमलजी सोफाड़िया, रेवतड़ा	अम्बालालजी शान्तिलालजी कटारिया, खिवान्दी	श्रीमती शोभा अम्बालालजी कटारिया, खिवान्दी	श्रीमती सुखीदेवी मिश्रीमलजी मेहता, सिणधरी	स्व. मौनमलजी छोगाजी भीनमाल	श्रीमती भागवन्तीबाई मीठालालजी जोटा, दादाल

श्रीमती अणसीदेवी धींगड़मलजी जैन	सुरेशकुमार विजयजी नागौत्रा-सोलंकी, चौराऊ	शा. इन्दरमलजी चुन्नाजी सिवाणा	स्व. चन्दनमलजी धन्नाजी मलानी, चौराऊ	स्व. श्रीमती जीवीदेवी गेनमलजी मोरखिया, भीनमाल	स्व. सुरेश टिकुचन्दजी जोगाणी, भीनमाल	श्रीमती बगसुदेवी साँवलचन्दजी बालड़, मेंगलवा

स्व. शा. छोगालालजी खुशालजी, भीनमाल	स्व. शा. हंजारीमलजी वर्जींगजी सवाजी, धाणसा	शा. हरकचन्दजी हीमताजी, जोधपुर	स्व. श्री वस्तीमलजी रणछोड़जी बागरेचा, मेंगलवा	श्रीमती शान्तिदेवी नगराजजी गांधी मुथा, सायला	श्रीमती शान्तिदेवी पारसमलजी हुकमाणी,पांथेड़ी	श्रीमती अरूणादेवी जुगराजजी डामरानी, मेंगलवा

श्रीमती सायरदेवी मोहनलालजी भरडीया, डम्डाली	स्व. ढेलीदेवी मिश्रीमलजी बंदा मुथा, बागोंड़ा	जेठमलजी जवाहरमलजी जालोर	स्व. साँकलचन्दजी छोगाजी संकलेचा, मेंगलवा	श्रीमती शान्तिदेवी गजराजजी दोशी, भीनमाल	मोहनीदेवी बाबुलालजी जोगानी, भीनमाल	श्रीमती मतराबाई गेबचन्दजी सेठ, धाणसा

संघवी घेवरचन्दजी जावंतराजजी धाणसा	श्रीमती शान्तिदेवी घेवरचन्दजी गुलेच्छा, जीवाणा	स्व. श्री रामलालजी वनेचंदजी हरणेशा, सिणधरी	श्रीमती लाभुदेवी रामलालजी हरणेशा, सिणधरी	संकलेचा कुन्दनमलजी फुलाजी मेंगलवा	शा. वस्तीमलजी हेमाजी जीवाणा	श्रीमती रेखा प्रकाशजी कटारिया, खिवान्दी

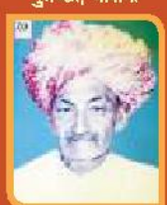

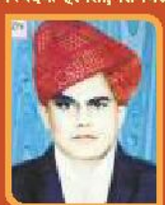

श्रीमती सुंगीदेवी भीमराजजी बालगोता, मेंगलवा	शाह नरसाजी सौगाजी दादाल	स्व. छगनलालजी हंजाजी सुराणा	स्व. पानीदेवी छगनराजजी सुराणा	शा. भीकमचन्दजी नरसीमलजी देसाई, सिणधरी	श्रीमती सुआदेवी भीकमचन्दजी देसाई, सिणधरी	शा. मनोहरमलजी साँकलचन्दजी बाणीगोता, तिलोड़ा

शा. मूलचन्दजी शम्भूजी बाफना, पादरू	श्रीमती मोहनीदेवी मूलचन्दजी बाफना, पादरू	मोरखिया मफतलाल रिखबचन्द, लवाणा	जासुदबेन मफतलाल मोरखिया, लवाणा	शा. साकन्तराजजी कसनाजी नागोत्रा-सोलंकी, बागोड़ा	मरगीदेवी विजयराजजी नागोत्रा-सोलंकी, चौराऊ	स्व. शा. तगराजजी गणेशजी गाँधीमुथा, सायला

श्रीमती [illegible] लालजी कोयम्बटूर	श्री मँवरलालजी हरकाजी आलासन	श्रीमती अजीदेवी इन्दरमलजी सिवाणा	श्रीमती भाग्यवन्ती पृथ्वीराजजी संकलेचा, मेंगलवा	श्रीमती फाउदेवी थुकचन्दजी राठौड़, पांथेड़ी	श्रीमती सुआदेवी समरथमलजी बालड़, मोदरान	शा. मतरादेवी इन्दरमलजी संघवी, आलासन

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

स्व. महेन्द्रकुमारजी मुखराजजी श्रीश्रीमाल, पादरू

श्रीमती मघरीदेवी सुरतानमलजी बोहरा, बाड़मेर

शा. कुँमराजजी सोनमलजी बाफना, पांथेड़ी

शा. समकुदेवी मोहनलालजी बोहरा, जीवाणा

संघवी देशमलजी हिमताजी धाणसा

स्व. सेठ केशवलालजी उत्तमचन्दजी, लूणोल

शा. मधुबेन केशवलालजी लूणोल

श्रीमती पोखुदेवी सावन्तराजजी बाणीगोता, बागोड़ा

कमलादेवी चम्पालालजी कबदी, सायला

शा. पृथ्वीराजजी गेनमलजी मोरखिया, भीनमाल

श्रीमती खुन्दरबाई रतनलालजी सिसोदिया, निम्बाहेड़ा

श्रीमती मोहनदेवी डूँगरमलजी सकलेचा, भीनमाल

संकलेचा मोहनीदेवी कुन्दनमलजी, मेंगलवा

प्यारीदेवी भभूतमलजी जोधपुर

श्रीमती बसन्तीदेवी शान्तिलालजी, खिवान्दी

शा. उकचन्दजी रूपाजी बाफना, थलबाड़

श्रीमती भमरीदेवी भेवरचन्दजी तिलोड़ा

ललितादेवी सुरेशकुमारजी नागोत्रा-सोलंकी, चौराऊ

गाँधी मेहता अचलचन्दजी भीमराजजी, सायला

शा. मानमलजी सुखराजजी ओखाजी, ऊनड़ी

मोहनलालजी गिरिधारीलालजी बोहरा, जीवाणा

कमलादेवी धींगड़मलजी श्रीश्रीमाल, सिणधरी

श्रीमती पन्नीदेवी मनोहरलालजी पालगोता, दासपा

श्रीमती प्यारीदेवी वनेचन्दजी मेहता, सिणधरी (बाड़मेर)

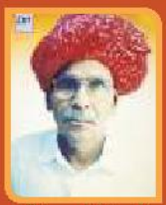
माँगीलालजी भीमाजी गाँधीमुथा, सायला

श्रीमती डाईदेवी माँगीलालजी गाँधीमुथा, सायला

शा. घेवरचन्दजी मगाजी गोल (उम्मेदाबाद)

श्रीमती कसुबी घेवरचन्दजी संघवी, धाणसा

सुलोचनादेवी खुशालचन्दजी श्रीश्रीमाल, मेंगलवा

शा. भीमराजजी खेताजी वहेर मुथा, राजनगर-ऊनड़ी

श्रीमती सुन्दरदेवी इन्दरमलजी गाँधीमुथा, सायला

स्व. चम्पालालजी मँवरलालजी कबदी, सायला

स्व. कान्तिलालजी दरगाजी जोगानी, भीनमाल

स्व. शा. इन्दरमलजी भीमाजी गाँधीमुथा, सायला

शा. देवीचन्दजी वनेचन्दजी मेहता, सिणधरी

हस्तीमलजी संघवी कटारिया, पादरू

श्रीमती गुलाबीबाई पारसमलजी श्रीश्रीमाल, पोषाणा

शा. पारसमलजी चूठाजी श्रीश्रीमाल, पोषाणा

श्रीमती भूरीदेवी पारसमलजी सुजाणी, उम्मेदाबाद

स्व. मूलीबाई पुखराजजी गाँधी सियाणा-चैन्नई

श्रीमती सुबटीदेवी ताराचन्दजी, कोरा

श्रीमती सुशीलादेवी कुन्दनमलजी बागरेचा, जीवाणा

गाँधी पुखराजजी मोपाजी सियाणा-चैन्नई

केवलचन्दजी छोगाजी थलबाड़

विरेन्द्र बहादुरसिंहजी भण्डारी मदनगंज-किशनगढ़

श्रीमती गीगीदेवी उकचन्दजी बाफना, थलबाड़

श्रीमती गुलाबीदेवी मनोहरलालजी बाणीगोता, तिलोड़ा

शा. साँकलचन्दजी मादाजी तिलोड़ा

शा. सागरमलजी हिमताजी संकलेचा, भीनमाल (मेंगलवा)

श्रीमती तगींबाई वस्तीमलजी जीवाणा

शा. भभूतमलजी हिमताजी पालगोता-चौहान, जोधपुर

शा. मिश्रीमलजी वनेचन्दजी सिणधरी

श्रीमती टीलीदेवी गेबीरामजी हुण्डीया, पादरू

शा. डूँगरमलजी सागरमलजी संकलेचा, भीनमाल

श्रीमती प्यारीबाई सागरमलजी संकलेचा, भीनमाल

श्री प्रकाशजी शान्तिलालजी कटारिया, खिवान्दी

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

स्व. शिखाकुमारी अशोककुमारजी, आहोर

शा. माँगीलालजी मँवरलालजी हरण, दासपा

श्रीमती कमलादेवी माँगीलालजी हरण, दासपा

शान्तिलालजी मबूतमलजी कटारिया, खिवान्दी

श्रीमती ज्योतिदेवी हरकचन्दजी, जोधपुर

स्व. पाबुबाई मिश्रीमलजी बाफना, दासपा

शा. गजराजजी कुन्दनमलजी दोशी, भीनमाल

स्व. शेठ गेवचन्दजी सरेमलजी, घाणसा

स्व. शा. पारसमलजी नेणाजी भीमाणी, भीनमाल

शा. जुगराजी मानमलजी डामराणी, मेंगलवा

स्व. श्रीमती मयराबाई जावन्तराजजी सालेचा, भीनमाल

श्रीमती रतनदेवी राणमलजी कटारिया-संघवी, दाषाल

श्रीमती सोवनदेवी सुमेरमलजी संकलेचा, मेंगलवा

श्रीमती शान्तिदेवी जुहारमलजी मेंगलवा

शा. कुन्दनमलजी हंजारीमलजी बागरेचा, जीवाणा

शा. मिश्रीमलजी धूपाजी बन्दमुथा, बागोड़ा

शा. धींगड़मलजी नरसिंगजी श्रीश्रीमाल, सिणधरी

शा. धींगड़मलजी सोहनराजजी देसाई, सिणधरी

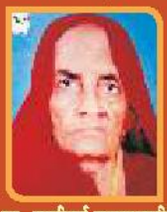
स्व. आशीबाई लालचन्दजी पालगोता, दासपा

श्रीमती संचवी शम्भूदेवी देशमलजी, घाणसा

श्रीमती भूरीदेवी कुणराजजी बाफना, पाथेड़ी

शा. स्व. झमकलालजी कुन्दनमलजी दलाल, बड़नगर

शा. विजयराजजी हरकचन्दजी नागौत्रा-सोलंकी, चौराऊ

प्रिन्सकुमार सुखराजजी मेहता, भीनमाल

शा. शान्तिलालजी मुनीलालजी संघवी, आलासन

श्रीमती शान्तिबाई चन्दनमलजी मलाणी, चौराऊ

श्रीमती कमलादेवी बाबूलालजी श्रीश्रीमाल नेणगोता, मेंगलवा

शा. बाबूलालजी गेबाजी श्रीश्रीमाल, मेंगलवा

शा. सुमेरमलजी साँकलजी संकलेचा, मेंगलवा

शा. शंकरलालजी केशाजी ऊनड़ी-राजनगर

श्रीमती गैरोदेवी चेठमलजी बालगोता, मेंगलवा

शा. जुहारमलजी किशनाजी मेंगलवा

श्रीमती सीतादेवी चान्दमलजी कानूगो, भीनमाल

श्रीमती ढेलीदेवी वख्तावरमलजी वढेरा, बाड़मेर

स्व. श्रीमती जतीबाई भानमलजी, भीनमाल

शा. पुखराजजी भलाजी मुथा, जीवाणा

श्रीमती मिश्रीदेवी मिश्रीलालजी तिलोड़ा

श्रीमती सुकीदेवी पुखराजजी गोगाणी, चौराऊ

स्व. आकाशकुमार राजमलजी कांकरिया, सुराणा

शा. कोलचन्दजी सोनराजजी बोहरा, भीनमाल

शा. स्व. गुलराजजी जगताजी श्रीश्रीमाल नेणगोता, नासौत्ती

श्री खुशालचन्दजी गोगाणी श्रीश्रीमाल, मेंगलवा

शा. इन्द्रमलजी नेणमलजी संघवी, आलासन

श्री साकलचन्दजी लादाजी वाणीगोता, सरत

स्व. समरथमलजी छोगाजी बालढ़, मोदरा

सोहनराजजी मोहनलालजी नाहर, राणापुर वाले, झाबुआ

स्व. चान्दमलजी राजमलजी कानूगो, भीनमाल

सुरताजमलजी फौजमलजी बोहरा, बाड़मेर

शा. घेवरचन्दजी वस्तीमलजी गुलेच्छा, जीवाणा

श्रीमती कमलादेवी शान्तिलालजी संघवी, आलासन

शा. मनोहरमलजी लालचन्दजी पालगोता, दासपा

शा. पारसमलजी लालाजी हकमाणी, पाथेड़ी

जम्मुदेवी भीमराजजी बडेर मुथा, राजनगर-ऊनड़ी

शा. मीठालालजी मनोहरलालजी जोटा, दादाल

स्व. प्रवीणकुमारजी मीठालालजी जोटा, दादाल

कवंदी कुन्दनमलजी जुहारमलजी, सायला

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

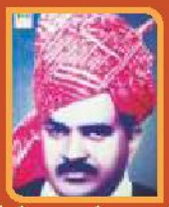
संघवी पारसमलजी फूलचन्दजी छाजेड़, मिशनगढ़

श्रीमती पुष्पादेवी पारसमलजी गुलेच्छा, जीवाणा

सोलंकी शा. छगनराजजी मिश्रीमलजी, थाणसा

स्व. किशोरमलजी जावन्तराजजी सालेचा, भीनमाल

छोटीबाई किशोरमलजी सालेचा, भीनमाल

स्व. जावन्तराजजी मूलजी सालेचा भीनमाल

शा. गेनमलजी साँकलचन्दजी सोलंकी, सियाणा

श्रीमती मोहनदेवी हीराचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

श्रीमती सुआदेवी ताराजी दादाल

श्रीमती सुमतीदेवी गणेशमलजी मलानी, चौराऊ

शा. जुगराजजी पुखराजजी पोषाणा

सुराणा छगनराजजी हरकाजी सायला

मुथा पुखराजजी पीराजी धुम्बड़िया

रेशमीदेवी मूलचन्दजी मेहता, भीनमाल

स्व. मूलचन्दजी माणकचन्दजी मेहता, भीनमाल

श्रीमती भूरीदेवी नेनमलजी मेंगलवा

स्व. मोहनलालजी हरकाजी गोवाणी, चौराऊ

श्रीमती शान्तिदेवी मोहनलालजी गोवाणी, चौराऊ

श्रीमती सुबटीबाई पुखराजजी फोलामुथा, धुम्बड़िया

स्व. श्रीमती सुआदेवी संघवी धाणसा

श्रीमती मुथा फेन्सीदेवी कुन्दनमलजी बागरेचा, आहोर

स्व. नवरीदेवी अनराजजी पाल गोता, राजन(ऊनड़ी)

श्रीमती धर्मोदेवी चुन्नीलालजी दादाल

स्व. नगराजजी संतोकजी हुकमाणी, पांथेड़ी

शा. रणजीतमलजी इराजी भंसाली, पांथेड़ी

संघवी इन्दरमलजी सदाजी धाणसा

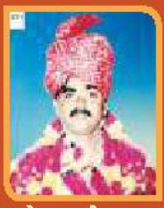
स्व. रमेशकुमारजी पारसमलजी मुणोत, तिलोड़ा

शा. उम्मेदमलजी प्रतापजी मेंगलवा

श्रीमती सरूबाई गुमानमलजी जीवाणा

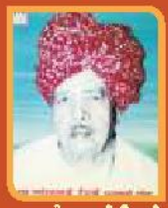
शाह गणेशमलजी नैनाजी मन्साली, गौल

मोंगीदेवी भँवरलालजी बोहरा जीवाणा

शाह हजारीमलजी गजाजी धाणसा

शा. बागमलजी सरदारमलजी फोला मुथा, सायला

शा. गणेशमलजी लादाजी मलानी, चौराऊ

संघवी छगनराजजी तगाजी धाणसा

स्व. पारसमलजी भीमाजी सुराणा

शा. सोवलचन्दजी नगाजी हुकमानी, पांथेड़ी

श्रीमती शान्तिबाई सोवलचन्दजी हुकमानी, पांथेड़ी

शा. शिवराजजी हीराजी सौलकी, आहोर

स्व. कनुदेवी नगराजजी हुकमाणी, पांथेड़ी

स्व. शा.भीमराजजी जुठाजी सुराणा

श्रीमती हस्तुदेवी तोलाजी ऊनड़ी

शा. चुन्नीलालजी हिमताजी दादाल

नागौरी मूलचन्दजी सुमेरमलजी आहोर

श्रीमती भाणीदेवी मदाजी दादाल

श्रीमती गोकीबाई पारसमलजी कोठारी भीनमाल

स्व. समरथमल मुल्तानमलजी झोटा, दादाल

श्रीमती उगमदेवी सोनमलजी मेंगलवा

श्री मिश्रीमलजी वसाजी जीरावला

स्व. शा. गुणेशमलजी मोतीजी रामाणी, गुड़ा बालोतान

स्व. शा. सोनमलजी प्राणाजी संकलेचा, मेंगलवा

स्व. शा. पुखराजजी नैथीजी पांथेड़ी

शा. पारसमलजी जेठमलजी कलराड़ा

श्रीमती मोहनबाई सुमेरमलजी भन्साली, भीनमाल

मुणोत धनराज कानाजी दासपा

श्री हरण जुठमलजी जानुजी, दासपा

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

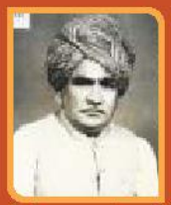
संघवी भारतमलजी भगाजी
बेद मुथा, रेवतड़ा

स्व. बाबुलालजी कुन्दनमलजी
चौराऊ

शा. हीराचन्दजी सजाजी
संखलेचा, मेंगलवा

श्रीमती सज्जनादेवी मालचन्दजी
कांकरिया, सुराणा

शा. फूलचन्दजी मिश्रीमलजी
गाँधी मेहता, धुम्बड़िया

शा. मिश्रीमल जेठाजी
दादाल

श्री पारसमल भीमाजी जैन
बागोड़ा

शाह सुमेरमल नरसाजी
बालगोता, मेंगलवा

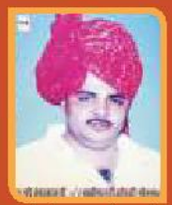
स्व. श्री चंपालालजी बसतीमल
कोठारी, भीनमाल

स्व. सुकीदेवी जुहारमलजी
सोलंकीवास, जालोर

श्रीमती बलमीदेवी चुगराजजी
पोषाणा

मन्जुबेन मनोहरमलजी
भीनमाल

संघवी कपूरचन्दजी प्रेमचन्दजी
मुण्डारा

श्रीमती संतोषदेवी इन्द्रमलजी
संघवी, घाणसा

शा. टिकमचन्द पुनमाजी
दादाल

शाह बाबुलालजी लादाजी
मेंगलवा

संघवी सो. शान्तावेन
कर्पूरचन्दजी मुण्डारा,मुण्डारा

श्रीमती प्यारीदेवी पारसमलजी
झोटा, दादाल

स्व.रामलाल मिश्रीमलजी
दादाल

श्रीमती फुलीदेवी हरकचन्दजी
गोबाणी, चौराऊ

श्रीमती शान्तिबाई तेजराजजी
मुणोत, शिवगंज

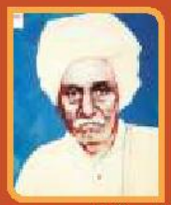
शा. हरकचन्दजी जोमताजी
गोबाणी, चौराऊ

जोटा शा. पारसमलजी
पूनमचन्दजी, दादाल

हस्तीमलजी सकाजी
सायला

श्रीमती सोहनीदेवी हेमराजजी
अंदाणी, सुराणा

श्रीमती मोहनीदेवी
दाड़मचन्दजी, दादाल

स्व. रूपीदेवी मिश्रीमलजी
बाणीगोता, भगल सेपटा

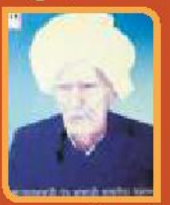
शा. मानचन्दजी आसाजी
कांकरिया, सुराणा

श्रीमती जमुबाई पुखराजजी
बाणीगोता, सरत

शा. साहेबचन्दजी छोगाजी
बालगोता, मेंगलवा

स्व. मिश्रीमलजी सरूपाजी
बाणीगोता, भगल सेपटा

शा. पुखराजजी पूनमाजी
दादाल

जड़ियादेवी चम्पालालजी
कोठारी, भीनमाल

स्व. रतनबाई मिश्रीमलजी
दादाल

स्व. टीपूबाई पुखराजजी
दादाल

श्रीमती जमनादेवी सुमेरमलजी
शाह्जी, पांचेड़ी

शा. मेघराजजी चुगराजजी
सुराणा

श्रीमती मेतीबाई पेराजमलजी
प्रतापजी, मोदरा

श्रीमती सायतीबाई पारसमलजी
मंसाली, भीनमाल

संकलेचा स्व. हरकचन्दजी
लादाजी, मेंगलवा

श्री पारसमलजी सोनाजी
मंसाली, भीनमाल

श्रीमती गुनीदेवी सुमेरमलजी
बालगोता, मेंगलवा

श्रीमती रूपीदेवी सोनराजजी
राजनगर-ऊनड़ी

श्रीमती भँवरीदेवी रामलालजी
दादाल

स्व. मुकेशकुमारजी ओटमलजी
दादाल

शा. धर्मचन्दजी मिश्रीमलजी
आलासन

श्रीमती मोहनदेवी शान्तिलालजी
मेंगलवा

स्व. श्रीमती सूरजदेवी
पारसमलजी जैन, बागोड़ा

शा. भँवरलालजी मिश्रीमलजी
बोहरा, जीवाणा

श्रीमती सोतीदेवी भँवरलालजी
दादाल

शा. सरेमलजी प्रतापजी
घाणसा

श्रीमती बगदुदेवी
हस्तीमलजी, मेंगलवा

संघवी रिखबचन्दजी सिरेमलजी
रेवतड़ा

शा. खिदमलजी मेसाजी
जोटा, दादाल

शा. दाड़मचन्दजी बाबुजी
दादाल

शा. गेवचन्दजी हेमाजी
संकलेचा, मेंगलवा

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

शा. हेमराजजी समरथमलजी अदाणी, सुराणा

शा. सोहनराजजी हीमताजी राजनगर(ऊनड़ी)

स्व. श्रीमती पानुबाई मिश्रीमलजी झोटा, दादाल

शाह छगनराजजी चेलाजी चौराऊ

शा. लुनचन्दजी छोगाजी सुराणा

स्व. शा. नागराजजी नरसाजी झोटा, दादाल

श्रीमती जम्मुबाई जुठमलजी हरण, नरता

शा. जीवराजजी मीठालालजी नागोत्रा सोलंकी, सियाणा

शा. नैनमलजी प्राणाजी मेंगलवा

श्रीमती प्यारीबाई फूलचन्दजी मेहता, थुम्बड़िया

शा सिरेमलजी दगाजी झोटा, दादाल

श्रीमती चम्पादेवी धर्माजी आलसा

स्व. भंसाली कान्तीलाल अमुलचीभाई, थराद

शा. पुखराजजी प्रतापजी बाणीगोता, सरत(अमृतसर)

स्व. धारोपीदेवी स्व. नरसाजी बालगोता, मेंगलवा

स्व. श्री पुनमचन्दजी प्रतापजी श्रीश्रीमाल, पादरू

ईश्वरलालजी केवलचन्दजी बालड़, पादरू

श्रीमती कान्तादेवी कोलचन्दजी बोहरा, भीनमाल

श्रीमती पोपटबाई राजमलजी बाणीगोता, भीनमाल

शाह दरगचन्दजी फौजाजी दादाल

श्री पारसमलजी लछाजी गुलेच्छा, जीवाणा

श्रीमती शान्तिदेवी मँवरलालजी हीराणी, रेवतड़ा

रीमती पवनदेवी खुमेरमलजी हुकमाणी, पांथेड़ी

शा. वनेचन्दजी सागरमलजी मण्डोरा, सिणधरी

श्रीमती शान्तिदेवी छत्रमलजी श्रीश्रीमाल, दादाल

श्रीमती ग्यारसीदेवी धनराजजी संघवी, आलासन

श्रीमती शुकीदेवी मनोहरलालजी संकलेचा, मेंगलवा

स्व. श्रीमती कशुनीदेवी लालचन्दजी, पांथेड़ी

सुखीदेवी कुन्दनमलजी कबदी, सायला

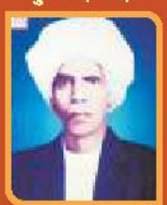
स्व. श्री लालचन्दजी नथाजी, पांथेड़ी

स्व. श्रीमती पन्नुदेवी मूलचन्दजी बंदामुथा, बागोड़ा

श्री कोठारी जेठमलजी कपूरचन्दजी, भीनमाल

शा. घेवरचन्द आदाजी सुराणा

श्रीमती बदामीदेवी जीवराजजी सोलंकी, सियाणा

स्व. शा. तगराजजी जेठाजी हीराणी, रेवतड़ा

श्रीमती लेहरीदेवी दरगचन्दजी दादाल

श्रीमती भागवन्तीदेवी मँवरलालजी, आलासन

स्व. श्रीमती शान्तिदेवी छगनराजजी हुकमाणी, पांथेड़ी

श्रीमती चम्पादेवी कालुचन्दजी मेंगलवा

शा. मँवरलालजी हंजाजी छगीया बोहरा, सुराणा

स्व. पुखराजजी जामताजी गोवाणी, चौराऊ

शा. बादरमलजी सरेमलजी आलासन

शा. सुमेरमलजी नगराजजी हुकमाणी, पांथेड़ी

संघवी शा. धनराजजी नैनमलजी, आलासन

शा. तिलोकचन्दजी खीमाजी पुनमिया, पालड़ी जोड़ (मद्रास)

शा. इन्द्रमलजी जुठाजी मेंगलवा

शा. तिलोकचन्दजी रामाजी हुकमाणी, पांथेड़ी

श्रीमती विमलादेवी केवलचन्दजी, थलवाड़

स्व. राजमलजी मभूतमलजी बाणीगोता

श्रीमती खमादेवी वनेचन्दजी मण्डोवरा, सिणधरी

स्व. शा. राणमलजी पारसमलजी कटारिया-संघवी

सुआदेवी मँवरलालजी संकलेचा, मेंगलवा

शा. देवीचन्दजी मनरूपमलजी बाफना, भीनमाल

स्व. विक्की चम्पालालजी बाणीगोता, भीनमाल

जड़ावीबाई जेठमलजी कोठारी, भीनमाल

स्व. सुबटीबाई साहेबचन्दजी बालगोता, मेंगलवा

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

स्व. अंजनादेवी रमेशकुमारजी वाणीगोता, भीनमाल

बोहरा सुरेशकुमार घेवरचन्दजी, जीवाणा

श्रीमती किरणदेवी माँगीलालजी लूकड़, पोषाणा

शा. माँगीलालजी लखमाजी लूकड़, पोषाणा

शा. मुल्तानमलजी पांधेड़ी

शा. मिठालालजी केराजी पोषाणा

शा. भँवरलालजी हरकाजी संकलेचा, मेंगलवा

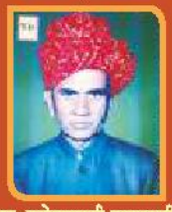
शा. मनोहरमलजी सकराजजी संकलेचा, मेंगलवा

शा. कपूरचन्दजी डूँगरजी बाफना, भीनमाल

श्रीमती माणीदेवी बागचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

श्रीमती सुन्दरदेवी मुस्तानमलजी, पांधेड़ी

श्रीमती पवनीबाई चम्पालालजी गुलेच्छा, जीवाणा

मुकन्दचन्दजी किशनलालजी देसाई, सिन्दरी

श्रीमती शान्तिदेवी शंकरलालजी बालगोता, ऊनही-राजनगर

सुबटीदेवी मुकन्दचन्दजी देसाई, सिन्दरी

बस्तीमल खुबाजी कोठारी, दासपा

केवलचन्द हेमाजी जैन जीवाणा

स्व. श्रीमती जेठीदेवी रिखबचन्दजी झोटा, दाथाल

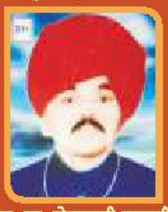
स्व. शा. खेतमलजी नरसाजी गुलेच्छा, जीवाणा

मुथा शा. वरदीचन्दजी सोनाजी, दासपा

शा. घेवरचन्दजी हरकाजी पटियात, धाणसा

भणशाली मधुबेन कान्तिलाल थराद्ववाला

शा. केशरीमल जामताजी गोवाणी, चौराऊ

श्रीमती हंजादेवी केशरीमलजी गोवाणी, चौराऊ

श्रीमती सुबटीदेवी भँवरलालजी बोहरा, सुराणा

स्व. शा. हस्तीमलजी धनाजी बंदामुथा, आहोर

स्व. भँवरलालजी हस्तीमलजी हिराणी, रेवतड़ा

स्व. झम्मुदेवी हस्तीमलजी बंदामुथा, आहोर

श्रीमती आशीबाई बस्तीमलजी कोठारी, दासपा

स्व. श्रीमती श्रीकांत बाई बोहरा, बड़नगर

शा. गौतमचन्द घेवरचन्द नाहटा, मेंगलवा

स्व. शा. छगनराज रामाजी हुकमाजी, पांधेड़ी

स्व. सवणीदेवी बस्तीमलजी बागरेचा, मेंगलवा

श्रीमती शोभाबाई उत्तमचन्दजी निम्बाजीया, तखतगढ़

श्रीमती शान्तादेवी पुखराजजी मुथा, जीवाणा

शा. हरकचन्दजी धुहाजी पटियात, धाणसा

शा. रमेशकुमार चुन्नमल वाणीगोता, भीनमाल

श्रीमती जमुदेवी घेवरचन्दजी सुराणा

श्रीमती दिवालीबाई बाबुलालजी वर्धन, सुराणा

श्रीमती भीखीदेवी देवाजी देसाई, सिणधरी

श्रीमती बादिदेवी माणकचन्दजी बाफना, भीनमाल

शा. पारसमलजी हीराजी लूंकड़, पोषाणा

श्रीमती प्यारीदेवी लक्ष्मीचन्दजी लूंकड़, पोषाणा

श्री छगनमलजी रुगनाथजी श्रीश्रीमाल, दादाल

श्रीमती सोहनीदेवी दलीचन्दजी भीनमाल

शा. चम्पालालजी खेतमलजी गुलेच्छा, जीवाणा

श्रीमती खम्मादेवी पारसमलजी लाजेड़, विशनगढ़

श्रीमती खम्मादेवी ईश्वरलालजी, बालड़ पादरू,

श्रीमती मोहनदेवी चरदीचन्दजी दासपा

स्व. शा. गोपीचन्दजी गमाजी कटारिया संघवी, धाणसा

शा. रूपचन्दजी मगाजी राँका, उम्मेदाबाद

श्रीमती सुकीदेवी माणकचन्दजी बाफना,भीनमाल

स्व. श्रीमान रिखबचन्दजी दरगाजी झोटा, दाथाल

श्रीमती बादीबाई घेवरचन्दजी पटियात, धाणसा

श्रीमती सुआदेवी रूपचन्दजी राँका, उम्मेदाबाद

श्रीमती फुलीबाई भबुतमलजी कटारिया, खिमान्दी

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

श्रीमती सुबटीदेवी घेवरचन्दजी मेहता, सिणधरी (बाड़मेर)

शा. उत्तमचन्दजी चम्पालालजी निम्बाजिया, तखतगढ़

शा. घेवरचन्दजी धनेचन्दजी मेहता, सिणधरी

श्रीमती लेरीबाई देवीचन्दजी बाफना, भीनमाल

शा. माणकचन्दजी देवीचन्दजी बाफना, भीनमाल

शा. भीमराजजी पीथाजी बालगोता, मेंगलवा

श्रीमती ओटीदेवी बादरमलजी, आलासन

स्व. शा. कालुचन्दजी हिमाजी मेंगलवा

स. मोहनलालजी प्रतापमलजी मरड़िया, दण्डाली

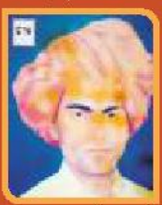
शा. मूलचन्दजी धूपाजी बन्दामुथा, बागोड़ा

शा. जेठमलजी कुन्दनमलजी बालगोता, मेंगलवा

शा. जूठमलजी भुकाजी जीवाणा

स्व. उममदेवी टिकुचन्दजी जोगाणी, भीनमाल

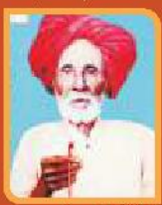
शा. चमण्डीरामजी मौजीजी मरड़िया, साँचोर (सत्यपुर)

शा. मूलचन्दजी मीजीजी मरड़िया, साँचोर (सत्यपुर)

श्रीमती अन्नपूर्णा मनोहरमलजी डामराणी, मेंगलवा

स्व. शा. सरेमलजी प्रतापजी संघवी, घाणसा

श्रीमती कलुदेवी भींमराजजी गाँधीमुथा, सायला

श्रीमती शान्तिबाई मोटमलजी मुथा, रेवतड़ा

स्व. भँवरलालजी मिश्रीमलजी सिसोदिया-मेहता

श्रीमती भँवरीदेवी शोभालालजी भीनमाल

स्व. चेतन तिलोकचन्दजी भीमाणी, भीनमाल

श्रीमती सन्तीदेवी तखतमलजी गाँधी, चितलवाना

श्रीमती पवनीदेवी ओटमलजी, दादाल

श्रीमती पवनदेवी भँवरलालजी बोहरा

श्री भँवरलालजी समरथाजी बोहरा

शा. घेवरचन्दजी सोनाजी हरण, दासपा

श्रीमती भीखीबाई घेवरचन्दजी हरण, दासपा

स्व. मिश्रीमलजी सागरमलजी बाफना, पांथेड़ी

श्रीमती गुलाबीदेवी मिश्रीमलजी बाफना, पांथेड़ी

सोलंकी सुकीदेवी छगनराजजी, घाणसा

श्रीमती मोहनलालजी अचलचन्दजी, सायला

शा. छोगाजी वरदाजी सायला

श्रीमती सरोजदेवी कान्तिलालजी हुकमाणी, पांथेड़ी

श्रीमती पवनीदेवी वख्तावरमलजी हुकमाणी, पांथेड़ी

शा. सुमेरमलजी सोनाजी मन्सारी, पांथेड़ी

शा. मिश्रीमलजी तोलाजी जोटा, दादाल

श्रीमती मेथीदेवी फूलचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

श्रीमती जड़ावीबाई पारसमलजी, सुराणा

शा. मीठालालजी पुखराजजी, पांथेड़ी

श्रीमती वीजूदेवी मिश्रीमलजी, थलवाड़

शा. वख्तावरमलजी साँकलचन्दजी हुकमाणी, पांथेड़ी

स्व. जवेरचन्दजी वरदाजी मण्डारी, वराड़ा (सिरोही)

श्रीमती सुबटीदेवी मनोहरमलजी अदाणी, सुराणा

शा. फतेहचन्दजी छोगाजी आछोर

श्रीमती तीजाबाई तेजराजजी भीनमाल

सुआदेवी तिलोकचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा

शा. कुन्दनमलजी जेठमलजी पांथेड़ी

शा. अचलचन्दजी जोमताजी बालगोता, ओटवाला

मुणोत नेनुदेवी धनराजजी दासपा

श्रीमती बदामीबाई प्रेमचन्दजी परमार, दुजाना

श्रीमती भँवरीदेवी सोहनराजजी मेहता, भीनमाल

स्व. रूपचन्दजी पूनमचन्दजी मेंगलवा

शा. कान्तिलालजी साँकलचन्दजी हुकमाणी, पांथेड़ी

शा. मोहनलालजी हेमाजी बाफना, पादरू

शा. पुखराजजी कुम्बाजी सायला

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

श्रीमती रतनदेवी बाबूलालजी सुराणा

श्रीमती बगसुदेवी रिखबचन्दजी सोफाड़िया, रेवतड़ा

श्रीमती हुलीदेवी पुखराजजी सायला

श्रीमती अजीदेवी हरकचन्दजी सोलंकी, चौराऊ

शा. वस्तीमलजी संगारजी पालगोता-चौहान, ऊनड़ी

श्रीमती गवरीदेवी वस्तीमलजी पालगोता-चौहान, ऊनड़ी

श्रीमती विमलादेवी सतनलालजी धारीवाल, जावरा (म.प्र.)

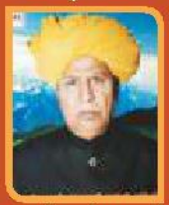
शा. सुमेरमलजी जुगराजजी शाहजी, पांथेड़ी

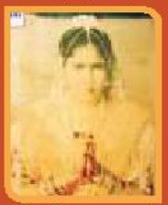
दीक्षार्थी कलावहन पुत्री इन्दरमलजी, मेंगलवा

श्रीमती खम्मादेवी भेवरचन्दजी कंकुचौपड़ा, जीवाणा

स्व. श्रीमती चन्द्राबाई सुजानमलजी, राजापुर

शा. डाह्यालालजी रोमाजी मेंगलवा

स्व. भीनमराजजी पूनमचन्दजी दादाल

शा. पुखराजजी पीथाजी सुराणा

संघवी लखमीचन्दजी प्रतापजी बागरा

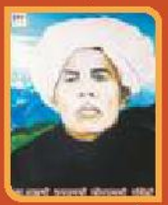
स्व. शा. जुगराजजी भोमराजजी, पांथेड़ी

शा. केवलचन्दजी वर्जीगजी चूरा

मुथा रोशमलजी मगनाजी राठौड़, आहोर

श्रीमती तुलसीबाई शिनराजजी, मेंगलवा

श्रीमती जमनाबाई लक्ष्मीचन्दजी, बागरा

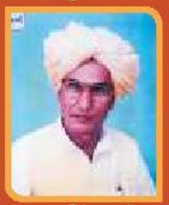
शा. माँगीलालजी पुखराजजी, सुराणा

श्रीमती जमनाबाई मेघराजजी जुगराजजी, सुराणा

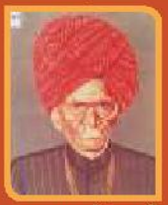
स्व. जसराजजी मन्साली जसोल

कवदी वस्तीमलजी समस्थाजी सायला

श्रीमती हस्तीदेवी गुलाजी भीनमाल

संघवी कान्तिलालजी वसाजी सियाणा

श्रीमती शान्तिदेवी हस्तीमलजी गाँधीमुथा, सायला

सौ. गोगीदेवी मीठालालजी पांथेड़ी

श्रीमती ममरीदेवी मोहनलालजी बाफना, पादरू

मुणोत माँगीलालजी धनराजजी, दासपा

मुणोत कंकुदेवी माँगीलालजी, दासपा

शा. पुखराजजी मगनाजी छत्तरगोता, चौराऊ

श्रीमती पार्वतीबाई हीराचन्दजी चौवटिया, मण्डार

श्रीमती पानीदेवी खीमचन्दजी कंकुचौपड़ा, जीवाणा

श्रीमती मोहनबाई हस्तीमलजी सुराणा

श्रीमती कमलादेवी चम्पालालजी सायला

शा. खीमचन्दजी हुंजाजी कंकुचौपड़ा, जीवाणा

स्व. रिखबचन्दजी सरूपाजी सोफाड़िया, रेवतड़ा

श्री मनोहरलालजी वसताजी अदाणी

श्रीमती अकीदेवी मनोहरलालजी मेहता, भीनमाल

स्व. साँकलचन्दजी नेथीजी हुक्माणी, पांथेड़ी

श्रीमती सकुदेवी साँकलचन्दजी हुक्माणी, पांथेड़ी

शा. तिलोकचन्दजी सजमलजी संकलेचा, मेंगनवा

शा. पुखराजजी समरथाजी अदाणी, सुराणा

श्रीमती सीतादेवी कुन्दनमलजी पांथेड़ी

स्व. सीमुबाई अचलचन्दजी ओटवाला

कोठारी पारसमलजी कपूरचन्दजी, भीनमाल

मतरादेवी मिश्रीमलजी जीरावला, गोल

श्रीमती कवदी भँवरदेवी भँवरलालजी, सायला

स्व. कवदी भँवरलालजी नाथाजी, सायला

श्रीमती सुखीदेवी मिश्रीमलजी, घाणसा

शाह हस्तीमलजी भभूताजी सुराणा

शा. जोमतराजजी जेराजी मन्साली, पांथेड़ी

स्व. कटारिया संघश्री जसराजजी सदाजी, घाणसा

शा. पारसमलजी भभूताजी सुराणा

गाँधीमुथा चम्पालालजी पुखराजजी, सायला

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

शा. घेवरचन्दजी हंजाजी कंकुचौपड़ा, जीवाणा

स्व. बड़ेलीबाई अचलचन्दजी पांथेड़ी

शा. हंजारीमलजी भीमाजी धाणसा

शा. मुथा तेजराजजी हेमाजी, भीनमाल

शा. भँवरलालजी मादाजी चौराऊ

शा. उम्मेदमलजी हस्तचन्दजी बाफना, पांथेड़ी

मण्डारी जड़ावीबाई मूलमलजी मेंगलवा

श्रीमती सुन्दरबाई जेठमलजी बागरेचा, जीवाणा

श्रीमती ढेलीदेवी सोनाजी कांकरिया, चौराऊ

श्रीमती धापूबेन मोनमलजी संघवी, दादाल

श्रीमती सोहनबाई कोलन जैन, जावरा (म.प्र.)

स्व. ओटमलजी रूपचन्दजी सुराणा

स्व. मोहनदेवी ओटमलजी सुराणा

श्रीमती वीजूबाई हीराचन्दजी दोशी, भीनमाल

श्रीमती सकूदेवी हस्तचन्दजी बाफना, पांथेड़ी

श्रीमती थनियादेवी उम्मेदमलजी बाफना, पांथेड़ी

वसन्तीलालजी कोलन, जावरा रतलाम, (म.प्र.)

मण्डारी मूलमलजी मानाजी मेंगलवा

कवदी मिश्रीमलजी सोनाजी सायला

श्रीमती चुन्नीदेवी मिश्रीमलजी सायला

श्रीमती भागुदेवी जेठमलजी सुराणा

श्रीमती मथरादेवी तगराजजी मेंगलवा

श्रीमती ढेलीदेवी गेबनचन्दजी मेंगलवा

कमलाबाई बागमलजी फोलामुथा मेंगलवा

स्व. सम्पतबाई शैतानमलजी बाफना, राजगढ़

श्रीमती जीवाबाई हंजारीमलजी धाणसा

शा. पारसमलजी हंजाजी तिलोड़ा

श्रीमती ढेलीबाई पारसमलजी तिलोड़ा

शा. जेठमलजी किनाजी मेंगलवा

श्रीमती मोहनीदेवी जेठमलजी मेंगलवा

स्व. जीतमलजी नाथाजी सुराणा

श्रीमती सुवटीदेवी पुखराजजी जैन चौराऊ

स्व. तगराजजी खुमाजी पांथेड़ी

श्री समरथमलजी सोनाजी कांकरिया, चौराऊ

श्रीमती विमलादेवी समरथमलजी कांकरिया, चौराऊ

शा. हेमराजजी पूनमजी सायला

स्व. लादमलजी समरथमलजी अदाणी, सुराणा

श्रीमती विजुदेवी भीमराजजी दादाल

शा. पुखराजजी केवाजी दादाल

शा. पूनमचन्दजी केवलजी भीनमाल

कटारिया संघवी मिश्रीमलजी गब्बाजी, धाणसा

श्रीमती सुआबाई मिश्रीमलजी जीवाणा

श्रीमती रूपीबाई तेजराजजी कोमता

स्व. नैनमलजी तेजाजी बाफना, पांथेड़ी

शाह रतनचन्दजी वरदाजी भण्डारी, वराड़ा

शाह भँवरलाल केवाजी झोटा, दादाल

संघवी मानमलजी मिश्रीमलजी जीवाणा

श्रीमती सुवटीदेवी मानमलजी जीवाणा

स्व. श्रीमती चंचीबेन हँसराजजी वारिया, ढीसा

श्रीमती जमुदेवी मनोहरलालजी सतगोत बोरा, सुराणा

श्रीमती रमकुदेवी मिश्रीमलजी, सुराणा

श्रीमती जोयतीबाई मुल्तानमलजी बाफना, पांथेड़ी

शा. जामतराजजी अचलाजी, पांथेड़ी

स्व. पानीदेवी चुन्नीलालजी बागरेचा, सिवाणा

स्व. रिखबचन्दजी आदाजी सतगौता बोरा, सुराणा

श्रीमती जमुबाई तगराजजी बाफना, पांथेड़ी

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के सहयोगी

गणरोवेन मोहनलालजी राठौड़, सादड़ी

श्रीमती शान्तिदेवी छगनराजजी घाणसा

कबदी प्यारीबाई बस्तीरामजी सायला

शा. फुसालाल छोगालालजी चौपड़ा, मेंगलवा

स्व. सुबटीदेवी फुसालालजी चौपड़ा, मेंगलवा

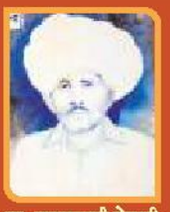
स्व. उगमचन्दजी मेशाजी बाफना, पाथेड़ी

श्रीमती सुआबाई सुमेरमलजी मसाली, पाथेड़ी

श्रीमती लघुदेवी केशरीमलजी ऊनड़ी

शाह पारसमलजी मसराजी संघवी, दादाल

श्रीमती रमकुदेवी पारसमलजी संघवी, दादाल

श्रीमती रतनदेवी मुलीलाल सायला

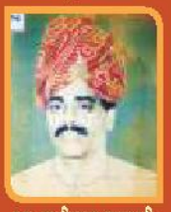
स्व. मुन्नीलाल बस्ताजी सायला

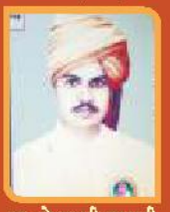
स्व. जेठमलजी बगताजी बागरेचा, जिवाणा

श्रीमती झमकादेवी रामाजी मेंगलवा

स्व. चुकीदेवी मँगीलालजी मसाली, पाथेड़ी

श्रीमती झमकाबाई सरेमलजी कामता

स्व. धनराजजी मिठालालजी सुराणा

श्रीमती केशरबाई उगमचन्दजी बाफना, पाथेड़ी

श्रीमती खम्मादेवी भँवरलालजी डामराणी

श्रीमती रमकुबेन खाजमलजी छोड़ा, सांचोर

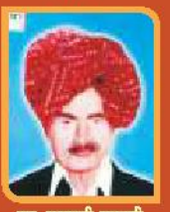
स्व. दरगाजी बालजी जोगाणी भीनमाल

श्रीमती मोहनदेवी भँवरलालजी गाँधी मुथा, सायला

स्व. श्री मिश्रीमलजी भावचन्दजी सिसोदिया, बालोतरा

श्रीमती तारादेवी मिश्रीमलजी सिसोदिया, बालोतरा

चोरा मानमलजी बस्तीमलजी जिवाणा

श्रीमती पुष्पादेवी मानमलजी जिवाणा

स्व. श्री शिवरामजी धुड़ाजी जिवाणा

स्व. श्रीमती गीगीबाई शिवराजजी, जिवाणा

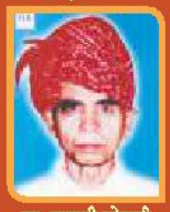
स्व. दरगाजी जोगाणी भीनमाल

स्व. रुक्मनीदेवी दरगाजी जोगाणी, भीनमाल

श्रीमती गुलाबीदेवी जुगराजजी कबदी, सायला

श्रीमती मोतीबाई आदाजी गाँधी, धुम्बड़िया

श्रीमती पंकुबाई जामताजी भीनमाल

शा. मोटमल सोनाजी मुथा, रेवतड़ा

शा. मनोहरमलजी केवलचन्दजी डामराणी, मेंगलवा

स्वं शा. जुगराजजी बालुचन्दजी कबदी, सायला

स्व. श्रीमती बगसुदेवी पारसमलजी कबदी, सायला

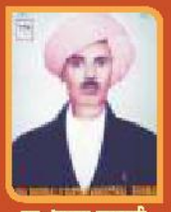
शा. भूरमल सूरताजी बाणीगोता, भीनमाल

श्रीमती मणीदेवी मिश्रीमलजी सुराणा

स्व. श्री तरसराज मिश्रीमलजी बाफना, पांथेड़ी

मोनमलजी संघवी दादाल

शा. बाबुलालजी मेघराजजी बोहरा,सुराणा

अशोककुमारजी

श्रीमती उम्मेदमलजी प्रतापजी कंकुचौपड़ा, मेंगलवा

कोठारी सरेमलजी कपूरचन्दजी, भीनमाल

श्रीमती चदामीबाई सरेमलजी कोठारी, भीनमाल

सुकृत के सहयोगियों का आभार

श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट)

मु. पो.- भाण्डवपुर तीर्थ, वाया- सायला, जिला- जालोर (राज.) 343 022

पुरानी श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भोजनशाला के मुख्य लाभार्थी

72 जिनालय के निर्माता
भीनमाल निवासी लूंकड़ परिवार

स्व. शा. हंजारीमलजी
जवाजी लूंकड़, भीनमाल

स्व. श्रीमती मालूबाई हंजारीमलजी
लूंकड़, भीनमाल

संघवी सुमेरमलजी
हंजारीमलजी लूंकड़, भीनमाल

श्रीमती सुआबाई सुमेरमलजी
लूंकड़, भीनमाल

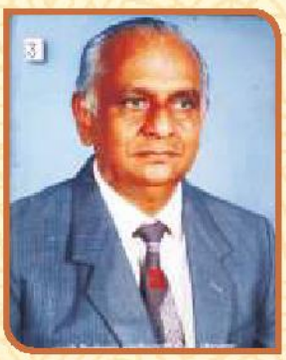

संघवी किशोरमलजी
हंजारीमलजी लूंकड़, भीनमाल

स्व. श्रीमती सीताबाई
किशोरमलजी, लूंकड़ भीनमाल

संघवी माणकचन्दजी
हंजारीमलजी लूंकड़, भीनमाल

श्रीमती मोहनीबाई माणकचन्दजी
लूंकड़, भीनमाल

अति प्राचीन श्री भाण्डवपुर तीर्थ : एक विहंगम दृश्य

तीर्थाधिपति मूलनायक श्री महावीरस्वामीजी भगवान

श्री राजेन्द्रसूरि जैन दादावाड़ी (कमलाकार गुरु मन्दिर)

गुरु श्री शान्तिविजयजी समाधि मन्दिर

उप कार्यालय एवं जैन भाता घर

श्री जैन यात्री धर्मशाला

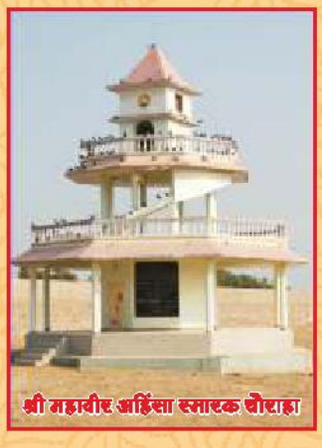
श्री महावीर अहिंसा स्मारक चौराहा

श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर

श्री यतीन्द्र विहार (उपाश्रय)

वर्तमान मुख्य प्रवेश द्वार

दादागुरु श्री राजेन्द्रसूरिजी म. सा.

मूलनायक श्री महावीर प्रभु

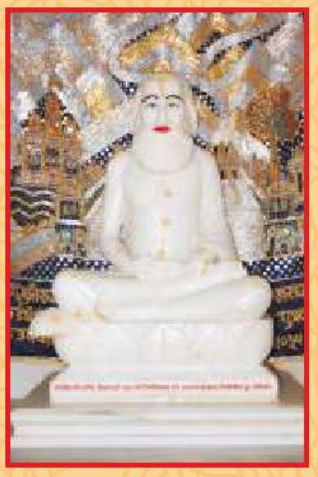
गुरु श्री शान्तिविजयजी म. सा.

द्वितीय प्रवेश द्वार (बागोड़ा रोड़)

श्री महावीरस्वामी जैन मन्दिर

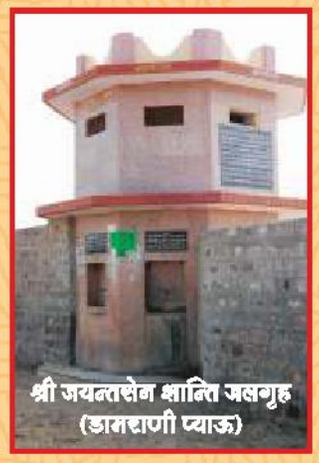
श्री जयन्तसेन शान्ति भवगृह (डामराणी प्याऊ)

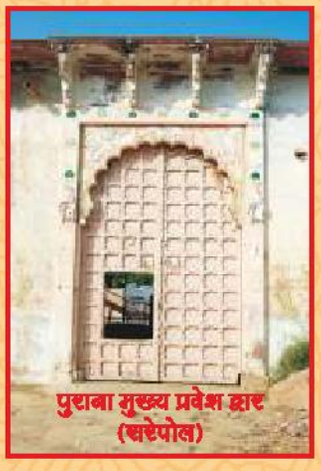
पुराना मुख्य प्रवेश द्वार (खड़ेपोल)

चबूतरा

श्रीमती सुआदेवी मानमलजी वर्षीतप पारणा भवन

जिन बिम्ब भण्डार

दादा गुरुदेव श्रीराजेन्द्रगुरुभ्यो नमः

विक्रम संवत 2072 पौष सुदि 6 शुक्रवार दिनांक 15-1-2016

परम पूज्य भाण्डवपुर तीर्थ प्रेरक मुनिराज

श्री जयरत्नविजयजी म. सा.

के 41वें संयम पर्याय अनुमोदनार्थ

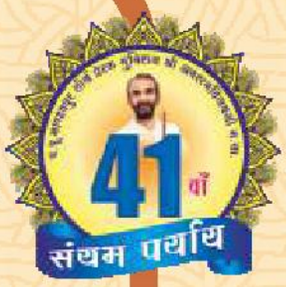

शुभेच्छक लाभार्थी- यतीन्द्र वाणी भाण्डवपुर दर्शन विशेषांक सहयोगी

1. श्री महावीरस्वामीजी भगवान भक्त
2. श्री गौतमस्वामीजी सद्गुरु भक्त
3. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी सद्गुरु भक्त
4. श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी सद्गुरु भक्त
5. श्री विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी सद्गुरु भक्त
6. श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी सद्गुरु भक्त
7. श्री शान्तिविजयजी म. सा. सद्गुरु भक्त
8. श्री सद्गुरु भक्त
9. श्री सद्गुरु उपासिका श्राविका
10. श्रीमती मन्जूदेवी रमेशकुमारजी बाफना, भीनमाल
11. श्री चमनलाल उजमशीभाई वोहेरा, थराद
12. श्री माँगीलालजी फूलचन्दजी गाँधीमुथा, धुम्बड़िया
13. श्री लालचन्दजी चिमनलालजी छाजेड़, नेनावा
14. श्री नरपतराजजी सरेमलजी गाँधीमुथा, सुराणा
15. श्रीमती शान्तिदेवी छगनराजजी सेठ, घाणसा
16. श्री संघवी मगराजजी हंसराजजी संघवी, आकोली
17. श्रा. मदनराजजी जावन्तराजजी शाहजी, पांथेड़ी
18. श्रा. पारसमलजी सोनाजी भंसाली, भीनमाल
19. श्रीमती सकुदेवी साँकलचन्दजी हुकमाणी, पांथेड़ी
20. श्रा. रमेशकुमारजी ओटमलजी संघवी, कोमता
21. श्रा. मूलचन्दजी सम्पतराजजी शाहजी, भीनमाल
22. श्रा. जुगराजजी मुन्नीलालजी ओबाणी, पोषाणा
23. श्रा. जीतमलजी ताराचन्दजी ओबाणी, पोषाणा
24. श्रा. कैलाशकुमारजी मीठालालजी ओबाणी, पोषाणा
25. श्रा. विजयराजजी पुखराजजी ओबाणी, पोषाणा
26. श्रा. रमेशकुमार दरगचन्दजी विशाणी, पोषाणा
27. श्रा. नेमीचन्दजी छगनराजजी गोवाणी, चोरासू
28. श्रा. माँगीलालजी केशाजी गोवाणी, चोरासू
29. श्रा. रमेशकुमार पुखराजजी गोवाणी, चोरासू
30. श्रा. भँवरलालजी कुन्दनमलजी छत्रगोता, चोरासू
31. श्रा. राजमलजी नैनमलजी गोवाणी, चोरासू
32. श्रा. मिलापचन्दजी जुगराजजी गोवाणी, चोरासू
33. श्रा. माणकचन्दजी सरेमलजी कोठारी, भीनमाल
34. श्रा. ताराचन्दजी दलीचन्दजी संघवी, नेनावा
35. श्रा. मिलापचन्दजी जेठमलजी चौधरी, गढ़ सिवाणा
36. श्रा. चम्पालालजी हंजारीमलजी बंदामुथा, घाणसा
37. श्रा. माँगीलालजी रिखबचन्दजी अंदाणी, सुराणा
38. श्रा. शान्तिलालजी हरकचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा
39. श्रा. भरतकुमारजी मिश्रीमलजी संघवी कोमता वाला, भीनमाल
40. श्रा. हीरालालजी झलचन्दजी वेदलिया, डीसा
41. श्रा. रिखबचन्दजी गुणेशमलजी भंडारी, थलवाड़
42. श्रीमती गुणवन्तीबेन बाबुलालजी अदाणी, (मोरडु) थराद
43. श्रा. खूबचन्दभाई भाणजीभाई वोहेरा, थराद-सूरत
44. श्रीमती शान्ताबेन खूबचन्दभाई वोहेरा, थराद-सूरत
45. श्रा. मनजीभाई माणजीभाई वोहेरा, थराद- सूरत
46. श्रा. नेमीचन्दजी पारसमलजी वेदमुथा, रेवतड़ा
47. श्रा. मीठालालजी ऊकचन्दजी हीराणी, रेवतड़ा
48. श्रा. प्रकाशकुमारजी तगराजजी हीराणी, रेवतड़ा
49. श्रा. बाबुलालजी लादाजी कटारिया, घाणसा
50. श्रा. जुगराजजी गुटराजजी छत्रिया वोहरा, सुराणा
51. श्रा. सुजानमलजी जैन-प्रदीप बस, झाबुआ (राणापुर)
52. श्रा. प्रवीणभाई हीरालालजी वोहेरा, थराद
53. श्रा. अरविन्दभाई जयन्तीलाल परीख, थराद
54. श्रा. वसन्तभाई शांतिलालजी अदाणी, थराद
55. श्रा. रमेशभाई माधवलालजी मोरखिया, थराद
56. श्रा. धीरजमलजी लालचन्दजी भण्डारी, सायला
57. श्रा. मनोहरलालजी साँकलचन्दजी बाणीगोता, तिलाड़ा
58. श्रा. कीर्तिलाल दलसुखभाई देसाई, थराद (अहमदाबाद)
59. श्रा. भीकमचन्दजी गेबाजी संकलेचा, मेंगलवा
60. श्रीमती कमलादेवी माँगीलालजी बोरा, बाकरा
61. श्रा. इन्दरमलजी माणकचन्दजी कोठारी, सियाणा
62. श्रा. मुल्तानमलजी हरकचन्दजी भण्डारी, सायला
63. श्रा. पारसमलजी हिम्मताजी बंदामुथा, राजनगर
64. श्रा. प्रकाशकुमारजी माँगीलालजी संकलेचा, मेंगलवा
65. श्रा. सुमेरमलजी साँकलचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा
66. श्रा. जेठमलजी खुशालचन्दजी भण्डारी, सायला
67. श्रा. त्रिकमचन्दजी लक्ष्मीचन्दजी संकलेचा, मेंगलवा
68. श्रा. नेमीचन्दजी भँवरलालजी संघवी, आलासण
69. श्रा. नरपतराजजी मिश्रीमलजी काँकरिया, सुराणा
70. श्रा. राणमलजी हिम्मताजी श्रीश्रीमाल, दादाल
71. श्रा. मोहनलालजी गिरधारीलालजी छत्रिया वोहरा, जीवाणा
72. श्रा. बाबुलालजी धनराजजी डोडीया गाँधी, धुम्बड़िया
73. श्रा. जुगराजजी हस्तीमलजी गाँधीमुथा, सायला
74. श्रा. कान्तिलालजी गेबाजी श्रीश्रीश्रीमाल नैणगोता डामराणी, मेंगलवा
75. श्रा. खुशालचन्दजी गेबाजी श्रीश्रीश्रीमाल नैणगोता डामराणी, मेंगलवा
76. श्रा. नेमीचन्दजी नागराजजी झोटा, दादाल
77. श्रा. सुखराजजी चमनाजी कबदी, घाणसा
78. श्रा. कानराजजी फूलचन्दजी बन्दामुथा, पांथेड़ी
79. श्रा. माँगीलालजी मिश्रीमलजी छत्रगोता, सायला
80. श्रा. शंकरलालजी भीमाजी अंदाणी, सुराणा
81. श्रा. कान्तिलालजी कुन्दनमलजी गुलेच्छा, सायला
82. श्रा. घुड़ालाल अमृतभाई संघवी, थराद
83. श्रा. श्रीमती रूखमबेन वाघजीभाई रिखबचन्दभाई मोरखिया, लवाणा
84. श्रा. प्रकाशकुमार वाडीलाल मोरखिया, लवाणा
85. श्रा. टीलचन्द भाई नागरदास भाई देसाई, थराद
86. श्रा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा, घानसा
87. श्रा. जुगराजजी सूरजमलजी संकलेचा, दासपा
88. श्रा. बाबूलालजी लल्लूभाई वोहेरा, थराद (नडियाद)
89. श्रा. वाघजीभाई मफतलालजी सरपंच, थराद (नडियाद)
90. श्रा. माँगीलालजी लखमीचन्दजी लुंकड़, पोषाणा
91. श्रा. मीठालालजी फूसालालजी कंकुचौपड़ा, मेंगलवा
92. श्रा. अशोककुमारजी मिश्रीमलजी बालगोता, मेंगलवा
93. श्रा. उत्तमचन्दजी मनोहरमलजी हरण, थलवाड़
94. श्रा. सुरेशकुमारजी हरकचन्दजी बाफना, थलवाड़
95. साध्वीजी श्री अविचलदृष्टाश्रीजी की प्रेरणा से सुश्राविका
96. साध्वीजी श्री अनुपमदृष्टाश्रीजी की प्रेरणा से सुश्राविका
97. श्रीमती बबीबेन चमनलालजी वोहेरा, थराद-सूरत
98. श्रा. चमनलालजी खेमचन्दजी भाई संघवी, थराद
99. श्रा. अश्विनकुमार बाबूलालजी वोहेरा, थराद-सूरत
100. श्रा. महासुखलाल चमनलाल वोहेरा पापड़, थराद
101. श्रीमती शान्ताबेन महासुखलाल वोहेरा, थराद-सूरत
102. श्रा. रजनीकुमार महासुखलाल वोहेरा, थराद-सूरत
103. श्रा. सुखराजजी प्रतापचन्दजी पोरवाल, बागरा
104. श्रा. छगनराजजी कुन्दनमलजी संकलेचा, मेंगलवा
105. श्रा. किशोरचन्दजी सौभागचन्दजी बालगोता, मेंगलवा
106. श्रा. दिलीपकुमारजी चुन्नीलालजी दाणी, घानसा

शान्त, रमणीय, प्राकृतिक सौंन्दर्य से युक्त

अतिप्राचीन श्री भाण्डवपुर महातीर्थ

यात्रार्थ दर्शनार्थ अवश्य पधारिये

श्री महावीर बावन जिनालय, श्री वर्धमान राजेन्द्र जैनागममन्दिर,
श्री शाश्वत जिनचैत्य, श्री गणधर पूर्वाचार्य मन्दिर,
श्री राजेन्द्रसूरि गुरुमन्दिर, पुण्यसम्राट श्री जयन्तसेनसूरि समाधिमन्दिर,
गुरु श्री शान्तिविजयजी समाधिमन्दिर से सुशोभित
भोजन तथा आवास हेतु वातानुकूलित एवं सामान्य विशाल धर्मशाला,
भोजनशाला, संघ भोजनशाला, कायमी भाति व्यवस्था तथा
विविध धार्मिक आयोजन हेतु विशाल सभाभवन व मंडप की सुविधा उपलब्ध है...

भोजन, आवास, एवं आयोजन हेतु अग्रिम आरक्षण अवश्य करावें

: निवेदक :

श्री महावीर जैन श्वे. पेढ़ी (ट्रस्ट) * श्री वर्धमान राजेन्द्र जैन भाग्योदय ट्रस्ट (संघ)

भाण्डवपुर तीर्थ (राज.), जिला जालोर (राज.) 343022
चलभाष : 73400 19703-4-5

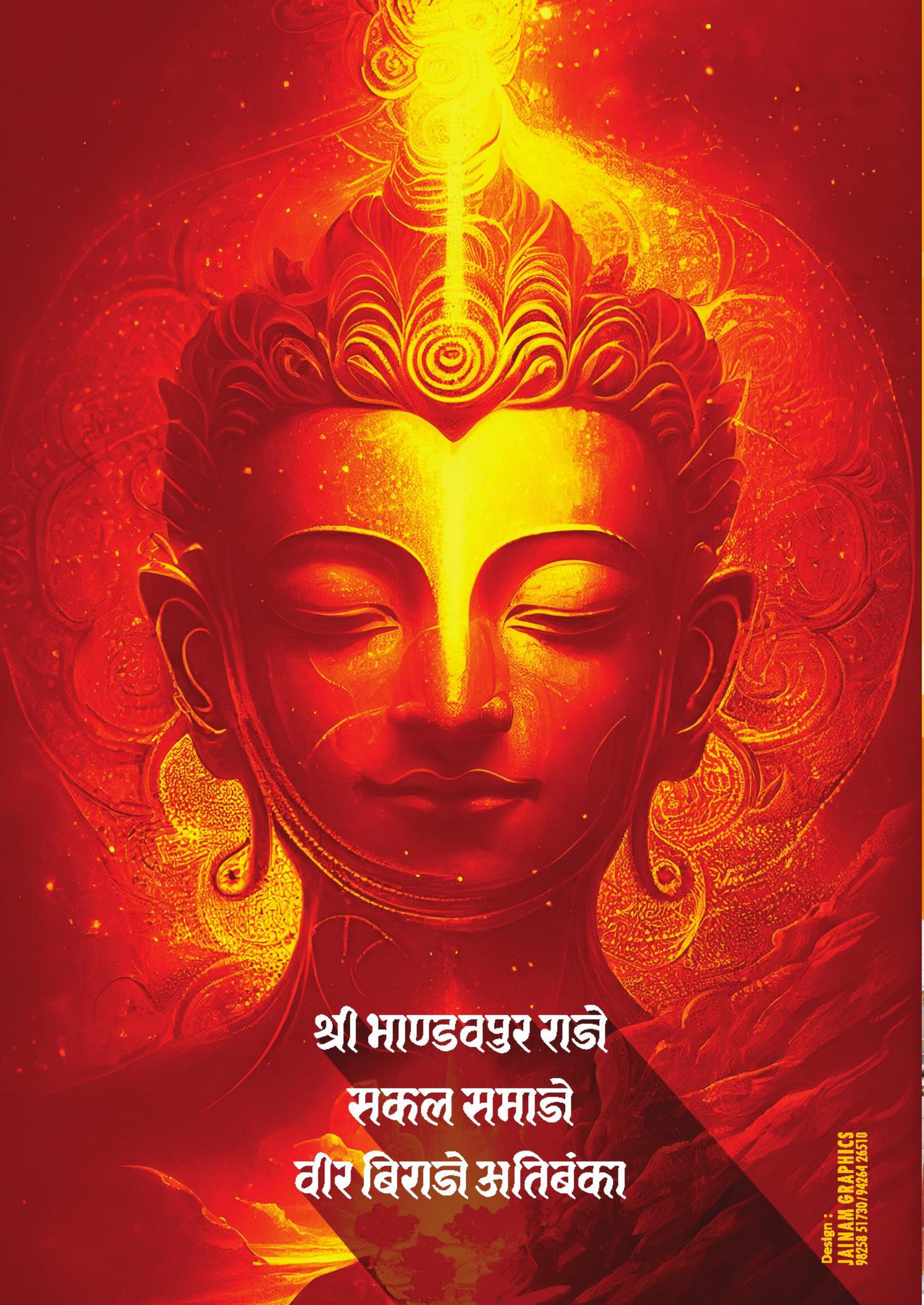

Design :
JAINAM GRAPHICS
98258 51730/ 94264 26510